जान बन्यन।

यात्रा स्वप्नोदय ।

अर्थात्

नाशनगर से स्वर्गपुर लों त्राणार्थी पुरुष की
यात्रा का वृत्तान्त ।

जिसे

जान बन्यन धर्म्मोपदेशक ने रचा

और जिसका

हिन्दी भाषा में उल्था किया गया है ।

THE

PILGRIM'S PROGRESS.

BY JOHN BUNYAN.

TRANSLATED FROM THE BENGALI VERSION,
AND COMPARED WITH THE ENGLISH.

Stiff Book Re. 1
Full Cloth Re. 1-4

बोर्ड का जिल्द १)
कपड़े का जिल्द १।)

आभाष ।
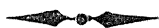
जिस हितदायक और परमार्थी मंगलोपकारक ग्रन्थ का उलथा प्रिय भारतवासियों के पढ़ने के निमित्त इस पुस्तक में छपा है वह ग्रन्थ अंगरेज़ी भाषा में जान बन्यन नाम जिस खीष्ट धर्म्मोपदेशक से रचा गया उस का कुछ वृत्तान्त यहां लिखते हैं। जान बन्यन सन् १६२८ ईस्वी में इंगलैण्ड देश के बेडफर्ड नगर के निकट एलस्तो नाम गांव में जन्मा। लड़कपन तथा युवावस्था में यह न परमेश्वर का कुछ भय रखता न प्रभु यीशु मसीह पर कुछ विश्वास करता था, वरन् खीष्ट धर्म्म की निन्दा करता और दुष्ट लोगों की संगति में रह कर कुकर्म्म किया करता था और इतवार को कभी नहीं मानता था। उन दिनों में वह अति निःशंक रहता था। एक दिन उस ने विषैले सर्प को मारते २ अचेत कर अपनी अंगुली निधड़क उस के मुख में दे उस का विषैला दांत उखाड़ लिया। परमेश्वर ने बारम्बार आश्चर्य की रीति से उस के प्राण की रक्षा की। दो बार वह डूबते डूबते बचा। उस का पिता ठठेरा था और वह भी वही उद्यम करने लगा परन्तु जब उस के देशियों में परस्पर युद्ध होने लगा तो वह कुछ दिन पलटन में भरती हो गया। जब कितने और योद्धाओं के संग उस को लेस्तर नाम नगर का घेरा डालने की आज्ञा हुई तो उस अवसर में किसी मित्र ने उस के स्थान पर युद्ध पर जाना स्वीकार किया। वह मित्र रात को पहरा देता हुआ गोली से मारा गया। इस समय भी परमेश्वर ने अद्भुत रीति से बन्यन के प्राण की रक्षा की। उसके

कुछ दिन पीछे वह किसी धर्म्मवती कन्या को व्याह लाया। धर्म्म के विषय की दो छोटी पुस्तकों को छोड़ उस ने उस कन्या के दहेज में कुछ नहीं पाया। वह इन दो पुस्तकों को कभी कभी पढ़ा करता था इन के पढ़ने से उस की दुष्टता तो नहीं छूटी पर इतना फल अवश्य हुआ कि उस समय से वह इतवार के दिन भजनालय में उपदेश सुनने को जाया करता था। फिर किसी दुःखी दरिद्र मनुष्य के परामर्श से वह धर्म्म पुस्तक का पाठ करने लगा इस से उस का आचार व्यवहार बहुत सुधरा परन्तु उस के हृदय में नित्य विश्वास नहीं व्यापा। इतने में उसने एक दिन कितनी धर्म्मिष्ठ स्त्रियों को किसी घर की डेवढ़ी पर चरखा कातते २ ख्रीष्टधर्म्म के विषय में परस्पर वार्त्ता करते जब सुना तब उस के अन्तःकरण में कुछ अधिक धर्म्म की चेष्टा उत्पन्न हुई। उस समय उस ने मन में जो विचार किया उसका वर्णन वह आप ही करता है कि मुझे ऐसा बूझ पड़ा कि वे स्त्रियां मानो किसी सुन्दर पर्वत की अलंग में धूप में बैठ कर सुख पाती हैं और मैं आप जाड़े की ऋतु की शीत और झड़ी में निराश्रय ही दुःख भोगता हूं फिर मुझे ऐसा समझ पड़ा कि वह पर्वत मानो अति ऊंची भीत से घिरा है इस कारण जब मैं ने उन स्त्रियों के पास जाने का यत्न किया तब जा न सका। तब मैं बारम्बार पथ के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना कर इधर उधर द्वार ढूंढ़ता फिरा परन्तु मुझे बहुत काल लों कोई द्वार न सूझ पड़ा। अन्त में एक जगह उस भीत में मैं ने एक छेद पाया उस में होकर अत्यन्त परिश्रम से पहिले सिर तब कन्धे तब देह के सब अंग को पार कर प्रवेश किया और भीतर पैठ उन धर्म्मवती स्त्रियों के निकट जा उन के संग बैठकर सूर्य के तेज से सुख पाने लगा।

सत्ताईस वर्ष की अवस्था में जान बन्यन बेडफर्ड नगर की खीष्टियान मण्डली में मिल गया और जब तब सुसमाचार प्रचार करने लगा। सुसमाचार प्रचार करने में उस की कथा वार्त्ता ऐसी उत्तम थी और उस में सुननेहारों की ऐसी रुचि हुआ करती थी कि थोड़े काल में वह उस कर्म्म के लिये नियुक्त किया गया और उसके उपदेश सुनने की इच्छा से सहस्र सहस्र लोग इकट्ठे होते थे। सन् १६६० ईस्वी में इंगलैण्ड देश के राजा ने जिस को आगे विदेश में भाग के रहना पड़ा था जब अपना राज्य फिर पाया तब एक ऐसी आज्ञा की कि अनेक धर्म्मी उपदेशक उस को धर्म्म के सत्य व्यवहार के विपरीत जान स्वीकार न कर उस के लंघन करने के कारण कारागार में बन्द किये गये उन में जान बन्यन भी बन्दीगृह में डाला गया और बारह वर्ष वहां पड़ा रहा। उसी दुःख के समय में उस ने कारागार ही में इस ग्रन्थ का प्रथम भाग रचा वह सन् १६७२ ईस्वी में बन्दीगृह से मुक्त हुआ और तिस के पीछे उस ने इस पुस्तक का द्वितीय भाग लिखा। उसने इस ग्रंथ के सिवा और भी पुस्तकें रचीं। इन की रचना से प्रगट है कि परमेश्वर ने अपने इस दास को अद्भुत तीक्ष्ण बुद्धि दान की क्योंकि उस ने किसी विद्यालय में विद्या प्राप्त न की थी तथापि उस के रचे हुए ग्रन्थ धर्म्मी लोगों के अति प्रिय और हितकारक होकर अनेक बार छापे गये और आज लों बिकते जाते हैं और उन में से कई एक ग्रन्थ अनेक अन्य अन्य भाषा में भी उलथा किये गये हैं।

कारागार से मुक्त होने के पीछे वह बेडफोर्ड नगर की मण्डली का रखवाला हुआ और उस नगर में अरु और और नगरों में फिर पूर्व रीति से सुसमाचार प्रचार करने लगा। लण्डन नगर में कभी कभी वह शीतकाल में बड़ी भोर अन्धकार रहते

उपदेश करता था उस जाड़े में और अन्धकार में भी सैकड़ों मनुष्य उसकी सुनने को इकट्ठे होते थे और इतवार के दिन कभी कभी तीन सहस्र श्रोताओं की भीड़ लग जाती थी । उसी लण्डन नगर में सन् १६८८ ईस्वी में उस का प्राणान्त हुआ ।

यात्रा स्वप्नोदय नाम जो यह कथा है सो किसी विशेष मनुष्य का वर्णन नहीं परन्तु दृष्टान्त की रीति पर पारमार्थिक विषयों का वर्णन है । इस दृष्टान्त का अर्थ बहुत जगह तो स्पष्ट है परन्तु किसी किसी जगह में गूढ़ है । इस पुस्तक से अन्य अन्य देशों के अनेक लोगों का उपकार हुआ और परमेश्वर के अनुग्रह की आशा रखते हैं कि उस के आशीर्वाद से इस देश के लोगों को भी लाभ पहुंचे ।

॥ श्रीपरमेश्वरो विजयते ॥

यात्रा स्वप्नोदय।

प्रथम भाग।

ख्रीष्टियान का नाश नगर से स्वर्गपुर की यात्रा करना।

पहिला अध्याय।

जिस समय मैं इस दुर्गम अरण्य स्वरूपी संसार में भ्रमण करते हुए एक पर्वत की कन्दरा में जा कर सो गया उस काल मैं ने यह स्वप्न देखा कि एक मनुष्य फटे पुराने चिथड़े पहिरे पीठ पर भारी बोझ लिये घर की ओर पीठ दिये किसी स्थान पर आ पुस्तक खोल पाठ करने लगा (यशायाह ६४ : ६। लूक १४ : ३३। भजन ३८ : ४) पाठ करते करते भयातुर हो थरथर कांपने और रोने लगा। जब अपने चित्त का दुःख न सह सका तब अरे मैं क्या करूं यह बात कह एकाएक बड़े ऊंचे स्वर से चिल्ला उठा। (प्रेरित २ : ३७ और १६ : ३०)

उसी दशा में वह घर फिर आया और कहीं घर के लोग स्त्री पुत्रादि इस बात को न जान लेवें इस कारण अपने चित्त में यथाशक्ति धीरज धर चुपका हो रहा परन्तु चित्त के दुःख

के बढ़ने से जब उस दुःख को न सह सका तब स्त्री पुत्रादि के निकट अपने मन का सम्पूर्ण शोक खोलकर कहने लगा कि हे प्रिय भार्य्या ! हे मेरे प्यारे पुत्रो ! मेरे ऊपर तुम्हारा बड़ा स्नेह है देखो तुम जो मेरी पीठ पर बोझा देखते हो उसी के द्वारा मैं ने अपना बिनाश आप ही किया है और सुनो मैं ने दृढ़ समाचार सुना है कि स्वर्ग से अग्नि बरस कर हमारे इस नगर को भस्म करेगी और इस महा आपदा से बचने के निमित्त मैं कोई उपाय नहीं देखता हूं। यदि हमारे बचने की कोई युक्ति न होगी तो अपनी प्यारी स्त्री और प्यारे पुत्रों सहित मुझे इस भयानक अग्नि में भस्म होना पड़ेगा। इस रीति की बहुत सी बातें उस के मुख से सुनते सुनते उस के कुटुम्ब परिवार के लोग आश्चर्य करने लगे परन्तु उन्हें निश्चय नहीं हुआ कि यह सत्य कहता है किन्तु इस के विपरीत यह समझा कि बुड्ढा बाई में आकर बकता है आज रात को निद्रा आवेगी तो कल इसकी यह सारी चिन्ता दूर हो जावेगी। ऐसा विचार कर सांझ ही से उस के सुलाने का उपाय किया परन्तु उसे निद्रा न आई वरन् रात्रि समय उसे क्लेश अधिक हुआ सो वह रात भर रोता ही रहा। प्रातः ही कुटुम्ब के लोगों ने विचारा कि चलकर देखें कि रात उस की कैसी बीती। जब उस के निकट जाकर पूछा, कहो रात कैसी बाती तो उस ने उत्तर दिया कि मैं पहिले से अधिक चिन्तायमान हूं इतना कह उन से बातचीत करने लगा। कुटुम्ब के लोगों ने फिर भी यही विचार किया कि इस को भयदर्शक वायु रोग व्यापा है जो हम इस से निष्ठुर व्यवहार करें तो वह चंगा हो जावेगा। ऐसा विचार कर कभी तो उस से ठट्ठा करते कभी उस से विनय करते और कभी उस का निरादर कर उस की ओर से मुंह फेर लेते। परन्तु वह अपने

कुटुम्ब परिवार के निमित्त दुःखी हो उन के उद्धार के लिये प्रार्थना और अपनी दुर्दशा निमित्त विलाप करने के लिये कभी कभी अपनी कोठरी से निकलकर एकान्त में जा बैठता, कभी खेत में टहलकर पुस्तक खोल पाठ करता, कभी प्रार्थना करता और इसी रीति से कितने दिन बीत गये। परन्तु जैसे अधिक घी डालने से अग्नि अधिक अधिक लहर उठती है उसी रीति से उस का दुःख बढ़ता जाता था और अरे मैं परित्राण निमित्त क्या उपाय करूं ऐसा कह बार बार चिल्ला चिल्ला कर रोया करता था। (प्रेरित १६ : ३०, ३१)

फिर मैं ने देखा कि वह भागने की इच्छा कर इधर उधर देखने लगा पर कि यह निश्चय न कर सका किधर भागूं इस लिये वहीं खड़ा रहा। उस समय मङ्गलवादी नाम एक पुरुष ने आकर उस से पूछा कि तू किस लिये विलाप करता है। उस ने उत्तर दिया, महाराज मेरे दुःख का कारण जो आप पूछते हैं सो यह है कि मेरे पास जो यह पुस्तक है इस के पढ़ने से मुझे ज्ञान हुआ कि मैं बड़ा अपराधी हूं और मृत्यु समीप है मरण उपरान्त मुझे विचार स्थल में जाना पड़ेगा परन्तु एक तो मैं मरना नहीं चाहता हूं दूसरे मुझे विचार स्थल में उत्तर देने की कुछ शक्ति नहीं है सो अब किस भांति मेरा उद्धार हो इस की चिन्ता से मैं व्याकुल हूं। (इब्रि. ९ : २७। यहेजकेल २२ : १४) तब मङ्गलवादी ने कहा, इस संसार में तो पग पग दुःख होता है फिर तुझे मरने की इच्छा क्यों नहीं होती। उस ने उत्तर दिया कि मेरी पीठ पर जो यह भारी बोझ है इस हेतु मुझे मृत्यु में यही सन्देह है कि कहीं मैं अथाह नरक कुण्ड में न जा पड़ूं। और जो मृत्यु रूपी कारागार में जाना भयानक है तो विचार

मङ्गलवादी।

स्थान में और दण्ड स्थान में जाना क्या अधिक भयावना नहीं है। इन्हीं सब बातों के कारण भयातुर हो अकुलाता हूं। मङ्गल-

क्रीष्टियान पाप के बोझ से दुःखित हो नाश नगर छोड़ जाता है।

वादी ने कहा, जो तेरी ऐसी दशा है तो तू यहां खड़ा क्या करता है। उस ने कहा, महाराज मैं कहां जाऊं क्या करूं मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता इस लिये मैं यहां खड़ा हूं।

यह बात सुन मङ्गलवादी ने एक पत्र उसे दिया जिस में लिखा था कि तू आनेवाला क्रोध से भाग । (मत्ती ३ : ७ वह इस पत्र को पढ़ कर मङ्गलवादी की ओर इकटक देखने लगा और उस से बहुत नम्रता से पूछा कि मैं किस ओर भागूं । तब मङ्गलवादी ने एक बड़े मैदान की ओर हाथ उठाकर कहा, मैदान की उस ओर जो सकरा फाटक है वह तुझे देख पड़ता है कि नहीं (मत्ती ७ : १३, १४) उस ने उत्तर दिया, नहीं । तब फिर मङ्गलवादी ने कहा, वह ज्योति तुझे दिखाई देती है वा नहीं । (भजन ११६ : १०५ और २ पितर १ : १६) उसने उत्तर दिया, हां, कुछ कुछ दिखाई देती है, मङ्गलवादी ने कहा, इसी ज्योति की ओर दृष्टि कर शीघ्र चला जा फिर वहां पहुंच कर जो फाटक तुझे दिखाई देगा उसको खटखटाइयो । जो कुछ तुझ को करना उचित है सो सब वहां तुझे कहा जायगा ।

दूसरा अध्याय ।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि वह पुरुष मङ्गलवादी की बात का विश्वास कर उसी ओर दौड़ा चला गया । जब वह अपने घर से कुछ दूर निकल गया और उस के घरवालों ने यह समाचार पाया तब वे उस के पकड़ने को उस के पीछे दौड़े । उस ने जब देखा कि वे मुझे पकड़ने को आते हैं तब कानों में अंगुली दे जीवन जीवन अनन्त जीवन पुकारता हुआ अत्यन्त वेग से दौड़ा कि उस को हंफनी आ गई और पीछे न देख दौड़ता दौड़ता उस मैदान के मध्य तक पहुंच गया । (लूक १४ : २६ । उत्पत्ति १६ : १७)

फिर उस के मित्रों और पड़ोसियों ने यह समाचार पा बाहर आ देखा कि वह हांपता हुआ दौड़ा चला जाता है। इन में से उस को फेरने के लिये किसी ने तो धमकाया किसी ने दुर्वचन कहा, किसी ने विन्ती की और कोई हे हे कर चिल्लाने लगा पर उस ने किसी की बात न मानी।

हठी और दुचिता। तब हठी और दुचिता नाम दो मनुष्यों ने बड़े क्रोध से कहा हम लोग इसको बरियाई से लौटा लावेंगे। यह प्रतिज्ञा करके ये दोनों जिधर वह दौड़ा जाता था उसके पीछे दौड़े और ऐसे वेग से दौड़े कि थोड़ी बेर में उसे जा लिया। जब उसने अपने पड़ोसियों को देखा तो उन से पूछा, अरे मित्रो ! तुम मेरे पीछे क्यों आये हो। इन्होंने उत्तर दिया, हम तुम को घर फेर ले जाने के लिये आये हैं। तब उस ने कहा, सुनो भाइयो मैं किसी भांति फिर कर घर न जाऊंगा क्योंकि नाशनगर जहां तुम रहते हो मेरी भी जन्मभूमि है परन्तु वह स्थान नष्ट होगा यह बात मैं निश्चय कर जानता हूं और मैं देखता हूं कि तुम परलोक में अथाह गढ़े में जो गंधक मिश्रित धधकती अग्नि से लहक रहा है शीघ्र ही गिरोगे इस हेतु हे मेरे मित्रो ! तुम भी मेरे साथ चलो। तब हठी ने कहा, यह कैसी बात है। क्या हम अपने भाई बन्धु मित्रादि और सांसारिक सुख को छोड़ अनाथ हो तुम्हारे संग जावें ? तब उस

ख्रीष्टियान। पुरुष ने जिस का नाम ख्रीष्टियान था कहा, हां, मैं यही बात कहता हूं। जिस सुख की चेष्टा मैं करता हूं उसके एक परमाणु तुल्य भी तुम्हारा सुख नहीं है। (करिन्थि ४:१७) इस से जो तुम मेरे साथ चलोगे तो बिना श्रम परमसुख के अधिकारी हो मेरे समान सुख भोगोगे क्योंकि जिस स्थान में मैं जाता हूं उस स्थान का सुख अपार है और

जो तुम्हें इस बात की प्रतीति न हो तो मेरी बात सत्य है वा असत्य इस के जानने के लिये मेरे साथ चलकर देख लो। तब हठी ने कहा, भला ऐसी वहां कौन सी वस्तु है जिस के लिये तुम ने सर्वस्व त्याग वहां जाने का उद्योग किया है। खीष्टियान बोला, मैं स्वर्गीय अधिकार की चेष्टा करता हूं वह अक्षय निर्मल और अजर है। जो लोग इस अधिकार की चेष्टा करते हैं उन्हें निरूपित समय में देने के लिये वह अधिकार स्वर्ग में तैयार है और जो तुम इस का प्रमाण चाहते हो इस पुस्तक को पढ़ के जान लो। (१ पितर. १ : ४। इब्रि. ११ : १६) यह बात सुन हठी ने निन्दा कर उस से कहा, तू अपनी पुस्तक आप लिये रह। अरे तू हमारे साथ फिर कर चलेगा वा नहीं सो कह। तब खीष्टियान ने कहा, भाई मैं तुम्हारे साथ फिर न जाऊंगा क्योंकि मैं ने हल पर हाथ रक्खा है पीछे देखना मुझे उचित नहीं। (लूक ९ : ६२)

तब हठी ने दुचित्ते को पुकार कर कहा, हे भाई आओ हम लोग इस मूर्ख को छोड़कर अपने घर फिरें क्योंकि कितने मूर्ख बकवादी लोग ऐसे हैं कि जब उन के मन में कोई भावना समाती है तब यह समझते हैं कि हम बहुदर्शी और बुद्धिमान लोगों से भी अधिक ज्ञानवान हैं अर्थात् किसी को कुछ नहीं समझते हैं। दुचित्ते ने कहा, भाई बिना विचारे उपहास करना ठीक नहीं है। जो खीष्टियान कहता है वही कदाचित सत्य ठहरे तो यह अधिकार जिस की चेष्टा वह करता है हमारे सुख सम्पत्ति से उत्तम है इस से मेरे मन में इच्छा उत्पन्न होती है कि मैं भी इस के संग हो लूं। यह सुन हठी ने कहा, क्या इस संसार में इस के समान और भी दो चार मूर्ख हैं भला यह बौरहा तुम्हें कहां ले जायगा इस का भी कुछ निश्चय किया

है । तुम मेरी बात मानकर अपने घर फिर चलो । खीष्टियान बोला, हे भाई दुचित्ता यह कुछ बात नहीं तुम मेरे साथ चलो जो मैं कहता हूं सो सब सत्य जानो और मेरे कहे से अधिक ऐश्वर्य्य भी तुम देखोगे । और जो तुम को निश्चय नहीं हो तो इस पुस्तक को खोलकर बांचो और जो इस में लिखा है उस को विचारो कि वह सत्य है वा असत्य क्योंकि जिस ने यह पुस्तक रची है उस ने अपना रुधिर बहाने से ये सब बातें प्रामाणिक की हैं तब दुचित्ते ने हठी से कहा, सुनो भाई मेरे मन में इस सज्जन की सब बातें सत्य जान पड़ती हैं इस कारण मैं इस साधु के साथ जाने की इच्छा करता हूं फिर जो इस की दशा होगी सो मेरी भी होगी । यह कह खीष्टियान से बोलने लगा, हे मित्र वांछित स्थान का ठीक मार्ग जानते हो वा नहीं ? खीष्टियान बोला, मुझ को मङ्गलवादी नाम पुरुष ने कहा है कि तुम सीधे उस सकरे फाटक की ओर चले जाओ उस स्थान पर जाने से तुम को सम्पूर्ण मार्ग बताया जायगा । यह सुन दुचित्ते ने कहा, तो आओ हम इसी समय चलें । यह बात कह ये दोनों मिलकर उस स्थान की ओर चलने लगे । तब हठी बोला, भाई मैं तो अपने घर फिर जाता हूं मैं ऐसे अज्ञानियों के साथ जाने की इच्छा नहीं करता हूं ।

इतना कह हठी घर को फिर गया पर खीष्टियान और दुचित्ता दोनों परस्पर आनन्द पूर्वक वार्त्तालाप करते हुए आगे बढ़े । तब खीष्टियान बोला, भाई तुम जो मेरे संग हो लिये हो इस से मुझे बड़ा आनन्द हुआ है । सुनो अदृश्य विषयों के कारण जैसे मेरे चित्त को भय और आनन्द हुए वैसे हठी को होते तो कभी हमें पीठ न देता । दुचित्ते ने कहा, हे प्यारे खीष्टियान इस समय हम दो जन बिना तीसरा कोई नहीं है इस कारण तुम

विस्तार पूर्वक कहो कि जहां हमें जाना है वहां कैसे कैसे पदार्थ हैं और उन का भोग हमें किस रीति से प्राप्त होगा। खीष्टियान ने उत्तर दिया, भाई यह बात जैसी मन में स्पष्ट जान पड़ती है वैसी कह नहीं सकता हूं पर तुम्हें जो सुनने की इच्छा है तो मैं अपनी पुस्तक द्वारा कुछ कुछ सुनाता हूं। दुचित्ता बोला, भाई क्या तुम को निश्चय जान पड़ता कि जो जो बातें तुम्हारी पुस्तक में लिखी हैं वे सब सत्य हैं। खीष्टियान ने कहा हां वे सब निःसन्देह सत्य हैं क्योंकि यह पुस्तक सत्यवादी ईश्वर का वचन है। (तीतुस १ : २) दुचित्ते ने कहा, अच्छा तुम्हारी इस पुस्तक में क्या क्या लिखा है सो कह सुनाओ। खीष्टियान ने उत्तर दिया, यह लिखा है कि एक अनन्त राज्य है और हमें अनन्त जीवन दिया जायगा जिस करके हम सर्वदा उस राज्य के अधिकारी होवें। (यशायाह ४५ : १७। योहन १० : २७-२९) दुचित्ता ने कहा, यह तो तुम अच्छा कहते हो पर उस में और क्या लिखा है। खीष्टियान ने कहा, उस में यह भी लिखा है कि उस स्थान में तेजोमय मुकुट हैं और सूर्यसम तेजवान वस्त्र दिया जायगा जो हमारे शरीर को अत्यन्त शोभा देगा। (२ तिमोथिय ४ : ८। प्रकाश. २२ : ५। मत्ती १३ : ४३) दुचित्ता कहने लगा, आहा! ये सब अपूर्व वस्तुएं हैं भला और भी कुछ है। खीष्टियान बोला, हां, वहां दुःख वा क्लेश का लेश नहीं है कारण यह कि वहां का स्वामी आप सब के आंसू पोंछ देता है अर्थात् सब को आनन्दित कर देता है। (यशायाह २५ : ८। प्रकाश. ७ : १६, १७ और २१ : ४) दुचित्ते ने कहा, भला हम वहां जायेंगे तो कौन कौन हमारे संगी होंगे। खीष्टियान ने कहा, वहां महा तेजस्वी दूतों के साथ रहेंगे जिन के तेज से नेत्र

नहीं ठहरते हैं। (यशायाह ६ : २ और १ थिसलोनि. ४ : १६, १७। प्रकाश. ५ : ११) और हम से पहिले जो सहस्रों मनुष्य वहां जा बसे हैं उन से और बीणाधारिणी पुण्यवती कन्या और तेजोमय मुकुटधारी पुरुषों से भी भेंट होगी। (प्रकाश. १४ : १-५ और ४ : ४) और उस स्थान के स्वामी के प्रेम के कारण जिन भक्तों को जगत के लोगों ने पीड़ित वा अग्नि से भस्म वा पशु का आहार वा समुद्र में डुबो के बध किया है उन्हें वहां सुख और अनन्त जीवन और तेजोमय वस्त्र सहित निवास करते देखेंगे। वहां का उत्तम व्यवहार यह है कि वहां कोई किसी से बैर नहीं रखता है सब कोई परस्पर स्नेह सहित बास करते हैं और धार्म्मिकों की नाईं परमेश्वर के साक्षात् खड़े रहते हैं अथवा उस की सेवा करते हैं। (योहन १२ : २५ और २ करिन्थि. ५ : १-४) तब दुचित्ते ने कहा, यह तो बड़ी सुन्दर बात सुनी इस के सुनते ही मेरा चित्त प्रफुल्लित और शरीर पुलकित हो गया है। भला इन सब वस्तुओं का हम क्योंकर भोग करेंगे। किस रीति से हम इस सुख के भागी होंगे। इस का कुछ वर्णन करो। खीष्टियान ने उत्तर दिया कि उस देश के महाराजा ने इस पुस्तक में प्रतिज्ञा कर लिखा है कि इन सब वस्तुओं के लेने की जिस की निष्कपट आकांक्षा हो उस को वे दी जांयगी। (यशायाह. ५५ : १, २। योहन ६ : ३७ और ७ : ३७। प्रकाश. २१ : ६ और २२ : १७।) यह बात सुन दुचित्ता प्रसन्न और हर्षित हो बोला, हे मित्र ! चलो हम लोग शीघ्र वहां चलें। खीष्टियान ने कहा, मेरी पीठ पर बड़ा भारी बोझ है इस से इच्छानुसार शीघ्र चला नहीं जाता है।

फिर मैं स्वप्न में क्या देखता हूं कि ये दोनों मनुष्य परस्पर वार्त्ता समाप्त करते ही उस मैदान के बीचोबीच निराश नाम महा दलदल में जा पड़े और कीचड़ से उन का सम्पूर्ण शरीर भर गया। वे बहुत विलम्ब तक उस में कष्ट पाते रहे विशेष कर ख्रीष्टियान अपनी पीठ पर के बोझ के कारण उस में धंसने लगा। उस समय दुचित्ते ने कहा, भाई कहो यह हमारी क्या दशा हुई। ख्रीष्टियान बोला, भाई मैं नहीं कह सकता हूं। यह बात सुन दुचित्ता क्रोध कर बोला, तुम क्या इतनी देर से इसी अनन्त सुख का वर्णन करते थे। और जो हमारी यात्रा का प्रथम भाग यही है तो शेर भाग में न जानिये कितने ऐसे अनन्त सुख मिलेंगे। मेरा इस घड़ी प्राण बचे तो मेरे स्थान पर तुम ही इस राज्य का भोग करना। ऐसा कह बल से दो तीन बार उछल उस पङ्क से निकल घर का मार्ग लिया फिर उस दिन से ख्रीष्टियान के समीप न आया।

निराशा का दलदल।

इस रीति से ख्रीष्टियान निराश दलदल में अकेला रह गया फिर उछल बिछल करता हुआ उस सकरे फाटक के साम्हने पङ्क के तट पर पहुंचने का अनेक उपाय करते करते तीर के निकट पहुंचा पर पीठ पर के भारी बोझ के कारण उस दलदल से ऊपर हो न सका। फिर मैं स्वप्न में देखता हूं कि उपकारी नाम एक पुरुष उस के निकट आ पूछने लगा कि भाई तुम यहां क्या करते हो। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, महाराज मैं आनेवाले क्रोध से बचने के लिये मङ्गलवादी नाम पुरुष के उपदेश से उस सकरे फाटक पर जाता था जाते जाते इस महापङ्क में फंस गया और मेरी यह दुर्दशा हुई अब मैं क्या करूं। उपकारी ने कहा, भला तुम इधर होकर

उपकारी।

क्यों आप पत्थर की पगडण्डी पूछ कर उस मार्ग से क्यों न गये। ख्रीष्टियान ने कहा, मैं भयातुर हो जो साम्हने पड़ा उसी मार्ग से भागा आता था और अकस्मात् इस दलदल में आ पड़ा। उपकारी बोला, अच्छा हाथ बढ़ा। उस ने अपना हाथ पसारा और उपकारी ने उस का हाथ पकड़ उसे पङ्क से निकाल कर कहा, अच्छा अब निःशंक चले जाओ। (भजन ४० : २)

उस समय मैं ने उपकारी के निकट जाकर पूछा, महाशय नाशनगर से उस फाटक पर जाने का यही मार्ग है तो यह दीन यात्रियों के लिये सुन्दर चौरस क्यों नहीं बनाया गया। इस महापङ्क में होकर जाता है तो यह क्यों नहीं सुधारा गया। उस ने कहा. सुनो यह महापङ्क किसी रीति से सुधरती नहीं क्योंकि यह पापजनित जञ्जालों के एकत्र होने का स्थान है और निराश पङ्क नाम से विख्यात है अर्थात् पापिष्ठ लोग जो अपना उद्धार करने में असमर्थ हैं इस बात के सोचने से उन के चित्त में जो भय सन्देह और संशय उत्पन्न होते हैं वे सब मिलकर इसी स्थान में आ एकत्र होते हैं उसी हेतु से इस स्थान की मिट्टी ऐसी चिकनी है कि पैर रखते ही लोग फिसल पड़ते हैं और वे इस कारण कायर हो जाते हैं। राजा की तो यह अभिलाषा नहीं है वरन् राजा की आज्ञा से उस के सेवक इस आशा से कि अब भी यह स्थान किसी रीति से सुधर जाय उन्नीस सौ वर्ष से परिश्रम करते हैं। इस में हितोपदेश नाम अच्छी मिट्टी की लाखों गाड़ी डाली गई जिसको वे राजा के समस्त अधिकार से लाये हैं और ज्ञानवान लोग कहते हैं कि जिन उत्तम उत्तम द्रव्यों से यह दलदल सुधर सके उन में से यह हितोपदेश मृत्तिका सब से उत्तम है तौभी यह स्थान नहीं सुधरा वह आज

जो निराश पङ्क नाम से विख्यात है। वे जो चाहें सो करें पर यह स्थान ऐसाही बना रहेगा। सत्य है कि महाराजा की आज्ञा से इस में लोगों के पैर रखने के लिये अनेक दृढ़ पत्थर गाड़े गये हैं तथापि कालान्तर में पूर्वोक्त भ्रमादि जञ्जाल की धारा जो इस स्थान में आकर गिरती है उस से वे पत्थर ढंप जाते हैं और जो पत्थर कुछ कुछ दिखाई भी देते हैं उन पर पैर रखने से मनुष्यों के सिर घूम जाते और वे इस महापङ्क में गिर पड़ते हैं परन्तु आगे सकरे फाटक में प्रवेश करते ही उन को अच्छी सड़क मिल जाती है। (१ शमुएल १२ : २३। यशायाह ३५ : ८)

फिर मैं स्वप्न में क्या देखता हूं कि वही दुचित्ता अपने घर पहुंचा और उस के पड़ोसी लोग उस पास आ उस के फिर आने के विषय में उस से बात करने लगे। उन में से किसो ने तो कहा, तूने अच्छा किया जो लौट आया। कोई बोला, यह वही बावला है जो खीष्टियान के साथ प्राण देने गया था उस समय यह भी उस के साथ बौराय गया था। दूसरे ने उसे कायर बता के उस की बड़ी निन्दा कर कहा, अरे! कहां तो तू उस के साथ प्राण देने गया था कहां अब तू थोड़े दुःख से घबराकर भाग आया जो मैं इस रीति से जाता तो कभी ऐसे अल्प दुःख से फिर कर न आता। उस की ऐसी ऐसी बातें सुन दुचित्ता लज्जित हो नीचा सिर कर कहा। फिर कितनी बेर में उस को ढाढ़स हुआ तब वह और पड़ोसी मिलकर खीष्टियान की निन्दा करने लगे।

तीसरा अध्याय ।

इस रीति से खीष्टियान अकेला चला जाता था कि अकस्मात् एक दिशा से एक मनुष्य उस की ओर आते दिखाई दिया फिर थोड़ी देर पीछे वह उस से आ मिला। उस का नाम लोकबुद्धी था और वह सांसारिकोपाय नाम बस्ती का रहने वाला था जो भारी बस्ती और खीष्टियान की जन्मभूमि के निकट थी। नाशनगर से खीष्टियान के निकल जाने की वार्त्ता कुछ उसी नगर में फैली हो सो नहीं किन्तु आसपास की सभी बस्तियों में फैल गई थी। इस हेतु इस लोकबुद्धी ने खीष्टियान की वार्त्ता जान उसे अत्यन्त परिश्रम से उदास चित्त मार्ग में चलते देख और उसे कुछ कुछ पहचान कर कहा, भाई तुम इतना भारी बोझ लिये कहां जाते हो ? खीष्टियान ने उत्तर दिया, मैं बड़ा दीनहीन दुराचारी हूं मेरे समान भारग्रस्त कभी कोई न हुआ होगा परन्तु मैं ने सुना है कि आगे जो एक सकरा फाटक दिखाई देता है उस में जाने से मेरा यह बोझ उतर जायगा इस निमित्त मैं वहां जाता हूं। लोकबुद्धी ने कहा, तुम्हारे स्त्री पुत्रादि हैं वा नहीं। खीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, मेरे सब कोई हैं परन्तु इस भारी बोझ के कारण आगे की भांति अब उन की सङ्गति से मुझे आनन्द वा सुख प्राप्त नहीं होता है किन्तु चित्त और भी उदास रहता है। लोकबुद्धी ने पूछा कि भला मैं जो तुम को कोई परामर्श दूं तो तुम मानोगे वा नहीं। खीष्टियान ने कहा, हां, जो तुम्हारा उत्तम परामर्श हो तो मैं क्यों न मानूं मुझे तो उत्तम परामर्श से प्रयोजन है। लोकबुद्धी बोला, सुनो एक बात तो मैं यह कहता हूं कि तुम किसी प्रकार इस बोझे से छूट जाओ क्योंकि जब तक यह

लोकबुद्धी ।

तुम्हारा बोझ न उतर जायगा तब तक तुम्हारा चित्त स्थिर न होगा यहां लों कि परमेश्वर ने जो जो उत्तम पदार्थ तुम को दिये हैं उन के सुख का भोग नहीं कर सकोगे। यह सुन खीष्टियान ने कहा, महाशय मैं इसी उपाय में लगा हूं पर किसी रीति से इस बोझ को दूर नहीं कर सकता हूं और न मैं इस देश में किसी को देखता हूं जो मेरा यह बोझ दूर करे। इस कारण मैं जिस रीति से पहिले कह चुका उसी रीति से इस बोझ के दूर करने निमित्त इस मार्ग से जाता हूं, लोकबुद्धी ने कहा, इस बोझ से मुक्त होने के निमित्त इस मार्ग से जाने का परामर्श तुम को किसने दिया। खीष्टियान बोला, एक पुरुष ने जो मुझे अति मान्य देख पड़ा और मुझे स्मरण होता है कि उस का नाम मङ्गलवादी है। यह सुन लोकबुद्धी ने कहा हाय! उस के परामर्श का क्या ठिकाना। सुनो उस ने जो मार्ग तुम्हें बताया है जो तुम उस के बचन के अनुसार उस मार्ग में चलोगे तो उस को अवश्य तुम अत्यन्त भयानक और दुर्गम पाओगे। मैं देखता हूं कि तुम इस मार्ग में अभी कुछ क्लेश पा चुके हो क्योंकि तुम्हारा सम्पूर्ण शरीर निराश दलदल की कीचड़ से भर रहा है। सुनो जिस मार्ग से तुम जाते हो तिस में क्लेशों का प्रथम चिह्न इस पङ्क को जान लो। मैं तुम से अधिक वृद्ध हूं इस लिये उचित है कि तुम मेरी बात मानो। जिस पथ में तुम जाते हो उस में तुम्हारा श्रम करना व्यर्थ है इस पथ में सिंह, सर्प्प, बिच्छू, खङ्ग, क्षुधा, पिपासा, भय, लज्जा और अन्धकारादि अनेक दुःख हैं और मृत्यु भी है इस बात की सत्यता अनेक साक्षियों से प्रामाणिक ठहरी है। फिर तुम उपकारी की बात सुन बिना विचारे अपना प्राण क्यों नष्ट करते हो। तब खीष्टियान ने कहा, सुनो, तुम ने इस पथ में जितने भयङ्कर

विषयों का वर्णन किया है उन सब से मेरी पीठ पर का बोझ विशेष भयंकर है। इस कारण जो इस मार्ग में चलने से मैं इस बोझ से मुक्ति पाऊं तो भाई जो चाहे सो हो मैं कुछ नहीं डरता हूं। लोकबुद्धी ने कहा, भला यह बोझ पहिले पहिल तुम कहां से लाये खीष्टियान बोला यह पुस्तक जो मेरे पास देखते हो इसी के पढ़ने से इस बोझ का ज्ञान मुझे हुआ। लोकबुद्धी ने कहा, हां, मैं जानता हूं। जैसे जिस का थोड़ा बल हो वह किसी बड़े कार्य्य की अभिलाषा करे और अपना मनोरथ असाध्य जान बिकल हो वैसी ही मुझे तुम्हारी दशा दिखाई देती है। ऐसी बिकलता से मनुष्य बौराय जाता है और केवल बौराय नहीं जाता है किन्तु अनजाने अनबूझे विषय के प्राप्त करने की चेष्टा करता हुआ बड़ी भयङ्कर आपदा में पड़ता है। खीष्टियान ने कहा, मैं तो जानता हूं जिस बात की चेष्टा करता हूं वह यह है कि मैं इस भारी बोझ से मुक्ति पाऊं। लोकबुद्धी ने कहा जो तुम स्थिर चित्त से मेरी बात सुनो तो मैं तुम्हें एक ऐसा मार्ग बताऊं जिस में चलने से तुम उस मार्ग की सारी आपदा से बचोगे और तुम्हारा मनोरथ भी सिद्ध होगा। सुनो जिस मार्ग से तुम जाते हो उस में ऐसी ऐसी घोर आपदा भी हैं और फिर उस मार्ग से सुखभोग की चेष्टा करना व्यर्थ है। परन्तु जो मार्ग मैं तुम को बताता हूं उस से होकर बहुत शीघ्र अपने मनोरथ को पहुंचोगे और सब आपदा से बचकर अनेक मित्रों से सुख और शान्ति पाओगे। खीष्टियान ने कहा, महाशय कृपा कर यह भेद मुझ से खोलकर कहो। लोकबुद्धी कहने लगा, सुनो, यहां से थोड़ी दूर एक लौकिकधर्म्म नाम गांव है वहां व्यवस्थानुगामी नाम एक सज्जन पुरुष रहता है वह बड़ा प्रवीण और प्रसिद्ध है और जैसा तुम्हारी पीठ पर बोझ है

ऐसे बोझ से दूर करने में बड़ा निपुण है। मैं ने देखा कि उस ने ऐसे ऐसे बहुत भारग्रस्त लोगों का उपकार किया है वरन् कितने मनुष्यों को जो बोझ के मारे अत्यन्त विकल थे उन का भी उस ने उद्धार किया है उस के निकट जाने से क्षण भर में तुम्हारा बोझ उतर जाएगा। उस का घर यहां से कोस भर भी नहीं है। कदाचित् वह घर पर न हो तो शील नाम उस का पुत्र अवश्य होगा वह अपने पिता की नाईं निपुण है वह तुम्हारा काम कर देगा। इस कारण मैं कहता हूं कि तुम वहां जाओ वहां जाने से अवश्य तुम अपने बोझ से मुक्ति पाओगे। मेरी यह इच्छा नहीं है कि तुम अपने नगर को फिर जाओ और जो तुम्हारी भी यह इच्छा नहीं तो तुम इस लौकिकधर्म्म ग्राम में ठहरकर अपने स्त्री पुत्रादि को यहां बुलवा भेजो क्योंकि यहां बहुत से घर सूने पड़े हैं थोड़े भाड़े का तुम्हें घर मिलेगा यहां खाने की सब वस्तु भी सस्ती हैं और सब से उत्तम बात यह है कि यहां सत् व्यवहार पूर्वक सज्जन पड़ोसियों में बड़े आदर सहित तुम्हारा निर्वाह होगा।

यह सुन खोष्टियान ने कुछ विलम्ब तक विचार कर मन में ठहराया कि यह पुरुष जो कुछ कहता है सो सब सत्य हो तो इस के परामर्श को मानना उत्तम है। इतनी बात मन में ठान फिर पूछने लगा कि मैं उस सज्जन पुरुष के घर किस मार्ग होकर जाऊं। लोकबुद्धी ने कहा, तुम्हें यह ऊंचा पहाड़ दिखाई देता है वा नहीं। खोष्टियान ने उत्तर दिया, हां, यह तो स्पष्ट ही दीखता है। लोकबुद्धी ने कहा, इसी पर्वत के पास से होकर जाना पड़ेगा वहां जाकर जो घर पहिले तुम्हें दिखाई दे वही उस का घर है।

इसके पीछे खोष्टियान इस के बचन के अनुसार अपना पहिला मार्ग छोड़ व्यस्थानुगामी के घर जाने के निमित्त धीरे

धीरे उस ऊंचे पर्वत के निकट गया । वह पर्वत अत्यन्त ऊंचा था और उस मार्ग के ऊपर झुका हुआ दीखता था यह देख खीष्टियान खड़ा हो मन में सोचने लगा कि यह कहीं मेरे सिर पर न आ पड़े । इस भय से उस के निकट न गया वरन् वहां खड़ा हो विचारने लगा कि अब मैं क्या करूं पर कुछ निश्चय न कर सका और पूर्व पथ की अपेक्षा इस पथ में उस का बोझ उस को विशेष भारी जान पड़ा । फिर देखा कि उस पर्वत से अग्नि निकलती है । (यात्रा १९ : १६, १८) इसे देख कहने लगा कि मुझे समझ पड़ता है कि मैं इस अग्नि से भस्म हो जाऊंगा । इतना कहते ही भय के मारे पसीने में डूब थर थर कांपने लगा । (इब्रि. १२ : २१) तब वह पछताकर कहने लगा कि मैं ने लोकबुद्धी की बात क्यों मानी यह कह बड़ा खेद करने लगा ।

मङ्गलवादी से भेंट ।

इतने में देखता क्या है कि मङ्गलवादी उस से भेंट करने को चला आता है उसे देखते ही वह लज्जित हो सिर नीचा कर खड़ा रहा । तब मङ्गलवादी ने तेवड़ी चढ़ा उस से कहा तू यहां खड़ा क्या करता है । खीष्टियान लज्जा के मारे चुप हो रहा । तब फिर मङ्गलवादी ने उस से पूछा, जिस मनुष्य को मैंने नाश नगर के बाहर रोते देखा क्या तू वह मनुष्य नहीं है ? खीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, महाराज मैं वही मनुष्य हूं । तब मङ्गलवादी ने कहा, मैंने तुझे सकरे फाटक की ओर जाने को कहा था नहीं । खीष्टियान बोला, हां, महाराज तुम ने कहा था । मङ्गलवादी बोला, तू जो ऐसा शीघ्र उस पथ को छोड़ यहां आकर खड़ा है इसका कारण क्या है ? खीष्टियान ने कहा, निराश पङ्क से पार होते ही एक सज्जन पुरुष ने कहा कि तुम इस गांव में जाओ वहां एक पुरुष तुम्हें ऐसा मिलेगा कि तुम्हारा यह बोझ

शीघ्र ही उतार देगा। मङ्गलवादी ने पूछा, वह कैसा मनुष्य था। खीष्टियान ने कहा, वह एक कुलवन्त पुरुष देख पड़ता था उसने मुझे बहुत सी बातें कहीं उस की वार्त्ता से जब मुझे बोध हुआ तब मैं इस मार्ग में होकर आया परन्तु इस पहाड़ को देख भयमान हो खड़ा हो रहा हूं कि कहीं यह पर्वत मेरे ऊपर न गिर पड़े। मङ्गलवादी बोला, भला उस पुरुष ने तुझ से क्या कहा। खीष्टियान ने कहा कि उस पुरुष ने मुझ से पूछा तुम कहां जाते हो मैंने उसे बता दिया। मङ्गलवादी ने पूछा, फिर उसने क्या कहा। खीष्टियान बोला, उसने कहा कि तुम्हारे स्त्री पुत्रादि हैं वा नहीं। उसको मैंने उत्तर दिया कि हैं तो सही परन्तु मैं अपनी पीठ के इस बोझ से बड़ा व्याकुल हो रहा हूं इस कारण अब मुझे उनके साथ में पहिला सा सुख नहीं होता। मङ्गलवादी ने पूछा कि इस बात का उसने क्या उत्तर दिया। खीष्टियान ने कहा कि उसने मुझ से यह बात कही कि तुम इस बोझ से मुक्ति पाने की चेष्टा करो। मैंने कहा, हां, मैं उसी उपाय में हूं और इसीलिये मैं उस सकरे फाटक को भी जाता हूं जहां मुझे मुक्ति पाने का उपदेश मिलेगा। तब उसने मुझ से कहा मैं तुम्हें दूसरा मार्ग बताता हूं तुम इस मार्ग में होकर जाओ यह आपदा रहित सुगम पथ है। इस मार्ग में जाने से तुम एक पुरुष के घर पर पहुंचोगे जो बोझ उतारने में बड़ा प्रवीण है। मैं उस की बात का विश्वास कर बोझ उतर जाने की इच्छा से इस मार्ग में होकर आया और पहिला मार्ग मैंने छोड़ दिया। अब यहां अपने नेत्रों से इस पर्वत को देख भयातुर हो खड़ा हूं और विचारता हूं कि अब क्या करूं पर मुझे कोई उपाय सूझता नहीं। मङ्गलवादी ने कहा भला जो हुआ सो हुआ अब इस समय मैं तुझ को ईश्वर के वचन के कुछ वाक्य सुनाता हूं तू कुछ ठहर कर सुन खीष्टि-

यान डरता कांपता खड़ा रहा। तब मङ्गलवादी कहने लगा कि देखो बालनेहारे से मुंह मत फेरो क्योंकि यदि वे लोग जिन्होंने पृथिवी पर आज्ञा देनेहारे से मुंह फेरा नहीं बचे तो हम लोग जो स्वर्ग से बोलनेहारे से फिर जावें तो किसी भांति न बचेंगे। (इब्रि. १२ : २५) फिर कहा कि विश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा परन्तु जो वह हट जाय तो मेरा मन उस से प्रसन्न नहीं होगा। इब्रि. १० : ३८) फिर उस ने इस रीति से इन बातों का तात्पर्य्य समझा कर कहा कि सुन जो पुरुष इन सब दुःखों को भोग करता है सो तू ही है क्योंकि तू सर्वप्रधान ईश्वर के वाक्य का निरादर कर सत्य पथ को त्याग अपना नाश आप ही किया चाहता है।

यह सुन खीष्टियान कम्पायमान हो उसके चरणों पर गिर गिड़गिड़ाकर कहने लगा कि अब मुझ अधम का कहीं कुछ ठिकाना नहीं। मङ्गलवादी ने उस की दीनता देख उस का हाथ पकड़ कहा, सब प्रकार का पाप और निन्दा मनुष्यों की क्षमा की जायगी इस कारण तू अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो। (मत्ती १२ : ३१, योहन २० : २७) खीष्टियान इतनी बात सुन कुछ सुस्थिर हो कांपता कांपता मङ्गलवादी के आगे खड़ा हुआ। तब मङ्गलवादी इस रीति से कहने लगा कि जिस ने तुझे बहकाया और जिस के पास तुझे भेजा उन दोनों का सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं तुझ से कहता हूं तू चित्त लगाकर सुन। जिस के साथ तेरी भेंट हुई उसका नाम लोकबुद्धी है वह केवल सांसारिक उपदेश चाहता है इसलिये लौकिकधर्म्म नामक ग्राम के भजनालय में जाया करता है। (१ योहन ४ : ५) वह जो सांसारिक उपदेश को बहुत चाहता है इस का कारण यही है कि उस के मानने से क्रूश से बचता है अर्थात् क्रूश पर मारे गये

खीष्ट के धर्म्माचरण में जो क्लेश होता है उस से बचा रहता है। (गलाति ६ : १२) इस कारण वह जगत में लोगों को अपने उस मत के अवलम्बी करने की इच्छा से मेरे यथार्थ मत से उन्हें रोकता है इसी से उस का नाम जो लोकबुद्धी रखा गया है वह यथार्थ है। उसके उपदेश में ये तोन बातें अति घृणा योग्य हैं। एक तो यह कि उस ने तुम को मार्ग से फिरा दिया। दूसरी यह इस बात का विश्वास तुम्हारे हृदय में उत्पन्न करने की चेष्टा की कि क्रूश तुच्छ विषय है। तीसरी यह कि तुम को बहका कर इस मृत्यु मार्ग में ले आने का यत्न किया।

प्रथम विषय—उस ने जो तुम को सत्य पथ से भुलाया और तुम ने जो उस की बात मानी यह बड़ा अधर्म्म हुआ क्योंकि लोकबुद्धी ऐसे मनुष्य को कथा के कारण ईश्वर की आज्ञा को तुच्छ जान के उसे भंग करना बड़ा दुष्कर्म्म है। देखो ईश्वर कहता है सकेत फाटक से प्रवेश करने का साहस करो। (लूक १३ : २४) यह वही सकरा फाटक है जिस से मैं ने तुम को प्रवेश करने का उपदेश दिया क्योंकि वह फाटक कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। (मत्ती ७ : १४) फिर यह दुष्ट मनुष्य तुम को उस मार्ग से फिराकर तुम्हारा नाश किया चाहता था इस कारण एक तो उस ने जो खोटी सम्मति दी दूसरे तुम ने जो उस का परामर्श माना इन दोनों को घृणा के कार्य समझो।

द्वितीय विषय—उस पुरुष ने जो तुम को क्रूश को तुच्छ जानना समझाया इस से तुम उस के उपदेश को घृणा के योग्य समझो क्योंकि क्रूश को मिश्र देश के सारे धन से भी अधिक प्रिय जानना तुम्हें उचित है। (इब्रि० ११ : २५, २६) स्वर्ग और पृथिवी के अधिपति ईश्वर ने कहा कि जो कोई अपना प्राण

बचाया चाहेगा सो उसे खोवेगा और यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी माता और पिता और स्त्री और लड़कों और भाइयों और बहिनों को और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। (मार्क ८ : ३५) योहन १२ : २५। मत्ती १० : ३९। लूक १४ : २६।) इस कारण मैं तुम से कहता हूं कि सत्यवादी ईश्वर के वचन के प्रमाण के अनुसार जिस क्रूश बिना अनन्त जीवन का प्राप्त होना असाध्य है उस क्रूश को कोई मनुष्य जो तुम से कहे कि यह तुम्हारी मृत्यु का हेतु होगा तो इस बात से तुम अत्यन्त घृणा करना अर्थात् उसे कभी न मानना।

तृतीय विषय—वह दुष्ट जो तुम को मृत्यु के मार्ग में ले आया उस बात से भी तुम को घृणा करना उचित है। और जिस के पास उस ने तुम को भेजा था वह कौन है और तुम्हारा बोझ दूर करने को कैसा असमर्थ है इस बात को विचारोगे तो तुम्हें अवश्य घृणा होगी। तुम विश्राम पाने निमित्त व्यवस्थानुगामी नाम जिस पुरुष के पास भेजे गये वह एक दासीपुत्र है और उस की माता अपने सन्तान सहित अब भी दासत्व की दशा में पड़ी है। (गलाति० ४ : २१-२७) वह सीनई पर्वत स्वरूप है अर्थात् जिस पर्वत को तुम अपने ऊपर गिरते देख त्रासयुक्त हुए हो वह पर्वत उसी स्त्री का दृष्टान्त है। फिर वह यदि अपने सन्तान सहित अब तक आप ही दासत्व में है तो कहो तुम ऐसी स्त्री से किस भांति मुक्ति पाने की इच्छा करते हो। यह व्यवस्थानुगामी तुम्हारा भार किसी भांति दूर नहीं कर सकता। उस ने आज तक किसी को भार से मुक्ति नहीं दी और अब भी उस का मुक्ति देना असम्भव जानो क्योंकि व्यवस्था के कर्म्मों के द्वारा कोई मनुष्य धर्म्मी नहीं ठहर सकता है और

न अपने बोझ से छूट सकता है। इस से यह समझो कि लोक बुद्धी मिथ्यावादी और व्यवस्थानुगामी छली है और शील नाम उस का पुत्र कपटी है वह सज्जन दृष्टि आने से भी तुम्हारा कुछ उपकार नहीं कर सकता। इस लिये तुम मेरी बात पर विश्वास करो कि उस अज्ञानी मनुष्य से जो जो बातें तुम ने सुनी हैं उन में कुछ सार नहीं है। उस का यही अभिप्राय है कि तुम को सत्पथ से फेर कर परित्राण से रहित करे।

इतना कह मङ्गलवादी ने अपने वचन को प्रमाणिक करने निमित्त ऊंचे शब्द से ईश्वर से बिनती की। तत्काल सीनई पर्वत से अग्नि निकली और आकाशवाणी हुई। यह देख खीष्टियान अति भयग्रस्त हो गया। ईश्वरीय वाणी यह हुई कि जितने लोग व्यवस्था के कर्म्मों के अवलम्बी हैं वे सब शापवश हैं क्योंकि लिखा है कि हर एक मनुष्य जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातें पालन नहीं करता है श्रापित है। (गलाति. ३ : १०)

यह बात सुन खीष्टियान जीवन से हाथ धो मृत्यु की आशा कर अति दुःखित हो रोने लगा और जिस समय लोकबुद्धी से भेंट हुई थी उस समय को धिक्कारने लगा। फिर उस की बात स्वीकार करने निमित्त सहस्र बार अपने को महामूर्ख समझ खेद करने लगा। और लोकबुद्धी के कहने से सांसारिक परामर्श मान सुपथ छोड़ कुपथ में चला इस से अत्यन्त लज्जित हुआ।

फिर खीष्टियान ने मङ्गलवादी से पूछा, हे महाराज मैं अब फिर कर जो उस सकरे फाटक की बाट धरूं तो मेरे पहुंचने का कुछ भरोसा है वा नहीं। मैं ने जो दुष्कर्म्म किया है इस कारण वहां के लोग मुझे दुरदुरा के निकाल तो न देंगे। मैं बिना समझे बूझे उस मनुष्य की बात मानकर अब बहुत पछताता हूं। क्या

मेरा यह अपराध क्षमा होने योग्य है। तब मङ्गलवादी ने कहा, हां, यह तेरा बड़ा अपराध हुआ क्योंकि तू ने सुपथ छोड़ कुपथ में पग दिया ये दोनों बातें तू ने अनुचित की हैं तौ भी जो पुरुष उस फाटक पर रहता है वह तुझे ग्रहण करेगा क्योंकि वह मनुष्यों का हितकारी है; किन्तु देख सावधान रहियो फिर इस सुपथ को मत त्यागियो कदापि जो ईश्वर की क्रोधरूपी अग्नि क्षण मात्र भी भड़के उस से तू मार्ग ही में भस्म हो जाएगा। (गीत २:१२) यह सुन खीष्टियान ने फिर वहां जाने का उद्योग जो किया तो मङ्गलवादी ने उस के सिर पर हाथ रख प्रसन्न हो आशीर्वाद दे बिदा किया। तब खीष्टियान ने बड़ी शीघ्रता से गमन किया और मार्ग में किसी से बात न की वरन् जिस किसी ने उस से कुछ पूछा उस को उत्तर भी न दिया और किसी रीति से इस निषिद्ध भूमि में बिलम्ब न होने पावे वह विचार कर दौड़ता चला गया। फिर जिस पथ को पहिले छोड़ आया था उसी पथ में प्रवेश करने से उस का चित्त प्रसन्न हुआ।

चौथा अध्याय।

हितार्थी से भेंट।

फिर खीष्टियान जाते जाते उस फाटक पर पहुंचा क्या देखता है कि उस के ऊपर ऐसा लिखा है कि खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। (मत्ती ७:७) खीष्टियान यह बांच कर उस फाटक को बारम्बार खटखटाने और यह कहने लगा।

चौपाई।

करन चहों अब इत परवेशा . खाया मैं कत कठिन कलेशा।
है कोउ मम दुख टारनिहारा . खोलि कृपा करि देहि किवारा।
यद्यपि कृपापात्र मैं नाहीं . तद्यपि जान चहों यहि माहीं।
कृपा होहि मोपर अस जाकी . करिहौं स्तुति सरगहु महं ताकी।

फिर थोड़ी देर में हितार्थी नाम एक धीर पुरुष फाटक पर आ पूछने लगा, कौन है जो फाटक को खटखटा रहा है। तुम कहां से आये हो और क्या चाहते हो। तब खीष्टियान ने उत्तर दिया, मैं पापी दुःखी बोझ से दबा हुआ यहां आ खड़ा हूं। मैं नाश नगर से आया हूं और आनेवाले क्रोध से बचने निमित्त सियोन पर्वत को जाऊंगा। मैं ने सुना है कि इसी फाटक में होकर वहां का मार्ग है इस कारण मैं इस फाटक से प्रवेश किया चाहता हूं आप की क्या आज्ञा है। हितार्थी ने कहा, मैं तुम्हारे आने से बहुत प्रसन्न हूं। ऐसा कह उस ने फाटक खोला।

हितार्थी।

जब खीष्टियान उस के भीतर जाने को उपस्थित हुआ तब हितार्थी ने झट उस का हाथ पकड़ उसे भीतर खींच लिया। खीष्टियान ने पूछा इसका क्या कारण है उसने कहा इस फाटक के निकट एक गढ़ है उस में बालजीबूल नाम सेनापति और उसके संगी रहते हैं जब वे इस फाटक पर किसी को आते देखते हैं तब बाण मारते हैं। खीष्टियान बोला, इस बात के सुनने से मुझे भय सहित आनन्द होता है।

फिर जब खीष्टियान फाटक के भीतर आया तब हितार्थी ने पूछा कि इस फाटक पर आने का परामर्श तुम को किस ने दिया? खीष्टियान ने कहा, मङ्गलवादी नाम एक पुरुष ने मुझ से कहा कि तू उस फाटक पर जाकर किवाड़ खटखटाइयो और

यह बात कहा कि जो तुझ करना चाहिये उस स्थान का द्वार-पाल तुझे कह सुनावेगा इस कारण उसके आज्ञानुसार मैं इस स्थान पर आया हूं। हितार्थी ने कहा, तुम्हारे सन्मुख खुला हुआ

ख्रीष्टियान सकरे फाटक पर पहुँचता है।

फाटक है जिसके बन्द करने की सामर्थ्य किसी को नहीं है। ख्रीष्टियान बोला, हे महाशय! मुझ पर जो आपदा पड़ी है उस के द्वारा अब मुझे आनन्द होने लगा। हितार्थी ने पूछा, तुम जो

यहां अकेले आये इस का क्या कारण है ? खीष्टियान न उत्तर दिया, महाराज मेरे चित्त में जैसा भय व्यापा वैसा किसी पड़ोसी के चित्त में नहीं व्यापा इसलिये कोई मेरे साथ नहीं आया । हितार्थी ने पूछा, तुम्हारे यहां आने का समाचार कोई जानता था वा नहीं ? खीष्टियान ने कहा, हां, यहां आने के समय मुझे आते देख मेरे स्त्री पुत्रादि ने बहुत पुकारा कि तू फिर लौट आ । फिर मेरे पड़ोस के किसी किसी मनुष्य ने मेरे फिरने के निमित्त रो रोकर अनेक विनती की पर मैं तो अपने कानों में अङ्गुली दे उनकी बात सुनी अनसुनी कर चला आया । हितार्थी ने कहा तुम को समझाने निमित्त कोई तुम्हारे पीछे न आया ? खीष्टियान ने कहा, हां, हठी और दुचित्ता नाम दो मनुष्य आये थे पर जब मुझे फिरा न सके तब हठी तो मेरा तिरस्कार कर चला गया परन्तु दुचित्ता कुछ दूर तक मेरे साथ हो लिया । हितार्थी ने कहा वह यहां तक क्यों न आया ? खीष्टियान बोला, हे महाराज ! वह निराश पङ्क लों मेरे साथ आया वहां पहुंचते ही हम दोनों उस पङ्क में फंसे तब उस का चित्त उदास हुआ और उसने यहां तक आने का साहस न किया । फिर वह किसी भांति उस पङ्क से निकल मुझ से कहने लगा कि तू ही मेरे स्थान पर उस स्थान का सुख भोग करियो यह बात कहकर वह हठी के पीछे हो लिया और मैं इस फाटक की ओर चला आया । यह सुन हितार्थी बोला, हाय ! हाय !! वह क्या ऐसा अभागी था कि इतनी दूर आ इस स्वर्गीय अतुल्य सुख को तुच्छ जान उस के पाने के लिये ऐसे अल्प कष्ट को न सह सका । खीष्टियान बोला, हे महाराज ! जैसे दुचित्ते की बात आप ने सुनी तैसे जो मैं अपनी कथा सम्पूर्ण कह सुनाऊं तो उस के और मेरे बीच आप कुछ भी भेद न मानेंगे; क्योंकि जैसे वह नाश नगर को

अपने घर चला गया तैसे मैं भी लोकबुद्धी के सांसारिक परामर्श से मृत्यु पथ में चला गया था। हितार्थी ने पूछा, क्या तुम को लोकबुद्धी से भी भेंट हुई? उस ने तुम को सुख पाने निमित्त व्यवस्थानुगामी के पास जाने का परामर्श दिया होगा। वे दोनों छली हैं। क्या तुम ने उस के छलमय बचन को माना? ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, महाराज उस के परामर्श के अनुसार मैं जहां लों जा सका तहां लों गया अर्थात् व्यवस्थानुगामी के घर के निकट जो पर्वत है उस के समीप जा पहुंचा परन्तु मुझे यह भ्रम हुआ कि पर्वत मेरे ऊपर गिर पड़ेगा इस भय से मैं भयातुर हो वहां खड़ा रहा। हितार्थी ने कहा, वह पर्वत अनेकों की मृत्यु का कारण हुआ और अनेकों की मृत्यु का कारण होगा। तुम जो उस से चूर्ण न भये परन्तु बच निकले यह अपना बड़ा भाग्य समझो। ख्रीष्टियान ने कहा, हां, महाराज आप सत्य कहते हैं। मैं उस समय अति भयातुर और चिन्ता-यमान हो खड़ा था कि इतने में मङ्गलवादी ने आ मुझ से भेंट की इस से मेरा प्राण बचा। कदापि वह न आता तो न जानिये मेरी क्या गति होती। मैं इस को ईश्वर का बड़ा अनुग्रह मानता हूं कि वह फिर मेरे पास आया क्योंकि वह न आता तो मैं कभी यहां न पहुंचता। मैं आया तो हूं पर मुझ ऐसे अधम को आप के साथ वार्त्ता करने की योग्यता नहीं किन्तु मैं उस पर्वत के नीचे दबकर मरने के योग्य था। मैं ऐसा अयोग्य होकर भी इस स्थान में आने पाया यह जो कृपा मुझ पर हुई है उस का वर्णन मुझ से नहीं हो सकता। हितार्थी ने कहा, इस स्थान के आने के पहिले जो कुछ किया हो उस के निमित्त हम किसी को ग्रहण के अयोग्य नहीं जानते हैं और कोई किसी प्रकार यहां से निकाला न जायगा। (योहन ६ : ३७) हे प्रिय

ख्रीष्टियान ! तुम मेरे साथ कुछ आगे चलो मैं इस पथ के विषय में तुम्हें कुछ उपदेश करूंगा। जब ख्रीष्टियान उस के साथ कुछ दूर गया तब उस ने कहा आंख उठाकर आगे देखो। वह जो सकरा मार्ग दिखाई देता है वही तुम्हारा पथ है। वह पितृगण और भविष्यद्वक्ताओं और ख्रीष्ट और उस के शिष्यों से बनाया गया है और टकुए की नाईं सीधा चला गया है कहीं टेढ़ा नहीं है इसी मार्ग से तुम को जाना पड़ेगा। ख्रीष्टियान ने पूछा, इस मार्ग में कोई दूसरी सड़क दहिने वा बाएं तो नहीं आ मिली है जिस करके यात्री अपने मार्ग से भटक जाय? हितार्थी ने कहा, हां, इस में अनेक मार्ग आकर मिले हैं पर वे सब टेढ़े और चौड़े हैं परन्तु यह मार्ग सीधा और सकरा चला गया है। इसी चिह्न से तुम अपना मार्ग पहचानोगे। (मत्ती ७ : १४)

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि ख्रीष्टियान ने हितार्थी से कहा कि मैं ने अपनी पीठ पर के बोझ से अब लों मुक्ति नहीं पाई है कारण यह है कि सहायता बिना मैं मुक्ति पा नहीं सकता हूं। सो हे महाराज ! क्या आप इस बोझ से मुक्ति पाने के लिये मेरी सहायता कर सकते हैं ? हितार्थी ने कहा, सुनो जब तक तुम मोक्षस्थान पर न पहुंचो तब तक धीरज धर स्थिर चित्त होओ। वहां पहुंचते ही तुम्हारी बोझ आप से आप तुम्हारी पीठ पर से गिर पड़ेगा। यह बात सुन ख्रीष्टियान कमर बांध, जाने को उपस्थित हुआ। तब हितार्थी ने कहा, तुम थोड़ी दूर आगे बढ़ के अर्थकारक के घर पर पहुंचोगे वहां जाकर उस का द्वार खटखटाना तब वह तुम को उत्तम विषयों की शिक्षा देगा। फिर ख्रीष्टियान ने हितार्थी को प्रणाम किया उस ने "ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करे" यह आशीर्वाद दे ख्रीष्टियान को बिदा किया।

पांचवां अध्याय ।

अर्थकारक के घर में ।

इस पीछे खीष्टियान धीरे धीरे अर्थकारक के यहां पहुंच उस का द्वार खटखटाने लगा तब भीतर से एक मनुष्य ने आकर पूछा कौन है । खीष्टियान ने उत्तर दिया, महाराज एक दीन यात्री खड़ा है । इस गृह के स्वामी के एक मित्र ने मुझे कुछ शिक्षा पाने निमित्त यहां आने का परामर्श दिया है इस कारण मैं इस गृह के स्वामी से भेंट किया चाहता हूं । तब वह मनुष्य घर के स्वामी को समाचार पहुंचाने गया वह थोड़ी देर में खीष्टियान के पास आया और उस से पूछा, तुम कहां से आये हो और तुम्हारी इच्छा क्या है ? खीष्टियान बोला, महाराज मैं नाश नगर से आया हूं और सियोन पर्वत को जाता हूं । इस मार्ग के सिरे पर जो फाटक है वहां के द्वारपाल से मैं ने सुना कि इस स्थान में आने से आप मुझ को उत्तम विषय दिखावेंगे जिस के द्वारा यात्रा में मेरा उपकार होगा इसी आशा से मैं आप के निकट आया हूं । तब अर्थकारक ने कहा, भीतर आओ मैं तुम्हें हितकारक विषय दिखाऊंगा ।

अर्थकारक ।

यह कह उस ने सेवक को दिया जलाने की आज्ञा दी और खीष्टियान से कहा मेरे पीछे पीछे चले आओ । इस रीति से खीष्टियान को एक कोठरी में ले गया जिस के भीतर एक द्वार था और सेवक से कहा, यह द्वार खोल दे । द्वार खुलते ही खीष्टियान ने देखा कि एक धीर पुरुष का चित्र भीत पर लटक रहा है । इस चित्र का ऐसा आकार था अर्थात् उस की दृष्टि तो

एक धीर पुरुष का चित्र ।

स्वर्ग की ओर थी हाथ में सर्वोत्तम पुस्तक थी और होठों पर सत्यता का नियम मानो झलक रहा था। संसार की ओर उस की पीठ थी मनुष्यों से विनयकारी पुरुष के समान खड़ा था और सुवर्ण का मुकुट उस के सिर के ऊपर लटका हुआ था।

इस रीति की छवि को देख खीष्टियान ने पूछा, महाराज इस का क्या अर्थ है। अर्थकारक ने कहा, सुनो जिस का यह चित्र है वह सहस्रों में एक है वह पावल की नाईं कह सकता है कि तुम्हें खीष्ट में यदि दस सहस्र शिक्षक हों तौभी बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि खीष्ट यीशु में सुसमाचार के द्वारा तुम मेरे ही पुत्र हो। (१ करिन्थि. ४ : १५) हे मेरे बालको! जब तक तुम में खीष्ट का रूप न बन जाय तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर प्रसव की सी पीड़ा उठाता हूं। (गलाति. ४ : १८) उस की दृष्टि स्वर्ग की ओर है वह सर्वोत्तम पुस्तक लिये हुए खड़ा है सत्यता का नियम उस के होंठ पर लिखा है और वह मनुष्यों से विनती करते देख पड़ता है इन बातों से यह समझो कि इस पुरुष का काम यह है कि पापिष्ठ लोगों को सम्पूर्ण दशा जान उन के सन्मुख गूढ़ विषयों को प्रकाश करे। और वह संसार की ओर पीठ किये है और उस के सिर के ऊपर सुवर्ण का मुकुट लटकता है इस का यही अर्थ है कि वह अपने स्वामी के स्नेह निमित्त सांसारिक विषय को तुच्छ जानता है इस कारण वह परलोक में ऐश्वर्य्य अवश्य प्राप्त करेगा। यह बात कह फिर बोला, मैं ने तुम को पहिले यह चित्र इस कारण दिखाया है कि तुम जिस देश को जाते हो उस देश के कर्त्ता ने जहां जहां कठिन मार्ग मिलेगा वहां वहां तुम को शिक्षा देने का अधिकार इसी पुरुष को दिया है जिस पुरुष का यह चित्र है। इस कारण जो वस्तु मैं ने अब तुम्हें दिखाई है उस वस्तु का अच्छी रीति से चेत

कीजियो क्योंकि कदाचित् सत्यपथ कहकर तुम को मृत्युपथ में भरमाकर ले जाएं ऐसे भी मनुष्यों से तुम्हारी भेंट होगी।

फिर अर्थकारक खीष्टियान को एक ऐसी कोठरी में ले गया जिसमें कभी झाड़ू ना पड़ी थी और धूल से भरी हुई मलीन दिखाई देती थी। वहां जाकर उस में झाड़ू देने की आज्ञा दी। एक जन आ उस में झाड़ देने लगा इस से उस में धूल ऐसी उड़ी कि खीष्टियान का स्वास फूलने लगा। फिर उस स्थान में एक कन्या खड़ी थी उस ने अर्थकारक की आज्ञा पा उस में जल छिड़का तब धूल बैठ गई और बिना क्लेश से घर झाड़ गया।

एक कोठरी जिस में झाड़ू न दी गई थी।

तब खीष्टियान ने पूछा, इस का क्या तात्पर्य्य है। अर्थकारक ने कहा, सुसमाचार की भक्ति द्वारा जिस का अन्तःकरण शुद्ध नहीं हुआ ऐसे मलिन चित्त मनुष्य के दृष्टान्त को यह कोठरी है। इस की धूल की भांति मनुष्य का स्वाभाविक पाप और आन्तरिक दुष्टता मनुष्य को कलङ्कित करती है। जिस ने प्रथम इस में झाड़ू दी उस को व्यवस्था जानो और जल छिड़का सोई सुसमाचार के सदृश है। पहिले मनुष्य के झाड़ने के समय जो ऐसी धूल उड़ी कि घर शुद्ध न हो सका वरन् उस से तुम्हारा स्वास फूलने लगा इस का यह आशय है कि व्यवस्था अन्तःकरण के पाप को शुद्ध नहीं कर सकती किन्तु पाप को प्रगट करके और उसे अधिक बल देकर मन को उस से परिपूर्ण करती है अर्थात् व्यवस्था पाप को प्रकाश और निषेध तो करती परन्तु मनुष्य को उस के दमन करने की शक्ति नहीं दे सकती। (रोम. ५: २० और ७ : ६ और १ करिन्थि. १५ : ५६) फिर तुम ने देखा कि एक कन्या ने जो कोठरी में जल छिड़का

तो सहज ही वह शुद्ध की गई इस का तात्पर्य्य यों समझना कि जिस समय सुसमाचार की मधुर वाणी और कोमल ज्ञान मन में प्रवेश करता है तिस समय इस कन्या के जल छिड़कने के समान अन्तःकरण के सम्पूर्ण पाप को दमन करता है और सुसमाचार के विश्वास द्वारा मन शुद्ध हो महा महिमावान महाराजा के बास स्थान के योग्य स्थान होता है (योहन. १५ : ३। इफिसि. ५ : २६। प्रेरित. १५ : ६। रोम. १६ : २५,२६। योहन. १४ : २३) फिर मैं ने स्वप्न मैं देखा कि अर्थकारक खीष्टियान का हाथ पकड़ उसे एक दूसरी छोटी कोठरी में ले गया उस में दो बालक अपनी अपनी चौकी पर बैठे थे उन में बड़े का नाम असन्तोषी और छोटे का नाम सन्तोषी था। पर उन में असन्तोषी को असन्तुष्ट देख के खीष्टियान ने अर्थकारक से पूछा कि असन्तोषी

दो बालकों का दृश्य ।

ऐसा अप्रसन्न क्यों है। अर्थकारक ने उत्तर दिया कि उस के पिता की इच्छा तो यह है कि इसकी सम्पूर्ण उत्तम वस्तु कुछ विलम्ब करके अगले वर्ष के आरम्भ में मिले और यह बालक उस विलम्ब से अप्रसन्न होकर इसी समय सब चाहता है। पर सन्तोषी उस के समान नहीं वह उस विलम्ब को स्वीकार करता है। फिर मैं क्या देखता हूं कि एक जन थैली में कुछ रोकड़ ले आया और असन्तोषी के सामने उझल दी। उस के पाने से वह बड़ा प्रसन्न हो धन दिखा सन्तोषी को चिढ़ाने लगा। फिर थोड़ी ही देर में उस ने सब धन उड़ा दिया, केवल चिथड़े मात्र उस के पास रह गये।

तब खीष्टियान ने अर्थकारक से पूछा, हे महाराज ! इस का तात्पर्य्य क्या है मुझे समझा कर कहो। अर्थकारक कहने लगा, सुनो ये दोनों बालक दृष्टान्त रूप हैं। असन्तोषी सांसारिक

लोगों का दृष्टान्त है और सन्तोषी धार्म्मिक लोगों का दृष्टान्त है क्योंकि जैसे असन्तोषी सम्पूर्ण उत्तम वस्तु अभी चाहता है तैसे ही सांसारिक लोग भी इसी समय श्रेष्ठ श्रेष्ठ पदार्थ चाहते हैं वे अगले वर्ष अर्थात् परलोक लों धीरज धरने की इच्छा नहीं करते हैं क्योंकि उनका यह मत है कि वृक्ष पर के अनेक पत्तियों से हाथ में का एक पत्तो चित्त को अधिक प्रसन्न करता है। वे इस लौकिक दृष्टान्त का प्रमाण जितना मानते हैं उतना परलोक के आनन्द की समस्त प्रतिज्ञा भी जो ईश्वर ने की है नहीं मानते हैं। पर जैसा तुम ने देखा कि चिथड़े बिना और कुछ असन्तोषी के पास न रहा इसी भांति जगत में ऐसे लोगों की दशा होगी। खीष्टियान बोला, इस दृष्टान्त से मुझे स्पष्ट बोध होता है कि सन्तोषी का विचार अति उत्तम है क्योंकि पहिले तो वह बहुत उत्तम वस्तु पाने निमित्त सन्तोष कर बैठा है दूसरे जिस समय असन्तोषी के पास चिथड़े बिना और कुछ न रहेगा उस समय सन्तोषी की उत्तम वस्तु अधिक ऐश्वर्य्यमान दीख पड़ेंगी। अर्थकारक ने कहा, इन दो बातों से अधिक एक बात यह भी है कि परलोक का ऐश्वर्य्य नित्य रहेगा वह कभी जीर्ण होने का नहीं परन्तु लौकिक विभव अनित्य है वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। फिर असन्तोषी पहिले सुखी होकर सन्तोषी को ठट्ठे में उड़ाता था यह अनुचित था परन्तु सन्तोषी अन्तकाल में सुखी हो असन्तोषी का उपहास अवश्य कर सकेगा क्योंकि जो प्रथम मिला है सो पिछले के आने से लोप हो जायगा परन्तु पिछले के पीछे और कुछ नहीं होगा जिस के आने से वह कभी लोप हो। इस कारण जो पहिले पाता है उस का एक ऐसा समय पहुंचेगा कि उस का सब कुछ उठ जाएगा परन्तु जो बिलम्ब से पावेगा उस का अंश सदा बना

रहेगा । इसलिये धनवान के विषय में ऐसा लिखा है कि तू अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति पा चुका है और वैसा ही इलियाजर विपत्ति भोग चुका है परन्तु अब वह शान्ति पाता है और तू कलपता है । (लूक १६ : २५) तब खीष्टियान ने कहा, मेरी समझ में अब आया कि लौकिक ऐश्वर्य्य का लोभ करना अच्छा नहीं किन्तु परलोक के सुख की आशा कर धीरज धरना उत्तम है । अर्थकारक ने कहा, तुम सत्य कहते हो क्योंकि दृश्य विषय अनित्य हैं परन्तु अदृश्य विषय नित्य हैं । (२ करिन्थ. ४ : १८) तौभी लौकिक विषय और शारीरिक इच्छा इन दोनों वस्तु के परस्पर निकट रहने से उन में शीघ्र मित्रता हो जाती है पर पारलौकिक विषय और शारीरिक ज्ञान इन दोनों के परस्पर दूर रहने से इनका मेल नहीं होता है। (रोमि० ७ : १५-२५)

फिर मैं स्वप्न में देखता हूं कि अर्थकारक खीष्टियान को वहां से दूसरी कोठरी में ले गया । उस कोठरी की भीत के निकट अग्नि जल रही है और एक जन खड़ा होकर उसे बुझाने निमित्त जल छिड़क रहा है परन्तु जल छिड़कने से भी वह बुझती नहीं वरन् अधिक लहराती है । यह देख खीष्टियान बोला, महाराज ! इस का अभिप्राय क्या है । तब अर्थकारक ने कहा, अन्तःकरण में जो ईश्वर के अनुग्रह के गुण प्रगट होते हैं सोई यह अग्नि है और इस अग्नि के बुझाने के लिये जो जल छिड़क रहा है वह शैतान है । जल छिड़कने से भी यह अग्नि नहीं बुझती पर अधिक अधिक लहरा उठती है इस का कारण जानने की इच्छा हो तो मेरे साथ आओ । इतना कह वह खीष्टियान को उस भीत की दूसरी ओर ले गया वहां खीष्टियान ने देखा कि

भीत के निकट अग्नि ।

एक पुरुष तेल का पात्र हाथ में लिये गुप्त हो उस अग्नि में तेल डाल रहा है। यह देख खीष्टियान ने पूछा कि इस का क्या आशय है अर्थकारक ने उत्तर दिया, यह जन जिस को देखते हो सो खीष्ट है। वह अन्तःकरण में की भक्तिरूपी अग्नि को अपने अनुग्रहरूपी तेल से बढ़ाता है इस कारण शैतान को बाधा करने पर भी ईश्वर के भक्त जनों के हृदय में उस के अनुग्रहरूपी गुणों का सर्वदा प्रकाश होता है। (२ करिन्थि. १२ : ६) और इस महापुरुष के भीत के पीछे गुप्त रहने का अभिप्राय यह है कि अन्तःकरण में ईश्वर के अनुग्रह का कार्य जो स्थिर रहता है इस का हेतु परीक्षित लोगों की समझ में कठिनता से आता है।

फिर अर्थकारक खीष्टियान का हाथ पकड़ उसे एक दूसरे मनोहर स्थान में ले गया। वहां क्या देखता है कि एक अत्यन्त सुन्दर और रमणीक राजगृह बना है उस की छत पर सुनहरे वस्त्र पहिरे कितने एक मनुष्य फिरते हैं। यह देख खीष्टियान ने अति आह्लादित हो अर्थकारक से पूछा कि हम इस के भीतर जा सकते हैं कि नहीं ? अर्थकारक कुछ उत्तर न दे, उस का हाथ पकड़ उस घर के द्वार पर उसे ले गया। वहां खीष्टियान ने देखा कि उस द्वार से थोड़ी सी दूर पर एक मेज के निकट एक पुरुष उस घर के भीतर जानेहारे मनुष्यों के नाम लिखने के लिये पुस्तक लेखनी और मसि लिये बैठा है और वहां अनेक मनुष्य हैं जो उस भवन के भीतर जाने की इच्छा करते हैं मारे भय के भीतर जा नहीं सकते इस कारण सब एकत्र हो वहां खड़े थे। इस का हेतु यह है कि कितने एक शस्त्रधारी मनुष्य जानेहारों के मारने के लिये उस द्वार का मार्ग रोके खड़े थे। यह देख खीष्टियान को आश्चर्य हुआ। इतने में जब लोग उन सब और शस्त्रधारियों के

राज भवन का दृश्य।

भय के मारे हट गये तब खीष्टियान ने देखा कि एक महा साहसी मनुष्य उस नाम लिखने वाले के निकट जाकर बोला, हे महाशय ! मेरा नाम लिखिये । इतना कह टोप पहिर खड्ग खींच उन शस्त्रधारी मनुष्यों पर झपटा । तब वे उस से महायुद्ध करने लगे पर वह निर्भय हो उन रोकने वाले लोगों से घोर युद्ध करने लगा । अन्त में वह उन लोगों से घायल तो हुआ और उस ने उन में से कितनों को घायल किया और वह अपने शस्त्र द्वारा मार्ग खोल शीघ्र उस राजगृह में घुस गया । (मत्ती ११ : १२ । प्रेरित १४ : २२) उस समय राजभवन के भीतर के लोग मधुर शब्द से यह गान करने लगे कि:—

साहसी मनुष्य ।

राजभवन के भीतर आओ ।
तब तुम अक्षय गौरव पाओ ॥

तब वह साहसी पुरुष उन लोगों के बीच में पहुंच उन की भांति सुनहरे वस्त्रों से भूषित किया गया । यह देख कर खीष्टियान मुस्कुराकर बोला, मैं इस का अर्थ तो जानता हूं ।

पीछे खीष्टियान ने कहा, अब मुझे बिदा कीजिये । अर्थकारक ने कहा, तनिक और ठहरो तो तुम को और कुछ दिखाऊं फिर तुम जाइयो । इतना कह वह उस का हाथ पकड़ एक निपट अन्धेरी कोठरी में ले गया । वहां देखता क्या है कि लोहे के पिञ्जरे में एक मनुष्य अत्यन्त शोकग्रस्त की नाईं भूमि की ओर दृष्टि किये हाथ मलते हुए बैठा और हाय ! हाय !! कर रहा है । यह देख खीष्टियान ने कहा, महाराज ! इस का क्या तात्पर्य्य है । अर्थकारक ने कहा, इसी से पूछिये । खीष्टियान ने उस से

लोहे के पिञ्जरे वाला मनुष्य ।

पूछा, तुम कौन हो। उसने उत्तर दिया, जैसा तुम मुझे अब देखते हो वैसा मैं पहिले न था। ख्रीष्टियान ने पूछा, पहिले तुम कैसे थे। उस ने उत्तर दिया, मैं पहिले अपनी तथा और और मनुष्यों की दृष्टि में एक उत्तम भक्त था और मैं यह जानता था कि मैं स्वर्ग-पुर का यात्री हूं और वहां की सुख की आशा से मेरा चित्त अति प्रफुल्लित था। (लूक ८ : १३) ख्रीष्टियान ने कहा, अब तुम कैसे हो। उसने उत्तर दिया, मैं निराशी मनुष्य इस नैराश्यरूपी पिंजरे में पड़ा हूँ और इस से निकल नहीं सकता हूं, हाय ! अब मेरा निकलना असम्भव है। ख्रीष्टियान बोला, तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हुई। तब वह कहने लगा कि मैंने प्रार्थना करना और सचेत रहना छोड़ दिया और कामादि कुइच्छा के दमन करने में ढीलाई की। मैंने ईश्वर की आज्ञा और उस की कृपा के बिपरीत किया। मैं ने पवित्र आत्मा को उदास किया और उस ने मुझे त्याग दिया। मैं ने शैतान से प्रीति की और वह अब मेरा पीछा नहीं छोड़ता है। मैंने ईश्वर के क्रोध योग्य अपराध किया और उस ने मुझे त्यागा है। मेरा मन अब ऐसा कठोर हो गया है कि मुझे पश्चात्ताप करने की सामर्थ्य न रही। ये सब बातें सुन ख्रीष्टि-यान ने अर्थकारक से पूछा कि ऐसी दशा में पड़े हुए मनुष्य के उबरने की कुछ भी आशा नहीं है। अर्थकारक ने कहा, उसी से पूछो। ख्रीष्टियान ने उस से पूछा, कहो तो अब तुम्हें कोई आशा है कि इस लोह पिञ्जर से मुक्ति पाओ वा सर्वदा इसी में पड़े रहोगे ? उस ने कहा, अब मुझे निकलने की आशा नहीं। ख्रीष्टियान ने कहा, क्यों मुक्तिदाता तो बड़ा करुणानिधान है। उसने उत्तर दिया, हां, तुम सत्य कहते हो पर मैं ने उसे और उस के धर्म्म को तुच्छ कर दूसरी बार उसे मानो क्रूश पर बध किया और उसके रक्त को अपवित्र वस्तु जाना और

कृपानिधान पवित्र आत्मा का निरादर किया है। इसी कारण मैं ईश्वरीय प्रतिज्ञा से रहित हुआ हूं अब दण्ड पाने की शङ्का और भयानक अग्निज्वाला में ईश्वर के शत्रुओं के संग डाले जाने के भय बिना और किसी वस्तु की मुझे आशा नहीं। (लूक १९ : १४। इब्रि. ६ : ६ और १० : २६, २९) खीष्टियान ने पूछा, तुम किस वस्तु के लोभ के कारण ऐसी दुर्दशा में पड़े ? उस ने उत्तर दिया, मैंने इस वर्त्तमान संसार के सुख विलास और धन सम्पत्ति का लोभ किया क्योंकि मन में ऐसा बूझा कि इसी संसार के ऐश्वर्य्य भोग करने से मैं परमसुख का भागी होऊंगा पर अब वे समस्त वस्तु ही बिच्छू की नाईं मुझे डङ्क मारती हैं इस से मेरे अन्तःकरण में अग्निज्वाला की सी पीड़ा हो रही है। तब खीष्टियान ने फिर पूछा, क्या तुम पश्चात्ताप कर अपने मन को परमेश्वर की ओर लगा नहीं सकते हो ? उसने कहा, परमेश्वर अब मेरे पश्चात्ताप को ग्रहण नहीं करने का और विश्वास करने में उस के वचन से अब मुझे कुछ सहायता नहीं मिलती है। उस ने मानो अपने हाथ से मुझे इस लोह पिञ्जर में बद्ध किया है इस कारण इस संसार के समस्त मनुष्य भी मेरी मुक्ति किया चाहें तो नहीं कर सकेंगे। आहा! अनन्त काल हाय! अब मुझे अनन्तकाल लों इसी दशा में रहना पड़ेगा। इस घोर दण्ड का दुःख मैं कैसे सहूंगा। अर्थकारक ने खीष्टियान से कहा, इस मनुष्य की घोर दशा तुम को नित्य स्मरण करना उचित है इस लिये कि भय मानते हुए नित्य सचेत रहो। खीष्टियान ने कहा, सत्य हे महाराज इस की दुर्दशा महा भयावनी देख पड़ती है। परमेश्वर मेरी सहायता करे कि मैं इस मनुष्य के ऐसे कुकर्म्मों से बचा रहूं और नित्य सचेत रह के ईश्वर से प्रार्थना करूं। अब आप की इच्छा हो तो मैं

जाऊं। अर्थकारक ने कहा, एक विषय और देख कर के जाइयो।

यह बात कह अर्थकारक उस का हाथ पकड़ उसे दूसरी कोठरी में ले गया वहां देखता क्या है कि एक मनुष्य नींद से जाग उठा है और कपड़े पहिरते हुए थरथर कांप रहा है। यह देख खीष्टियान ने अर्थकारक से पूछा कि यह क्यों कांपता है। तब अर्थकारक ने आप कुछ न कहा पर उसी कम्पित मनुष्य को कांपने का कारण बताने की आज्ञा दी। वह कहने लगा, हे महाशय! मैं ने सोते हुए एक भयावना स्वप्न देखा

भयावना स्वप्न।

कि आकाश महा घोर घटा से आच्छादित हो अत्यन्त भयङ्कर दिखाई देने लगा और घोर शब्द से मेघ गर्जने और बिजली कड़कने लगी उस से मुझे बड़ा भय हुआ। फिर देखा कि प्रचण्ड वायु उस भयङ्कर घटा को उड़ाने लगी और उसी क्षण आकाश मण्डल अग्नि स्वरूप हो गया और स्वर्ग से तुरही का महा भयंकर शब्द सुनाई देने लगा और तेजोमय वस्त्र पहिरे सहस्रों स्वर्गीय दूतों से घेरा हुआ एक महापुरुष मेघारूढ़ दृष्टि आया। फिर घोर शब्द से यह आकाशवाणी हुई कि हे मृतक लोगों तुम सब विचार स्थान में आकर उपस्थित हो। इतना कहते ही पर्वत और पाषाण तड़क गये और क़बरें सब खुल गईं और उनमें के सम्पूर्ण मृतक उठकर बाहर निकले। उन में कितने तो प्रसन्न मुख दिखाई दिये और ऊपर की ओर देखते रहे और कितनों ने भयातुर हो पर्वत के नीचे छिपने की चेष्टा की। फिर उस मेघारूढ़ महापुरुष ने एक ग्रन्थ खोल सारी पृथिवी के लोगों को अपने निकट आने की आज्ञा दी। इस आज्ञा के सुनते ही सब उस के आगे इकट्ठा होने लगे उस समय अति प्रचण्ड अग्निशिखा निकली और विचार-

कर्त्ता और जिन का विचार होने पर था उन मनुष्यों के मध्य में आकर उपस्थित हुई जिस करके दोनों के बीच में कुछ अन्तर रहा । (१ करिन्थि. १५ पर्व्व १ थिसलोनि. ४ : १६ । यहूदा १५ पद योहन ५ : २८, २९ और २ थिसलोनि. १ : ७-१० । प्रकाश. २० : २१-१४ । यशायाह २६ : २१ । मीका. ७ : १६, १७ । गीत ५ : ४ और ५० : १-६ । दानियेल ७ : ९, १०) तब उस मेघारूढ़ पुरुष ने अपने दूतों को आज्ञा दी कि घास भुस को एकत्र कर अग्निकुण्ड में डाल दो । (मत्ती ३ : १२ और १३ : ३० और २४ : ३० । मलाकी ४ : १) यह बात कहते ही जिस स्थान में मैं खड़ा था उस के निकट अथाह कुण्ड खुल गया फिर उस के मुख से धुआं और जलते अंगारे हूं हूं शब्द सहित निकलने लगे । इस के अनन्तर उस ने दूतों को दूसरी आज्ञा दी कि मेरा गेहूं एकत्र करके खत्ते में रक्खा । (लूक ३ : १७) यह कहते ही मैं ने देखा कि बहुत लोग मेघ पर चढ़ स्वर्ग की ओर उठा लिये गये परन्तु मैं रह गया । (१ थिसलोनि ४ : १६, १७) तब डर के मारे मैं ने अपने तईं छिपाने की चेष्टा की पर मैं छिप न सका क्योंकि वही मेघारूढ़ महापुरुष मेरी ओर इकटक देख रहा था । उस भय से मुझे अपने जन्म भर के पाप की सुरत आई और मन में मैं ने अपने को दोषी ठहराया । (रोमि. २ : १५,१६) इस कारण मैं भयातुर हो चौंक पड़ा । तब खीष्टियान ने कहा कि तुम यह स्वप्न देख कर इतना क्यों डरे ? उस ने उत्तर दिया, मैं ने जाना कि विचार दिवस आ पहुंचा और मैं तो कुछ भी लेखा देने योग्य नहीं हूं यही जान कर अति भयातुर हो कांपने लगा । फिर दूत जो अनेक लोगों को एकत्र कर स्वर्ग की ओर ले गये केवल मुझे ही छोड़ गये, फिर मेरे निकट ही नरककुण्ड जो खुल गया और मेरा मन मुझे दोषी भी ठह-

राने लगा और फिर भी विचारकर्त्ता जो मेरी ओर क्रूर दृष्टि से देखने लगा, इन सब दुर्लक्षणों को देख मैं अत्यन्त भयातुर और कम्पायमान हुआ ।

तब अर्थकारक ने खीष्टियान से पूछा, तुम ने ये सब वृत्तान्त समझे कि नहीं ? खीष्टियान ने कहा, हां, महाराज ! इन वस्तुओं का ध्यान करने से मेरे चित्त में महा भय और आशा दोनों उत्पन्न हुई हैं । यह बात सुन अर्थकारक ने कहा, यह सब विषय अंकुश रूप होकर आगे को तुम्हारे मन को जागृत रक्खें । तब खीष्टियान कमर बांध यात्रा के निमित्त उपस्थित हुआ और अर्थकारक ने उसे आशीर्वाद दे कहा, हे प्रिय खीष्टियान तुम्हारा कल्याण हो और स्वर्गपुर के मार्ग पर शान्तिदाता कृपा कर सर्वदा तुम्हारी सहायता करे । तब खीष्टियान यह बात कहता हुआ चला ।

चौपाई ।

केतिक वस्तु सुमङ्गलदाई . मोहिं अर्थकारक दिखलाई ॥
केतिक बात देखि भय लाग्यो . जिहतें हौं पथ में अनुराग्यो ॥
कितेक सुहावन कितेक भयङ्कर . फलदायक जानत सब किङ्कर ॥
धन्य अर्थकारक हितकारी . तोर बचन नहिं देउं बिसारी ॥

छठवां अध्याय ।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि खीष्टियान मार्ग में दौड़ा चला जाता था परन्तु पीठ के भार से दौड़ने में बहुत क्लेश होता था । उस मार्ग की दोनों ओर भीत थी और भीत का नाम परित्राण था । (यशायाह २६ : १) फिर खीष्टियान ने कुछ आगे बढ़ कर

देखा कि एक उच्च स्थान में क्रूश खड़ा है और उस के नीचे थोड़ी दूर पर एक खुली हुई क़बर है। तब ख्रीष्टियान दौड़ता दौड़ता उस क्रूश के निकट पहुंचा और वहां पहुंचते ही उस की पीठ के बोझे के बन्ध टूट गये और बोझा छूट के गिर पड़ा और लुढ़का हुआ

क्रूश का दृश्य ।

क्रूश के देखते ख्रीष्टियान का बोझ गिर पड़ता है और तीन तेजस्वी पुरुष उस से आ मिलते हैं।

उस क़बर में जा गिरा तिस पीछे उस का बोझ कभी दिखाई न दिया। तब खीष्टियान अत्यन्त प्रसन्न हो यह कहने लगा कि धन्य है उस ने अपने दुःख के द्वारा सुख और अपनी मृत्यु के द्वारा जीवन मुझे दिया है। फिर क्रूश के दर्शन मात्र से मैं ने भार से मुक्ति पाई इस से अचम्भा कर क्रूश देखने के निमित्त कुछ काल खड़ा रहा और देखते देखते मारे आश्चर्य्य और आनन्द के उस के नेत्रों से जल बहने लगा। इस भांति खीष्टियान रोदन कर रहा था इतने में बड़े तेजस्वी तीन मनुष्य आ "तुम्हारा कल्याण हो" ऐसा कह उस के निकट खड़े हुए। उनमें से पहिले मनुष्य ने कहा, "तेरे पाप क्षमा किये गये हैं।" (मार्क २ : ५) दूसरे ने उस का जीर्ण वस्त्र उतार उस को उत्तम वस्त्र पहिरा दिया। (जकर्याह ३ : ४) तीसरे ने उस के माथे पर एक चिह्न कर उस के हाथ में एक मोहर किया हुआ पत्र दे उस से कहा, तुम दौड़ते हुए इसे देखा करो जब स्वर्गपुर के द्वार पर पहुंचो तब यह पत्र वहां दे देना। (इफिस. १ : १३) यह कह वे तीनों मनुष्य चले गये। उस समय खीष्टियान हर्ष से तीन बार कूद कर यह भजन गाता हुआ चला।

भजन।

धन्य धन्य ते पुरुष दयालू . मम हित लज्जा पाई।
झुकि झुकि मैं निज पीठहि लाद्यो . अघ बोझा दुखदाई।
काहू न मेरे बोझ उतार्‍यो . कष्टी जीव छुड़ाई।
आयो भागि यहां लगि मैं जब . अगणित सुख तब पाई।
क्रूशहि देखि भार निज खोयो . या सुखदायक ठांई।
टूटे बन्ध गिर्‍यो अघ मेरो . कबरहि गयो समाई।
क्रूश कबर दोउ धन्य कहत हैं . धन्य यीशु अधिकाई।

सातवां अध्याय।

भोला, आलसी, निःशङ्क से भेंट।

फिर मैं स्वप्न में क्या देखता हूं कि ख्रीष्टियान सियोन पर्वत की ओर जाते जाते एक तराई में आ पहुंचा और देखा कि तीन मनुष्य बेड़ी पहिरे घोर निद्रा में पड़े हैं। उनमें से एक का नाम भोला था दूसरे का आलसी और तीसरे का निःशङ्क। ख्रीष्टियान उन की यह दशा देख उन के जगाने के लिये उन के पास जा कहने लगा कि जैसे कोई जहाज़ के मस्तूल पर सोता हो ऐसे तुम लोगों को देखता हूं क्योंकि तुम्हारे नीचे अथाह मृत्यु सागर है। (दृष्टान्त २३ : ३४) इस कारण तुम उठ कर मेरे साथ चलो और इच्छा हो तो मैं तुम्हारी बेड़ी काट दूं नहीं तो सिंह की नाईं गर्जनेहारा बैरी जो आ जायगा तो तुम उस के दांतों से बचोगे, इस में सन्देह नहीं है। (१ पितर ५ : ८) तब उन्हों ने उस की ओर देखा और पहिले भोला कहने लगा, मुझे तो कुछ डर नहीं देख पड़ता है तब आलसी बोला, अभी थोड़ी देर और सो लें फिर निःशङ्क ने कहा, "तुम अपने चरखे में तेल लगाओ" अर्थात् अपना काम सम्भालो। इतना कह वे फिर सो गये और ख्रीष्टियान ने अपना मार्ग लिया।

व्यवहारगामी और कपटी।

मैं ने उन को जगाकर हितोपदेश दिया और उन की बेड़ियां काटने का विचार किया पर उन्हों ने मुझे तुच्छ जाना इस बात से ख्रीष्टियान का चित्त अति उदास हुआ और उसी बात को सोचता सोचता चला जाता था इतने में व्यवहारगामी और कपटी नाम दो मनुष्य उस सकरे पथ की बाईं ओर की भीत लांघकर शीघ्र ख्रीष्टियान से आ मिले। तब ख्रीष्टियान ने वार्त्ता

प्रारम्भ कर उन से पूछा, महाराज ! आप लोग कहां से आते हैं और कहां जायेंगे। वे कहने लगे हम दम्भ नाम नगर अपनी जन्म भूमि से आते हैं और यश प्राप्त करने के लिये सियोन पर्वत को जाते हैं। तब खीष्टियान ने कहा, भला तुम इस पथ के सिरे पर जो द्वार है उस में होकर नहीं आए वरन् भीत लांघ कर आए इस का क्या कारण। तुम क्या नहीं जानते हो कि पुस्तक में लिखा है जो द्वार से होकर न आवे परन्तु भीत लांघकर आवे सो चोर और बटमार कहलाता है ? (योहन १० : १) तब उन दोनों ने उत्तर दिया कि वह द्वार हमारे देश से बहुत दूर है इस लिये अपना मार्ग घटाने के निमित्त भीत लांघ कर आना हमारे देश की रीति है। खीष्टियान ने कहा, भला जिस राजधानी को हम लोग जाते हैं उस राजधानी के महाराजा की आज्ञा उल्लंघन करने से क्या तुम आज्ञाभञ्जक न ठहरोगे? तब उन दोनों ने उत्तर दिया कि तुम को इस विषय में इतनी चिन्ता करने का क्या प्रयोजन क्योंकि हम अपने देशाचार के अनुसार चलते हैं। जो कभी कुछ आवश्यकता आ पड़े तो हम उस के प्रमाण में सहस्र वर्ष से अधिक काल की साक्षी दे सकते हैं। खीष्टियान ने कहा, बिचार के समय में क्या तुम्हारे देशाचार का प्रमाण माना जायगा ? उन्हों ने उत्तर दिया, सहस्र वर्ष से अधिक काल से जो देशाचार चला आता है तिस का प्रमाण जो धार्मिक बिचारकर्त्ता है सो अवश्य मानेगा। और भी एक बात कहते हैं कि जब हम पथ में खड़े हैं तब तुम यह क्या पूछते हो कि तुम किस मार्ग से आये। पथ में होने से पथिक कहलाता है। तुम द्वार होकर इस पथ में आए हो हम भीत लांघकर इसी पथ में आए हैं सो हम में तुम में क्या अन्तर। तब खीष्टियान बोला, मैं अपने स्वामी की आज्ञानुसार चलता हूं और तुम अपनी इच्छानुसार चलते हो

इस हेतु तुम इस पथ के कर्त्ता के निकट चोर समान ठहर चुके हो और मुझे जान पड़ता है कि अन्त में तुम सज्जनों की गिन्ती में न आओगे । तुम कर्त्ता की शिक्षा बिना इस पथ में आए हो सो तुम पर कर्त्ता की कृपा न होगी किन्तु तुम अपने दोष से आप ही निकाले जाओगे । यह बात सुन उन्हों ने कुछ बहुत उत्तर न दिया पर यह बात कही कि तू अपना काम सम्भाल । हम तेरी घट व्यवस्था और विधि न मानेंगे इस में कुछ सन्देह नहीं है । इतना कह परस्पर की वार्त्ता छोड़ सब अपने अपने मार्ग में चलने लगे । फिर थोड़ी बेर पीछे उन दोनों ने ख्रीष्टियान से कहा कि तुम्हारे वस्त्रों से जान पड़ता है कि किसी पड़ोसी ने तुम को नग्न देख लज्जा ढांपने के लिये ये वस्त्र दिये हैं । और किसी बात में नहीं केवल हमारे तुम्हारे वस्त्रों ही में अन्तर है । तब ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया कि तुम द्वार मार्ग होकर नहीं आये इस हेतु किसी व्यवस्था वा विधि द्वारा तुम्हारी मुक्ति न होगी । (गलाति. २ : १६) और मेरी देह पर जो तुम यह वस्त्र देखते हो सो जिस स्थान को मैं जाता हूं उसके कर्त्ता ने पहिरा दिया । और तुम जो कहते हो कि नग्न देख कर लज्जा ढांपने के लिये यह वस्त्र दिया है सो सत्य है । परन्तु इस वस्त्र को उस कर्त्ता के अनुग्रह का चिन्ह मानो क्योंकि पहिले तो चिथड़े बिना मेरे पास कुछ नहीं था । इस हेतु से मुझे इस पथ में चलने का हियाव होता है क्योंकि मुझे निश्चय है कि जब मैं राजधानी के द्वार पर पहुंचूंगा तब वही कर्त्ता मेरे शरीर पर यह वस्त्र देख मुझ को चीन्ह कर अवश्य कृपा करेगा क्योंकि उसी ने मेरे चिथड़े उतरवा के बिना मोल यह वस्त्र मुझ को पहिरा दिया है । एक और बात तुम ने नहीं देखी होगी कि जिस घड़ी मेरी पीठ से बोझ गिर पड़ा उसी घड़ी कर्त्ता के एक निज सेवक ने

आ मेरे माथे पर यह चिह्न कर दिया। फिर मेरे सन्तोष निमित्त पथ में पढ़ने के लिये मुझे एक मोहर किया हुआ पत्र भी दिया गया और यह प्रतिज्ञा की गई कि राजधानी के द्वार पर यह पत्र देने से तू अवश्य उस के भीतर जाने पावेगा। इस कारण मेरी समझ में तुम्हें भी इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है पर द्वार मार्ग हो कर नहीं आए इस लिये तुम को कुछ नहीं मिला। इन सब बातों को सुन व्यवहारगामी और कपटी ने कुछ उत्तर न दिया पर एक दूसरे को देख हंसते हुए चले जाते थे किन्तु ख्रीष्टियान आगे बढ़ा और कभी शोक कभी आनन्द करता हुआ अकेला चला जाता था और जो पत्र उस तेजस्वी पुरुष ने उसे दिया बारम्बार उस पत्र को पढ़ कर अपने मन को समझाता था।

दुर्गम पर्वत।

इस भांति जाते जाते वह दुर्गम नाम पर्वत के समीप पहुंचा वहां जल का एक सोता था। उस पर्वत के नीचे दो मार्ग फूट निकले एक बाईं ओर दूसरा दाहिनी ओर को मुड़ गये परन्तु सकरे फाटक होकर जो सीधा मार्ग आया था सो पर्वत के ऊपर होकर गया और उस चढ़ाव का नाम दुर्गम है। ख्रीष्टियान उस सोते पर जा जलपान कर सुख पा यह गान करता हुआ पर्वत पर चढ़ने लगा। (यशायाह ४९ : १०)

चौपाई।

यद्यपि यह अति ऊंचो भाई। तद्यपि चढ़न चहौं मन लाई॥
दुर्गम देखि परत है मोहिं। बाधा होय न कहूं मन तोहिं॥
जीवन पथ यापर तें जाता। निश्चय मानों मन यह बाता॥
मन में हार नेकु नहिं मानो। दुर्गम है तउ सतपथ जानो॥

दोहा ।

पहिले सुखद दिखात है, अन्त दग़ा नित देत ।
है स्वभाव यह कुपथ का, प्यारे रहो सचेत ॥
कठिन सुपथ जौं गमन है, आख़िर शुभ फल होइ ।
ज्ञानी अस मन मानिके, नित्य चलें बट सोइ ॥

फिर उन दोनों ने भी उस ऊंचे पर्वत के निकट आकर देखा कि पर्वत पर के मार्ग में बड़ा चढ़ाव है परन्तु दाहिने बायें जो दो मार्ग फूट निकले हैं सो सुगम दीखते हैं और कदापि जिस मार्ग होकर खीष्टियान गया है उस मार्ग में ये दोनों मार्ग पर्वत के उस पार जा मिले होंगे ऐसा मन में ठान एक ने दाहिनी ओर दूसरे ने बाईं ओर का मार्ग लिया। उन दो पथों के नाम खटका और विनाश थे। जो खटका नाम पथ में गया सो तो एक भयानक वन में जा निकला और जो विनाश नाम पथ से गया सो महा अन्धकारयुक्त पर्वतों से पूर्ण सर्वनाश नाम एक बड़े देश में जा पहुंचा और वहां जाते ही पछाड़ खाकर गिरा और फिर न उठा।

इसके पीछे मैं यह देखने लगा कि खीष्टियान किस रीति से पर्वत पर चढ़ने लगा और बढ़ता गया। पहिले तो वह दौड़ा जाता था फिर धीरे धीरे चलने लगा। फिर तो पर्वत के कठिन चढ़ाव के कारण उस को अपने हाथ पांव टेक टेक कर चढ़ना पड़ा। जब आधे आध चढ़ चुका तब वहां पहुंचा जहां पर्वताधिकारी की आज्ञानुसार थके हुए यात्रियों के विश्राम के निमित्त रमणीक कुंज बना था और विश्राम के निमित्त बैठ गया और अपनी शान्ति के लिये छाती पर के कपड़े में से वह मोहर किया हुआ पत्र काढ़ कर उस में से कुछ पढ़ने और क्रूश स्थान से जो

वस्त्र मिला था उसे बारम्बार देखने लगा। इस रीति से देखते देखते वह अत्यन्त श्रम के कारण घोर निद्रा के वशीभूत हो सन्ध्याकाल लों सो रहा और निद्रा में वह पत्र उस के हाथ से गिर पड़ा। निदान किसी पुरुष ने आ उसे जगा कर यह बात कही अरे आलसी तू चोंटी के पास जा उस के कर्म्म को देख ज्ञान सीख। (दृष्टान्त ६ : ६) यह सुन ख्रीष्टियान चौंक कर उठा और दौड़ता हुआ शीघ्र पर्वत की चोटी पर जा पहुंचा।

भयभीत और संशयी।

जिस समय वह शिखर पर पहुंचा उस समय भयभीत और संशयी नाम दो मनुष्य उस से मिलने के लिये दौड़े आये। उन को देख ख्रीष्टियान ने कहा, हे भाइयो ! तुम जो फिर कर दौड़े आते हो इस का क्या कारण। तब भयभीत ने उत्तर दिया, हम सियोन पर्वत को जाते हुए इस दुर्गम स्थान से पार हो गये थे किन्तु जितना आगे बढ़े उतनी ही आपदा दृष्टि पड़ी इस लिये अब हम घर को फिरे जाते हैं। फिर संशयी ने कहा, आगे दो सिंह भी मार्ग में पड़े हुए हैं परन्तु वे जागते हैं वा सोते हैं यह हम नहीं जानते कदापि हम जाते तो वे दोनों हमारे टुकड़े टुकड़े कर डालते इसी भय से हमारी छाती अब लों धड़क रही है। यह बात सुन ख्रीष्टियान कहने लगा, तुम ने तो मुझे भी डरा दिया परन्तु मैं प्राण रक्षा निमित्त भागकर कहां जाऊं। मेरा जन्म स्थान गन्धक मिश्रित अग्नि से भस्म होने वाला है जो मैं यहां से फिर जाऊं तो अवश्य मेरा विनाश होगा। जो मैं कष्ट सहकर स्वर्गपुर में पहुंच सकूं तो निश्चय कर के निर्विघ्नता से वहां निवास करूंगा। इसलिये चाहे प्राण जाय चाहे रहे मैं वहां अवश्य जाऊंगा क्योंकि फिरने से निश्चय मृत्यु है और बढ़ने में मृत्यु का केवल भय है आगे बढ़ने

से ही अनन्त जीवन प्राप्त होगा इस कारण मैं तो आगे बढ़ा चला जाऊंगा। यह सुन वे दोनों तो पर्वत के नीचे उतरे और ख्रीष्टियान आगे बढ़ा पर इन दो मनुष्यों की कही हुई बात उस के मन में खटकती रही। इस चिन्ता को दूर करने के निमित्त और अपने चित्त की शान्ति के लिये उस की इच्छा हुई कि मैं पत्र का पाठ करूं पर जब अपनी छाती के कपड़े में हाथ डाला तो जाना कि पत्र तो है नहीं। इतना जानते ही ख्रीष्टियान अत्यन्त घबरा गया क्योंकि जिस पत्र से उस के चित्त को शान्ति होती थी और जिस के द्वारा वह राजधानी में प्रवेश करता वह तो खो गया। यह जान वह अत्यन्त शोक-ग्रस्त हो कहने लगा कि अब मैं क्या करूं। सोचते सोचते उस को चेत आया कि पर्वत के चढ़ाव पर जो वह कुञ्ज था उस में मैं सो गया था। तब अत्यन्त विनययुक्त प्रार्थना कर उस ने ईश्वर से अज्ञानकृत पाप की क्षमा मांगी तब उस पत्र के ढूंढ़ने के लिये फिरा। फिरने के समय उस के चित्त में जो दुःख हुआ सो मैं कैसे वर्णन करूं। कभी रोदन करता था कभी चिल्ला चिल्ला कर विलाप करता था और केवल तनिक विश्राम के निमित्त जो कुञ्ज लगाया गया उस कुञ्ज में घोर निद्रा जो उस पर आ पड़ी इस बात के लिये पश्चात्ताप कर अपने को धिक्कारता हुआ कहने लगा, हाय ! मैं सांझ लों क्यों सो रहा आपदा पार न होके मैं बीच में क्यों सो गया। पर्वत के स्वामी ने यात्रियों के तनिक विश्राम निमित्त जो कुञ्ज लगवाया, हाय मैं उस को शारीरिक सुख भोग का स्थान ठहराकर क्यों सो गया। इस रीति से पथ की दोनों ओर यत्न से देखता हुआ चला। फिर जहां से वह कुञ्ज दिखाई देता था उस स्थान पर पहुंचा

पत्र के खो जाने के कारण शोक।

तो उस आलस्य का दोष उस के मन में फिर व्यापा और कुञ्ज के देखनें से उस का मन पहिले से सौ गुना अधिक दुःखित हुआ और वह इस भांति विलाप करता हुआ चला कि मैं कैसा अधम हूं, हाय ! मेरा कितना श्रम व्यर्थ हुआ । इस्राएली लोगों की जो दशा हुई वही दशा मेरी भी हुई । जैसे वे लोग अपने पाप के कारण लाल समुद्र के मार्ग से फेरे गये तैसा मुझे लौटना पड़ा । हाय ! जो यह पापमय निद्रा मुझे न घेरती तो मैं वह व्यर्थ परिश्रम न उठा आनन्द पूर्वक न जाने कितनी दूर निकल जाता । हाय ! जिस मार्ग में एक बेर चलना था उस में तीन बार चलना पड़ा । मेरा यह सम्पूर्ण दिन वृथा गया और अब रात्रि का समय आ गया । हाय ! हाय !! मैं क्यों सो गया ।

खोया हुआ पत्र पाना ।

इस रीति से खेद करता हुआ उस कुञ्ज में प्रवेश कर वहां बैठकर रोने लगा । रोते रोते ज्यों उस की दृष्टि नीचे पड़ी त्यों ईश्वर की कृपा से वह पत्र उसे पड़ा दिखाई दिया । उस ने झट उठाकर उस को यत्न से वस्त्र में लपेटा । इस अमोल पत्र के पाने से उस को जो आह्लाद हुआ उस का वर्णन करना असम्भव है क्योंकि यह उस का जीवनदाई पत्र और वांछित स्थान में प्रवेश करने का चिन्ह था । इस हेतु उस की दृष्टि नीचे होने के कारण वह अत्यन्त नम्रतायुक्त ईश्वर का धन्यवाद और स्तुति करने लगा और आनन्द के मारे उस के नेत्रों से जल टपकने लगा । तब उस ने शीघ्रता से अपना मार्ग लिया परन्तु पर्वत के शिखर पर पहुंचते पहुंचते सूर्य अस्त हो गया इस लिये ख्रीष्टियान फिर उस व्यर्थ निद्रा के दोष का स्मरण कर बारम्बार यही खेद करता था कि अरी पाप निद्रा तेरे ही कारण मुझे इस स्थान में रात्रि हो गई है । अब सूर्यास्त होने से इस महा अन्ध-

कार में मेरा पांव न जानिये कैसी कैसी जगह में पड़ेगा। मुझे भयावने हिंसक जन्तुओं का घोर शब्द सुनना पड़ेगा। फिर संशयी और भयभीत से जो दो सिंहों की वार्त्ता सुनी थी उस की सुरत आने से अत्यन्त भयातुर हो कहने लगा कि रात्रि समय हिंसक पशु आहार के निमित्त फिरते हैं जो कहीं इस अन्धकार में मुझ से भेंट हो गई तो मेरे टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे। हाय ! अब मैं क्या करूं किस रीति से मेरा प्राण बचे। यह सोचता हुआ धीरे धीरे आगे बढ़ा चला जाता था। इतने में उस ने ज्यों ऊपर दृष्टि किई तो मार्ग की एक ओर रम्य नाम मनोहर राजगृह दिखाई दिया।

आठवां अध्याय।

रम्य राज भवन।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि ख्रीष्टियान उस राजगृह में रात भर रहने का विचार कर वहां पहुंचने की इच्छा से शीघ्र चलने लगा और थोड़ी दूर जाकर एक सकरे स्थान में प्रवेश किया। जब राजभवन के द्वार पर पहुंचने को प्रायः दो सौ डग रहे तब उस ने घूरकर जो देखा तो दो सिंह दृष्टि आये। उन को देख व्याकुल और भयमान हो मन ही मन कहने लगा कि संशयी और भय-भीत जिन दो सिंहों के डर के मारे फिर गये उन्हीं के सन्मुख मैं अब आ पड़ा। ये दोनों सिंह जञ्जीरों से बन्धे हुए थे पर ख्रीष्टियान ने जञ्जीरों को न देखा और यह समझा कि आगे बढ़ने से अवश्य मेरी मृत्यु होगी इस कारण उन दोनों मनुष्यों की नाईं इस ने भी पीछे भागने की इच्छा की इतने में जागृत

नाम उस राजगृह के द्वारपाल ने यह देख कि वह फिरना चाहता है, उसे पुकार कर कहा, अरे तू ऐसा डरपोक क्यों है चला आ शृङ्खल से बंधे हुए सिंहों से तुझे क्या डर । (मार्क ४ : ४०)
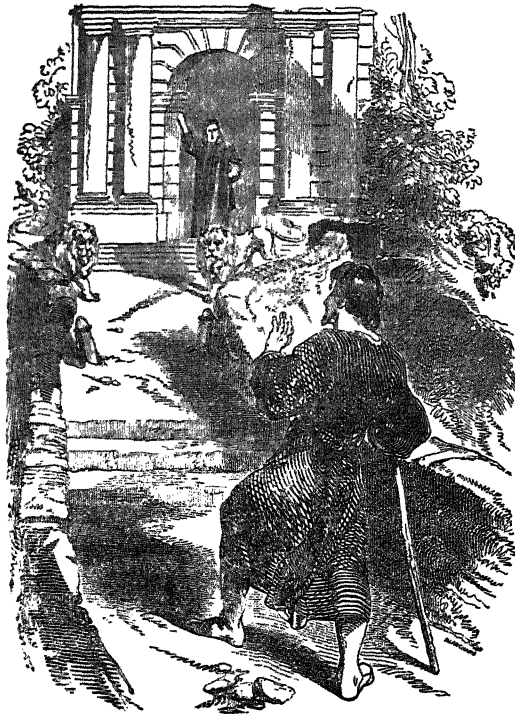
क्रीष्टियान रम्य राजगृह के द्वार के निकट हो सिंह देखकर डरता है ।

विश्वासी यात्रियों के विश्वास की परीक्षा निमित्त और अविश्वासियों के अविश्वास के प्रगट करने निमित्त ये दो सिंह इस स्थान में शृङ्खल से बन्धे हुए हैं । सो तू मार्ग के बीचों बीच

चला आ कुछ खटका नहीं है। द्वारपाल से यह बात सुनते ही ख्रीष्टियान को कुछ कुछ साहस हुआ और वह बड़ी सावधानी से धीरे धीरे आगे बढ़ा और सिंहों की केवल गर्जन मात्र सुनी पर उन से उस की कुछ हानि न हुई। फिर आनन्द सहित ताली बजाता हुआ उस द्वार पर पहुंचकर कहने लगा, हे महाराज! यह किस का भवन है। क्या मैं आज यहां रात भर टिक सकता हूं? द्वारपाल ने उत्तर दिया, इस पर्वत के स्वामी ने यात्री लोगों के निर्भय विश्राम करने निमित्त यह भवन बनवाया है। यह बात कह कर द्वारपाल ने पूछा, तुम कहां से आये हो और कहां को जाओगे। ख्रीष्टियान ने कहा, मैं नाश नगर से आया हूं और सियोन पर्वत को जाता हूं परन्तु सूर्य्य अस्त होने के कारण मैं आज रात्रि को यहां रहना चाहता हूं सो क्या मैं यहां रह सकता हूं वा नहीं? तब द्वारपाल ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है। ख्रीष्टियान बोला, अब तो मेरा नाम ख्रीष्टियान है परन्तु पहिले मेरा नाम निरनुग्रहीत था। मैं याफत के कुल का हूं जिस को ईश्वर शेम के तम्बू में बास करावेगा। (उत्पत्ति ६ : २७) द्वारपाल ने पूछा, सूर्य्य अस्त हुए पर तुम आये हो तुम्हारे इतना विलम्ब करने का क्या कारण। ख्रीष्टियान ने कहा, मैं तो दिन रहते ही आ पहुंचता किन्तु पर्वत पर चढ़ते हुए मैं कुञ्ज में सो गया और पर्वत के शिखर पर पहुंच कर जाना कि मैं पाप निद्रा से कुञ्ज में अपना अधिकार पत्र भूल आया हूं इस कारण मुझे महा शोक सहित वहां फिर जाना पड़ा इसी से मुझे इतनी देर हो गई। तब द्वारपाल ने कहा, मैं इस घर की एक कन्या को बुला देता हूं तुम उस के साथ वार्त्तालाप करो जो वह तुम्हारी वार्त्ता सुन कर तुम्हें भीतर जाने योग्य समझे तो तुम को इस घर के भीतर वाले मनुष्यों से भेंट करावेगी। यह बात कह जागृत द्वारपाल ने

घण्टा बजाया उस का शब्द सुनते ही सुचेती नाम एक कन्या द्वार पर आ पूछने लगी तू ने मुझे क्यों बुलाया है। द्वारपाल ने कहा, यह मनुष्य नाशनगर से आया है और सियोन पर्वत को जाता है यह मार्ग में थक गया है और रात्रि हो गई है इस कारण इस ने मुझ से पूछा कि मैं रात भर यहां टिक सकता हूं वा नहीं, इसलिये मैं ने तुम को बुलाया है अब तुम इस से बातचीत कर इस घर के व्यवहार के अनुसार जो करना हो सो करो।

सुचेती से बात करना।

तब उस कन्या ने खीष्टियान से पूछा, तुम कहां से आये हो और कहां को जाओगे तुम ने किस भांति इस मार्ग को पाया और मार्ग में क्या क्या दृष्टि आया और किस किस से भेंट हुई सो कहो। तब खीष्टियान ने इन सब बातों का उत्तर दिया। फिर कन्या ने उस का नाम पूछा उसने बता दिया और यह कहा कि मैं निश्चय जानता हूं कि पर्वत के स्वामी ने यह घर यात्रियों के विश्राम और रक्षा निमित्त बनाया है इसलिये मुझे यहां रात भर रहने की इच्छा हुई। यह सुनते ही कन्या के नेत्रों में जल भर आया फिर उस ने विचार कर कहा अच्छा मैं भीतर की दो तीन और कन्याओं को बुला लाती हूं। इतना कह भीतर जा बुद्धिवती, धर्म्मिष्ठा और प्रीतिवन्ती इन तीनों को बुला लाई। ये तीनों खीष्टियान से बात करके उस को भीतर लिवा ले गईं।

तीन कन्याओं से भेंट।

परिवार में के और कितने लोग द्वार पर आ कहने लगे, हे ईश्वरीय कृपापात्र मनुष्य भीतर आओ तुम ऐसे अतिथियों के लिये यह घर पर्वताधिपति से बनाया गया है। खीष्टियान उन को प्रणाम कर उन के पीछे पीछे घर में गया। जब वह घर के भीतर जा बैठा तब उन्होंने उस का शिष्टाचार कर जलपान करवाया और

जब तक रसोई न हुई तब तक धर्म्मिष्ठा, बुद्धिवन्ती और प्रीतिवन्ती को आज्ञा हुई कि तुम इस अतिथि से वार्तालाप करो। तब उन्हों ने इस रीति से परस्पर वार्तालाप का प्रारम्भ किया।

धर्म्मिष्ठा से वार्तालाप।

धर्म्मिष्ठा ने ख्रीष्टियान से कहा, हे ख्रीष्टियान हम ने तुम को आज रात्रि रहने के लिये प्रेम से अपने इस घर में स्थान दिया है सो तुम अपनी यात्रा का समाचार कहो जिस को सुन कर हमें भी लाभ होवे। ख्रीष्टियान ने कहा, तुम जो ऐसी शुभ वार्त्ता की इच्छा करती हो इस से मुझ को बड़ा आनन्द हुआ। धर्म्मिष्ठा ने पूछा कि तुम को यात्रिक धर्म्म की अभिलाषा पहिले किस रीति से हुई। ख्रीष्टियान ने कहा, प्रथम मैं ने एक भयङ्कर शब्द सुना उस का अर्थ यह था कि जो तू इस स्थान में रहेगा तो तेरा निर्वाह न होगा वरन् अन्त में सर्वनाश होगा। ऐसी वाणी सुन कर मैं ने अपने देश से प्रस्थान किया। धर्म्मिष्ठा बोली, तुम उस देश से इस मार्ग में कैसे आये? ख्रीष्टियान ने कहा, ईश्वर की कृपा से ऐसा संयोग हुआ कि जिस समय मैं सर्वनाश होने के भय से रोता था और नहीं जानता था कि क्या करूं वा कहां जाऊं और घबराकर खड़ा हो चिल्लाता था उस समय मङ्गलवादी नाम एक पुरुष ने सकरे फाटक में जाने का मार्ग दिखा दिया। वह जो मुझ को न मिलता तो मैं कभी उस फाटक को न पाता किन्तु मैं यहां तक जिस मार्ग से आ पहुंचा हूं तिस मार्ग को उसी ने मुझे बताया। धर्म्मिष्ठा ने फिर पूछा, तुम क्या अर्थकारक के घर होकर नहीं आये। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, मैं वहां होकर आया हूं और जो जो आश्चर्य्य के पदार्थ मैं ने वहां देखे सो कभी जन्म भर न भूलूंगा। विशेष कर तीन बातें एक यह कि ख्रीष्ट किस रीति से शैतान की चेष्टा को नष्ट कर

मन में अनुग्रह के कर्म्म को प्रकाश करता है, दूसरी यह कि एक मनुष्य ने क्या जाने कैसे पाप किये थे कि वह ईश्वर के अनुग्रह से रहित हुआ और तीसरी यह कि एक ने स्वप्न में देखा कि विचार का दिवस आ पहुंचा। धर्म्मिष्ठा ने कहा, क्या तुम ने उस स्वप्नदर्शी के मुख से वह स्वप्न सुना। खीष्टियान बोला, हां, पर मुझे सुनने में स्वप्न भयङ्कर जान पड़ा। जिस समय मैं वह स्वप्न सुनता था उस समय मेरा हृदय कम्पायमान था पर उस के सुनने से अब आनन्दित हूं। धर्म्मिष्ठा ने पूछा, अर्थकारक के घर में तुम ने यही देखा वा कुछ और भी देखा। खीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, मैं ने अति मनोहर राजभवन भी देखा वहां के मनुष्य सुन्दर तेजस्वी सुनहरे वस्त्र पहिरे थे। फिर एक साहसी मनुष्य ने द्वार रोकने वाले लोगों को हटा अपने शस्त्र द्वारा मार्ग कर के उस राजभवन में प्रवेश किया और वहां के निवासियों ने उस की अगवानी कर कहा कि ऐसे ही मनुष्य अनन्त ऐश्वर्य्य के अधिकारी होते हैं ये सब बातें अर्थकारक ने मुझे वहां दिखाईं इन से मेरे अन्तःकरण में बड़ा आनन्द हुआ और यही इच्छा हुई कि वर्ष भर यहां रहूं परन्तु मैं ने जान लिया कि अभी बहुत दूर जाना है। धर्म्मिष्ठा ने फिर प्रश्न किया कि तुम ने मार्ग में और भी कुछ देखा? खीष्टियान ने कहा, अब जो तुम ने यह पूछा है तो मुझे सब वृत्तान्त कहना उचित है। पहिले मेरी पीठ पर बड़ा भारी बोझ था इस से मैं धीरे धीरे कितनी दूर आया था तब देखा कि एक मनुष्य वृक्ष पर लटका है और उस के शरीर से रक्त की धारा बह रही है उस के देखते ही मेरी पीठ पर का बोझ गिर पड़ा ऐसा आश्चर्य्य मैं ने कभी नहीं देखा था। वहां खड़ा हो मैं टकटकी बान्धकर देखने लगा क्योंकि बिन देखे न रहा गया। इतने में तीन तेजस्वी मनुष्य मेरे पास आये।

एक ने कहा, तुम्हारा पाप क्षमा हुआ । दूसरे ने मेरी देह पर जो चिथड़े थे उन्हें उतार जो सुथरे वस्त्र मैं पहिरे हूं सो वस्त्र पहिरा दिया । तीसरे ने मेरे माथे पर यह चिन्ह कर दिया जिसे तुम देखती हो और मोहर किया हुआ एक पत्र भी दिया । यह बात कह खीष्टियान ने अपनी छाती पर के कपड़े में से पत्र निकालकर दिखाया । धर्म्मिष्ठा ने कहा और भी कुछ देखा हो तो कहो । खीष्टियान बोला, जितने विषय मैं ने यात्रा में अब तक देखे हैं उन में जो बातें मैं ने कहीं वे सब से उत्तम हैं और यों तो कई बातें दृष्टि में आईं । जब मैं क्रूशस्थान से थोड़ी दूर आगे बढ़ा तो भोला आलसी और निःशंक नाम तीन मनुष्यों को बेड़ी पहिरे मार्ग की एक ओर सोते हुए देख उन्हें जगाया परन्तु वे फिर सो गये । फिर व्यवहारगामी और कपटी नाम दो मनुष्यों को मार्ग की एक अलंग की भीत लांघकर आते देखा । उन की वार्त्ता से जान पड़ा कि वे भी सियोन पर्वत को जाने की इच्छा करते हैं परन्तु थोड़े ही काल में वे बहक गये । मैं ने उन्हें चिता भी दिया था पर उन्हों ने न माना । किन्तु इस पर्वत पर का चढ़ना और सिंहों के निकट होकर आना ये दो बातें मेरे लिये सब से कठिन थीं । जो इस घर के उत्तम दयावान द्वारपाल से भेंट न होती तो कदापि मैं इतनी दूर आकर भी फिर जाता परन्तु अब मैं जो इस स्थान में पहुंचा हूं उस के निमित्त सहस्र सहस्र बार ईश्वर का धन्यवाद करता हूं और तुम ने जो मुझ को ग्रहण किया तुम्हारा यह अनुग्रह स्वीकार करता हूं ।

फिर बुद्धिवन्ती की इच्छा हुई कि खीष्टियान से मैं भी कुछ बात पूछूं और उस का उत्तर सुनूं । तब उसने पूछा, हे खीष्टियान जिस देश से तुम आये हो उस को तुम को कभी, कुछ सुरत आती है वा नहीं ? खीष्टियान बोला, हां, मुझे कभी कभी सुरत

आती है पर जिस समय आती है उस समय लज्जा और घृणा उत्पन्न होती है। मैं सत्य कहता हूं कि जिस देश से मैं आया हूं उस देश का मोह होता तो मैं अवश्य फिर जाता परन्तु मैं तो उत्तम स्वर्गीय देश जाने की इच्छा करता हूं। (इब्रि ११ : १५,१६)

बुद्धिवन्ती से वार्त्तालाप।

बुद्धिवन्ती बोली, तुम अपने देश में जिन विषयों में प्रवृत्त थे उन में से कुछ अपने साथ लाये हो। खीष्टियान ने कहा, हां, कुछ कुछ लाया हूं पर अपनी इच्छा से नहीं। उस देश में जो सांसारिक विषय वासना मुझे और मेरे स्वदेशियों को बहुत भावती थी यह इस समय मुझे केवल दुःखदाई जान पड़ती है। जो मेरी इच्छा पूरी हो सकती तो फिर कभी उन बातों की तनिक सुरत भी न करता पर जब मैं भला करने की इच्छा करता हूं तब मन में बुरा करने की इच्छा व्यापती है। (रोमि. ७ : १५-२१) बुद्धिवन्ती ने फिर पूछा कि जो विषय वासना बारम्बार मन में उपज कर तुम्हारी बाधा करती है यह मिट गई ऐसी समझ कभी तुम्हारे मन में आती है? खीष्टियान ने कहा, हां, कभी कभी मेरे मन में आती है और उस समय मैं अपने को बड़ा भाग्यवान समझता हूं। बुद्धिवन्ती ने कहा, बाधा करनेहारी वस्तु मन से मिट गई ऐसी समझ जो तुम्हें कभी आ जाती क्या तुम्हें सुरत है कि किस उपाय से यह समझ आ जाती है? खीष्टियान बोला, हां, मैं कह सकता हूं। एक तो जब मैं क्रूश का स्मरण करता हूं दूसरे जब मैं इस पहिराये हुए वस्त्र पर दृष्टि करता हूं तीसरे जब यह पत्र बांचता हूं चौथे जब मैं जिस नगर को जाता हूं उस नगर का अधिक ध्यान करता हूं तब सम्पूर्ण बाधाकारक विषय मिटे हुए ऐसे जान पड़ते हैं। तब बुद्धिवन्ती ने फिर पूछा, सियोन पर्वत पर जाने की जो तुम को इतनी लालसा है

उस का कारण क्या? ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया कि इस का कारण यह है कि जिस महापुरुष ने क्रूश पर मारे जाने से मुझे भारी बोझ से मुक्ति दी उस को मैं अपना अत्यन्त प्रिय जानता हूं और उस को मेरी आशा है कि वहां जाकर जीता देखूंगा। फिर अन्तःकरण का पापरूपी रोग अति दुःखदाई है यह भी मेरे सब विघ्नकारी विषयों समेत मिट जायगा और वहां मृत्यु का भी भय नहीं है। (यशायाह ६ : ३, प्रकाश ४ : ८) और भी जो लोग वहां पवित्र पवित्र पवित्र कह कर नित्य परमेश्वर की स्तुति करते हैं उन सज्जनों की सभा में बैठने की बड़ी लालसा है और मेरी आशा है कि वहां उन के संग सदा मेरा निवास रहेगा इस कारण वहां जाने की मेरी बड़ी अभिलाषा है।

तब प्रीतिवन्ती ने ख्रीष्टियान से कई एक प्रश्न किये कि तुम्हारे स्त्री पुत्रादि परिवार हैं वा नहीं। ख्रीष्टियान ने कहा, हां,

प्रीतिवन्ती से वार्त्तालाप।

मेरी स्त्री और चार पुत्र हैं। प्रीतिवन्ती ने पूछा, उन सभों को साथ क्यों नहीं लाये। यह सुन ख्रीष्टियान रोते हुए कहने लगा कि वे जो संग आते तो मुझे बड़ा आनन्द होता पर उन की तो यह इच्छा थी कि मैं भी इस यात्रा में न आता। प्रीतिवन्ती बोली, तुम को उचित था कि उन्हें समझा देते कि इस नगर में वास करने से भयङ्कर आपदा आ पड़ेगी। ख्रीष्टियान बोला, हां, हमारे नगर के नाश के विषय में जो ज्ञान ईश्वर की कृपा से मुझे हुआ सो सब मैं ने उन से वर्णन किया तिस पर भी उन्होंने कुछ ध्यान न दिया वरन् समझा कि यह हम से हँसी करता है। (उत्पत्ति १९ : १४) प्रीतिवन्ती बोली, क्या तुम ने इस बात के लिये तुम्हारा उपदेश उन के मन को लगे कि ईश्वर से प्रार्थना की थी? ख्रीष्टियान ने कहा, हां, मैं ने उन के लिये बड़ी

करुणा से प्रार्थना की क्योंकि आप जानिये मेरे स्त्री पुत्रादि मेरे अत्यन्त प्रिय हैं। प्रीतिवन्ती ने फिर पूछा, क्या तुम ने अपना दुःख और सर्वनाश होने का भय उन को कह सुनाया क्योंकि मुझे जान पड़ता है कि सर्वनाश होने वाला है इस का तुम को स्पष्ट ज्ञान हुआ था। खीष्टियान ने कहा, हां, उस को मैं ने उन से बार बार कहा और मेरे सिर पर पड़ने वाले वज्र स्वरूपी दुःख से मैं अत्यन्त भयमान हुआ इस को वे मेरे मलिन मुख सजल नयन कम्पमान शरीर देख कर जान सकते थे तौ भी मेरे साथ आना स्वीकार न किया। प्रीतिवन्ती ने कहा, वे जो तुम्हारे साथ न आये उस का कुछ कारण भी उन्होंने बताया। खीष्टियान बोला, मेरी स्त्री ने तो समझा कि पति के साथ हो लेने से संसार को छोड़ना पड़ेगा और मेरे लड़के बालक थे अपनी अवस्था के सुख में मग्न थे इस रीति की अनेक बाधाओं से उन्होंने मेरे साथ आना स्वीकार न किया तब मुझे अकेला आना पड़ा। प्रीतिवन्ती ने कहा, तुम ने उन को अपने साथ आने की चेष्टा से जो जो कुछ उन से कहा उस का क्या तुम ने अपने सांसारिक आचरण द्वारा खण्डन न किया होगा? खीष्टियान ने उत्तर दिया कि मैं यह नहीं कह सकता हूं कि उस समय मेरा आचरण निर्दोष था क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि उस समय मेरे अनेक दोष थे और यह भी मैं जानता हूं कि लोग अपने वाक्य द्वारा औरों का चित्त दृढ़ करने निमित्त जो उपदेश करें उस का वे अपने आचरण द्वारा बहुत शीघ्र खण्डन कर सकते हैं। पर यह तो मैं कह सकता हूं कि कहीं मेरी किसी कुक्रिया द्वारा यात्रा के विषय में इन्हें बाधा न हो इस भय से मैं बड़ी सावधानी से चला करता था। वे लोग मुझे इसी सावधानी का दोष लगा कर कहते थे कि अब तो तुम बड़े साधु हुये कि जिस

बात में कुछ दोष हमें नहीं दीखता है उस में भी दोष लगा कर उस का त्यागन करते हो। और केवल यही नहीं किन्तु मैं यह भी कह सकता हूं कि उन्हें बाधा विशेष करके इसी बात में दिखाई दी कि उन्होंने मुझे ईश्वरेच्छा विरुद्ध पाप करने में और अपने पड़ोसियों का कुछ बिगाड़ने में बड़ा भय करते देखा प्रीतिवन्ती बोली, काइन ने अपने भाई से शत्रुता की क्योंकि उस के कर्म्म पापमय थे पर उस के भाई के कर्म्म धर्म्ममय थे। (१ योहन ३ : १२) इस कारण जो तुम्हारे स्त्री पुत्रादि तुम से विमुख हुए हैं तो अपने को धर्म्म के विरोधी प्रगट करते हैं उन के दण्ड पाने में तुम्हारा दोष नहीं है। (हिजकिएल ३ : १९)

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि भोजन निमित्त द्राक्षारस और नाना विधि सुस्वादित सामग्री जब साम्हने रक्खी गई तब वे परस्पर की वार्त्ता समाप्त कर भोजन करने लगे। उस समय पर्वत के स्वामी ने किस निमित्त और किस रीति से यह भवन बनवाया और इसे छोड़ कितने और और धर्म्म कर्म्म किये इस की चर्चा आपस में होने लगी। उन की वार्त्ता द्वारा मुझे जान पड़ा कि उन का स्वामी बड़ा सूरमा था और उस ने मृत्यु पति से युद्ध कर उसे मारा पर यह काम उस ने महा संकट सहकर किया इस निमित्त मैं उस को बहुत प्रिय जानता था। (इब्रि॰ २ : १४, १५) विशेष कर ख्रीष्टियान ने कहा कि मैं ने ऐसा समाचार सुना है और उसे सत्य जानता हूं कि उस ने अपने देश की प्रजा निमित्त अति स्नेह से अपना रक्त बहाया वे सब कर्म्म किये इस कारण संसार में उसके अनुग्रह का यश फैल गया। और भी कितने एक जो उस घर में थे यह बात कहते थे कि क्रूश पर उस के मरने के पीछे हम ने उस के निकट

यात्री को भोजन कराना।

जा उस से वार्त्ता की फिर जो कुछ उस के मुखारविन्द से सुना उस के प्रमाण से यह दृढ़ बचन कह सकते हैं कि वह दीन यात्रियों पर ऐसा स्नेह करता है कि उदय से अस्त लों उस के समान और कोई पुरुष नहीं है। इन सब बातों को कह उन्हों ने प्रमाण भी दिये कि देखो दीन हीन मनुष्यों के सुख और उपकार निमित्त उस ने अपना सब ऐश्वर्य्य और सुख त्याग दिया। और यह एक दृढ़ वाक्य भी उन्हों ने स्वामी के मुख से सुना था कि सियोन पर्वत पर अकेले रहने की उस की इच्छा नहीं है। और एक वार्त्ता उन्हों ने यह कही कि जो स्वाभाविक भिक्षुक थे और अति नीच दशा में जन्मे थे ऐसे यात्रियों को भी उस ने राजपुत्र के सम कर दिया है। (१ शमुएल २ : ८ । गीत ११३ : ७, ८) बहुत रात बीते लों ऐसी ऐसी बातें हुईं फिर अपनी अपनी रक्षा के निमित्त अपने तईं ईश्वर को समर्पण कर शान्ति नाम बड़ी उपरौठी कोठरी जिस के झरोखे से सूर्य्य उदय होते ही किरण ज्योति आती थी ख्रीष्टियान को शयन करने के लिये दिखा, सब कोई अपने स्थान में जाकर सो रहे। ख्रीष्टियान रात भर विश्राम कर पौ फटते ही उठ यह गान करने लगा।

दोहा।

कहो जु कौने ठाम यह . जहं मैं आयो आज।
यीशु कृपाहि अपार तें . देखों सकल समाज॥
यात्री जन के कारने . प्रेम कीन्ह परकास।
पाप सबै तब क्षमिके . स्वर्गहि देहैं वास॥

फिर प्रातः समय सब कोई उठे और ख्रीष्टियान से अनेक प्रकार की वार्त्ता कर उस से कहा कि इस स्थान के आश्चर्य्य विषयों को बिन दिखाये तुम को बिदा न करेंगे। प्रथम तो उसे पुस्तकालय में ले जाकर अत्यन्त प्राचीन प्राचीन ग्रन्थ दिखाये।

मुझे सुरत आती है कि स्वप्न में मैं ने यह देखा कि पहिले उसे पर्वत के स्वामी की वंशावली का ग्रन्थ दिखाया जिस में लिखा है कि वह अनादि अनन्त परमेश्वर का पुत्र है। और उस के सम्पूर्ण कर्म्म भी उस में लिखे हैं और जिन जिन लोगों को उसने अपनी सेवा में रक्खा उन में से सहस्रों के नाम भी लिखे हैं और यह भी वृत्तान्त लिखा है कि उस ने अपने सेवकों को ऐसे भवनों में बसाया है जो न बहुत काल बीतने से न सड़ने गलने से कभी क्षय होंगे। फिर उसके भक्तों ने जो उत्तम उत्तम कार्य्य किये हैं उन का वर्णन खीष्टियान को सुनाने लगे विशेष कर जिस रीति से उन्हों ने राज्यों को जीत लिया धर्मकार्य किये अनेक प्रतिज्ञायें प्राप्त की सिंहों के मुख बन्द किये अग्निज्वाला शान्त की खड्ग की धार रोकी दुर्बल से बलवान् और युद्ध में वीर हुए और अन्य देशियों की सेना के समूह को हटा दिया ऐसे ऐसे अनेक विषय उसे पढ़ सुनाये। (इब्रि. ११ : ३३, ३४) फिर जिन्हों ने उस कर्त्ता के वा उस के वाक्य के विमुख हो अनेक उपद्रव किये वह उन पर कृपा करने की कैसी इच्छा रखता है इसका वर्णन जो प्राचीन पुस्तक में लिखा था वह भी खीष्टियान को सुनाया। और जो अन्य अन्य प्राचीन इतिहास कथा थीं सो भी खीष्टियान ने देखीं। फिर भूत विषय वर्त्तमान विषय आश्चर्य्य विषय शत्रुओं के भयजनक विषय और यात्री लोगों के आह्लादजनक विषय और अनेक प्रतिज्ञा और भविष्यद्वाक्य जो अपने अपने समय में निःसन्देह पूर्ण होंगे खीष्टियान देखे। फिर दूसरे दिवस खीष्टियान को शास्त्रगृह में ले जा खड्ग, ढाल, टोप, कवच, सर्वप्रार्थना, अक्षय पादुका आदि अनेक शस्त्र जो उन को प्रभु ने

आश्चर्य विषयों को दिखाना।

पुस्तकालय।

यात्रियों के लिये प्रस्तुत किये थे सो सब उस को दिखाये वहां इतने शस्त्र थे कि जो कदाचित् आकाश के तारों के समान असंख्य मनुष्य उस प्रभु की सेवा में प्रवृत्त हों तो उन सभों को देकर बच रहें। फिर उस के शिष्यों ने निज शस्त्र द्वारा अनेक आश्चर्य्य कर्म्म किये थे ऐसे शस्त्र भी उसे दिखाये विशेष कर मूसा की छड़ी दिखाई और हथौड़ी और कील जिन से योएल नाम स्त्री ने सीसिरा सेनापति को मारा और तुरही और दीपक जिन के द्वारा गिदियान ने मिदियान देशीय सेना को भगा दिया ये सब दिखाये। फिर जिस पैने को लेकर शमगर न्यायी ने छः सौ मनुष्यों को मारा और जो सूखा हाड़ लेकर शमशोन ने अपना वीरत्व प्रकाश किया सो भी दिखाये। फिर गोफन और पत्थर दिखाये जिन से दाऊद ने गात नगर के जालूत वीर को मारा। इस के पीछे वह खड्ग दिखाया जिस से उन का प्रभु महायुद्ध के दिन पापी पुरुष को वध करेगा। और और अनेक उत्तम वस्तु दिखाई जिन्हें देखकर खीष्टियान अति प्रसन्न हुआ। फिर रात्रि में पहिली रात की भांति शयन किया।

शस्त्रगृह।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि प्रात समय उठ खीष्टियान ने जब आगे बढ़ने की इच्छा की तब उन लोगों ने उस से कहा कि आज भी रह जाओ तो कल जो निर्मल दिवस हो तो तुम्हें रमणीय नाम पर्वत दिखावेंगे क्योंकि उन के देखने से तुम और भी प्रसन्न होगे क्योंकि वे पर्वत इस पर्वत से तुम्हारे वांछित स्थान के अधिक निकट हैं। यह बात सुन खीष्टियान ने उस दिवस का रहना अङ्गीकार किया। दूसरे दिवस वे लोग खीष्टियान को उस राजगृह की छत पर ले गये और दक्षिण

रमणीय पर्वत का दृश्य।

दिशा की ओर देखने को आज्ञा दी। खीष्टियान ने द्राक्षादि वृक्ष मनोहर सुगन्धित पुष्पयुक्त बाटिका सरोवरादिमय रमणीक पर्वत बहुत दूर पर देख उन से पूछा कि उस देश का नाम क्या है। (यशायाह. ३३:१६, १७) उन्हों ने उत्तर दिया कि इम्मानुएल का अधिकार है वह इस पर्वत की नाईं यात्रियों के लिये साधारण स्थान है वहां पहुंच के वहां के गड़रियों से कहना तो तुम्हें स्वर्गपुर का द्वार दिखावेंगे।

नवां अध्याय।

खीष्टियान को शस्त्र पहिराना।

जब खीष्टियान जाने को फिर उपस्थित हुआ तब उन्हों ने कहा जाइये परन्तु फिर विचारा कदाचित् मार्ग में इसे कोई शत्रु सतावे इस कारण इस को शस्त्र देना उचित है। यह विचार कर खीष्टियान से कहा, एक बेर तुम शस्त्रगृह में फिर चलो तब वहां जाकर उसे नख से शिख लों चोखे चोखे शस्त्र पहिना दिये। इस भांति खीष्टियान हथियारबन्द हो मण्डली सहित द्वार पर आ उस द्वारपाल से पूछने लगा क्या इस मार्ग से किसी यात्री को जाते देखा। द्वारपाल ने उत्तर दिया, हां, देखा है। खीष्टियान ने कहा कि क्या तुम उसे चीन्हते हो। द्वारपाल ने उत्तर दिया, मैंने उस का नाम पूछा तब उस ने अपना नाम विश्वासी बतलाया। खष्टियान ने कहा, हां, मैं उसे जानता हूं वह मेरा स्वदेशी और पड़ोसी है मेरी जन्म भूमि से आया है वह कितनी दूर गया होगा। द्वारपाल ने कहा, वह पर्वत के नीचे पहुंचा होगा। तब खीष्टियान ने द्वारपाल से कहा, तुम ने मेरे ऊपर बड़ी

यात्री को शस्त्र पहिराना।

कृपा की है परमेश्वर तुम्हारा कल्याण कर तुम को सर्वदा आनन्दित रक्खे ।

जब खीष्टियान आशीर्वाद दे आगे बढ़ा तब सुचेती धर्म्मिष्ठा प्रीतिवन्ती और बुद्धिवन्ती उस को पर्वत के नीचे लों पहुंचाने के लिये उस के साथ चलीं और जब तक वे पर्वत की तराई लों न पहुंचे तब तक पूर्व प्रसङ्ग की वार्त्ता आपस में करते चले । खीष्टियान ने कहा, जैसा पर्वत का चढ़ना कठिन था तैसा ही उतरना भी भयङ्कर दृष्टि पड़ता है यह सुन बुद्धिवन्ती बोली, सत्य कहते हो हम इसी निमित्त पर्वत के नीचे लों पहुंचाने आई हैं जिस घाटी से तुम अब नम्रता की तराई में उतरते हो उस का उतरना तुम सरीखे मनुष्य को बड़ा कठिन है देखिये फिसलना मत । यह सुन खीष्टियान बड़ी सावधानी से उतरने लगा तौ भी दो तीन बिरियां उस का पांव फिसला । इस के अनन्तर मैं स्वप्न में देखता हूँ कि खीष्टियान धीरे धीरे पर्वत के नीचे पहुंचा तब इन सहायक कन्याओं ने उसे एक रोटी और एक पात्र में द्राक्षारस और द्राक्षाफल की एक घौर दे अपने घर लौट गईं और खीष्टियान धीरे धीरे आगे बढ़ा ।

नम्रता की तराई में उतरना ।

नम्रता की तराई में खीष्टियान की बड़ी दुर्दशा हुई । थोड़ी दूर जाकर क्या देखता है कि अपल्लुओन नाम एक महा दुरात्मा क्रूर असुर मैदान पर से मेरी ओर चला आता है । तब वह भयातुर हो कहने लगा कि मैं पीछे हटूं वा खड़ा रहूं क्या करूं । फिर विचारा कि जो मैं इस को पीठ दिखा कर भागूं तो मेरी पीठ की रक्षा निमित्त कुछ नहीं है यह पीछे से मेरी पीठ को तीर से वेधेगा । यह विचार कर उस का सामना करना

अपल्लुओन नाम असुर से मुठभेड़ ।

ही ठहराया। उस ने जान लिया कि और सब वांछित विषय तो रहें पर इस समय मुझे अपने प्राण की रक्षा के लिये सामना ही करना अवश्य है। सो खीष्टियान साहस कर क्रम क्रम आगे बढ़ने लगा और थोड़ी ही देर में वह असुर भी उस के निकट आ पहुंचा। उस का रूप बड़ा भयङ्कर देख पड़ा और वह मछली की नाईं सर्वाङ्ग एक भांति के छिलकों से ढंपा था इसी से उसे अभिमान था। उस का स्वरूप उड़ते सर्प के समान था उस के हाथ पैर भालू की नाईं थे और उदर से अग्नि और धूंआं निकल रहा था और उस का मुख सिंह का था। ऐसा भयानक रूपयुक्त असुर खीष्टियान के निकट आ क्रूर दृष्टि से देख उसे तुच्छ समझ कर कहने लगा, अरे तू कहां से आया है और कहां को जायगा? खीष्टियान ने उत्तर दिया कि जिस नाशनगर में सम्पूर्ण पाप का स्थान है मैं वहां से आया हूं और सियोन पर्वत को जाता हूं। अपल्लुओन ने कहा, हां! हां!! तेरी बातों से जान पड़ा कि तू मेरी प्रजा में से है क्योंकि वह सम्पूर्ण देश मेरा है मैं ही वहां का राजा हूं तू क्यों अपने राजा का देश छोड़ कर भाग आया है। मेरी यह आशा है कि तू फिर मेरे अधीन होगा नहीं तो मैं एक बार ऐसा हाथ मारा कि तेरा प्राण निकल जाए। खीष्टियान ने कहा, सुनो इस में सन्देह नहीं तुम्हारे अधिकार में मेरा जन्म हुआ पर एक तो तुम्हारी सेवा बड़ी कठिन है दूसरे तुम्हारे वेतन से जीव को पालना असाध्य है क्योंकि पाप का वेतन मृत्यु है। (रोमियों ६ : २३) इस हेतु जब मैं सयाना हुआ तब और और बुद्धिमानों की नाईं मैं अपने मङ्गल कुशल की चेष्टा करने लगा। अपल्लुओन ने कहा, भला ऐसा कौन राजा है। जो अपनी प्रजा को सहज ही में छोड़ दे मैं भी तुझ को न छोड़ूंगा। तू फिर लौट चल। और सेवा और वेतन के विषय में

जो तू झगड़ता है उस के विषय में मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि जो जो उत्तम वस्तु मेरे देश में उत्पन्न होती हैं उन वस्तुओं में से मैं तुझे दूंगा सो कहना मान और फिर लौट चल। खीष्टियान बोला, जिस की सेवा मैं ने अब अङ्गीकार की है वही महाराजाधिराजा मेरा स्वामी है इस कारण अब जो मैं तुम्हारे साथ फिर जाऊं तो यह बड़ी अनीति होगी। अपल्लुओन ने कहा, बिल्ली के पंजे से निकल बाघ के पंजे में आ पड़ा यह कहावत सत्य हुई क्योंकि तू थोड़ा दुःख छोड़ महत् दुःख में पड़ा है। सुन बहुत मनुष्य ऐसा कर चुके हैं पहिले उस की प्रजा में जा मिले और फिर थोड़े काल उस को छोड़ कर फिर मेरी ही शरण में आये हैं इस से तू भी वैसा ही कर तो सर्वदा तेरा कल्याण होगा। खीष्टियान ने कहा, मैं उसी की प्रजा हूंगा मैं ने यह बात किरिया खाकर उस के सन्मुख स्वीकार की है। अब जो फिर जाऊं तो विश्वासघाती की नाईं फांसी में पडूंगा इस लिये अब दूसरी बात नहीं हो सकती। अपल्लुओन बोला, तू ने तो मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार किया है परन्तु जो इस समय तू फिर जाय तो तेरा सब अपराध क्षमा करूंगा। खीष्टियान ने कहा, सुनो तुम्हारी जो बात मैं ने अङ्गीकार की थी सो बालकपन में की थी और मैं जानता हूं कि मैं जिस राजा के झण्डे के नीचे आ चुका हूं वह मेरे उन पापों को क्षमा कर सकता है और तुम्हारा आज्ञाकारी हो जो जो मैं ने दुष्कर्म्म किये उन को भी क्षमा करेगा इस कारण सर्व नाशक अपल्लुओन मैं तुम्हारी सेवा से अधिक उस की सेवा और वेतन और दासों और सङ्गति और राज्य को उत्तम जानता हूं इस लिये तुम मुझे फुसलाने का उद्योग मत करो क्योंकि मैं उस का सेवक हूं और अवश्य उसी की आज्ञा मानूंगा यही निश्चय जानना। अपल्लुओन ने कहा,

सुन तू सुस्थिर हो फिर विचारियो कि इस पथ में तुझे कितना बहुत क्लेश होगा । मेरी आज्ञा और मेरा पथ उल्लंघन करने से प्राय: उस के सब दासों को कैसी कैसी दुर्दशा होती है यह भी तू जानता है । देख कितने मनुष्य लज्जायुक्त क्लेश से मारे गये हैं । फिर तू मेरी सेवा से उस की सेवा को उत्तम जानता है इस का कारण क्या है ? अरे विवेचना कर के उस के चरित्रों को विचारा कि उस के सेवक शत्रु के हाथ में पड़ के जो कष्ट पाते हैं तो उन की रक्षा निमित्त वह एक बार भी घर से बाहर नहीं होता है । और मेरे विश्वासी लोग जो उस के वा उसके लोगों के हाथ में पड़ते हैं उन की मैं छल वा बल द्वारा कितनी कितनी बार रक्षा किया करता हूं यह सब लोग जानते हैं ऐसा ही तेरी भी रक्षा करूंगा । खीष्टियान ने कहा, मेरा महाराजा विचारता है कि सेवकों का स्नेह मुझ पर है वा नहीं और अन्त लों वे मेरी भक्ति में बने रहेंगे वा नहीं इसी परीक्षा के निमित्त वह उन की सहायता करने में विलम्ब करता है । फिर तुम जो बात कहते हो कि अन्त में उस की प्रजा की दुर्दशा होती है सो नहीं किन्तु बड़ा आनन्द होता है, हां, उन को इस बात की बहुत चिन्ता नहीं है कि इस संसार में हम दुःख से रक्षा पावें परन्तु वे स्वर्गीय सुख की आशा कर धीरज धरते हैं और जब उन का राजा अपने दूतों के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब वे लोग भी ऐश्वर्य्य को अवश्य प्राप्त करेंगे । अपल्लुओन बोला, अरे ! तू तो उस की सेवा में अविश्वासी ठहर चुका और अब तू कैसे उस से वेतन पाने की आशा करता है । खीष्टियान ने कहा, हे अपल्लुओन मैं कौन से विषय में उसके निकट अविश्वासी ठहरा । अपल्लुओन ने उत्तर दिया, मुझे सब बातों की सुरत नहीं आती है पर मैं दो चार बातें तुझे सुनाता हूं कि जिस

समय तू निराश पङ्क में फँस गया और उल्टी सांसें लेने लगा तब तेरा विश्वास कहां था? फिर जब तक तेरे अधिपति ने तेरी पीठ का भार दूर नहीं किया तब तक तुझे धीरज धरना उचित था सो तू ने न किया किन्तु शीघ्रता करके भार से मुक्ति पाने के निमित्त एक अनुचित उपाय की चेष्टा की फिर पापिष्ट की भांति निद्रागत हो तू ने अपनी प्रिय वस्तु खो दी और सिंहों को देख कर पीछे फिर जाने की इच्छा करने लगा। और अपनी यात्रा में जो जो तू ने देखा वा सुना है उस की चर्चा करने के समय तू अभिमान कर प्रशंसित होने की इच्छा मन ही मन करता है। खीष्टियान बोला, जो तुम कहते हो सो सब सत्य है तुम जितना चाहो उतना मेरा दोष प्रकट करो परन्तु मैं जिस महाराजा की आराधना और सेवा करता हूं वह करुणानिधान और सदा क्षमाशील है। ये सब चूकें तुम्हारे राज्य में पाले जाने के कारण मुझ से हो गईं। उन के बोझ से मैं बड़ा आतुर और दुःखित था सो मेरे स्वामी ने सब क्षमा की। अपनी इच्छा के विरुद्ध इस की बात सुन अपल्लुओन अत्यन्त क्रोधित हो बोला, मैं तेरे उसी राजा का शत्रु हूं। मैं उस से और उस के लोगों से और उस की आज्ञा से घृणा करता हूं इस कारण मैं तुझे रोकने आया हूं। खीष्टियान ने कहा, सुन मैं राजमार्ग में खड़ा हूं तू जो करे सो देख भाल के कर।

इतना सुनते ही अपल्लुओन ने अपनी दोनों टांगें पसार मार्ग छेंक लिया और कहने लगा कि तू मारा जायगा इस में सन्देह नहीं। मैं अपने नरककुण्ड की किरिया खाकर कहता हूं कि तू इस स्थान में मेरे हाथ से प्राण खोवेगा और यहां से आगे न बढ़ने पावेगा इतना कह उस ने एक अग्नि बाण खीष्टियान की छाती में मारा। खीष्टियान ने तुरन्त अपनी ढाल से उसे रोका।

तब खीष्टियान ने युद्ध का समय जान अपने अस्त्र-शस्त्र खींच लिये। अपल्लुओन तब क्रोध कर ओलों के समान उस पर बाण बरसाने लगा। खीष्टियान ने सावधानी से निवारण किये तथापि उस खीष्टियान के सिर और हाथ और पांव घायल किये इस कारण वह कुछ पीछे हटा। यह देख अपल्लुओन अपनी सम्पूर्ण शक्ति भर फिर घोर युद्ध करने लगा तो खीष्टियान ने भी साहस करके सामर्थ्य भर उस से युद्ध किया। इस भांति दोपहर से अधिक काल तक युद्ध होने से खीष्टियान कुछ कुछ बलहीन होने लगा क्योंकि उस के घावों से रुधिर के बहने के कारण उस का बल क्षीण होता चला जाता था। खीष्टियान की यह दशा देख अपल्लुओन ने समीप आ मल्लयुद्ध कर खीष्टियान को पछाड़ा। गिरने के साथ उस का खड्ग हाथ से छूट गया। तब अपल्लुओन ने कहा, अब तो तू मेरे वश हुआ अब कहां जाएगा। यह कह खीष्टियान के छाती पर चढ़ उसे दबा के मारना चाहा। उस खीष्टियान को बचने की कुछ आशा न रही परन्तु अपल्लुओन जिस समय एक घोर मार से बेचारे खीष्टियान का प्राण हरण किया चाहता था उसी क्षण ईश्वर की इच्छा से खीष्टियान ने हाथ बढ़ा खड्ग ले कहा, हे शत्रु तू मेरे विरुद्ध आनन्द न कर मैं गिरे पर भी उठूंगा। (मीका ७ : ८) इतना कह उसने एक ऐसा हाथ मारा कि अपल्लुओन प्राणान्तिक घाव से घायल मनुष्य की भांति घबरा के पाछे हटा। यह देख खीष्टियान ने कहा, जिस ने हम लोगों को प्यार किया है उसी के द्वारा हम इन सब कष्टों में विजयी होते हैं। (रोम० ८ : ३७) यह बात कह वह फिर युद्ध करने को उपस्थित हुआ। यह देख अपल्लुओन अपने परों को समेट डैने फैला कर उड़ गया और फिर खीष्टियान को कभी दिखाई न दिया। (याकूब ४ : ७)

युद्ध के समय अपल्लुओन ने जिस भांति अपने भयङ्कर रूप से गर्जन द्वारा क्रोध प्रकाश कर सर्प के समान फुंकार मारा बिन देखे इस का वर्णन किसी से नहीं हो सकता है। और

खीष्टियान अपल्लुओन दैत्य से युद्ध करता है।

खीष्टियान क्लेश से आतुर हो जैसी ठण्डी सांसें ले हाय मारता था उस का भी वर्णन करना असम्भव है जब तक उस ने अपने

दुधारे खड्ग से अपल्लुओन को न मारा तब तक वह एक बार भी प्रसन्न मुख दिखाई न दिया परन्तु पीछे तो उस ने प्रसन्न हो ऊर्द्ध दृष्टि की। ऐसा महाभयावना युद्ध मैं ने कभी न देखा। जब युद्ध समाप्त हुआ तब खीष्टियान ने कहा कि जिस ने मुझ को सिंह के मुख से बचाया और अपल्लुओन के युद्ध में रक्षा की मैं इसी स्थान में उस की स्तुति करूंगा। तब यह गान करने लगा।

दोहा।

बालजिबूल पिचाशपति, कियो कुयतन कुभाय।
अपल्लुओन अस भूत को, मेरे पास पठाय॥
विकट रूप को धारि के, मोसो भिर्‌यो विरुद्ध।
मारो मारु विदारु कहि, अस्त्रन सहित क्रुद्ध॥
मीकायल मम गति लख्यो, कीन्हों तुरत सहाय।
धन्य धन्य से वीर नित, गुन जिहि बरनि न जाय॥
खड्ग खुली कर देखके, दुर्जन गयो पलाय।
जै जै ध्वनि हौं तब कियो, कोउ न सन्मुख पाय॥
करों प्रशंसा नाथ की, भजों जु ताको नाम।
देखन पावों ताहि को, करिहों दण्ड प्रणाम॥

जब खीष्टियान स्तुति कर चुका तब अमृत वृक्ष के कितने एक पत्ते लिये हुए एक हाथ उसे दिखाई दिया उस ने उन पत्तों को ले अपने सब घावों पर लगाया सो लगाते ही सब घाव चंगे हो गये। तब पहिले जो उसे रोटी और द्राक्षारस मिला था उसे निकाल उस के खाने के लिये कुछ काल वहां ठहरा। पीछे फिर कोई शत्रु मिल जाय इस निमित्त खड्ग हाथ में ले आगे आने को उपस्थित हुआ परन्तु उस तराई में अपल्लुओन ने फिर उस का कोई विघ्न न किया। इस तराई

गुप्त हाथ में अमृत वृक्ष की पत्तियां।

के अन्त में मृत्यु छाया नाम एक तराई और थी उसी में होकर स्वर्गपुर का मार्ग था इस लिये खीष्टियान को उस में होके जाना था। यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने उस का ऐसा वर्णन किया है कि वह महा घोर बन है सूनसान जिस में बड़े बड़े गड़हे हैं निर्जल मृत्यु छायारूपी पथिकहीन और ग्राम रहित उस में होके खीष्टियान बिना और कोई मनुष्य नहीं जा सकता था। खीष्टियान की जो दुर्दशा अपल्लुओन के युद्ध में हुई उस से भी अधिक दुर्दशा इस महा घोर तराई में हुई इस का वर्णन आगे करूंगा।

दसवां अध्याय।

मैं ने स्वप्न में देखा कि जब खीष्टियान मृत्यु छाया नाम तराई के निकट पहुंचा तब देखता क्या है कि दो मनुष्य फिर दौड़े आते हैं पूर्वकाल में जो मनुष्य उत्तम देश का मन्द समाचार लाये उन्हीं के कुल में के ये दोनों थे। (गिन्ती १३ : ३२)

मृत्यु छाया नाम तराई।

जब वे निकट पहुंचे तब उन के साथ खीष्टियान इस रीति से वार्त्ता करने लगा कि तुम कहां को जाते हो। उन दोनों ने कहा, हम फिरे जाते हैं और जो तुम अपने प्राण की रक्षा वा कल्याण चाहो तो तुम भी ऐसा ही करो। खीष्टियान ने कहा, क्या हुआ कहो तो सही। उन्हों ने कहा, क्या बतावें तुम जिस मार्ग से जाते हो उसी मार्ग से हम भी जाते थे और जहां तक हमारे जाने का साहस था वहां तक गये। वहां से फिरना भी कठिन था। जो हम और आगे जाते तो तुम से समाचार कहने को इस स्थान तक फिर न आते। खीष्टियान ने पूछा, तुम पर क्या आ पड़ा। उन्हों ने कहा, हम मृत्यु छाया की तराई के निकट

पहुंचे परन्तु हमारे बड़े भाग हुए जो वहां जाने के पहिले ही वह आपदा हमें दृष्टि पड़ी और हम भाग आये। (भजन ४४ : १९ और १०७ : १०) खोष्टियान ने फिर पूछा. तुम ने वहां क्या देखा। उन्हों ने कहा, हम ने देखा कि वह घोर अन्धकारमय स्थान है और नरक के भूत प्रेत नागादि से परिपूर्ण हो रहा है। और भी अकथनीय कष्ट सहित जो मनुष्य दुःखित और पीड़ित और संकलों से जकड़े हुए हों ऐसे अनेक मनुष्यों का शब्द हाहाकार सहित सुनने में आया। वह तराई गड़बड़ाहट के मेघों से आच्छादित रहती है और उस में सर्वदा मृत्यु निवास करती है। अधिक क्या कहें। यह स्थान अत्यन्त दुर्गम और भयङ्कर और सदा गड़बड़ है। (अय्यूब. ३ : ५ और १० : २२) खीष्टियान ने कहा, तुम ने उस तराई का भयावना सुसमाचार सुनाया है तौभी मुझे निश्चय है कि मेरे वांछित स्थान का मार्ग इसी तराई से होकर जाता है। (भजन ४४:१८, १९; यरमियाह २ : ६) उन्हों ने कहा, तू ही इस मार्ग से जा हम तो न जायेंगे। यह बात कह वे चले गये तब खीष्टियान शत्रु के भय से नंगी तलवार हाथ में ले आगे बढ़ा।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि इस तराई के पथ की दक्षिण अलङ्ग एक अत्यन्त गम्भीर खाई थी इसी में परम्परा से अन्धे अगुओं ने अन्धों को पहुंचाया है और सभों ने वहां गिर के अत्यन्त विपत्ति भोग कर प्राण गंवाया है। और उस की बाईं अलङ्ग में महा आपदायुक्त पङ्क था। मन्द मनुष्य की कौन कहै यदि कोई उत्तम पुरुष भी उस में आय तो पैर धरने का स्थान भी उसे न मिले। उसी पङ्क में एक समय दाऊद राजा गिरा था। उद्धारकारक जो उस का उद्धार न करता तो वह राजा उसी में रह जाता। (भजन ६९ : १६, १७) और

इसी स्थान में पथ अत्यन्त सकरा था उस में बेचारा खीष्टियान बड़ी चौकसी से पैर रखता था क्योंकि जो पङ्क से बचा चाहे तो खाई में गिरने का डर और खाई से बचा चाहे तो पङ्क में गिरने का डर था। यहां वह कहावत सिद्ध हुई कि इधर गिरूं तो कुआं और उधर गिरूं तो खाई। इस कारण वह बड़े कष्ट से आगे बढ़ा और यह भी मैं ने सुना कि वह ठण्डी सांसें भरता था क्योंकि वहां ऐसा अन्धकार था कि हाथ से हाथ नहीं सूझता था। चलने के समय बड़ी कठिनता यह थी कि वह नहीं जानता था कि पैर कहां और किस पर पड़ेगा।

फिर मैं ने देखा कि उस तराई के मध्य में पथ के निकट ही नरक द्वार था इस कारण खीष्टियान और अधिक विलाप करने लगा कि हाय! हाय!! अब क्या करूं। नरक कुण्ड में से धुंआं और अग्निज्वाला और चिनगारियां हूं, हूं, शब्द सहित निकलती थीं। अपल्लुओन तो खीष्टियान के खड्ग का मारा भाग गया परन्तु यह सब वस्तु खड्ग के द्वारा हटने की नहीं यह समझ खीष्टियान ने अपना खड्ग काठी में कर सर्व प्रार्थना नाम शस्त्र हाथ में लिया। (इफिसि. ६ : १८) उस समय मैं ने सुना कि वह चिल्ला चिल्लाकर इस भांति प्रार्थना करता था, हे ईश्वर मैं विनय करता हूं मेरे प्राण की रक्षा कर। (भजन ११६ : ४) यह कहता हुआ खीष्टियान बहुत दूर तक चला गया और वह अग्निशिखा की लपक उस के निकट आती थी। इसे देख और इधर उधर फिरने वाले भूतों का शब्द सुन वह मन में कहने लगा कि अब की मैं टुकड़े टुकड़े हो जाऊंगा अथवा मार्ग की धूरि समान पिस जाऊंगा। खीष्टियान ऐसी ऐसी त्रास जनक वस्तु देखता हुआ और अत्यन्त भयानक शब्द सुनता हुआ दो तीन कोस चला गया इतने में अपनी ओर आते हुये प्रेत पिशाचों के समूह

का शब्द सुन वहां खड़ा हो विचार करने लगा कि अब मुझे यहां क्या करना उचित है। कभी तो फिर जाने का मन करता था और कभी विचारता था कि मैं इतनी इतनी आपदा उठाकर आधो दूर आ पहुंचा हूं अब आगे बढ़ने से फिरने में विशेष भय है। यों विचार कर के आगे बढ़ा। फिर ये सम्पूर्ण प्रेत पिशाच क्रम क्रम उस के निकट आते गए। खोष्टियान ने उन को निकट जान ऊंचा शब्द कर पुकारा कि मैं अपने प्रभु परमेश्वर की सहायता से आगे बढ़ूंगा। इतना बचन सुनते ही प्रेत समूह पीछे हट गया और उस के निकट न आया।

एक और बात यहां वर्णन करना उचित है कि उस समय खोष्टियान का चित्त भय के कारण ऐसा विचलित हो गया था कि अपना शब्द आप नहीं पहिचान सका। इस बात को मैं जिस प्रकार से जान गया उस का वर्णन करता हूं। जब वह उस नरक कुण्ड के समीप आया उस समय उन भूतों में से एक ने उस के पीछे आ उस के कान में फुसफुसाकर ईश्वर की बहुत सी निन्दा की परन्तु खोष्टियान ने समझा कि यह निन्दा मेरे ही चित्त से उत्पन्न होती है। यह सोच मन में कहने लगा कि हाय! हाय!! जिस को मैं पहिले प्यार करता था उस की अब निन्दा करता हूं ऐसा विचार कर अधिक उदास भया। उस का बश चलता तो वह कभी ऐसा न करता पर अपने कान मूंदने का भी उपाय उस समय उस को न सूझा और वह ईश्वरीय निन्दा कहां से सुनाई देती है इस का भी उसे कुछ ज्ञान न हुआ ऐसा उस का चित्त विचलित हुआ था।

इस प्रकार की दुर्दशा से जब खोष्टियान अकेला बहुत दूर तक चला गया तब अकस्मात् एक ऐसा शब्द सुना कि मानो कोई मनुष्य अग्रगामी हो यह कहता है कि जब मैं मृत्यु छाया

की तराई से होके गमन करूं तब किसी प्रकार के दुःख से न डरूंगा क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरे साथ रहेगा। (भजन २३:४) यह वचन सुन ख्रीष्टियान अत्यन्त प्रसन्न चित्त हुआ क्योंकि पहिले तो उस ने इस वचन के सुनने से यह जाना कि इस तराई में मुझे छोड़ और भी कोई कोई ईश्वर के भक्त हैं। दूसरे यह ज्ञान हुआ कि इस घोर अंधकार की दुर्दशा में भी ईश्वर रक्षा के निमित्त अपने भक्तों के साथ है। फिर विचार किया कि यद्यपि इस स्थान के अन्धकार के कारण मैं परमेश्वर को नहीं देख सकता हूं तथापि वह मेरे संग है। (अय्यूब ९:११) तीसरे उसे यह भरोसा भया कि कुछ आगे बढ़ने से उस सज्जन पुरुष को जा लूंगा तब उसके साथ साथ चलूंगा। फिर ख्रीष्टियान गमन करते करते उस अग्रगामी पुरुष को पुकारने लगा परन्तु उस ने भी अपने तईं अकेला जान कुछ उत्तर न दिया। थोड़ी देर पीछे जब पौ फटने लगी तब ख्रीष्टियान बोला कि ईश्वर ने मृत्यु छाया को प्रभात किया है। (आमोस ५ : ८)

जब प्रातःकाल हो गया तब ख्रीष्टियान अन्धकार में जिस जिस आपदा से होकर आया था उसी को दिवस के उजियाला में देखने की इच्छा से पीछे देखने लगा। तब उस ने उस संकीर्ण पथ की दहिनी ओर की खाईं और बाईं ओर का पङ्क और नरक कुण्ड के भूत प्रेत नागादि इन सभों को स्पष्ट देखा पर वे भूतादि उस से बहुत दूर रहे क्योंकि दिन को उस के निकट नहीं आ सकते थे। इस विषय में ऐसा लिखा है कि वह अन्धकारमय गम्भीर स्थानों को प्रगट करता है और मृत्यु छाया को प्रकाशित करता है। (अय्यूब १२ : २२) इसी वाक्य के अनुसार उस को ये सब वस्तु दिखाई दीं। ख्रीष्टियान ने जिस समय दिन के उजियाला में वे सब आपदा देखीं तिस समय जो

विचारा कि ऐसे भयानक मार्ग में मैं ने अकेले चलने के समय रक्षा पाई तो इस से उस को बड़ा आश्चर्य हुआ और सूर्य का उदय होना अपने ऊपर बड़ी कृपा समझा क्योंकि हे पाठक लोगो यह स्मरण रक्खो कि मृत्युछाया के पूर्वार्द्ध में जो आपदा थी उस से अधिक उस के उत्तरार्द्ध में थी। जिस स्थान में खीष्टियान खड़ा था वहां से लेकर तराई के अन्त लों समस्त मार्ग फांद पाश जालादि और गड़हे खात दलदल अन्धकूप आदि से परिपूर्ण था कदापि पूर्वभाग का सा इस में भी अन्धकार होता तो खीष्टियान के सहस्र प्राण होते तौभी एक न बचना किन्तु सूर्य के उदय होने से वह मार्ग सुगम भया। तब खीष्टियान बोला परमेश्वर के दीपक के द्वारा मेरा मस्तक दीप्तिमान हुआ और उस के तेज के प्रभाव से मैं अन्धकार में गमन करता हूं। (अय्यूब २९ : ३)

इस भांति खीष्टियान ज्योति ज्योति चलता हुआ उस तराई के शेष भाग पर आ उपस्थित हुआ। फिर मैं स्वप्न में देखता हूं कि उस स्थान में अनेक मनुष्यों को अर्थात् जो यात्री पहिले इस मार्ग में होकर गये थे उन के धड़ मूंड़ हाड़ रक्त मांस भस्म इत्यादि बहुत से पड़े थे। ऐसा देख कर मैं विचार करने लगा कि इस का कारण क्या है। इतने में देखा कि आगे कुछ दूर पर एक महा भयङ्कर गुफा है। पूर्वकाल में उस में पापा और देवपूजक नाम दो दानव रहते थे। वे यात्रियों को निर्दयी होकर मार डालते थे इस कारण वह स्थान रक्त हाड़ मूंड़ादि से पूर्ण हो रहा था। परन्तु खीष्टियान उस स्थान से सहज ही निकल गया उसे कुछ विघ्न न हुआ। यह देखकर मुझे आश्चर्य्य हुआ पर पीछे से सुना कि देवपूजक जो दानव था सो बहुत दिन हुए मर गया और पापा यद्यपि जीता है तौ भी बुढ़ापे के कारण तन-

क्षीण बलहीन हो गया है और युवावस्था के बारम्बार युद्ध में चोट खाने से उस की हड्डियों के जोड़ सब अकड़ गये हैं इस कारण चल भी नहीं सकता है किन्तु अपनी गुफा के द्वार पर

पापा दानव खीष्टियान को देख के क्रोध करता है।

बैठ अपनी उङ्गलियों के नख चबाता है और उस मार्ग होकर जो यात्री जाते हैं उन्हें देख देख दांत पीसता है इस से अधिक और कुछ नहीं कर सकता है। मैं ने स्वप्न में देखा कि खीष्टियान जाते

जाते उस दानव की गुफा के निकट पहुंच उसे द्वार पर बैठे देख कुछ कुछ डरा क्योंकि वह इस का पीछा तो न कर सका पर उस में यह बात कही कि जब लों तुम ऐसे थाची अग्नि में जलाये न जायेंगे तब लों तुम न सुधरोगे। यह सुन खीष्टियान चुप हो साहस कर आगे बढ़ा उसे किसी रीति की हानि न हुई तब यह गान करता चला।

दोहा।

या दुखदाई ठांव ते, रचा पायो प्रान।
त्रिभुवन में ऐसो कहूं, नहीं चमत्कृत थान॥
महा भयङ्कर स्थान तें, मुक्ति कियो जिन मोहिं।
धन्यवाद ताको करौं, करुणानिधि है सोहिं॥
कहा शक्ति मो मूर्ख की, कैसे करों बखान।
शाकवणिक को किमि लहै, रतनमोल को ज्ञान॥
महा भयङ्कर जन्तुमय, भूत प्रेत पिशाच।
घोर अनर्थक करहिं नित, दुष्कर्मनि दुर्वाच॥
महा भयानक थान तें, लीन्ही मोहिं बचाय।
ध्यान प्रगट मे आयके, मेरी करी सहाय॥
एक ओर है पङ्क जहं, एक ओर है खात।
सूक्ष्म मारग बीच में, प्रेत करत उत्पात॥
ऐसे पथ तें मोहिं जिन, आय बचायो तात।
दीनो सुख निज भक्त को, प्रेतहि कीन्हो मात॥
धीशु मुकुट माथे धरे, आये करन सहाय।
स्तुति ताकी कैसे करों, कीर्त्ति कही नहिं जाय॥

ग्यारहवां अध्याय ।

ख्रीष्टियान और विश्वासी की बातचीत ।

तदनन्तर ख्रीष्टियान जाते जाते यात्रियों के दूर तक देखने के लिये एक टीला बना था उस पर चढ़ गया । वहां से देखा कि विश्वासी नाम यात्री चला जाता है देखते ही उसे पुकारा, हे भाई पथिक खड़े रहो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा । यह शब्द सुन विश्वासी ने पीछे फिर कर देखा तब इस ने फिर कहा, जब लों मैं न आऊं तब लों वहीं खड़े रहियो । उस ने उत्तर दिया, नहीं नहीं मैं अपना प्राण हथेली पर धरे जाता हूं और नर-हिंसा का दण्ड देवेहारा मेरे पीछे लगा है । यह सुन ख्रीष्टियान कुछ दुःखित हो भरसक दौड़ विश्वासी के निकट पहुंच उस को पीछे छोड़ आप आगे बढ़ गया सो पीछे का आगे और आगे का पीछे हुआ । तब ख्रीष्टियान अपने भाई के आगे बढ़ जाने के कारण अभिमान कर हंसने लगा । इसी अहङ्कार द्वारा उस का ध्यान चूकने से उस को ठोकर लगी और वह ऐसा गिरा कि जब तक विश्वासी ने निकट आकर उसे न उठाया तब तक उठ न सका ।

विश्वासी के साथ भेंट ।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि वे दोनों मिल प्रेम पूर्वक अपनी अपनी यात्रा की विदित बातों की चर्चा आपस में करने लगे । ख्रीष्टियान बोला, हे आदर योग्य प्रियतम भ्राता मुझे जो तुम्हारा साथ मिला और इस मनोहर मार्ग में मित्रभाव से एकत्र चलने के निमित्त ईश्वर ने मेरा और तुम्हारा चित्त मिला दिया इस से मुझे अत्यन्त आनन्द भया । विश्वासी ने कहा, हे प्रिय बन्धु !

मैं ने विचारा था कि मैं स्वदेश छोड़ते ही तुम्हारे साथ हो लेता पर तुम आगे बढ़ आये इस कारण मुझे इतनी दूर अकेला आना पड़ा। ख्रीष्टियान ने पूछा, मेरी यात्रा के पीछे तुम नाश नगर में कितने दिन रहे? विश्वासी ने उत्तर दिया, मैं वहां जब तक रह सका तब तक रहा पर तुम्हारे देश छोड़ने के पीछे बहुत दिन न रह सका क्योंकि यह बात लोगों में बहुत फैल गई कि यह नगर थोड़े ही दिन में अग्नि से जो आकाश से बरसेगी भस्म हो मिट्टी में मिल जाएगा। ख्रीष्टियान ने कहा, क्या तुम्हारे पड़ोसियों ने तुम से यह बात कही? विश्वासी ने कहा, हां, हां, कितने दिन लौं यह बात सब के मुंह में थी। ख्रीष्टियान बोला, उस आपदा से मुक्ति पाने के निमित्त तुम्हारे सिवा क्या किसी और ने भी देश छोड़ा? विश्वासी ने कहा, सुनो इस विषय में उन लोगों ने अनेक अनेक वार्त्तायें कीं पर मेरी समझ में किसी को दृढ़ विश्वास उत्पन्न न हुआ क्योंकि उन की बातचीत में मैं ने कितने लोगों का तुम्हारी निन्दा करते सुना। वे तुम्हारी यात्रा को असङ्गत कह कर उपहास करते थे। परन्तु इस बात के निश्चय होने से कि स्वर्गाग्नि से हमारा नगर अवश्य भस्म होगा मैं तो नगर छोड़ भागा और अब भी मुझे वही निश्चय है।

विश्वासी का कथा।

ख्रीष्टियान ने पूछा, हमारे पड़ोसी दुचित्ते के विषय में तुम कोई वार्त्ता सुनी या नहीं? विश्वासी ने उत्तर दिया, हां, मैं ने सुनी यह तुम्हारे साथ निराश पङ्क तक आया और उस में फंस गया था यह बात सब कोई कहते थे। वह तो मुकर जाता था तौभी मैं उस बात को सत्य जानता हूं क्योंकि मैं ने देखा कि उस का वस्त्र उस प्रकार के पङ्क से भरा था। ख्रीष्टियान ने कहा,

दुचित्ते के विषय में।

भला प्रतिवासी लोग उस को क्या कहते थे? विश्वासी बोला, वह जब फिर कर वहां गया तो सब उसे तुच्छ समझ उस की निन्दा करते थे। विशेष क्या कहूं अब कोई उसे काम में भी नहीं लगाता है और यात्रा करने के पहिले जो उस की अवस्था थी उस से सौ गुना हीन उस की दशा हो गई है। ख्रीष्टियान ने फिर पूछा, यह क्यों हुआ कि जिस पथ का उस ने परित्याग किया जब उस पथ को प्रतिवासी लोग भी तुच्छ गिनते हैं तब वे उसे ऐसा हीन क्यों समझते हैं? विश्वासी ने कहा, कोई कोई यह बात कहते हैं कि यह बड़ा झूठ है इस ने अपना मत छोड़ दिया इस को फांसी देना चाहिये। इस बात से मुझे जान पड़ता है कि ईश्वर ने सत्यपथ के त्याग निमित्त उस के शत्रुओं का चित्त उस की ओर से फेर दिया है कि वे ताली बजा के उस का हास्य करें जिस से उस का अपयश होवे। (यरमियाह २९ : १८, १९) ख्रीष्टियान ने कहा, भला जब तुम वहां थे तब तुम से और उस से कभी कुछ वार्त्ता हुई ? विश्वासी ने उत्तर दिया, एक दिन मैं ने उस को नगर के मार्ग में देखा था परन्तु कुछ वार्त्ता न हुई कारण यह है कि वह अपने कर्म्म से आप लज्जित हो सिर नीचा कर मार्ग की दूसरी ओर होकर निकल गया। ख्रीष्टियान ने कहा, मुझे देश छोड़ने के समय कुछ उस का भरोसा था कि इस की भी रक्षा होगी पर अब मुझे यही अनुमान होता है कि नगर के ध्वंस के समय उस का भी सर्वनाश होगा क्योंकि कूकुर अपनी वमन आप खाता है और धोया हुआ शूकर फिर कीचड़ में लोटता है यह सत्य कहावत उस पर घटती है। (२ पितर २ : २२) विश्वासी ने कहा, मुझे भी उस के विषय में ऐसा सन्देह है।

तब ख्रीष्टियान ने कहा, हे मित्र! विश्वासी अब हम उस की कथा छोड़ कर अपनी अपनी यात्रा की कुछ चर्चा करें। इस पथ

में आते आते तुम्हें क्या क्या क्लेश हुआ सो विस्तार सहित कहो क्योंकि बोध होता है कि मार्ग में आते हुए कुछ न कुछ तुम पर अवश्य बीता होगा नहीं तो आश्चर्य्य का विषय है। विश्वासी कहने लगा तुम निराश पङ्क में फसे थे उस में तो मैं नहीं फंसा उस स्थान से पार हो क्रम क्रम सकरे फाटक की ओर आते हुए कामुकी नाम्नी एक स्त्री से भेंट हुई जो मेरा बड़ा अपकार किया चाहती थी। ख्रीष्टियान ने कहा, आहा तुम उस के जाल से बच आये इस से मैं जानता हूं तुम्हारा बड़ा भाग्य है क्योंकि पूर्व काल में यूसफ को उस ने ऐसा सताया कि उस का प्राण बचना कठिन हुआ पर अन्त में वह भी तुम्हारी भांति बच निकला। (उत्पत्ति ३६ : ७-१२) भला तुम्हारे साथ उस ने क्या किया सो कहो? विश्वासी ने कहा, तुम उस की बात कुछ जानते होगे तो भी वह ऐसी मधुर और प्रीति संयुक्त बातें करती थी कि तुम उस का अनुमान न कर सकोगे वह सर्व सुख की आशा दिखाकर लुभाती थी उस ने मुझे फेरने के लिये अनेक अनेक उपाय किये। ख्रीष्टियान ने कहा, मन की उत्तम साक्षी द्वारा जो सुख उत्पन्न होता है उस सुख को देना उस ने अङ्गीकार न किया होगा? विश्वासी बोला, तुम ने क्या मेरी बात न समझी। मेरा यह आशय है कि वह सम्पूर्ण शारीरिक सुख देने की प्रतिज्ञा करती थी ख्रीष्टियान ने कहा, ईश्वर ने जो तुम को उस के जाल से बचाया तो तुम्हें उस की स्तुति करना उचित है। जो परमेश्वर का क्रोध पात्र है सो उस के गड़हे में पड़ेगा। (सभोपदेश २२ : १४) विश्वासी ने फिर कहा, मैं निश्चय नहीं कह सकता कि म सर्वथा उस से बचा रहा। ख्रीष्टियान बोला, मुझे जान पड़ता है कि तुम उस की इच्छानुसार उस

कामुकी का छल कपट।

के पीछे पीछे नहीं गये। विश्वासी ने उत्तर दिया, अशुचि क्रिया करने को मैं उस के पीछे नहीं गया क्योंकि मुझे प्राचीन ग्रन्थ से ऐसा प्रमाण मिला था कि उस के पांवों का मार्ग नरक में पहुंचाता है। (समोप० ५ : ५) इस भय से कि उस का मुख देखने से कहीं मोहित न हो जाऊं मैं ने अपनी आंखें मूंद लीं। (अय्यूब ३१ : १) तब उस ने नाना प्रकार की निन्दा की पर मैं ने उसे न मान कर अपना मार्ग लिया।

तब ख्रीष्टियान ने फिर पूछा, तुम और किसी आपदा में तो नहीं पड़े। विश्वासी बोला, मैं जब दुर्गम नाम पर्वत के नीचे तक आ पहुंचा तब एक वृद्ध मनुष्य से मेरी भेंट हुई। उस ने मुझ से पूछा तू कौन है और कहां को जाता है। मैं ने उस से कहा, मैं यात्री हूं और स्वर्गपुर को जाता हूं। उस वृद्ध ने कहा, तुम तो भले मनुष्य देख पड़ते हो जो मैं तुम्हें किसी कार्य्य करने के निमित्त वेतन दूं तो क्या तुम उसे ग्रहण करोगे ? मैं ने उस का नाम और ठांव पूछा। उस ने उत्तर दिया, मेरा नाम प्रथम आदम है और छलपुरी का वासी हूं मैं ने फिर पूछा, तुम्हारा कौन सा काम है और मैं तुम्हारा काम करूं तो तुम मुझे कैसा वेतन दोगे। उस ने उत्तर दिया, मेरा कार्य्य सुख-भोग समूह है और अन्त समय तुम ही मेरी सम्पत्ति के अधिकारी होगे वही तुम्हारा वेतन होगा। फिर मैं ने पूछा, तुम्हारे घर का आचरण कैसा है और तुम्हारे यहां और कोई सेवक है वा नहीं। उस ने कहा मेरे घर में संसार का सर्व सुख है और जो जो मेरे सेवक हैं सो सब मेरे उत्पन्न किये हुए हैं। जब मैं ने उस के सन्तान के विषय में पूछा तब उसने कहा कि मेरी तीन कन्या हैं और उनके नाम ये हैं शरीराभिलाषी नेत्राभिलाषी और जीवनाभिमानिनी। (१ योहन २:१६)

प्रथम आदम।

तुम्हारी इच्छा हो तो तुम उन से विवाह भी कर सकोगे। फिर मैं ने पूछा कि तुम क्या चाहते हो मैं कितने दिवस तुम्हारे साथ रहूं। उस ने कहा, जब तक मैं जीऊं तब तक तुम्हें मेरे साथ रहना पड़ेगा। खीष्टियान ने कहा, अन्त में क्या तुम ने उस के साथ जाना स्वीकार किया। विश्वासी ने उत्तर दिया, जब उस के मुख से मैं ने ऐसी मीठी बातें सुनीं तब पहिले तो कुछ कुछ मेरी इच्छा थी परन्तु अकस्मात् मेरी दृष्टि उस के कपाल पर जो पड़ी तो यह बात लिखी देखी कि "पुरातन मनुष्यत्व को उस के कर्मों के सहित त्याग कर"। खीष्टियान ने पूछा, फिर क्या हुआ। विश्वासी बोला, वह लिखित देखते ही मेरे चित्त में निश्चय बोध हुआ कि जो वह अपनी मधुर वाणी से किसी भांति मुझे अपने घर ले जाएगा तो मोल लिये हुए दास के समान मुझे रखेगा। यह विचार कर कुछ क्रोध दिखा मैं ने उसे उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे घर की डेवढ़ी तक भी न जाऊंगा। यह सुन उस ने मेरा तिरस्कार करके कहा, मैं तेरे पीछे एक ऐसे जन को भेजूंगा कि तुझे सम्पूर्ण मार्ग में दुःखित करता चला जाएगा। जब मैं उस की बात सुन अनसुनी कर उस की ओर से मुख फेर कर चला तब मुझे ऐसा जान पड़ा कि उस ने पीछे से मेरा मांस ऐसा खींचा कि उतना मांस उखड़ गया तब मैं ने चिल्ला कर कहा कि हाय! हाय!! मैं बड़ा अभागा मनुष्य हूं। (रोमि० ७ : २४) इतना कह मैं ने पर्वत पर चढ़ने का मार्ग पकड़ा।

मूसा नबी।

इस रीति से जब पर्वत पर आधी दूर चढ़ आया तब मैं ने उस समय पीछे को देखा तो देखता क्या हूं कि पवन से भी अति वेग चलनेहारा एक मनुष्य मेरे पीछे चला आता है। मेरे देखते देखते जिस जगह एक कुञ्ज है वहां ही वह मेरे पास आ पहुंचा। खीष्टियान कहने

लगा, हां, मैं भी उस कुञ्ज में विश्राम के निमित्त ठहरा था पर अकस्मात् सो गया तब मेरी छाती के कपड़े में से यह पत्र गिर कर खो गया था । विश्वासी ने कहा, भाई पहिले मेरी तो कथा सम्पूर्ण सुन लो तब तुम अपना वृत्तान्त कहना । सुनो उस पुरुष ने पहुंच कर कुछ विलम्ब न किया पर आते ही मुझे ऐसा घूसा मारा प्राण छूटने पर था । फिर जब मैं कुछ चैतन्य हुआ तब मैं ने पूछा, तुम ने मुझे ऐसा घूसा क्यों मारा ? उस ने कहा, प्रथम आदम की ओर मन ही मन तुम्हारा अनुराग था इस हेतु से मैं ने तुम को मारा । इतना कह उस ने मुझे छाती पर दूसरा एक घूसा ऐसा मारा कि मैं चित्त होकर गिर पड़ा । तब फिर मैं मृतक तुल्य हो उस के चरणों के समीप पड़ा रहा । जब फिर मैं चैतन्य हुआ तो दुखित हो उस की कृपा निमित्त प्रार्थना करने लगा । उस ने कहा, मैं कृपा करना जानता ही नहीं इतना कह फिर मुझे घूसा मार गिराया । जो उस समय एक पुरुष आकर उसे रोक न देता तो वह मुझे मार ही डालता । खीष्टियान ने पूछा जिस ने उसे रोक दिया वह कौन था ? विश्वासी ने कहा, पहिले तो मैं ने उसे नहीं पहचाना पर जब वह मेरे निकट हो कर गया तब उस के हाथ और पाञर में घावों के चिन्ह देख अनुमान किया कि हमारा प्रभु है । तब फिर मैं धीरे धीरे पर्वत पर चढ़ने लगा । खीष्टियान ने कहा, जो तुम्हारे पीछे पीछे आया सो मूसा था वह किसी को नहीं छोड़ता है और जो उस की आज्ञा उल्लंघन करता है उस को भली भांति जानता हूं मेरी उस की यह पहिली भेंट नहीं थी किन्तु जब मैं निश्चिन्त बैठा था तब एक दिवस उस ने मेरे पास आकर कहा कि जो तू यहां रहेगा तो मैं तुझे तेरे घर समेत फूंक दूंगा ।

ख्रीष्टियान फिर बोला जिस पर्वत की तराई में मूसा के साथ तुम्हारी भेंट हुई उस पर्वत की चोटी पर का राजभवन तुम ने देखा। विश्वासी ने कहा, हां, मैं ने उसे देखा और वहां पहुंचने के पहिले दो सिंह भी देखे पर दोपहर के घाम के कारण सोये हुए देख पड़े। दिन बहुत था इस हेतु मैं उस स्थान के द्वारपाल के पास से हो आगे बढ़ धीरे धीरे पर्वत से उतर आया। ख्रीष्टियान ने कहा, हां, हां, उस द्वारपाल ने मुझ से भी कहा कि विश्वासी नाम एक यात्री इस मार्ग से गया है। परन्तु हे भाई! जो तुम उस गृह के भीतर जाते तो बहुत अच्छा होता क्योंकि वे लोग ऐसी ऐसी आश्चर्य्य की वस्तु दिखाते कि तुम जन्म भर कभी न भूलते। भला नम्रता नामक तराई में तुम ने किसी को देखा? विश्वासी ने उत्तर दिया, हां, उस स्थान में

असन्तुष्ट से भेंट।

असन्तुष्ट नाम एक मनुष्य मिला था। उस की जो मैं बात मानता तो अवश्य वह मुझे अपने साथ फेर ले जाता। उस ने मेरे फिराने के निमित्त यह कारण बताया कि यह तराई सब भांति से आदर रहित है। फिर उस ने कहा, तुम इस तराई में जाने से पागल के समान हो जाओगे तब अहङ्कारी गर्वी आत्माभिमानी और लोकैश्वर्य्य आदि जो तुम्हारे कुटुम्ब परिवार हैं वे सब तुम से विमुख हो जायेंगे यह मैं निश्चय जानता हूं। ख्रीष्टियान ने पूछा, तब तुम ने उसे क्या उत्तर दिया? विश्वासी ने कहा, मैं ने उसे यही उत्तर दिया कि जिन के नाम तुम ने लिये वे सब मेरे कुटुम्बी हैं यह तुम सत्य कहते हो क्योंकि शारीरिक सम्बन्ध के द्वारा वे मेरे कुटुम्बी तो हैं। परन्तु जब से मैं यात्री हुआ हूं तब से जैसे मैं ने उन को त्याग दिया तैसे उन्हों ने मुझ को त्याग दिया इस कारण अब मैं उन को अपने कुटुम्ब करके नहीं मानता हूं। फिर मैं ने उस

से कहा, तुम जो इस तराई के विषय में कहते हो सो यथार्थ नहीं है क्योंकि "सन्मान के पहिले नम्रता और विनाश के पहिले अभिमान होता है।" सो तुम्हारी समझ में जो विषय अति प्रिय है उसे मैं त्याग कर के ज्ञानवान लोग जिसे सत्य मर्य्यादा कहते हैं उस के पाने के निमित्त इस तराई से जाने की इच्छा करता हूं।

खीष्टियान ने फिर पूछा, उस तराई में और कुछ तो नहीं हुआ। विश्वासी ने कहा, हां लज्जावान नाम एक मनुष्य से मेरी

लज्जावान से भेंट। भेंट हुई। यात्रा में जितने लोगों के साथ मेरी भेंट हुई उन सभों में इस मनुष्य का नाम विशेष कर विपरीत बूझ पड़ता है। नाम तो लज्जावान पर उस को लाज नहीं। और लोगों ने तो वादानुवाद से हार मानी पर यह लज्जावान किसी प्रकार से हार न मानता था। खीष्टियान बोला, क्यों उस ने तुम से क्या कहा? विश्वासी ने कहा प्रथम तो उस ने धर्म के विरोध में यह कहा कि धर्म्माचरण में मन लगाना अत्यन्त क्षुद्र नीच और तुच्छ कर्म्म है और पाप से भय करना कायरों का काम है और अपनी वार्त्ता वा आचरण से सावधान होना और मान्य लोगों में जो स्वेच्छाचार प्रचलित है उसे छोड़ देना संसार की दृष्टि में हास्य योग्य कर्म्म है। फिर यह भी कहा कि पराक्रमी धनवान और बुद्धिमान लोगों में से बहुत थोड़े लोग तुम्हारे मतावलम्बी हुए हैं और जो हुए भी तो क्या जाने किस के बहकाने से उन्मत्त हो अनजानी वस्तु की आशा से अपने सम्पूर्ण वर्त्तमान ऐश्वर्य्यादि को त्याग किया है। (१ कुरिन्थ० १ : २६ और ३ : १८। फिलिप्पी. ३ : ७-९। योहन. ७ : ४८) यह भी कहा कि जितने लोग यात्री हुए हैं वे सब निर्धन नीच और विद्याहीन थे विशेष कर के पदार्थ विद्या में मूर्ख थे। इस रीति की अनेक बातों से उस

ने मुझे प्रायः निरुत्तर कर दिया। फिर कहा कि रोते रोते उदास चित्त होकर धर्म्मोपदेश को सुनना और विलाप करते हुए घर जाना बड़ी लज्जा की बात है। और पड़ोसियों से थोड़ी थोड़ी बात के लिये क्षमा मांगना वा कोई वस्तु चुरा कर उसे फेर देना मनुष्य के लिये लज्जा की बात है। फिर कहा कि धर्म्म ग्रहण करने से क्षुद्र दोषों के लिये जिन्हें संसार कुछ दोष नहीं समझता है भाग्यवान लोगों की मित्रता त्याग कर नीच लोगों की सङ्गत करना पड़ता है इस से अधिक लज्जा क्या होगी। ख्रीष्टियान ने पूछा, इन बातों का तुम ने क्या उत्तर दिया। विश्वासी ने कहा, प्रथम तो क्या उत्तर दूं यह मुझे कुछ सूझ न पड़ा क्योंकि उस ने मुझे ऐसा लज्जित कर दिया कि मैं उदास हो गया और लज्जा के मारे मुझ से कुछ कहते न बना वरन् उस से हार मानी। किन्तु अन्त में मैं ने मन में विचार कर देखा कि मनुष्यों के बीच में जिस वस्तु की बड़ाई होती है उस से ईश्वर घृणा करता है। (लूक. १६ : १५) और भी विचारा कि इस लज्जावान ने मनुष्य के मत का प्रमाण दिया है ईश्वर के मत वा वचन का कुछ प्रमाण न दिया। फिर मैं ने यह सोचा कि महा विचार के दिन जो स्वर्ग वा नरक प्राप्त करेंगे सो कुछ मनुष्य की आज्ञानुसार नहीं किन्तु सर्वप्रधान ईश्वर की आज्ञानुसार प्राप्त करेंगे। इस से जान पड़ा कि ईश्वर जिस बात को उत्तम बतावे यद्यपि समस्त जगत के लोग विवाद करें तौभी वही बात उत्तम ठहरेगी। ईश्वर तो धर्म्माचारी और पाप से भय करनेहारे मनुष्य को उत्तम जानता है और स्वर्गराज्याभिलाषी होकर जो अपने को यहां मूर्ख कर दिखावे उसी को ज्ञानी समझता है और ख्रीष्टि-धर्म्मविरोधी जो महा धनी हो उस से ख्रीष्टधर्म्मानुगामी दरिद्र मनुष्य को अधिक धनवान गिनता है। इन सब बातों को सोच

कर मैं ने कहा, हे लज्जावान तू चला जा क्योंकि तू मेरे परित्राण का शत्रु है। जो मैं तेरा कहा मानूं तो अपने स्वामी का विरोधी हो जाऊंगा फिर मैं उस के आने पर किस प्रकार से मुख दिखाऊंगा। (मार्क ८ : ३८) जो मैं कदापि उस के मार्ग और सेवकों से लज्जित होऊं तो उस से आशीर्वाद पाने की मुझे कौन सी आशा रहेगी। यह बातें कह मैं ने लज्जावान से अलग होने की चेष्टा की परन्तु भाई वह ऐसा निर्लज्ज था कि किसी प्रकार से मेरा पीछा नहीं छोड़ता था। वह मेरे पीछे पीछे लगा चला आया और धर्म्माचारियों में जो जो दोष हुआ करते हैं उन में से एक न एक को धीरे धीरे मेरे कान में सुनाया करता था। निदान मैं ने खोल कर कहा, सुन तेरा यह सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ होगा क्योंकि जिस को तू बुरा कहता है उसी को मैं उत्तम समझता हूं। इस भांति झिड़ककर मैं ने उस से अपना पीछा छुड़ाया तब मैं यह गान करने लगा।

चौपाई ।

ईश्वर आज्ञाकारी जेते। कष्ट सहैं जग महं कत तेते॥
दमन करन हित सोई आवे। याते बारम्बार सतावे॥
कठिन कलेश सही किमि जाए। बन्धु कहौं तुमते समुझाए॥
चेतन होय क्लेश सह जोई। निज पुरुषार्थ दिखावहि सोई॥

फिर ख्रीष्टियान ने कहा, हे भाई ! तुम ने जो साहस कर के इस दुष्ट लज्जावान से अपना पीछा छुड़ाया इस से मुझे बड़ा आनन्द हुआ। उस का नाम अवश्य विपरीत हुआ है क्योंकि वह ऐसा निर्लज्ज है कि मार्ग में हम यात्रियों के पीछे पीछे आकर सब लोगों के आगे हमें लज्जित करता है अर्थात् उत्तम विषय में भी लज्जा दिलाने की चेष्टा करता है। वह निर्लज्ज न होता तो कभी ऐसा कर्म्म न करता। जब जब हमारा उस से

काम पड़े तब तब ऐसा ही साहस करके उस का सामना करना उचित है क्योंकि वह केवल मूर्ख लोगों को उच्च पद देता है। इस विषय में सुलेमान राजा ने कहा है कि ज्ञानवान सन्मान का अधिकारी होता है परन्तु लज्जा अज्ञानी लोगों का उच्च पद है। (दृष्टान्त ३ : ३५) विश्वासी ने कहा, जिस ने इस पृथिवी पर सत्यता के पक्ष में वीरत्व दिखाने की हम को आज्ञा दी है उस के निकट इस लज्जावान के विरुद्ध सहाय के निमित्त हम को नित्य प्रार्थना करनी उचित है। ख्रीष्टियान ने कहा, हां भाई! तुम ने अच्छा कहा। भला उस तराई में तुम से और किसी से भेंट हुई थी। विश्वासी ने कहा, नहीं और किसी को मैं ने नहीं देखा। मैं सूर्य्य अस्त होने के पहिले उस तराई के और मृत्युछाया की तराई के अन्त लों आ पहुंचा था। ख्रीष्टियान सुनकर कहने लगा कि तुम तो बड़े आनन्द से आये पर मेरी तो कुछ और ही दशा हुई। ज्यों मैं ने उस तराई में प्रवेश किया त्योंही अपल्लुओन नाम असुर से मेरा बड़ा युद्ध भया इसी से मुझे विलम्ब भी हो गया। जिस समय वह मुझे पछाड़ छाती पर चढ़ बैठा उस समय मुझे निश्चय हुआ कि अब मेरा प्राण गया क्योंकि उस समय मेरा खड्ग मेरे हाथ से छूट पड़ा था। यह देख उस ने कहा कि क्यों अब तो तू मेरे वश हुआ। किन्तु मैं ने उस समय ईश्वर की प्रार्थना की तब उस ने मेरा आर्त्त वचन सुन इस महा संकट से मेरा उद्धार किया। फिर मैं ने मृत्युछाया की तराई में प्रवेश किया और मुझे रातों रात आधी दूर लों आना पड़ा। उस महा अन्धकार में मुझे बार बार जान पड़ता था कि आज मेरा प्राण न बचेगा। परन्तु प्रातःकाल सूर्य्योदय होने से पथ के उत्तरार्द्ध में आनन्द पूर्वक चला आया।

बारहवां अध्याय ।

बकवादी की वार्त्ता ।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि ये दोनों परस्पर वार्त्तालाप करते चले जाते थे कि अकस्मात् विश्वासी की दृष्टि मार्ग की एक ओर जो पड़ी देखता है कि थोड़ी दूर पर बकवादी नाम एक मनुष्य चला जाता है क्योंकि मार्ग चौड़ा था।

बकवादी । वह मनुष्य डील में लम्बा था और निकट की अपेक्षा दूर से सुन्दर दिखाई देता था। विश्वासी उस के निकट जा उस से वार्त्ता करने लगा कि हे मित्र! तुम कहां जाते हो स्वर्गपुर को जाओगे वा और कहीं? बकवादी ने कहा, नहीं भाई! मैं वहां ही जाता हूं। विश्वासी ने कहा, बड़े आनन्द की बात है तो तुम अनुग्रह कर हमारे साथ साथ चलो। बकवादी ने कहा, तुम्हारे साथी होने में मैं बड़ा प्रसन्न हूं। विश्वासी ने कहा, आइये हम सब साथ साथ चलें और किसी लाभदायी विषय की वार्त्ता करते चलें। बकवादी ने कहा, तुम्हारे साथ वा और किसी के साथ हितकारक वार्त्ता करने में मुझे बड़ा आनन्द होता है और अच्छी वार्त्ता करनेहारे पुरुषों की भेंट होने से मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ है। मैं तुम से यथार्थ कहता हूं कि असत् वार्त्ता में काल बितानेहारे बहुत मिलते हैं और उन की वार्त्ता से मुझे अनेक भांति का दुःख होता है। परन्तु यात्रा में उत्तम प्रसङ्ग से काल व्यतीत करें ऐसे मनुष्य थोड़े और दुर्लभ हैं। विश्वासी बोला, बड़े शोक की बात है कि ऐसे लोग बहुत थोड़े होते हैं स्वर्गीय और ईश्वरीय विषय को छोड़ इस संसार में जिह्वा को श्रम देने योग्य और कौन सी वस्तु है। बक-वादी ने कहा, तुम से मेरी बड़ी प्रीति होती है क्योंकि तुम्हारी

वार्त्ता प्रमाण सहित है मैं एक और बात तुम से कहता हूं कि ईश्वरीय विषय के बिना और कौन सी वार्त्ता है जिस से सुख प्राप्त हो। चमत्कारी के तुल्य कोई वस्तु मनोहर नहीं मिलेगी। फिर प्राचीन काल के इतिहास वा नाना वस्तुओं के गुप्त वृत्तान्त वा अद्भुत कर्म्म वा आश्चर्य्य की बात इत्यादि की कथा वार्त्ता से जिस की रुचि होती है उस को वैसी कथा जैसे धर्म्म पुस्तक में उत्तम रचना सहित मिलेगी तैसे और कहीं नहीं मिलने की। विश्वासी ने कहा, हां, जो तुम कहते हो सो यथार्थ है किन्तु केवल कथा कहना सो नहीं वरन् कथा से लाभ प्राप्त करना यही हमारा मुख्य कर्म्म है। बकवादी ने उत्तर दिया, मैं वही बात कहता था क्योंकि ऐसी कथा वार्त्ता से हमारा कल्याण अवश्य होगा। ऐसी वार्त्ता से मनुष्य को अनेक विषय का ज्ञान होता है। इस से संसारिक वस्तु की असारता और स्वर्गीय वस्तु की उत्तमता का ज्ञान होता है। विशेष कर के मनुष्य के नये जन्म की आवश्यकता और निज सुकर्म्म की निष्फलता और खीष्ट के पुण्य से अपने प्रयोजन आदि का ज्ञान होता है। फिर ऐसी वार्त्तालाप से पश्चात्ताप विश्वास प्रार्थना सहिष्णुता आदि का ज्ञान होता है और अपने चित्त की शान्ति निमित्त मङ्गल समाचार की बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाओं का ज्ञान भी होता है। केवल यही नहीं किन्तु मिथ्या मत के खण्डन और सत्य मत के स्थापन और मूर्खों की शिक्षा करने के निमित्त ऐसी वार्त्ता से ज्ञान होता है। विश्वासी ने कहा, तुम जो कहते हो वह सब सत्य है और तुम्हारे मुख से ये बातें सुनने से मुझे बहुत आनन्द हुआ। बकवादी ने कहा, इस रीति की वार्त्ता न होने से अनेक लोग अनन्त जीवन पाने के लिये विश्वास की और ईश्वर के अनुग्रह के कर्म्म की आवश्यकता न जान कर मूर्ख के समान केवल व्यवस्थानुयायी कर्म्म

का भरोसा करते हैं जिस कर्म्म के द्वारा उन्हें स्वर्गीय राज्य नहीं मिल सकता है। विश्वासी बोला, आज्ञा हो तो एक बात कहूं। यह सब पारमार्थिक ज्ञान केवल ईश्वर ही दे सकता है यह मनुष्य के यत्न वा कथा वार्त्ता द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। बकवादी ने उत्तर दिया. यह मैं भली भांति जानता हूं क्योंकि यदि स्वर्ग से उस को न दिया जाय तो मनुष्य कुछ नहीं प्राप्त कर सकता है। सब कुछ उस के अनुग्रह से होता है कर्म्म से कुछ नहीं होता। इस बात के स्थापन करने में मैं धर्म्मपुस्तक के सैकड़ों प्रमाण दे सकता हूं। तब विश्वासी ने कहा, भला इस समय विशेष कर किस विषय की चर्चा करें। बकवादी ने उत्तर दिया, जो तुम्हारी इच्छा हो। स्वर्ग वा पृथिवी व्यवस्था वा मङ्गल समाचार पवित्र विषय वा सामान्य विषय भूतकाल वा भविष्यकाल परदेश वा स्वदेश नित्य विषय वा अनित्य विषय इन में से जिस में हमारे हित की सम्भावना हो उसी की चर्चा करने को मैं उपस्थित हूं।

ये बातें सुन विश्वासी अचम्भा करने लगा। उस समय खीष्टियान मार्ग की एक ओर अकेला चला जाता था इसलिये विश्वासी उस के निकट जा धीरे धीरे कहने लगा देखो हम को कैसा ज्ञानवान संगी मिला है। निश्चय है कि यह सब से उत्तम यात्री होगा। खीष्टियान ने तनिक मुसकुरा के कहा, सुनो जिस की वार्त्ता से तुम ऐसे प्रसन्न हुए हो वह ऐसा मनुष्य है कि अपने वाक्य की चतुराई से बीस मनुष्यों को जो उसे नहीं जानते हैं भुला सकता है। विश्वासी ने पूछा, तुम क्या उसे चीन्हते हो। खीष्टियान ने उत्तर दिया, वह अपने को जितना आप जानता है उस से अधिक मैं जानता हूं। विश्वासी ने कहा, भाई यह कौन है। खीष्टियान बोला, वह हमारे ही नगर का रहनेवाला है उस का नाम बकवादी है। बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम्हारा उस

से परिचय नहीं । हां, हमारा नगर बहुत बड़ा है इस से सब को सब कोई नहीं चीन्हता है । विश्वासी ने फिर पूछा, वह किस का पुत्र है और कौन से टोले में रहता है । खीष्टियान ने कहा, वह सुभाषी का पुत्र है और बकवाद गली में रहता है जो लोग उसे जानते हैं वे सब बकवाद गली के बकवादी नाम से उसे चीन्हते हैं । वह सुवक्ता तो है पर धार्म्मिक नहीं है ।

विश्वासी ने कहा, वह सज्जन पुरुष के समान दृष्टि पड़ता है । खीष्टियान ने कहा, हां, जो लोग उसे पहचानते हैं उन की दृष्टि में वह अच्छा है परन्तु अपने घर में वह बड़ा दुष्ट है । तुम जो उसे सज्जन कहते हो इस से मुझे एक चित्र की वार्त्ता सुरत पड़ी है कि दूर खड़े रहने से वह चित्र उत्तम दिखाई देता था परन्तु निकट जाने से वह बहुत बुरा दीखता था । इस मनुष्य को भी तुम ऐसा ही जानो । विश्वासी ने कहा, तुम मुसकुराये थे इस से मुझे समझ पड़ा कि तुम ठट्ठा करते होगे । खीष्टियान ने कहा मैं मुसकुराया सही परन्तु ईश्वर ऐसा न करे कि मैं ऐसे विषय में ठट्ठा करूं अथवा किसी पर झूठा दोष लगाऊं । इस मनुष्य के चरित्र के विषय में मैं कुछ वर्णन करूंगा । यह हरएक मनुष्य के संग हरएक प्रकार की वार्त्ता करने में प्रवीण है । जैसे तुम्हारे साथ इस ने वार्त्ता की वैसे मद्य की हाट में भी बैठ के बकवाद कर सकता है । जितना अधिक मद्य पीये उतना ही बात अधिक करे । परन्तु धर्म्म उस के अन्तःकरण वा उस के घर वा उस के आचरण में स्थान पावे सो नहीं । उस का धर्म्म केवल उस की जिह्वा पर है वह शब्द मात्र है ।

विश्वासी ने कहा, जो वह ऐसा है तो मैं ने उस के विषय में धोखा खाया । खीष्टियान बोला, तुम को धोखा तो हुआ इस में कुछ सन्देह नहीं है । तुम शास्त्रीय वचन का स्मरण करो कि वे

कहते हैं पर करते नहीं और कि ईश्वर का राज्य कथा से नहीं किन्तु सामर्थ्य से है। (मत्ती. २३ : ३ और १ करिन्थि. ४:२०) मैं जानता हूं कि यह बकवादी प्रार्थना पश्चात्ताप विश्वास नये जन्मादि के विषय में चर्चा कर सकता है परन्तु केवल चर्चामात्र ही जानो। मैं ने कवल उस के घर जाकर देखा हो सो नहीं किन्तु बाहर भी देखा है और मैं जानता हूं कि मेरी यह बात सत्य है। जैसे अण्डे की सफ़ेदी स्वाद रहित तैसे इस का घर धर्म्मरहित है। न तो उस के घर में प्रार्थना हुआ करती है न पाप के निमित्त पश्चात्ताप का कोई चिन्ह है। इस से तो पशु भी ईश्वर की अच्छी सेवा करते हैं। अधिक क्या कहूं जो उस का चरित्र जानते हैं उन की दृष्टि में वह धर्म्म का कलङ्क वा निन्दा स्वरूप है। (रोमि. २ : २३, २४) नगर के जिस टोले में वह वास करता है उस टोले में धर्म्म की प्रशंसा भी किसी को अच्छी नहीं लगती। सामान्य लोग भी उस के विषय में यह बात कहते हैं देखो यह तो और जगह सन्त पर घर में शैतान दीखता है। इस बात का उस के परिवार के लोग भी जानते हैं फिर नौकरों के साथ उस की बोल चाल और व्यवहार ऐसी कर्कशा और कठिन है कि वे बेचारे नहीं जानते कि किस रीति के कर्म्म वा वाक्य से उसे प्रसन्न करें। जिन का इस के साथ व्यवहार है वे भी कहते हैं कि इस से तो चोरों के साथ व्यवहार करना उत्तम है क्योंकि वे तो कभी कभी सच्चे होते हैं परन्तु यह बकवादी बन पड़े तो हर एक व्यवहार में अन्याय और प्रपञ्च और ठगाई अवश्य करेगा। अपने सन्तान को भी वह अपना सा कर्म्म करने की शिक्षा देता है और जो कदापि उन में से किसी को पाप के कारण कुछ लज्जित देखता है तो उस लज्जा का अनर्थ कातरता

ठहरा के उस को मूर्ख उन्मत्त और दुष्ट कह फिर किसी कार्य्य में नहीं लगाता है और न किसी के सन्मुख उस को भला कहता है। इस से मुझे जान पड़ा कि इस ने अपनी दुष्टता के द्वारा अनेक मनुष्यों को पतित कर दिया है और जो ईश्वर उस को निवारण न करे तो और बहुतों के प्राणनाश का हेतु होगा।

विश्वासी ने कहा, हे भाई! तुम्हारी वार्त्ता की प्रतीति करना मुझे उचित है क्योंकि तुम उसे जानते हो और खीष्टियान धर्म्मानुसार मनुष्यों के विषय में यथार्थ बात कहते हो। मुझे दृढ़ विश्वास है कि तुम ईर्षा से नहीं कहते हो परन्तु जो सत्य है सो कहते हो। खीष्टियान ने कहा, जो मैं उस की चाल व्यवहार तुम से अधिक न जानता तो उस के विषय में तुम्हारे ऐसा मेरा भी विचार होता और जो मैं केवल धर्म्म विरोधी लोगों से उस का समाचार पाता तो मिथ्या अपवाद बोधकर न मानता क्योंकि अधर्म्मी सदा लोगों की निन्दा किया करते हैं। परन्तु पूर्वोक्त समस्त दोष अन्यायादि से वह दोषी है यह मैं निश्चय कर कह सकता हूं और उस का प्रमाण भी दे सकता हूं। जितने धार्म्मिक लोग उस को चीन्हते हैं उन में कहीं कोई उस का नाम ले तो वे सब लज्जित होते हैं और उन में से कोई भी इस को भाई कहने की इच्छा नहीं करता।

विश्वासी ने यह सब सुन के कहा, मैं देखता हूं कि कहने और करने में बड़ा भेद है अब से इस भेद की मुझे नित्य सुरत रहा करेगी। खीष्टियान ने उत्तर दिया, जैसे शरीर और प्राण भिन्न भिन्न हैं वैसे ही कहना और करना ये दोनों बातें भी भिन्न भिन्न हैं। जैसे प्राणहीन शरीर मृतक है तैसे बिना क्रिया की कथा भी मृतक तुल्य है। सदाचार धर्म्म का सार है। धर्म्मपुस्तक भी यों कहती है कि क्लेशित पितृ मातृहीन बालकों की और

विधवाओं की रक्षा करना और इस संसार में निष्कलंक हो रहना यही ईश्वर की पवित्र और निर्मल भक्ति है। (याकूब १ : २२-२७) इस विषय को तो बकवादी जानता नहीं किन्तु उस ने यही समझ रक्खा है कि श्रवण और कथन में निपुण होने से ही मनुष्य उत्तम भक्त होता है इस से वह धोखा खाता है। श्रवण एक प्रकार के बीज बोने की रीति है। उस बीज का अङ्कुर अन्तःकरण और आचरण में उत्पन्न हुआ है इस का प्रमाण केवल वाक्य में निपुण होने से नहीं होता है। विचार दिवस को विचारकर्त्ता मनुष्यों के कर्म्म के अनुसार फल देगा इस का मन में निश्चय रखना हम को उचित है। (मत्ती १३ : ३३) विचारकर्त्ता यही पूछेगा कि तुम ने क्या केवल विश्वास कर बकवाद किया अथवा विश्वास कर विश्वासयोग्य सुकर्म भी किया। इस बात को पूछ कर वह कर्म्म के अनुसार सब को फल देगा। धर्म्मपुस्तक में जगत के अन्त का दृष्टान्त शस्य काटने के समय से दिया गया है और तुम जानते हो कि खेत काटने के समय लोग केवल अनाज की अपेक्षा करते हैं। विश्वासहीन कर्म्म अग्राह्य है यह मैं जानता हूं परन्तु विचार के दिवस बकवादी का धर्म्म तुच्छ किया जायगा इस बात का प्रगट करने के निमित्त मैं ने ये सब बातें कही हैं।

विश्वासी फिर बोला. इस कथा के प्रसंग से मुझे मूसा के लिखित वाक्य की सुरत आती है जिस में उस ने खाद्य पशु के लक्षण वर्णन किये हैं। (लेवीय ११ पर्व्व) वे ये हैं कि जिस पशु का द्विखण्ड खुर हो और जुगाली भी करता हो वह खाद्य है और केवल द्विखण्ड खुरवाला वा केवल जुगाली करनेवाला अखाद्य है। जैसा शशा जुगाली तो करता है पर उस के द्विखण्ड खुर नहीं इस हेतु वह अखाद्य है। बकवादी ऐसा ही देख पड़ता

है क्योंकि वह ज्ञान चेष्टा तो करता है अर्थात् वाक्यरूप खाद्य को चबाता है मानो जुगाली करता है किन्तु द्विखण्ड खुर नहीं रखता अर्थात् पापियों के मार्ग से भिन्न नहीं होता। वह भी शशा की नाईं कुत्तों वा भालू के सदृश चरण विशिष्ट है इसलिये अपवित्र है। खीष्टियान ने उत्तर दिया, मैं समझता हूं कि तुम ने सुसमाचार के अनुसार इस वाक्य का ठीक अर्थ लगाया है। पावल ने भी बकवादियों के विषय में यह कहा है कि वे ठनठनाते पीतल और झनझनाती झांझ के समान हैं और दूसरे स्थान में उस को निष्प्राण बाजे के समान कहा है अर्थात् सुसमाचार का सत्य विश्वास और अनुग्रह रूपी प्राण उन में नहीं है। (१ करिन्थि १३ : १-३ और १४ : ७) इस हेतु यद्यपि वे बाजे वा स्वर्गदूत के समान मृदु शब्द करें तथापि स्वर्गराज्य में अनन्त जीवन के अधिकारियों के संग निवास नहीं करने पावगे।

विश्वासी ने कहा, जितना मैं बकवादी की बात सुनने से प्रसन्न हुआ था उस से अधिक अब मैं अप्रसन्न हूं। अब हम किस उपाय से उस की संगति छोड़ें। खीष्टियान ने कहा, ईश्वर जो उस का मन न फिरावे तो तुम मेरा कहना करो वह तुम्हारे साथ वार्त्ता करना शीघ्र छोड़ देगा यह बात तुम आप ही परख देखो। विश्वासी ने पूछा, तुम्हारा क्या परामर्श है सो कहो।

खीष्टियान ने कहा, तुम उस के पास जाकर धर्म्म के फल के विषय में कोई दृढ़ प्रसंग निकालो वह उस प्रसंग में सम्मति करेगा इस में सन्देह नहीं है। जब वह स्वीकार करे तब उस से स्पष्ट पूछो कि इस बात का गुण तुम्हारे अन्तःकरण वा गृह वा आचरण में प्रगट होता है वा नहीं।

यह परामर्श सुन विश्वासी ने आगे बढ़ बकवादी से कहा, कहो भाई! कैसे हो? बकवादी ने कहा, ईश्वर की कृपा से कुशल

आनन्द है। मैं ने समझा था कि इतनी देर में हम से तुम से बहुत कुछ वार्त्ता होगी। विश्वासी ने कहा, तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो अब वार्त्ता होगी। तुम ने कुछ प्रश्न करने को मुझ से कहा था इस से मैं यही प्रश्न करता हूं कि परमेश्वर का त्राणजनक अनुग्रह मन में प्रवेश कर किस रीति से प्रकाश होता है ? बकवादी ने उत्तर दिया, इस प्रश्न के उत्तर में मुझे धर्म्म के फल का वर्णन करना पड़ेगा। अच्छा यह उत्तम प्रश्न है मैं इस का उत्तर संक्षेप से देता हूं। पहिले ईश्वर का अनुग्रह जब अन्तःकरण में प्रवेश करता है तब पाप के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट उत्पन्न करता है। दूसरे इतने में विश्वासी बोल उठा कि दूसरी वार्त्ता अभी मत कहना पहिले इस बात का निर्णय करें। बोध होता है कि तुम ने जो वार्त्ता कही वह यथार्थ नहीं। यही यथार्थ है कि ईश्वर के अनुग्रह द्वारा मनुष्य के चित्त में पाप की घृणा उत्पन्न होती है। बकवादी ने पूछा, पाप की घृणा वा पाप के निमित्त चिल्लाने में क्या अन्तर है। विश्वासी बोला, भाई ! इस में और उस में बड़ा भेद है क्योंकि मनुष्य दिखाने के निमित्त ऊपर से पाप के विरुद्ध चिल्ला सकता है परन्तु ईश्वर से धर्म्मस्वभाव पाये विना पाप से घृणा नहीं कर सकता। सुनो मैं ने ऐसे अनेक मनुष्य भी देखे हैं कि धर्म्मोपदेश करने के समय पाप के दोष बहुत कहा करते हैं पर उन के अन्तःकरण वा घर वा आचार व्यवहार में पाप छोड़ने की चेष्टा कुछ भी नहीं दीखती है। यूसफ के स्वामी की स्त्री ने यूसफ के सङ्ग व्यभिचार करने की चेष्टा की फिर धर्म्मिष्ठा स्त्री की नाईं ऊंचे शब्द से चिल्लाई तथापि उस क चित्त में उस व्यभिचार की घृणा न आई। (उत्पत्ति ३९ : १४, १५) जैसे स्त्री अपने गोद के लड़के को दुष्ट चाण्डाल आदि कहती है फिर क्षण एक के पीछे उसे लाड़ कर छाती से

लगा चूमती है तैसे कितने मनुष्य पुकार पुकार पाप को बुरा कहते हैं परन्तु मन ही मन उस से प्रीति रखते हैं। बकवादी ने कहा, मुझे बोध होता है कि तुम कथा का दोष धरने की चेष्टा करते हो। विश्वासी ने कहा, नहीं मेरी इच्छा है कि इस विषय में हमें यथार्थ ज्ञान हो। अच्छा मन में अनुग्रह के कार्य्य का आरम्भ होने का दूसरा लक्षण जो तुम कहते थे वह क्या है? बकवादी ने उत्तर दिया, सुसमाचार के निगूढ़ विषयों का बड़ा ज्ञान रखना यही अनुग्रह का दूसरा लक्षण है। विश्वासी ने कहा, जो तुम्हें पहिले कहना चाहिये था वह तुम ने पीछे कहा। भला पीछे कहा या आगे कहा पर यह भी मिथ्या है क्योंकि जिन के अन्तःकरण में अनुग्रह के कार्य्य के लेश भी नहीं ऐसे कोई कोई मनुष्य सुसमाचार के निगूढ़ वाक्यों में बड़े बड़े प्रवीण हुए हैं। यह हो सकता है कि मनुष्य सब गूढ़ बातों में प्रवीण हो तथापि ईश्वर के पुत्रों में गिने जाने के योग्य नहीं। (१ करिन्थि. १३ : २) जिस समय खीष्ट ने अपने शिष्यों से पूछा कि तुम ने ये सब बातें समझीं। उन्हों ने उत्तर दिया, हां, प्रभु हम ने समझीं। तब प्रभु ने कहा, तुम इन बातों के अनुसार करोगे तो धन्य होगे। इस से स्पष्ट है कि उस ने ज्ञान रखनेहारे को धन्य नहीं कहा परन्तु सुकर्म्म करनेहारे को धन्य कहा। मैं निश्चय जानता हूं कि कर्म्म-रहित भी एक रीति का ज्ञान है। धर्म्म पुस्तक का वाक्य है जो मनुष्य अपने प्रभु की इच्छा को समझ कर उस के अनुसार न चले सो विशेष दण्ड का भागी होगा। विचार कर के देखो कि स्वर्गीय दूत के समान ज्ञानवान होते हैं पर खीष्टियान नहीं हैं ऐसे भी अनेक मनुष्य हैं। इस कारण तुम्हारा पूर्वोक्त लक्षण ठीक नहीं है। कर्म्महीन ज्ञान से बकवादी और अभिमानी लोग सन्तुष्ट हों तो हों परन्तु ईश्वर उस से प्रसन्न नहीं। वह धर्माचार ही

को चाहता है । मैं यह नहीं कहता हूं कि ज्ञान बिना अन्तःकरण शुद्ध होता है। ज्ञानहीन अन्तःकरण किसी काम का नहीं है । परन्तु ज्ञान दो प्रकार का है एक निष्फल दूसरा सफल । सफल ज्ञान विश्वास और प्रेम संयुक्त है और ईश्वर की इच्छा के अनुसार आचरण करने का यत्न चित्त में उत्पन्न करता है । बकवादी लोग निष्फल ज्ञान से प्रसन्न होते हैं परन्तु सफल ज्ञान बिना खीष्टियान कभी प्रसन्न नहीं होता । उस की यही प्रार्थना है कि हे ईश्वर मुझे ज्ञान दे जिस से मैं तेरी आज्ञा को मान सर्व अन्तःकरण सहित उस का पालन करूं । (भजन ११९ : ३४) बकवादी ने कहा, तुम तो फिर कथा का दोष धरते हो ऐसी वार्त्ता से लाभ नहीं है विश्वासी बोला, जो तुम्हारी इच्छा हो तो ईश्वर का अनुग्रह अन्त.करण में किस प्रकार से प्रकाश होता है इस का और कोई लक्षण कहो । बकवादी ने कहा, मैं अब और नहीं कहूंगा क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इस विषय में हमारी तुम्हारी सम्मति कभी न होगी ।

विश्वासी ने कहा, अच्छा तुम नहीं कह सकते हो तो मैं कहूं । बकवादी ने कहा, तुम्हारी इच्छा । तब विश्वासी कहने लगा, मैं कहता हूं । आप सुन लीजिये । जिस के मन में अनुग्रह के कार्य्य का आरम्भ हुआ है वह कार्य्य उसी पर और उस के निकटवर्त्ती लोगों पर भी प्रगट होता है । वह उसी पर इस रीति से प्रगट होता है कि उस को दृढ़ बोध होता है कि मैं पापी और स्वभाव से घृणा योग्य और अविश्वास के दोष से दूषित हूं और जो यीशु खीष्ट के विश्वास द्वारा ईश्वर का अनुग्रहीत न होऊं तो अवश्य नरक में पड़ूंगा । फिर ऐसे ज्ञान के उदय होने से निज पाप के कारण लज्जा और खेद उत्पन्न होता है । (भजन ३८ : १८ । यरमियाह १३ : १९ । योहन १६ : ८ । रोमि. ७ :

२४। मार्क १६ : १६। गलाति. २ : १६। प्रकाश १ : ५, ६) यह वह भी निश्चय जानता है कि केवल यीशु खीष्ट ही जगत का त्राणकर्त्ता है उस की शरण लिये बिना और कोई उपकारक नहीं ऐसे ज्ञान के उदय होने से उस के अन्तःकरण में यीशु खीष्ट के अनुग्रह की क्षुधा पिपासा उत्पन्न होती है और इस रीति के क्षुधित और पिपासित लोगों से ईश्वर ने प्रतिज्ञा की है फिर त्राणकर्त्ता पर उस का विश्वास जैसे बढ़ता वा घटता है तैसे उस का आनन्द और शान्ति और धर्म्मानुराग बढ़ता वा करने की इच्छा और जीवन भर उस की सेवा करने की अभिलाषा अधिक वा न्यून होती है। परन्तु यद्यपि इस रीति से अनुग्रह का कार्य्य उस में प्रकाश होता है। तिस पर भी वह बहुधा उसे निश्चय नहीं जान सकता है क्योंकि इस जगत में अपने कुकर्म और कुबुद्धि के कारण वह ऐसे ऐसे विषय को अच्छी रीति से समझने को असमर्थ है इस कारण अनुग्रह के कार्य्य को निश्चय जानने के निमित्त उस को स्थिर विवेक की आवश्यकता है। (प्रेरित. ४ : १२। मत्ती ५ : ६। प्रकाश २१ : ६।)

अनुग्रह का कार्य्य जो निकटवर्त्ती लोगों पर प्रगट होता है वह इन दो लक्षणों से होता है। प्रथम तो जिस मनुष्य के अन्तः-करण में यह कार्य्य हुआ है वह सच्चे मन से यह स्वीकार करता है कि मैं खीष्ट ही का विश्वासी हूं। द्वितीय जब इस बात को स्वीकार कर चुका तब धर्म्माचरण के द्वारा विशेष कर के धर्म्म स्वभाव के द्वारा और गृहस्थ होय तो परिवार में धर्म्म प्रतिपालन के द्वारा और सांसारिक लोगों के साथ धर्म्ममय आचार व्यवहार के द्वारा अपनी वार्त्ता का प्रमाण देता है। फिर अन्तःकरण के पाप से घृणा करता है और अपने पाप के कारण अपने ही को घृणा योग्य समझता है फिर कुटुम्ब परिवार

में पाप का निषेध करता है और जगत में धर्म्मवृद्धि करने में बड़े यत्न से चेष्टा करता है और कपटी वा बकवादी लोगों के समान केवल वार्त्ता द्वारा चेष्टा प्रकाश करता है सो नहीं किन्तु ईश्वरीय वाक्य के अधीन हो विश्वास और प्रेम सहित ईश्वर की आज्ञा पालन द्वारा उसे प्रकाश करता है। (अय्यूब ४२ : ५, ६ । गीत ५० : २३ । हिजकियेल २० : ४३ । मत्ती ५ : ८ । योहन १४ : १५ । रोम. १० : १० । हिजकियेल ३६ : २५ । फिलिपी १ : २७ और ३ : १७)

मनुष्य के अन्तःकरण में अनुग्रह के कार्य्य और उस के प्रकाश होने की रीति का मैं ने संक्षेप से जो वर्णन किया उस के खण्डन निमित्त जो तुम्हारा कोई प्रमाण हो तो कहो और जो न हो तो मुझे दूसरा प्रश्न करने की आज्ञा दो। बकवादी ने कहा, और कौन सी वार्त्ता कहूं मेरा कार्य्य इतना ही है कि मैं तुम्हारी वार्त्ता सुनूं तुम दूसरा प्रश्न करो। विश्वासी ने कहा, मैं तुम से पूछता हूं कि जो धर्म्म के गुण मैं ने कहे सो तुम्हारे अन्तःकरण में व्याप्त हुए या नहीं? और क्या तुम्हारे आचार व्यवहार द्वारा इस का प्रमाण होता है? भला सत्य कहो तुम आचार व्यवहार करके सत्य धार्म्मिक हो अथवा वाक्य और जिह्वा के धार्म्मिक हो? तुम जो इस बात का उत्तर मुझे दो तो भाई ईश्वर को साक्षी करके जो बात तुम्हारे ही मन को सत्य जान पड़े उस से भिन्न और कुछ न कहना क्योंकि जो अपनी प्रशंसा करता है वह प्रशंसित नहीं होता है किन्तु ईश्वर जिस की प्रशंसा करे वही प्रशंसित है। फिर चाल व्यवहार से और प्रतिवासी लोगों की साक्षी से जो हम अधर्म्मी ठहरते हैं तथापि अपने मुख से अपने धर्म्मी होने का मिथ्या बखान करें तो यह महापाप है। यह बात सुनकर बकवादी कुछ लज्जित हुआ परन्तु

शीघ्र संभलकर विश्वासी को उत्तर देने लगा कि तुम तो अभी आन्तरिक धर्म्म की और मन की और ईश्वर की चर्चा करते हो और ईश्वर को साक्षी रखते हो जिस से वार्त्ता का प्रमाण हो तो इस रीति की मैं तुम्हारे साथ बातचीत नहीं किया चाहता हूं और इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने में भी मेरी इच्छा नहीं। उत्तर न देने से मैं दोषी नहीं हो सकता हूं क्योंकि कुछ तुम मेरे गुरु नहीं हो और जो तुम अपने मन में अपने तईं मेरा गुरु भी मानो तौभी मैं तुम को अपना विचारकर्त्ता नहीं मानता हूं। अब एक बात मैं तुम से पूछता हूं कि तुम ने ऐसा प्रश्न मुझ से क्यों किया? विश्वासी ने उत्तर दिया, इस का कारण यही है कि तुम को बड़ा वक्ता देखा और मुझे ऐसा समझ पड़ा कि केवल मनमता मात्र तुम में है। और भी मैं तुम से सत्य कहता हूं मैं ने सुना है कि तुम्हारा धर्म्म कथन मात्र दृष्टि पड़ता है और तुम्हारे आचरण द्वारा तुम्हारा वचन मिथ्या ठहरता है। और लोग यह बात कहते हैं कि तुम खीष्टियानों में कलङ्क स्वरूप हो और तुम्हारे आचार व्यवहार से धर्म्म की अनेक प्रकार की हानि होती है। कोई यह कहता है कि तुम्हारे दुष्ट आचरण द्वारा बहुतों की बाधा हुई है और कितनों के तो प्राण नाश होने की शङ्का होती है क्योंकि मदिरा की हाट में बैठना लोभ लोलुपता ईश्वर का नाम ले झूठी सौगन्ध खाना अधर्म्मी जनों की संगति करना ये सब तुम्हारे धर्म्म के विरुद्ध नहीं हैं। वेश्या के विषय में जो कहावत लोग कहते हैं वह तुम पर घटती है यथा पतिव्रता स्त्री भी वेश्या के कारण लज्जित होती है। वैसे हो तुम भी धर्म्माचारियों की लाज के कारण हो। बकवादी ने कहा, सुनो तुम बड़े चिड़चिड़हे देख पड़ते हो कि दूसरे की निन्दा सुन झट दोष लगाते हो। इस से मुझे जान

पड़ता है कि तुम वार्ता करने के योग्य नहीं हो सो अब मैं जाता हूं ।

इस रीति से जब बकवादी चला गया तब ख्रीष्टियान ने विश्वासी के निकट आ कहा, क्यों जो मैं ने कहा था सोई हुआ कि नहीं । तुम्हारी वार्ता और उस के कुभाव का मेल कभी न होता । उस का तुम्हारा साथ छोड़ देना भला जान पड़ा पर अपनी कुचाल छोड़ना उस ने भला न समझा । अब वह गया तो जाने दो । इस में उसी की हानि है पर हम को यह लाभ भया कि वह न जाता तो हम को उसे त्याग करना पड़ता क्यों कि उस का स्वभाव तो कभी छूटने का नहीं और हमारे साथ उस के रहने से मुझ को ही कलंक लगता । पावल प्रेरित ने कहा, है कि ऐसे लोगों से अलग होना ही उतम है । विश्वासी बोला, उस के साथ वार्तालाप हुई और इससे मुझे आनन्द हुआ । फिर वह बेचारे ये सब बातें क्या जानें । जो हो सो हो मैं ने उस को सब स्पष्ट कह दिया है अब चाहे जो उस की दशा हो पर मैं निर्दोष हूं । ख्रीष्टियान ने कहा, तुम ने अच्छा किया जो सत्यता से सब बातें उस को कह दीं । आज कल मनुष्यों में ऐसी खुली वार्ता कहां । इस लिये अनेक मनुष्य धर्म्म से घृणा करते हैं क्योंकि जिन का वाक्य तो धर्म्ममय है परन्तु आचार व्यवहार दुष्ट है ऐसे मूर्ख बकवादी लोगों को धार्म्मिक लोग मित्रभाव करके ग्रहण करते हैं इस से सांसारिक लोगों को विघ्न होता है और ख्रीष्ट धर्म्म की निन्दा होती है और सरल अन्तःकरण वाले दु.खी होते हैं । तुम ने जिस रीति से खोल करके इस से वार्ता की ऐसे ही समस्त बकवादियों से वार्ता की जाती तो मुझे बड़ा आनन्द होता क्योंकि या तो वे आप धर्म्मी हो जाते या धार्म्मिकों की संगति कठिन जान त्याग देते । इतना कह ख्रीष्टियान यह गान करने लगा ।

दोहा ।

जैसे पुच्छ नचावही केकी गर्व दिखाय ।
बकवादी नित तैसही . झूठे दम्भ जनाय ॥
यश चाहत सब लोक के . दया धर्म्म बिसराय ।
कहा लाभ ते मनमता . धर्म्महि मूल नशाय ॥
विश्वासिक सन्मुख भये . बचन सुनहि जब जाति ।
बकवादी तब जात घटि . कृष्ण पक्ष शशि रीति ॥

यह गान करने के पीछे ख्रीष्टियान और विश्वासी परस्पर वार्त्ता करते हुए चले । जो ये परस्पर वार्ता न करते तो इन को मार्ग भारी जान पड़ता क्योंकि वे निर्जन देश से होकर जाते थे ।

तेरहवां अध्याय ।

ख्रीष्टियान और विश्वासी उस निर्जन स्थान के अन्त लों पहुंचने पर थे कि अकस्मात् विश्वासी ने पीछे फिर के जो देखा तो देखता क्या है कि एक पुरुष उन के निकट चला आता है । उस को इस ने पहचाना तिस पर भी ख्रीष्टियान से कहा, देखो तो यह कौन चला आता है । ख्रीष्टियान ने देखकर कहा, यह तो मेरा परम मित्र मङ्गलवादी है । तब विश्वासी ने कहा, मेरा भी यह परम मित्र है क्योंकि इसी ने मुझे मकरे फाटक का मार्ग दिखाया । इतने में मङ्गलवादी ने आकर आशीर्वाद दिया, हे प्यारो ! तुम्हारा कल्याण हो और तुम्हारे सहायकों का भी कल्याण हो । यह बात सुन ख्रीष्टियान बोला हे परम हितकारी मङ्गलवादी तुम ने जो मेरे पारलौकिक मङ्गल निमित्त दया और श्रम किया है तुम्हारे दर्शनमात्र से मुझे उसकी सुरत पड़ती है तब विश्वासी

मङ्गलवादी की भेंट ।

ने भी कहा, हे परम मित्र ! तुम्हारा सहस्त्र सहस्त्र बार कल्याण हो। हम सरीखे दीन-हीन यात्रियों को तुम्हारा सत्सङ्ग अत्यन्त फलदायक है। मङ्गलवादी ने कहा, हे मित्रा ! जब से मेरी तुम्हारी भेंट हुई तब से तुम पर इस पथ में क्या क्या बीता सो कहो। तुम क्या क्या देखते हुए और कैसा कैसा व्यवहार करते हुए यहां तक आये।

तब उन्होंने मार्ग में जो जो उन पर बीता और जिस जिस रीति के कष्ट सह यहां तक पहुंचे सो सब समाचार मङ्गलवादी से कह सुनाया। तब मङ्गलवादी ने कहा, तुम जो मार्ग में इतने कष्ट उठा कर जयवन्त हुए और अति दुर्बल होकर भी आज पर्य्यन्त तक मार्ग में चले जाते हो इस से मैं अति प्रसन्न हूं। फिर भी कहता हूं कि मैं अपने और तुम्हारे दोनों के निमित्त आनन्द करता हूं क्योंकि मैं ने जो बीज बोया था उस का फल तुम पाते हो। जो तुम आगे को साहस कर धीरज धरोगे तो अल्पकाल में वह दिन आवेगा जिस में बीज बोनेहारा और शस्य काटनेहारा दोनों एक संग आनन्द करेंगे। (योहन. ४ : ३६) क्योंकि जो तुम कातर न हो जाओ तो उपयुक्त समय में फ़सल काटोगे। (गलाति ६ : ९) अक्षय मुकुट तुम्हारे पास है जिस प्रकार से वह अक्षय मुकुट प्राप्त हो तिसी प्रकार से दौड़ो। (१ करिन्थि. ९ : २४-२७) देखो अनेक ऐसे मनुष्य भी हुए कि इस मुकुट के पाने के निमित्त उन्होंने यात्रा तो की परन्तु बहुत दूर तक जाने पर भी और और लोगों ने आकर उन से यह मुकुट हर लिया है इस कारण जो तुम्हारे पास है उसे यत्न कर के धरे रहो कि तुम्हारा मुकुट कोई दूसरा न हर ले। (प्रकाश. ३ : ११) अब लों तुम शैतान के तीर की चोट से परे नहीं हुए और पाप के विरुद्ध युद्ध में अभी तक रक्त नहीं बहाया। इस

कारण सावधान रहना जिस राज्य के निमित्त तुम जाते हो उसी का ध्यान लगाये रहना और अदृश्य विषयों में अटल विश्वास रखना। अपने अपने मन में इस लोक के विषयों को स्थान कभी न देना। अपने अपने अन्तःकरण से और उस की कुइच्छा से सावधान रहना क्योंकि अन्तःकरण अत्यन्त कपटी है और उस का रोग असाध्य है। एकाग्र चित्त होकर यात्रा करना। भय न करना क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा पराक्रम जिस के हाथ है वही तुम्हारा सहायक है।

इस रीति की वार्त्ता सुन उन दोनों ने मङ्गलवादी का बड़ा धन्य माना। फिर उन्होंने विचार किया कि यह तो भविष्यद्वक्ता है और मार्ग में जो जो हम पर बीतेगा और जो जो आपदा पड़ेगी और किस भांति उस को पराजय कर सकेंगे ये सब बातें हमें बता सकता है। ऐसा विचार के उन्होंने अत्यन्त नम्रता संयुक्त विन्ती की कि हे महाराज! अवशिष्ट पथगमन में हमारे उपकार के निमित्त कुछ और उपदेश कीजिये। तब मङ्गलवादी कहने लगा कि हे मेरे पुत्रो! तुम सुसमाचार के सत्य वाक्य द्वारा जानते हो कि अनेक दुःख भोग कर ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा और कि प्रत्येक नगर में बंधन और क्लेश सहना पड़ेगा। इस कारण किसी न किसी संकट बिना मार्ग में बहुत दूर जाने की आशा मत रखना। तुम जिस मार्ग में होकर आये हो उस में मेरे वाक्य के सत्य होने के कितने ही प्रमाण तुम को मिलते आये हैं और थोड़ी दूर आगे बढ़ने से अधिक प्रमाण मिलेंगे। देखो तुम निर्जन देश से तो प्रायः निकल चुके हो और थोड़ी दूर पर तुम्हें एक नगर दिखाई देगा। उस नगर में जाने से तुम शत्रुओं से विशेष दुःख पाओगे। वे तुम्हारे प्राण नाश की चेष्टा करेंगे और यह भी जान रक्खो कि जिस मत को तुम ने

स्वीकार किया है उस मत की सत्यता के निमित्त तुम में से एक को वा दोनों ही को अपने रुधिर बहाने से साक्षी देना पड़ेगा । तुम मृत्यु लों विश्वास में दृढ़ रहो तब राजा तुम को जीवन का मुकुट देगा । और जो वहां प्राण देगा उस की मृत्यु घोर यंत्रणायुक्त होगी परन्तु वह अपने संगी से अधिक भाग्यवान होगा । वह प्रथम ही स्वर्गपुर में पहुंचेगा और केवल यह नहीं किन्तु उस का संगी शेष मार्ग में जो दुःख वा कष्ट उठावेगा उस से वह बच जाएगा । जब तुम उस नगर में पहुंचकर मेरी सम्पूर्ण बातों का प्रमाण पाओ तब अपने मित्र को स्मरण कर अपने को वीर दिखाओ और ईश्वर को विश्वास योग्य सृष्टिकर्त्ता जान सत क्रिया कर अपने अपने आत्मा को उसी के हाथ समर्पण करो ।

मायापुर ।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि यह उपदेश सुन मङ्गलवादी से विदा हो खीष्टियान और विश्वासी दोनों यात्रा करते करते क्रम से निर्जन स्थल से ज्यों निकले त्यों अपने सन्मुख मायापुर नाम नगर को देखा । यह नगर माया से भी अधिक असार है । भजन ६२ : ९ । जो वहां द्रव्यादि विक्रय करने आते हैं वे भी मायारूपी और उन के पास जो पदार्थ हैं वे भी माया निर्म्मित हैं । इस का प्रमाण उपदेशक ग्रन्थ में है । (उपदेशक १ : २, १४ और २ : ११, १७ और ११ : ८; यशायाह ४० : १७) इस नगर में बारहों मास एक मेला लगता है उस मेले का नाम भी मायापुर का मेला है । वह मेला बहुत काल से होता आया है कुछ नया नहीं है । उस मेले के स्थापन होने का कारण यह है । पांच सहस्र वर्ष हुए कि खीष्टियान और विश्वासी के सदृश अनेक यात्री लोग स्वर्गपुर जाते थे । मायापुर ही होकर उन का मार्ग था । यह देख बालजिबूल

अपल्लुश्रोन और कटक नाम भूतों के प्रधानों ने अपने साथियों के सहित यात्रियों को भुलाने के लिये बारहों मास का यह मेला स्थापन किया और वहां सब प्रकार के मनोहर मायामय द्रव्य विक्रय कराने लगे। वहां उत्तम उत्तम गृह, भूमि, व्यवहार, चाकरी, आदर, पदवी, अधिकार, देश, राज्य, रंग, काम, क्रीड़ा, कौतुक, वेश्यागमन, स्त्री, स्वामी, सन्तान, दास, दासी, जीवन, रक्त, शरीर, प्राण, सोना, चांदी, मुक्ता, मणि, माणिक्यादि संपूर्ण विषयवासना के द्रव्य प्रस्तुत हैं। इन से भिन्न उस मेले में भानमती बहुरूपिये नटादि के सब प्रकार के स्वांग, ठगहाई, जुआ, चोरी, पागलपन, वानर, छल, बल, चतुराई, इत्यादि सर्वदा दिखाई देती हैं। और अनेक रक्त वर्ण के चोर नरहिंसक मिथ्या किरिया खानेहारे पर स्त्री गामी आदि नित्य नये नये दिखाई देते हैं। फिर आन आन छोटी छोटी हाटों के रीत्यानुसार उस मेले में भी पृथक् पृथक् गलियां टोले चौक बजार आदि अपने अपने नाम से प्रसिद्ध हैं वहां जाने से इच्छा के अनुसार सम्पूर्ण भिन्न भिन्न वस्तु मिलती हैं। विशेष करके उस में अंगरेज़ी टोला, फरांसीसी टोला, इटली टोला, स्पानी टोला, जर्मनी टोला आदि सब टोले बने हैं। उन स्थानों में अनेक प्रकार के मायिक द्रव्य विक्रय होते हैं। जैसे और और मेलों में कोई प्रधान वाणिज्य द्रव्य होता है तैसे वहां रोम देश का वाणिज्य द्रव्य बहुत प्रसिद्ध है परन्तु अंगरेज़ और कितने और देशी लोग उस द्रव्य को बहुत नहीं चाहते हैं।

स्वर्गपुर का मार्ग इस मायानगर के बीचों बीच होकर जाता है। वहां के जानेहारों में से कोई जो इस मायापुर के मेले में होकर जाने की इच्छा न करे तो उस का इस लोक से बाहर होना पड़ेगा। (१ करिन्थि. ५ : १०) स्वर्गपुर का राज-

कुमार जब अपने देश को जाता था तब इस नगर के मेले के बीचों बीच होकर गया। मैं अनुमान करता हूं कि इस मेले के प्रधान अध्यक्ष बालजिबूल ही ने राजकुमार को निमन्त्रण कर

मायापुर के लोग खीष्टियान और विश्वासी की निन्दा करते हैं।

मेले की मायिक वस्तु के मोल लेने की सम्मति दी और यह भी विचारा कि जो यह पुरुष नगर के बीच से जाने के समय केवल मुझे प्रणाम मात्र कहना अंगीकार करे तो मैं इसी

को मेले का अध्यक्ष बनाऊं। हां बालजिबूल ने उसे अति मर्य्यादिक पुरुष जान टोले टोले ले ले जा क्षण मात्र में समस्त जगत का राज्य दिखा दिया और यह मायिक द्रव्य में से कोई अल्प मोल की भी वस्तु मोल ले इस निमित्त बड़ी चेष्टा की पर उस सच्चिदानन्द ने उस में की एक सुई भी मोल न ली परन्तु नगर को यों ही त्याग दिया। (मत्ती ४ : ८-१०; लूक ४ : ५-८) इस से जान पड़ता है कि यह मनमोहन मेला बहुत भारी है और सहस्रों वर्ष से होता चला आया है।

इस नगर के बीच में का मार्ग छोड़ स्वर्गपुर का और कोई मार्ग नहीं है इस कारण इन यात्रियों को भी उस में होके जाना पड़ा। मेले में प्रवेश करते ही हाट और नगर के लोग आकर उन्हें घेरके कौतुकदर्शन के निमित्त बड़ा कोलाहल करने लगे। इस कोलाहल के तीन कारण थे। पहिला यह कि वहां के समस्त लोगों के वस्त्रों से इन दोनों के वस्त्र भिन्न थे अर्थात् इन का स्वरूप ही भिन्न था इस कारण मेले के लोग देखने को बटुर आये और कोई कोई इन को मूर्ख, कोई कोई पागल, कोई कोई विदेशी कहने लगे। (ऐब्रूब १२ : ४ और १ करिन्थि. ४ : ९) दूसरा यह कि मेले के लोग जैसे इन के वस्त्र देखके चौंके थे वैसे इन की भाषा सुनकर आश्चर्य्य करते थे। ये कनान देश की भाषा बोलते थे इस लिये वहां बहुत थोड़े मनुष्य थे जो उन की भाषा समझते थे क्योंकि वे सब इसी लोक के थे इस हेतु मेले की इस ओर से उस ओर लों समस्त लोग इन दोनों यात्रियों को परदेशी जानते थे और ये दोनों उन सभों को परदेशी जानते थे। (१ करिन्थि. २ : ७, ८) तीसरा यह था कि ये यात्री लोग मेले के वाणिज्य द्रव्य को अति तुच्छ जानते थे इस से लोगों को और भी आश्चर्य्य हुआ। यदि कोई किसी द्रव्य के मोल लेने

के निमित्त इन को पुकारता था तो ये अपने कान में अंगुली डाल "माया के दर्शन से हे परमेश्वर हमारे नेत्र फेर दे" ऐसा कह उस द्रव्य की ओर ताकते भी न थे परन्तु हमारा व्यवहार स्वर्ग से है यह बात ऊपर दृष्टि करने से लोगों को समझाकर आगे बढ़ते थे (भजन ११९ : ३७ फिलिपी. ३ : २०, २१) इन यात्रियों का यह आचरण देख उस मेले में एक मनुष्य ने ठट्ठा कर उन से पूछा कि तुम कौन सी वस्तु मोल लिया चाहते हो । तब इन्हों ने उस की ओर गंभीरता से दृष्टि कर कहा हम "सत्य" के ग्राहक हैं । (दृष्टान्त २३ : २३) यह बात सुन उस मेले के लोग इन को तुच्छ जान उपहास और निन्दा करने लगे और कोई कोई चिल्लाके कहने लगे कि इन्हें मारो । फिर परस्पर विवाद होने से सब मेले में हलचल होने लगी । यह समाचार पा मेले का प्रधान अध्यक्ष तुरन्त वहां आया और अपने कई विश्वास योग्य मित्रों से कहा कि इन दोनों के हेतु से मेला छिन्न भिन्न हो रहा है इन को पकड़कर इन का वृत्तान्त पूछो । वे मनुष्य यात्रियों को पकड़ विचार स्थान में ले जा पूछने लगे, तुम कहां से आये हो और कहां जाओगे और यहां असंगत वेष धारण कर इस मेले में क्यों आये ? इन्हों ने उत्तर दिया, हम विदेशी यात्री हैं और स्वर्गीय यिरूशलीम नाम अपने देश को जाते हैं । (इब्रि. ११ : १३-१६) जब इस नगर के लोगों वा महाजनों ने पूछा कि तुम कौन सी वस्तु मोल लोगे तब हम ने उत्तर दिया कि हम सत्य के ग्राहक हैं । इस बात को छोड़ उन को अप्रसन्न करने की वार्त्ता हम ने कोई न कही । वे अकारण हम पर दोष लगाते हैं और हमारी यात्रा में विघ्न डालते हैं । यह बात सुन विचारकर्त्ताओं ने प्रतीति न कर इन्हें मूर्ख बौरहे और मेले के भंजक कह दोषी ठहराकर मारा और सर्वाङ्ग में कीचड़ लगाकर

मेले के लोगों को कौतुक दिखाने के निमित्त उन को एक पिंजरे में बन्द कर रक्खा। इस विपत्ति में ये दोनों यात्री कुछ काल पड़े रहे और मेले के लोगों में से जो जैसा चाहते थे सो उन का तैसा तिरस्कार अपमान कुव्यवहार आदि करते थे और मेले का अध्यक्ष उन की दुर्दशा देख हंसता था। परन्तु इन दोनों ने धीरज धर उन की निन्दा के बदले निन्दा न की वरन उन को आशीर्वाद देते थे और दुर्वाक्य के पलटे में मधुर वचन बोलते थे और कुव्यवहार के बदले प्रीति दिखाते थे। इन का ऐसा व्यवहार देख जो वहां के लोग कुछ दयावान और बुद्धिमान थे सो कुव्यवहारी लोगों को डांटने लगे परन्तु वे लोग उन का कहना न मान क्रोध सहित उन्हीं का तिरस्कार कर बोले तुम भी पिंजरे में के यात्रियों के समान दुष्ट हो। जान पड़ता है कि तुम भी उन के साथी हो सो उन के दण्ड के भी साथी होगे। तब बुद्धिमानों ने उत्तर दिया कि हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि ये यात्री सुशील और मिलनसार हैं और किसी का बुरा नहीं चाहते हैं पर इस मेले के बहुत लोग ऐसे हैं कि इन के बदले इस पिंजरे में बन्द होने के योग्य हैं। इस रीति से परस्पर वादानुवाद होते होते आपस ही में मारपीट होने लगी। उस समय ये दोनों यात्री सब के सन्मुख बुद्धि संयुत शुभाचार प्रकट करते रहे तौभी विचारकर्त्ताओं ने इन बिचारे यात्रियों को विचारस्थान में बुलवा मेले में दङ्गा करवाने का दोष लगाकर दण्डयोग्य ठहराया फिर निर्दयता से उन की ताड़ना कर भारी भारी लोहे की संकली से उन्हें बांध सब के अन्तःकरण में भय उत्पन्न हो और कोई उन का पक्षपात न करे और उन के संग न हो ले इस अभिप्राय से उन्हें सम्पूर्ण मेले में फिरवाया। इस रीति का अपमान सहकर खांष्टियान और विश्वासी ने और भी धीरज धर

उन के कुवाक्य और तिरस्कार को ऐसी नम्रता से सह लिया कि उन की सुशीलता देख मेले के कितने एक मनुष्य उन का पक्ष करने लगे। इस बात में शत्रुओं का और भी क्रोध भड़का और वे यात्रियों को प्राणदण्ड देना ठहराकर कहने लगे कि केवल पिञ्जरे में डालने और बेड़ी पहिराने से हमारा जी नहीं भरा किन्तु जब तुम मारे जाओगे तब ही हमारा मन तृप्त होगा क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार से मेले के लोगों को भरमा के सब का चित्त बिगाड़ा है। सो विचारकर्त्ताओं की जब तक दूसरी आज्ञा न होवे तब तक पहरेवालों ने इन दोनों को पिञ्जरे में रखने की आज्ञा पा दोनों के पैरों में बेड़ी डाल उन्हें पिञ्जरे में बन्द कर रक्खा।

इस दुर्दशा के समय उनको मङ्गलवादी के उपदेश की सुरत पड़ी जो उस ने कहा था कि तुम्हारी ऐसी ऐसी दुर्दशा होगी। इस उपदेश का ध्यान कर वे अधिक दृढ़ चित्त हो आपस में कहने लगे कि हम दोनों में जिस की मृत्यु प्रथम होगी वही अधिक भाग्यवान होगा। यह बात कह वे मन ही मन चाहते थे कि जो परमेश्वर की इच्छा हो तो पहिले मेरी मृत्यु होय। फिर उन्होंने सर्वज्ञाता, सर्वदर्शी, सर्वाधिपति परमेश्वर को अपना अपना प्राण समर्पण कर अपनी उस दुर्दशा में धीरज धरा।

थोड़े दिवस पीछे विचार करने का ठहराया हुआ समय उपस्थित हुआ तब नगर के अध्यक्षों ने उन का विचार करने और दण्ड की आज्ञा देने के निमित्त पिञ्जरे से निकाल विचारासन के आगे शत्रुओं के सन्मुख खड़ा किया। जब विचारकर्त्ता जिस का नाम धर्म्मद्रोही था विचारासन पर बैठा तब यात्रियों के नाम के दोषपत्र मंगवाये गये। उन दोनों पत्रों का अर्थ एक ही था केवल वाक्य में कुछ अन्तर था उन में यही लिखा था

कि ये लोग नगर के बणिकों के शत्रु और उन के वाणिज्य की बाधा करनेहारे हैं और इन्हों ने नगर में हौरा मचाकर मेले के लोगों में फूट करवाई है और नगराध्यक्ष की आज्ञा के विपरीत अपनी कुमति द्वारा एक दल बांध लिया है।

तब विश्वासी ने इस रीति से उत्तर दिया कि सर्वप्रधान ईश्वर का विरोधी जो हो केवल उसी का विरोध मैं ने किया है। और तुम जो कहते हो कि मैं ने दंगा मचाया तो मैं ने नहीं मचाया क्योंकि मैं तो मिलनसार मनुष्य हूं। और जिन लोगों ने हमारा पक्ष किया है वे हमारी निर्दोषिता सत्यता और सुशीलता देख हमारे साथी हो कुपथ से सुपथ में आये हैं। और तुम जो बालज़िबूल अपने राजा की बात कहते हो तो वह हमारे प्रभु का शत्रु है इस हेतु मैं उस को और उस के दूतों को तृणवत् समझता हूं।

विश्वासी का उत्तर।

जब विश्वासी ने इस रीति से कहा तब साक्षी बुलाये गये और यह आज्ञा दी गई कि जो लोग साक्ष्य दे सकें सो विचार स्थान में आकर इस बन्दी के विपरीत और अपने राजा के पक्ष में सम्पूर्ण सभा के सन्मुख जो कुछ कहना हो सो कहें। यह आज्ञा सुनते ही डाही मिथ्यापूजक और प्रशंसार्थी नाम तीन साक्षी आये। तब विचारकर्त्ता ने पूछा तुम इस बन्दी को पहचानते हो इस के विरुद्ध और अपने राजा के पक्ष में जो तुम्हें कहना हो सो कहो।

तब डाही सन्मुख आकर इस रीति से साक्षी देने लगा कि हे महाराज मैं इस मनुष्य को बहुत दिन से जानता हूं और इस मर्य्यादिक सभा के सन्मुख किरिया खाके कहता हूं। विचारकर्त्ता ने कहा प्रथम जो पहिले विधि के अनुसार शपथ कर। तब

साक्षी दे। वह शपथ खाकर कहने लगा यद्यपि इस मनुष्य का नाम सुनने में उत्तम है तथापि यह हमारे देश में सब से अधम मनुष्य है क्योंकि यह न तो राजा को न प्रजा न

डाही का बयान। व्यवस्था को न व्यवहार को मानता है। इस की नित्य यही चेष्टा रहती है कि कितनी एक बातें जिन्हें वह विश्वास और धर्म्मस्वभाव के मूलवचन कहता है लोगों में प्रचार कर राजद्रोह करवावे। एक बार मैं ने इस को यह बात करते सुना कि खीष्ट का धर्म्म और मायापुर का व्यवहार ये दोनों परस्पर ऐसे विरुद्ध हैं कि इन का मेली होना असम्भव है। इस रीति से हमारी प्रशंसनीय क्रिया क निन्दा करता है और केवल हमारी क्रिया को नहीं किन्तु हम को दोषी ठहराता है। विचारकर्त्ता ने कहा और भी कोइ बात तुझे कहना है। डाही बोला महाराज मैं इस के विषय में बहुत सी बातें कह सकता परन्तु सभा को अधिक दुःख देने नहीं चाहता हूं। जो दूसरे साक्षियों के साक्षी देने के पीछे इस के दोष स्थिर करने के निमित्त और कुछ साक्ष्य का प्रयोजन हो तो मैं विस्तार सहित साक्षी दूंगा। तब विचारकर्त्ता ने उसे एक ओर खड़े होने की आज्ञा दी।

तब मिथ्यापूजक को बुलाकर विचारकर्त्ता ने पूछा कि तुम इस बन्दी को जानते हो। इस के विपरीत और राजा के पक्ष में तुम क्या साक्षी दे सकते हो। यह कह कर

मिथ्यापूजक का बयान। उस को शपथ दिलवाई तब मिथ्यापूजक कहने लगा महाराज इस से मेरा बहुत परिचय नहीं और इस से अधिक परिचय करने की लालसा भी नहीं। तथापि थोड़े दिवस हुए कि नगर में मुझ से इस से कुछ वार्त्ता हुई तब से मैं जानता हूं कि यह बड़ा दुष्ट है क्योंकि

इस ने मुझ से यह बात कही कि तुम्हारा धर्म्म मिथ्या है उस के माननेहारे ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी बात से आप जान सकते हैं कि इस का क्या अभिप्राय है अर्थात् यह कि तुम व्यर्थ आराधना करते हो और अब लों पाप में पड़े हो और अन्त में नष्ट होगे। यह मेरी साक्षी है।

फिर विचारकर्त्ता ने प्रशंसार्थी को बुला शपथ देकर कहा इस बन्दी के विरुद्ध और राजा के पक्ष में तुम क्या साक्षी देते हो। तब प्रशंसार्थी कहने लगा, हे विचाराध्यक्ष महाराज! हे सभासदों। मैं इस को बहुत दिन से जानता हूं। मैं ने कई बार इस को ऐसी बातें कहने सुना है जो कहने योग्य नहीं हैं। और बात क्या बताऊं हमारे महाराजा बालजिबूल की इस ने बहुत निन्दा की है और उस के आदर योग्य मित्रों का भी अपमान किया है विशेष कर श्रीयुत राजा पुरातनभाव, राजा शारीरिकानन्द, राजा सुखभोगी, राजा दर्पाभिलाषी, वृद्ध, राजा लम्पट, बाबू पेटुक आदि हमारे कुलीन लोगों का अनेक तिरस्कार किया है इस से अधिक यह बात भी कही कि जो सब मनुष्य मेरे मत को मानते तो तुम्हारे कुलीन लोगों में से कोई भी इस नगर में बसने न पाता और उस की ऐसी ऐसी बातें कहने में कुछ आश्चर्य्य नहीं क्योंकि आप की भी निन्दा करने में इस को भय नहीं हुआ। जैसा इस ने नगर के अन्य अन्य मान्य लोगों को नास्तिक और दुष्ट कहा तैसे आप का भी अपमान किया है।

प्रशंसार्थी का बयान।

इस रीति की साक्षी देकर जब प्रशंसार्थी ने समाप्ति की तब विचाराध्यक्ष विश्वासी बन्दी से कहने लगा अरे विश्वास घातक पाखंडी राजद्रोही तेरे विरुद्ध इन सब सज्जनों ने क्या क्या साक्षी दी सो तूने सुनी। विश्वासी ने कहा, हे महाराज! आज्ञा हो तो

मैं अपना कुछ निवेदन करूं। यह बात सुन कर विचाराध्यक्ष ने कहा, अरे दुष्ट ! तुझे क्षणमात्र जीवता रखना उचित नहीं है परन्तु तुझ पर जो हमारी कृपा है सो मनुष्यों पर प्रगट हो इस निमित्त जो तेरे मन में होय सो कह हम सुनते हैं। तब विश्वासी ने कहा प्रथम डाही की साक्षी का उत्तर देता हूं। मैं ने जो उस विषय में वार्त्ता कही वह यह है कि जो विधि वा व्यवस्था वा व्यवहार वा लोकाचार ईश्वर क वाक्य से विपरीत है सो खीष्टधर्म्म से भी अत्यन्त विपरीत है। इस में जो मेरी भूल हो तो प्रमाण दो जो तुम प्रमाण सहित कहो तो मैं सब के सन्मुख अपनी भूल को अभी अंगीकार करूंगा। फिर मिथ्या पूजक ने जो साक्षी दी उस विषय में इतना ही कहता हूं कि ईश्वर की आराधना करने के लिये अवश्य है कि ईश्वर मनुष्य के हृदय में सत्य विश्वास को उत्पन्न करे परन्तु ईश्वर ने अपनी इच्छा प्रगट करने के निमित्त जो बचन जगत में प्रकाश किया है केवल उसी बचन के द्वारा मनुष्य के हृदय में वह सत्य विश्वास उत्पन्न होता है इस लिये ईश्वर की आराधना में जो कर्म्म ईश्वर के उस प्रकाशित बचन के विरुद्ध है वह केवल मनुष्य के कल्पित विश्वास का फल है और ऐसा विश्वास करने से अनन्त जीवन के प्राप्त करने में कुछ उपकार नहीं होता। और प्रशंसार्थी ने जो साक्षी दी उस के विषय में यह कहता हूं कि मैंने किसी का कुछ तिरस्कार करने की इच्छा नहीं की परन्तु यह बात निश्चय कहता हूं कि इस नगर का राजा और उस के जिन अनुगामी लोगों के नाम इस साक्षी ने बताये वे सब इस नगर वा देश में बास करने के योग्य नहीं हैं केवल नरक वास के योग्य हैं। इस बात के कारण जो मेरा दण्ड हो सो हो, ईश्वर मुझ पर अनुग्रह करे।

विश्वासी का उत्तर।

विश्वासी का यह उत्तर सुनने के पीछे विचारकर्त्ता ने जो सभा इस विषय के निर्णय के लिये नियुक्त थी उस सभा के लोगों को बुला के कहा, हे सभासदो ! जिस मनुष्य के निमित्त नगर में खड़बड़ हो गया सोई तुम्हारे आगे खड़ा है और इस के विरुद्ध जो साक्षी इन सज्जनों ने दी है और इस ने जो उत्तर दिया वा दोष स्वीकार किया सो भी तुम सुन चुके हो। अब इस को फांसी देना वा छोड़ देना तुम्हारा अधिकार है परन्तु इस विषय में जो हमारी व्यवस्था है उसे तुम को जता देना उचित है। हमारे महाराजा के अधीन महा फिरा-ऊन नाम जो एक राजा था तिस के अधिकार में यह एक व्यवस्था स्थापन हुई कि भिन्नमतावलम्बी लोग अधिक बढ़कर प्रबल न होवें इस निमित्त उन के पुत्रों को नदी में फेंक देना। (यात्रा १ : २२) फिर महा निबुखद्‌निस्सर नाम दूसरा राजा था जो हमारे महाराजा के अधीन था उस ने एक स्वर्ण प्रतिमा स्थापन कर यह व्यवस्था बांधी कि जो मनुष्य इस प्रतिमा को दण्डवत कर के पूजा न करे वह अग्निकुण्ड में फेंका जाय। (दानियेल ४ : ६) फिर दारा नाम राजा ने एक व्यवस्था की सो यह थी कि जो कोई मेरे ठहराये हुये दिन के पहिले मुझ से भिन्न और किसी देवता से वा ईश्वर से प्रार्थना करे वह सिंहों की मांद में फेंका जाय। (दानियेल ६ : ७) अब तुम देखो इस बन्दी ने वे सब व्यवस्था उल्लंघन की हैं जो यह केवल मनसा कर के उल्लंघन करता तो क्षमा योग्य न होता परन्तु इस ने बचन और क्रिया कर के जो उल्लंघन किया है तो यह किसी प्रकार से भी क्षमा नहीं हो सकता है। फिर देखो कि फिराऊन के समय में व्यवस्था स्थापन हुई सो स्पष्ट दोष पर स्थापित न हुई किन्तु एक अनुमान

विचारकर्त्ता के व्यवस्थाओं का वर्णन।

पर कि कदाचित् आगे को कुछ अकाज होगा उसे पहिले निवारण कर लें। परन्तु इस पुरुष का दोष तो स्पष्ट ही है। फिर इस ने दूसरी और तीसरी व्यवस्था का भी उल्लंघन किया है क्योंकि वह हमारे मत का विरोधी है। और राजद्रोह तो यह आप ही स्वीकार करता है इस कारण इस को प्राण दण्ड देना उचित है।

तब सभा के लोग जिन के नाम बाबू अंध, राजा धर्म्महीन, पण्डित द्रोहचिन्तक, लाला कामप्रिय, ठाकुर लुच्चा, मुंशी ढीठ, मिस्टर अभिमानी श्री बैरभाव, शेख मिथ्यावादी, बाबू क्रूर, पण्डित प्रकाशारि और सेठ कठोर थे विचाराध्यक्ष की सभा से उठ कर परस्पर विचार करने लगे। पहिले तो हर एक ने पृथक् पृथक् अपनी अपनी मतें यों वर्णन कीं। प्रथम अंध नाम सभाध्यक्ष बोला, मैं स्पष्ट देखता हूं कि यह मनुष्य कुपन्थी है। धर्महीन बोला, इस मनुष्य को जगत से उठा देना उचित है। फिर द्रोहचिन्तक ने कहा, हां! हां!! मुझ को तो इस का मुंह देखने से क्रोध उत्पन्न होता है। कामप्रिय ने कहा, वह मुझ से देखा नहीं जाता। लुच्चा बोला, मेरी भी यही मत है क्योंकि यह सर्वदा मेरी चाल पर दोष लगाता है। तब ढीठ ने कहा, उसे फांसी दे दो, अभिमानी बोला. यह बड़ा नीच है। बैरभाव ने कहा, उसको देखते ही मेरे शरीर में आग लग जाती है। मिथ्यावादी बोला, यह चोर है। क्रूर ने कहा, इसका बड़ा भाग है जो फांसी चढ़ें नहीं तो इस से भी कठिन दण्ड देना उचित है। प्रकाशारि ने कहा, इस को शीघ्र ही दूर करो। अन्त में कठोर ने कहा कदाचित सम्पूर्ण संसार का राज्य मुझे मिलता तौ भी मैं इस से मेल न कर सकता। सो अब चलो विचाराध्यक्ष के सन्मुख इस के लिये प्राण दण्ड देना स्थिर करें। जब इस प्रकार से हर एक ने अपनी अपनी मत दी थी तब वे विचारकर्त्ता के आगे उस बन्दी का बधन योग्य दोष स्थिर

करने को एक चित्त हुये। विचाराध्यक्ष ने उनका परामर्श सुन यह आज्ञा दी कि इसे जहां से लाये हो उसी स्थान में ले जाओ जितना दारुण कष्ट बन पड़े उतना कष्ट सहित इस को प्राण दण्ड दो।

तब उस के प्यादों ने इसे बाहर निकाल स्वदेशीय व्यवस्था के अनुसार पहिले बेत से मारा, फिर उस के गालों पर थप्पड़ मारे। फिर छुरियां ले निर्दयता से उस के शरीर का मांस चीरा, तब पत्थर फेंक फेंक मारा और तलवार की नोक से उस के अङ्ग अङ्ग गोद दिये। इस रीति की अनेक यातना दे अन्त में काष्ठ के खम्भे में बांध जला के भस्म किया। इस रीति से भांति भांति का अत्यन्त सङ्कट पाकर विश्वासी ने प्राण त्यागा परन्तु मैं ने देखा कि लोगों की भीड़ के पीछे उस के लिये दो घोड़े जुता रथ खड़ा था। फिर वह शत्रुगण से वध होते ही उस रथ पर तुरही के शब्द सहित आकाश मार्ग हो तुरन्त स्वर्गपुर को चला गया।

विश्वासी को प्राण दण्ड देना।

खीष्टियान के विचार में कुछ विलम्ब होने वाला था, इस लिये वह फिर कारागार में बन्द किया गया और थोड़े दिवस वहां रहा। परन्तु ईश्वर ने जिस के बश में मनुष्य का क्रोध है उन दुष्टों के हाथ से उस का प्राण बचाया और वह यात्री पथ में आगे बढ़ा तब यह गान करने लगा। यथा—

दोहा।

कियो खीष्ट के नाम पर . विश्वासी विश्वास।
तातें नुख अपनाय के . स्वर्गहि करै सुवास॥
अनविश्वासिक आन गनि . मानु बचन परमान।
सुख पावहि बहुबिधि इतै . नरकहि उते निदान॥
गान करहु तुम सर्बदा . चिरजीवी तव नाम।
काह भयो जो हत भये . लोह अमरपुर धाम॥

चौदहवाँ अध्याय।

ख्रीष्टियान का आशावान के साथ आगे बढ़ना।

फिर मैं स्वप्न में देखता हूं कि खीष्टियान अकेला गान करता हुआ चला सो नहीं किन्तु आशावान नाम एक पुरुष ने उस से मिल भ्रात्रीय नियम बांध कर कहा ! हे भाई, मैं तुम्हारा साथी होऊंगा। यह पुरुष मायापुर में खीष्टियान और विश्वासी को दुर्दशा के समय में उनकी सत् कथा सुन और उन का सदाचार देख उन के प्रभु पर आशा रखने लगा। इस प्रकार से सत्य की साक्षी देने के लिये एक मनुष्य जो जलाया गया उसकी भस्म से खीष्टियान के साथ जाने के निमित्त दूसरा एक पुरुष उत्पन्न हुआ। आशावान ने खीष्टियान से कहा, इस मेले में से अनेक मनुष्य कुछ काल बीते हमारे पीछे आवेंगे।

आशावान के संग आगे बढ़ना।

इस भांति से खीष्टियान को दूसरा साथी मिल गया। जब वे दोनों जाते हुए मेले से बाहर निकले तब उन्हों ने प्रपञ्ची नाम एक मनुष्य का जो कुछ धीरे धीरे आगे चलता था जा लिया और उस से पूछा कि तुम किस देश से आये हो और कहां तक जाने की इच्छा रखते हो। उसने उत्तर दिया मैं मधुरवाक्य नाम देश से आया हूं और स्वर्गपुर को जाता हूं पर उसने अपना नाम न बताया। खीष्टियान ने पूछा, तुम मधुरवाक्य देश से आये हो भला वहां कोई धर्म्मिष्ठ लोग भी रहते हैं। प्रपञ्ची ने कहा, हां ! क्यों नहीं रहते हैं। खीष्टियान ने कहा, महाराज ! हम तुम्हें क्या कह कर पुकारें। प्रपञ्ची बोला, मेरा तुम से कभी परिचय नहीं हुआ तथापि जो हम तुम

प्रपञ्ची से भेंट।

साथ साथ चलें तो मुझे बड़ा आनन्द होगा कदाचित् साथ साथ न जायें तो मुझे अकेले जाने में सन्तोष करना होगा। खीष्टियान ने कहा, मधुरवाक्य नगर के विषय में मैं ने अनेक वार्त्ता सुनी हैं। लोग कहते हैं कि वहां बड़े धनी लोग वास करते हैं। प्रपञ्ची ने उत्तर दिया, हां! उस नगर में बड़े बड़े धनस्तर वास करते हैं और वहां मेरे कुटुम्ब के भी बहुत धनवान लोग रहते हैं। खीष्टियान ने कहा, महाराज! जो तुम बुरा न मानो तो मैं पूछता हूं कि वहां तुम्हारे कौन कुटुम्ब हैं। प्रपञ्ची ने कहा, किसे किसे बताऊं वहां के प्रायः समस्त लोग मेरे कुटुम्ब ही हैं विशेष कर के श्रीयुत राजा डुलना, राजा समयानुगामी, राजा मधुरवाचक जिस के पिता पितामह के नाम से नगर का नाम रक्खा गया फिर बाबू चिक्कन बाबू दुमुंहा और बाबू यथारुची और मेरा मामा द्विजिह्वा नाम हमारी बस्ती का उपदेशक ये सब मेरे धनवान कुटुम्ब हैं। मेरी वार्त्ता सत्य मानो तो मैं अब कुलीन और धनी पुरुष तो कहलाता हूं परन्तु मेरा दादा मल्लाह था जो एक दिशा को मुंह करे और दूसरी दिशा को खेवे। उसी प्रकार मैं ने भी अपना बहुत सा धन उपार्जन किया। खीष्टियान ने पूछा, तुम्हारे स्त्री पुत्रादि हैं। प्रपञ्ची बोला, हां! रानी कलिकल्पिणी की कन्या से मेरा विवाह भया है वह बड़े प्रतिष्ठित कुल की कन्या और अति धर्म्माचारिणी है। उस ने ऐसी पक्की शिक्षा पाई है कि राजा वा प्रजा धनी वा कंगाल सब प्रकार के लोगों से वह यथोचित व्यवहार करना जानती है। पर और और धर्म्मवान लोगों से धर्म्म के विषय में हमारा कुछ भिन्न स्वभाव है परन्तु यह भिन्नता केवल दो क्षुद्र विषयों में है। एक तो यह कि हम मानो वायु के सामने वा धारा के उजान कभी गमन नहीं करते हैं। दूसरा यह

प्रपञ्ची से खीष्टियान की बातचीत।

कि निर्मल दिवस में जब धर्म्म महाराज संसार की प्रशंसा सहित स्वर्ण पादुका पहिरे मार्ग में फिरता है अन्य समय से अधिक उस समय अनुराग प्रकाश करते हैं।

यह सुन खीष्टियान आशावान के निकट जाय कहने लगा हे भाई ! अनुमान करता हूं कि यह मनुष्य प्रपञ्ची नाम मधुरवाक्य नगर का निवासी है कदाचित वही हो तो इस के समान प्रपञ्चक इस सारे देश में कोई नहीं है। आशावान ने कहा, उस का नाम तो पूछो देखें उस को अपना नाम बताने में लज्जा होती है वा नहीं। यह सुन खीष्टियान ने उस के पास जाकर कहा, हे महाराज ! तुम अपनी कथा द्वारा अपने स्वदेशियों से अधिक बुद्धिमान देख पड़ते हो और तुम्हारा नाम मैं ने कुछ कुछ अनुमान किया है। क्या तुम्हारा नाम मधुरवाक्य का बाबू प्रपञ्ची तो नहीं है ? प्रपञ्ची ने कहा, मेरे विपक्षी लोगों में से कोई कोई यह नाम धरके मुझे पुकारते हैं पर मेरा ठीक नाम यह नहीं है जैसे और और सज्जन मनुष्यों ने अपने विपक्षी लोगों की निन्दा सही है तैसे मुझे भी नाम के विषय में सहनो उचित है। खीष्टियान ने पूछा, लोग जो तुमको इस नाम से पुकारते हैं तो तुम्हारा किसी व्यवहार के हेतु से पुकारते न होंगे। प्रपञ्ची ने कहा, नहीं नहीं ऐसा नहीं है। मेरे आचार व्यवहार में वे लोग केवल एक क्षुद्र कारण स्थापन कर सकते हैं उसे मैं तुम को बताता हूं कि जो जो लोकाचार जिस जिस समय में प्रचलित रहा है ऐसा मेरा भाग्य हुआ कि उसी समय मैं ने लोकाचार को भला जान के धारण किया है और धारण करने से धन भी प्राप्त किया है। इस बात से कोई मुझे दूषण दें तो दें पर जो धन यों मेरे हाथ आता है उसे मैं जानता हूं कि ईश्वर के आशीर्वाद से मिलता है और इस व्यवहार की निन्दा करना विपक्षी लोगों को उचित

नहीं है। स्त्रीष्टियान ने कहा, जिस की चर्चा मैं ने लोगों से सुनी है तुम वही मनुष्य तो हो और मैं स्पष्ट कहता हूं कि तुम जिस रीति का अन्याय बताते हो लोगों के तुम को प्रपञ्ची नाम से पुकारने में ऐसा अन्याय मुझे नहीं सूझ पड़ता है। प्रपञ्ची बोला, तुम्हारी जो यही मति है तो मैं क्या करूं। पर जो तुम मुझे इस काल अपना संगी बनाओ तो उत्तम संगी तुम को मिलेगा। स्त्रीष्टियान ने कहा, हमारे संगी होने से तुम्हें वायु के सामने और धारा के उजान में जाना पड़ेगा और जैसे स्वर्ण पादुका पहिरने के समय तैसे चिथड़े पहिरने के समय भी धर्म्म को स्वीकार करना पड़ेगा और जैसे तुम लोगों से प्रशंसित होने के समय धर्म्म का पक्ष करते हो तैसे जब उसे शृङ्खल से बन्धे हुए देखोगे तब भी उस का पक्ष करना पड़ेगा। पर मुझे जान पड़ता है कि यह बातें तुम्हारे मत के विरुद्ध हैं। प्रपञ्ची ने कहा, मेरे विश्वास पर तुम को प्रभुता करने का कुछ काम नहीं मुझे अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने दो पर संग संग चलने दो। स्त्रीष्टियान ने कहा, नहीं जैसा व्यवहार मैं ने तुम से कहा है वैसा व्यवहार करने का जो तुम अङ्गीकार न करो तो एक डग भी हमारे साथ नहीं चल सकते हो। प्रपञ्ची ने कहा, मैं अपना पुरातन मत कभी न छोड़ूंगा क्योंकि वह निर्दोष और लाभजनक है। जो तुम अपने साथ मुझे न लोगे तो मैं जैसा तुम से भेंट करने के पहिले चलता था वैसा फिर चलूंगा अर्थात् जब तक मेरी संगत से प्रसन्न होनेवाला कोई मनुष्य नहीं मिलेगा तब तक अकेला ही गमन करूंगा।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि स्त्रीष्टियान और आशावान उस को पीछे छोड़कर आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाकर उन में से एक ने पीछे फिरकर जो देखा तो क्या देखता है कि सपद्दारी द्रव्यप्रिय

और सर्वसंचयी नाम तीन मनुष्य प्रपञ्ची के पीछे पीछे चले आते हैं। जब वे उस के निकट आये तब प्रपञ्ची से और उन तीनों से परस्पर नमस्कार प्रणाम हुआ क्योंकि बाल्यावस्था में चारों मनुष्यों ने एक ही पाठशाला में विद्या पढ़ी थी अर्थात उत्तर खण्ड में लोभ नाम प्रदेश के लाभेच्छा नाम नगर में निचोड़ी गुरु से इन चारों ने शिक्षा पाई थी। उस गुरु ने इन्हें धन उपार्जन के निमित्त छल बल लल्लोपत्तो झूठ धर्म्मवेष धारण आदि नाना प्रकार की युक्ति सिखाई और ये चारों अपने गुरु की विद्या में ऐसे निपुण हुये कि हर एक आप ही गुरुआई कर सकता था। जब पूर्वोक्त रीति से नमस्कारादि हो चुका तब द्रव्य प्रिय ने खीष्टियान और आशावान को आगे चलते देख प्रपञ्ची से पूछा, भाई, वे दोनों कौन जाते हैं। प्रपञ्ची ने उत्तर दिया, वे दूरदेशी यात्री हैं वे अपनी इच्छानुसार यात्रा करते जाते हैं। द्रव्य प्रिय ने कहा, आहा ! वे क्यों नहीं तनिक ठहरते। हमारी उन की अच्छी सङ्गति होती क्योंकि हमारा तुम्हारा उन का सब मन यात्रा में ही लगा है। प्रपञ्ची ने कहा, हां ! सो तो है पर वे तो बड़े झगरे हैं। वे अपने अपने विचार में ऐसे आसक्त हैं कि और की बात को तुच्छ समझते हैं और कोई परम धार्म्मिक भी हो पर समस्त विषय में उन के मत को शीघ्र ग्रहण न करे तो वे उसको अपने साथ नहीं लेते हैं। तब सर्व सञ्चयी बोला, यह बात बहुत बुरी है परन्तु ग्रन्थ में भी कितने मनुष्यों का ऐसा वर्णन है कि वे ईश्वरीय व्यवस्था से भी अधिक धर्म्मी हुआ चाहते हैं। ऐसे लोग अपने कठिन स्वभाव से अपने को निर्दोष और दूसरों को दोषी कहते हैं। भला किस किस विषय में तुम्हारे उन के मत में भिन्नता पड़ी। प्रपञ्ची ने उत्तर दिया, उन का एक तो यह

प्रपञ्ची से तीन मित्रों का मिलना।

मत है कि फरचा हो कि आन्धी हो सब दिन यात्रा करना चाहिये पर मेरा मत है कि वायु आदि जब अनुकूल होय तब यात्रा करना उचित है। वे तो प्राणादि सर्वस्व को एक ही झोंक में ईश्वर को समर्पण करना उचित कहते हैं पर मैं अपने प्राण और धन की रक्षा के निमित्त उपाय करना अच्छा जानता हूं। वे तो जो सारे जगत् के लोग प्रतिवादी हों तौ भी अपना मत छोड़ना नहीं चाहते परन्तु मैं हानि, लाभ, यश, अपयश फलादि देख भाल के धर्म्म का पीछा करना वा छोड़ना उचित कहता हूं। धर्म्म जब चिथड़े पहिर कर तुच्छ की भांति फिरता है उस समय में भी वे उस के अनुगामी होते हैं परन्तु मैं जब धर्म्म स्वर्णपादुका पहिरे जगत में प्रशंसित होता है तब उस का पक्ष करता हूं। सपच्छारी बोला, प्रपञ्ची भाई! तुम बड़े बुद्धिमान हो तुम यही मत धरे रहना क्योंकि जो धन की रक्षा करने का उपाय छोड़ सर्वस्व खो दे उस को मैं मूर्ख जानता हूं। हम को सर्प्प की भांति बुद्धिमान होना उचित है। धूप के समय सिर पर कपड़ा डालना अच्छा है। देखो मधुमाखी जाड़े के समय कोई काम नहीं करती किन्तु सुदिन में जब सुख से मधु सञ्चय कर सके तब कार्य्य करती है। ईश्वर ऐसा नहीं करता है कि सर्वदा वर्षा रहे किन्तु धूप काल भी होता है इस कारण ये चाहें उन्मत्त की भांति वर्षा में भी यात्रा करें तो करें पर हम को सुसमय ही में यात्रा करना उचित है। अन्य लोग अन्य धर्म्म का भला समझें पर मैं तो जिस धर्म्म के मानने से ईश्वर के दिये हुये पदार्थ खोये न जायें उसी को उत्तम जानता हूं। ईश्वर ने जो हम को इस लोक में द्रव्य दिया हो तो उसे ईश्वर का दिया हुआ समझ के उस की रक्षा करना उचित है यह बात क्या प्रमाणिक नहीं है। देखो इब्रा-

उपदेश ।

हीम और सुलेमान धर्म्म के द्वारा धनवान हुए। फिर ऐयूब ने कहा है कि सज्जन धूल की भांति सुवर्ण सञ्चय करेगा परन्तु जैसा तुम ने अग्रगामियों का वर्णन किया उन के ऐसे लोग धन सञ्चय नहीं कर सकेंगे। सर्वसञ्चयी बोला, भाई, हमारी सब की इस विषय में एक मति है इस लिये अब इस विषय की अधिक वार्ता का कुछ प्रयोजन नहीं है। द्रव्यप्रिय ने कहा, सच भाई कुछ प्रयोजन नहीं है क्योंकि स्पष्ट है कि नीतिशास्त्र और धर्म्मग्रन्थ दोनों हमारे पक्ष में प्रमाण देते हैं और धर्म्मग्रन्थ और नीतिशास्त्र में जिस का विश्वास नहीं है वह अपनी अधिकारता नहीं समझता है और अपने मङ्गल की चेष्टा कब करेगा।

इतनी कथा जब समाप्त हुई तब प्रपञ्ची बोला, हे भाइयो! देखो हम सब कोई एकत्र होकर यात्रा करते हैं सो कुचिन्ता मन में न समावे परन्तु अच्छे प्रसङ्ग में समय व्यतीत हो इस निमित्त मैं एक प्रश्न करता हूं तुम इस का उत्तर दो सो यही है कि कोई धर्म्मोपदेशक वा साहूकार यदि सांसारिक सम्पत्ति प्राप्त करने का अवसर देखे परन्तु उस के साथ यह भी देखे कि धर्म्म के जिस विषय में मेरा अब तक कुछ अनुराग न था उस विषय में चाहे सत्यता से चाहे केवल दिखाने क निमित्त बड़ा अनुराग प्रगट करने बिना वह सम्पत्ति हाथ न आवेगी तो क्या उस सम्पत्ति के पाने के कारण वैसा अनुराग दिखाने से उस की साधुता में दोष लगेगा।

प्रपञ्ची का प्रश्न।

द्रव्यप्रिय ने उत्तर दिया, मैंने तुम्हारे प्रश्न का अभिप्राय समझा और इन महाशयों की अनुमति हो तो उत्तर देऊं। प्रथम धर्म्मोपदेशक के कर्त्तव्य अकर्त्तव्य कर्म्म के विषय में मैं कहता हूं। जब किसी धर्म्मोपदेशक ने जो साधु पुरुष है अल्प वेतन का

काम इस रीति का देखता हो कि शिक्षा और उपदेश में विशेष परिश्रम करने से और वहां के श्रोता लोगों की प्रसन्नता के निमित्त अपने मत की किसी किसी बात को छोड़ देने से वह काम मुझे मिल सकता है तब जो वह उस लाभजनक काम के पाने के निमित्त यह सब कर्म्म करे वरन् इस से अधिक भी करे तो मैं उस की साधुता और सचाई में कुछ दोष नहीं देखता हूं । इसका प्रमाण सुनो । प्रथम तो अधिक वेतन का कर्म्म पाने की जो चेष्टा यह करता है सो अनुचित नहीं है । इस को कोई अनुचित नहीं कह सकता है क्योंकि ईश्वर की कृपा से उस कर्म्म के पाने का द्वार उस के आगे खुल गया इस कारण मन में किसी प्रकार की बाधा न मान के उस कर्म्म के पाने की चेष्टा करना उचित है । द्वितीय । उस कर्म्म पाने के निमित्त कदाचित् उसे शिक्षा वा उपदेश में अधिक यत्न करना पड़े तो इस के द्वारा उस की भक्ति और विद्या की निपुणता अधिक होगी । यह फल भी ईश्वर की इच्छा के अनुसार है । तृतीय—वह पुरुष अपने श्रोताओं की प्रसन्नता के निमित्त कदाचित् अपने ग्राह मत की किसी किसी बात को छोड़ दे तो इस से उस का सद्गुण प्रकाश होगा । पहिला कारण यह है कि वह परहित के निमित्त अपनी इच्छा त्याग करता है । दूसरा कारण यह कि वह प्रीतियुक्त और मनोहर सुशील स्वभाव प्रकाश करता है । तीसरा कारण यह कि इन बातों से वह उपदेशक पद के योग्य स्पष्ट देख पड़ता है । इन प्रमाणों से यही स्थिर करता हूं कि कोई उपदेशक कदाचित् छोटा पद छोड़ कर उच्च पद की अभिलाषा करे तो उसे लोभी कह कर दूषण देना अनुचित है वरन् जब कि इस के द्वारा उस की निपुणता और परिश्रम की वृद्धि होती है तो उसे निज कर्म्म में

द्रव्यप्रिय का उत्तर ।

उद्योगी और परहित का अभिलाषी जान उस का आदर करना उचित है।

अब तुम्हारे प्रश्न का जो द्वितीय भाग साहूकार के विषय में है उस का उत्तर देता हूं वह भी सुनो। कोई क्षुद्र व्यापारी यदि धर्म्मानुराग प्रकाश करने से ग्राहक लोगों को प्रसन्न कर अधिक लाभ पा सके वा किसी धनवती स्त्री से विवाह कर सके तो मैं इन कर्म्मों में कोई दोष नहीं देखता हूं। प्रथम प्रमाण—किसी प्रकार से हो पर मनुष्य के हृदय में धर्म्म के अनुराग का बढ़ जाना उत्तम है। द्वितीय—धनवती स्त्री से विवाह करना वा अपनी दुकान पर उत्तम ग्राहकों को बुलाना वर्जित नहीं है। तृतीय—जो पुरुष धर्म्मानुराग करने से पूर्वोक्त समस्त विषय प्राप्त करे वह अपनी उत्तमता द्वारा उत्तम पुरुषों से उत्तम विषय प्राप्त करता है। सो यहां उत्तम फल अर्थात् उत्तम स्त्री और उत्तम ग्राहक और उत्तम लाभ पाने के निमित्त धर्म्मानुराग एक उत्तम युक्ति देख पड़ती है इस से यह स्थिर हुआ कि इन विषयों के पाने के लिये धर्म्मानुराग प्रकाश करना उत्तम और लाभजनक है।

द्रव्यप्रिय का उत्तर।

प्रपञ्ची के प्रश्न का यह उत्तर द्रव्यप्रिय से सुनकर सब प्रसन्न हुये और उस को उत्तम और हितकारक वचन समझ प्रशंसा करने लगे और उस को अखण्डनीय जान आपस में यह सम्मति करने लगे कि देखो अग्रगामी जो खीष्टियान और आशावान हैं सो अब भी हमारी पुकार सुन सकते हैं। ये पहिले बाबू प्रपञ्ची के प्रतिवादी हो चुके हैं सो चलो हम लोग शीघ्र उन के पास जाकर इसी प्रश्न के विषय में उन से विवाद करें। बात ठान उन दोनों को पुकारने लगे तब वे इन के निमित्त खड़े

रहे । इन्हों ने चलते चलते यह परामर्श आपस में किया कि प्रपञ्ची नहीं परन्तु सम्पद्धारी उन से यह प्रश्न करें क्योंकि प्रपञ्ची से तो पहिले विवाद हो चुका है उस को कदाचित वे क्रोधयुक्त उत्तर दें पर सम्पद्धारी को भला उत्तर देंगे । जब वे उन के निकट पहुंचे और आपस में नमस्कारादि व्यवहार हो चुका तब सम्पद्धारी ने खीष्टियान और आशावान से कहा कि प्रश्न का उत्तर दे सकते हो तो दो । खीष्टियान ने उत्तर दिया, धर्म्म के विषय में जो केवल बालक सदृश हो सो भी ऐसे ऐसे दस सहस्र प्रश्नों का उत्तर दे सकता है क्योंकि यदि योहन के छठे अध्याय के प्रमाण से रोटी पाने की आशा से खीष्ट का पश्चाद्गामी होना अनुचित ठहरता है तो खीष्ट वा उस के धर्म्म का सांसारिक लाभ और सुख पाने का उपाय मात्र ठह-राना अधिक घृणा योग्य कर्म्म है । देवपूजक वा कपटी वा शैतान वा टोन्हा को छोड़ हम और किसी को ऐसा कर्म्म करते नहीं देखते हैं । पहिले—मैं देवपूजकों का उदाहरण देता हूं कि हमोर और शिखिम ने जब याकूब की कन्या और उस के गौ मेषादि द्रव्य लेने की इच्छा की और विचारा कि खतना करवाने बिना हम इन्हें नहीं पा सकते हैं तब अपने साथियों से कहा कि जैसे ये लोग खतना किये हुये हैं तैसे हम सब जो खतना करवावें

खीष्टियान का उत्तर ।

तो क्या उन की इच्छा गौ मेषादि सब सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी । अब देखो उन की इच्छा गौ मेषादि पशु और कन्या प्राप्त करने की थी उनके पाने के निमित्त वे धर्म्म वेषरूपी वाहन पर चढ़े । यह वार्त्ता उत्पत्ति के पुस्तक चौंतीसवें अध्याय में है तुम बांचकर देख लो । दूसरे—कपटियों का उदाहरण । फरीशी लोग जो कपटी थे इसी मत को मानते थे क्योंकि दीर्घ प्रार्थना

का तो उपाय करते थे परन्तु उन का अभिप्राय रांडों का गृहादि ले लेने का था इस कारण ईश्वर की ओर से उन का अधिक दण्ड हुआ । (लूक २० : ४६, ४७) तीसरे—शैतान का उदाहरण । यहूदा जो शैतान रूपी था इसी मत का था । उस ने थैली की रोकड़ के निमित्त धर्म्मानुराग प्रकाश किया परन्तु अन्त में वह परित्राण से पतित होकर विनाशपात्र हुआ । चौथे—शिमोन नाम टोन्हा भी इसी मत का था क्योंकि उसने धन प्राप्त निमित्त पवित्र आत्मा को मोल लेने चाहा इस कारण पितर ने उस के कर्म्मानुसार उस को दण्ड का समाचार कहा । (प्रेरित ८ : १८-२३) पांचवें—इस बात का चेत करना चाहिये कि जो मनुष्य सांसारिक लाभ के निमित्त धर्म्म ग्रहण करे वह फिर सांसारिक लाभ के निमित्त धर्म्म को त्याग भी करेगा । इस का प्रमाण यह देखो कि यहूदा ने जैसे सांसारिक लाभ के निमित्त धर्म्म ग्रहण किया तैसे सांसारिक लाभ के निमित्त उसी धर्म्म को और अपने स्वामी को बेच डाला । इस कारण यह बात ठहरी है कि तुम ने जो इस प्रश्न का और प्रकार का उत्तर सुनकर सम्मति दी है तो तुम ने देवपूजक और कपटी और शैतानरूपी मनुष्य के समान कर्म्म किया है और उस कर्म्म के अनुसार तुम को प्रतिफल भी मिलेगा ।

खीष्टियान का उत्तर सुन वे चारों निरुत्तर भये और परस्पर एक दूसरे का मुंह देखने लगे । विशेष कर जब आशावान खीष्टियान के यथार्थ उत्तर को प्रशंसा करने लगा तब प्रपञ्ची और उस के साथी ऐसे लज्जित हुए कि इन दोनों का संग छोड़ने की इच्छा कर पीछे रह गये । तब खीष्टियान अपने साथी से कहने लगा, हे भाई ! जो ये लोग मनुष्य के विचार के आगे नहीं ठहर सके तो कहो ईश्वर के विचार के आगे कैसे ठह-

रेंगे और मिट्टी के पात्र के सन्मुख जो वे ऐसे निरुत्तर भये तो कहो भस्म करनेहारी अग्नि के सन्मुख क्या करेंगे ।

फिर खीष्टियान और आशावान उन को पीछे छोड़ आगे बढ़े थोड़ी देर पीछे सुख नाम एक मनोहर मैदान में पहुंचे जहां बड़ी सुगमता से चले जाते थे परन्तु वह बड़ा नहीं था इसलिये शीघ्र हो उसको पार कर गये । इस मैदान के निकट सम्पत्ति नाम एक छोटी सी पहाड़ी थी इस पहाड़ी में चांदी की खान थो । पूर्वकाल में कई यात्री इस खानि का आश्चर्य्य देखने के लिये सीधा पथ छोड़ वहां गये परन्तु उस खान के मुख के अत्यन्त निकट जाने से भूमि जो ढीली थी धंस गई और कितने मारे पड़े और कितने गिर के ऐसे अपाङ्ग भये कि वे मरण लों फिर चंगे न हुए । फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि मार्ग से थोड़ी दूर पर उस खान के निकट दीमास नाम एक मनुष्य सज्जन का भेष किये हुए उस खान के दिखाने के लिये यात्रियों को पुकारता था । उस ने खीष्टियान और उस के साथी को जाते देख पुकार कर कहा, हे पथिको ! तुम पथ को तनिक छोड़ यहां आओ मैं तुम को कुछ द्रव्य दिखाऊंगा । खीष्टियान ने उत्तर दिया, हम लोगों को पथ से फेरने योग्य वहां कौन ऐसा द्रव्य है । दीमास ने कहा, यहां चांदी की खान है और कितने मनुष्य धन संग्रह के निमित्त उसे खोद रहे हैं । जो तुम यहां आओ तो सहज ही धनवान हो जाओगे । यह सुन आशावान बोला, तो चलो भाई ! हम भी देख आवें । खीष्टियान ने कहा, मैं कभी वहां न जाऊंगा क्योंकि उस स्थान का वृत्तान्त मैं पहिले सुन चुका हूं । वहां बहुत मनुष्य मारे पड़े और जो पथिक वहां के धन की इच्छा करते हैं उन के

सम्पत्ति पहाड़ी ।

दीमास से वादानुवाद ।

उस धन से यात्रा में विघ्न होता है। तब खीष्टियान ने दीमास को पुकार के कहा, क्यों भाई! वह क्या खटके का स्थान नहीं है। क्या वहां जाने से बहुत लोगों की यात्रा में बाधा नहीं हुई। (होशिया ४ : १६-१८) दीमास ने उत्तर दिया, जो सावधान नहीं रहता है उसी को यहां खटका है तिस पर भी दीमास को ऐसा उत्तर देते हुए कुछ कुछ लाज आई। तब खीष्टियान ने आशावान से कहा, सुनो भाई! हम लोग अपना मार्ग छोड़कर डग भर भी इधर उधर न जावें। आशावान ने कहा, हे भाई! मैं निश्चय कर कह सकता हूं कि जब प्रपञ्ची आदि इस स्थान पर आवेंगे जो यह मनुष्य जैसा इस ने हम को पुकारा तैसा उन को भी पुकारेगा तो वे अवश्य पथ छोड़कर वहां जायंगे। खीष्टियान ने कहा, इस में कुछ सन्देह नहीं क्योंकि उस स्थान पर जाना उन के मत के विरुद्ध नहीं है किन्तु वहां जाने से जो वे मारे न पड़े तो बड़ा आश्चर्य्य होगा। इतने में दीमास ने इन दोनों को फिर पुकार कर कहा, क्या तुम खान देखने को नहीं आओगे? तब खीष्टियान ने स्पष्ट उत्तर दिया, अरे दीमास! तू इस पथ के कर्त्ता का शत्रु है तू आप ही पथ के बाहर जाने से महाराजा के एक विचारकर्त्ता से दण्ड योग्य ठहराया गया है फिर तू हम को भी भरमा के दण्ड योग्य करने की चेष्टा क्यों करता है। (२ तिमोथिय ४ : १०) हम जो पथ त्याग करें तो हमारा प्रभु इसे अवश्य जान लेगा और जब हम उस के सन्मुख निर्भय खड़े होने की आशा करेंगे तब हमें लज्जित करेगा। दीमास ने पुकार कर कहा, मैं भी तुम्हारा भाई हूं जो तुम कुछ बिलम्ब करो तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। खीष्टियान ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है जिस नाम से मैं ने तुम को पुकारा वही नाम है वा नहीं। उस ने उत्तर दिया! हां मेरा नाम दीमास है और मैं इब्राहीम के वंश

का हूं ।। खोष्टियान ने कहा, हां ! मैं तुम्हें जानता हूं तुम यहूदा के पुत्र और गिहाजी के प्रपौत्र हो। अपने पुरखों के मत के अवलम्बी तुम भी हो। यह तुम्हारा भाव शैतानी है। तुम्हारे पिता को राज्यद्रोह के दोष से फांसी पड़ी और तुम भी इसी गति के योग्य हो। २ राजावली ५ : २०-२७। मत्ती २६ : १४, १५ और २७ : ३-५) हम जब महाराजा के यहां पहुंचेंगे तब तुम्हारे इस कार्य्य का वर्णन उस को सुनावेंगे यह निश्चय जान रक्खो। ऐसा कह ये दोनों आगे बढ़े।

इतने में प्रपञ्ची और उस के संगी भी वहां आ पहुंचे और दीमास ने उन को पुकारा वे सुनते ही उस के पास गये फिर क्या जाने वे उस खान को देखते देखते उस में गिर पड़े अथवा उस में उतर कर खोदने लगे अथवा उस में की भाफ से उन का श्वास रुक गया उन की क्या दशा हुई मैं निश्चय नहीं जानता हूं परन्तु इतना जानता हूं कि उस दिवस से वे फिर कभी उस पर दृष्टि न आये। उस समय खोष्टियान यह गान करता हुआ चला।

दोहा।

बंच्यो दीमास यात्रिनहि, रूपा खान दिखाय।
परपञ्ची बञ्चित भयो, धन संगोरन धाय॥
एक बुलावत दूसरो, करु धन सञ्चय आय।
धन पायो मृतलोक के, सम्पत्ति अमर बिहाय॥

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि खोष्टियान और आशावान उस मैदान की सीमा पर जो पहुंचे तो वहां पथ के निकट उन्हें एक प्राचीन स्तम्भ दिखाई दिया। उस के देखने से उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ क्योंकि उस स्तम्भ का स्वरूप स्त्री का सा था

इससे जान पड़ा कि वह स्त्री से स्तम्भ रूप हो गया है। इस हेतु ये दोनों वहां खड़े हो कुछ बेर तक देखते रहे और नाना प्रकार का अनुमान किया पर उसका कुछ भेद न पाया। निदान आशावान ने उस के मस्तक पर अन्य भाषा के अक्षरों में कुछ लिखा हुआ देखा पर वह इतना पढ़ा हुआ नहीं था कि लिखित को बांच कर उसका आशय जाने इस लिये खोष्टियान को विद्या अधिक थी उस ने लिखित को ध्यान से देख अक्षरों को मिला कर बांचा तो लिखित का यह आशय पाया कि लूत की स्त्री को स्मरण करो। यह बांच कर उस ने अपने साथी को सुनाया तब उन दोनों ने यह निश्चय किया कि लूत की स्त्री ने जिस समय प्राणरक्षा के निमित्त सदोम नगर से भागी थी उस समय लोभ दृष्टि से पीछे फिर के देखा और देखते ही लवण स्तम्भ हो गई वह स्तम्भ यही है। तब दोनों अकस्मात् ऐसा आश्चर्य्य देख कर आपस में कथा वार्त्ता करने लगे: पहिले खोष्टियान बोला, हे भाई सम्पत्ति नाम पहाड़ी के देखने के लिये दीमास ने हमें पुकारा तिस के पीछे जो हमें इस स्तम्भ का दर्शन भया इसे मैं बड़ा शुभ दर्शन जानता हूं क्योंकि जैसे उस ने पुकारा और जैसे तुम्हारी इच्छा वहां जाने की हुई तैसे जो हम वहां जाते क्या जाने हमारे पीछे आने वाले मनुष्य हम को भी स्तम्भ रूप बने हुए देखते। आशावान ने कहा, मैं ने बिना समझे ऐसी इच्छा की थी इससे मेरे चित्तमें बड़ा खेद हुआ है। अब जो मैं लूत की स्त्री के समान नहीं भया हूं यह आश्चर्य्य है क्योंकि उसके और मेरे अपराध में कुछ बीच नहीं। उस ने तो फिर कर देखा और मैं ने वहां जाकर देखने की इच्छा की इस में मुझ पर बड़ा अनुग्रह हुआ है परमेश्वर की स्तुति की

लूत की स्त्री।

आशावान का पश्चात्ताप।

जाय और मुझे बड़ी लज्जा होती है कि मैंने जाने की इच्छा की। ख्रीष्टियान ने कहा, जो हुआ सो हुआ पर इस समय जिस को हम देखते हैं उस को विचारें क्योंकि यह बात आगे को भी हमारे काम आवेगी। इस स्त्री ने एक दण्ड से तो रक्षा पाई पर दूसरे दण्ड से नष्ट भई अर्थात् सदोम के विनाश से तो बच गई परन्तु पीछे लवण स्तम्भ बन गई। आशावान ने कहा, सत्य है यह स्तम्भ हमें चिताने और शिक्षा देने का फलदाई है। वह यही चिताता है कि इस स्त्री के पाप से परे रहो और यह शिक्षा देता कि जो तुम न चेतो तो तुम्हारी भी ऐसी ही दशा होगी। फिर कोरह दाथन अविराम और उन के अढ़ाई सौ साथी जो अपने पाप से नष्ट भये औरों की चेतना के निमित्त चिन्ह और दृष्टान्त बने। (गिन्ती १६ : ३१, ३२ और २६ : ९, १०) परन्तु एक विषय से मुझे बड़ा आश्चर्य्य होता है कि जिस धन के लोभ से लूत की स्त्री अपने पथ से डग भर बाहर न गई तौ भी केवल पीछे फिरकर देखने से लवण स्तम्भ हो गई उसी धन को दीमास और उस के सङ्गी लोग ऐसे निर्भय हो कर ढूंढ़ रहे हैं। देखो उस स्त्री को जो दण्ड हुआ उस दण्ड का चिन्ह उन के निकट ही है जिस स्थान में वे धन खोज रहे हैं उस स्थान से जो वे आंख उठा के देखें तो उन्हें साक्षात् दृष्टि आवे तौ भी उन्हें कुछ चेत नहीं होता वे ज्यों के त्यों हैं यह बड़ा आश्चर्य्य है। ख्रीष्टियान ने कहा, हां! यह आश्चर्य्य तो है परन्तु मुझे बोध होता है कि अन्तःकरण अत्यन्त कठोर हो गया है। जो चोट्टे विचारकर्त्ता के सन्मुख ही चोरी कर सकते और फांसी के काष्ठ के नीचे भी मनुष्यों की गांठ काटें ऐसे मनुष्यों के साथ इन की उपमा देनी उचित है। और सदोम नगर निवासियों का वर्णन इस भांति

लूत की स्त्री का दृष्टान्त।

लिखा है कि वे बड़े दुष्ट और ईश्वर की दृष्टि में बड़े पापिष्ट थे क्योंकि पहिले ईश्वर की उन पर बड़ी कृपा थी उस की कृपा से सदोम देश अदन की वाटिका की नाईं बड़ा उपजाऊ था। (उत्पत्ति १३ : १०-१३) इसी कारण जब वे दुष्ट हो गये तब ईश्वर का अधिक क्रोध हुआ और आकाश से जो अग्नि बरसी तिस के द्वारा उन्हें ऐसा असह्य दण्ड हुआ। इस से हम को यही अनुमान करना उचित है कि कुपथ से निवारण करने के लिये जो प्रत्यक्ष दृष्टान्त दिये गये तिन के साक्षात् जो लोग ढीठ होकर इस दोमास की नाईं पाप करेंगे उन्हें सब से कठिन दण्ड दिया जायगा। आशावान बोला, सत्य कहते हो पर हम और तुम ऐसे दृष्टान्त नहीं बन गये यह ईश्वर का बड़ा अनुग्रह है। इस निमित्त ईश्वर की स्तुति करना और भययुक्त आचरण करना और लूत की स्त्री का नित्य स्मरण रखना उचित है।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि ये दोनों वहां से चलते चलते एक मनोहर नदी के तीर पर पहुंचे। पूर्वकाल में इस नदी का नाम दाऊद राजा ने ईश्वरीय नदी रक्खा था और योहन ने उस को अमृतजल की नदी कहकर बखान किया।

मनोहर नदी। (भजन ६५ : ६। प्रकाश २२ : १। हिजकेल ४७ : १—१२) इस नदी के तीर तीर बराबर मार्ग चला गया इस कारण ख्रीष्टियान और आशावान बड़ी प्रसन्नता पूर्वक चले जाते थे और नदी का जल जब तब पीने से देह स्वस्थ और चित्त प्रफुल्लित होता था। उस नदी के

वार पार नाना प्रकार के फलदाई हरे हरे वृक्ष थे उन के पत्ते भी रोगनाशक थे। ये दोनों आनन्द से उन फलों को तोड़ तोड़ खाते जाते थे और पथ चलने के श्रम से जो कुछ रक्त विकार हो गया था उस के निवारण निमित्त उन वृक्षों के पत्ते भोजन करते थे। नदी की दोनों ओर स्वच्छ हरियाली थी और सुन्दर मनोहर पुष्प खिले हुए थे। वह मैदान बारहों मास हरा रहता था उस में ये दोनों सो गये क्योंकि वहां कुछ खटका न था। (भजन २३ : २। यशायाह १४ : ३०) निद्रा टूटने से इन्हों ने उठ फिर फल तोड़कर भोजन किया और इस रीति से कई दिन तक विश्राम के निमित्त ठहरे। तब ये यह गान करने लगे।

दोहा ।

सुभग नदी यह देखिये . बहती निर्मल नीर ।
यात्री जाने पीविके पावहिं पोष शरीर ॥
तरुवर तृण यह क्षेत्र में . पत्र लता फल फूल ।
नासा रसना नैन के . बिबिध सुखद के मूल ॥
निरखे स्वादे जोई जन . अवशि सुमोहित होइ ।
सरबस आपन बेचिके . क्षेत्रहि कोने सोइ ।

फिर और एक दिवस भोजन कर चलने को उपस्थित हुए क्योंकि अभी उन की यात्रा समाप्त न हुई थी।

पीछे मैं ने स्वप्न में देखा कि जब वे थोड़ी दूर चले तो वह नदी उनके पथ से पृथक् होकर दूसरी ओर घूम गई इस हेतु वे बहुत उदास हुए परन्तु पथ त्याग न सके। वह नदी जहां मार्ग से फिरी तहां की भूमि बहुत खड़बिड़ थी और दूर की यात्रा से उन के पांवों में छाले पड़ गये थे इस कारण पथ के

श्रम से यात्रियों का साहस घटने लगा। (गिन्ती २१ : ४) इस हेतु ये चाहते थे कि सम भूमि मिल जाय तो भला हो। इतने में थोड़ी दूर मार्ग की बाईं ओर बिपथ नाम एक मैदान देखकर ख्रीष्टियान ने अपने संगी से कहा, यह मैदान जो हमारे पथ के पास पास होकर जाता होय तो उस में होकर चलें। उस मैदान में प्रवेश करने के निमित्त एक छोटा सा फाटक बना था उस पर से ख्रीष्टियान ने देखा कि मेंड़ की दूसरी ओर हमारे पथ के बराबर एक पगडण्डी जाती है। यह देख आह्लादित हो कहने लगा कि भाई हमारा मनोरथ सिद्ध भया। उस पगडण्डी में चलना अति सुगम है। आओ भाई आशावान हम भीतर जाकर पगडण्डी होकर चलें। आशावान ने कहा, कदाचित् उस मार्ग में जाने से हमारा यह मार्ग छूट जाय तो क्या करोगे? ख्रीष्टियान ने कहा, नहीं, ऐसा न होगा तुम क्या नहीं देखते हो कि यह बराबर हमारे मार्ग से मिला हुआ चला गया है। तब आशावान भी उस का परामर्श स्वीकार करके उस के संग फाटक के भीतर गया और दोनों सुगमता से उस मार्ग में चलने लगे।

बिपथ मैदान।

फिर व्यर्थ साहस नाम एक जन को आगे जाते देख उन्हों ने उसे पुकारकर पूछा, हे महाशय! यह मार्ग कहां को जाता है। उस ने उत्तर दिया, यह स्वर्गपुर के द्वार को जाता है। तब ख्रीष्टियान ने कहा, देखो मैं ने तो पहिले ही कहा था। अब निश्चय भया कि हम ने अपने मार्ग को नहीं छोड़ा। उस अग्रगामी के पीछे जाते जाते थोड़ी देर में संध्याकाल हुआ फिर सूर्य्य अस्त होने से घोर अन्धकार हो गया इस अन्धकार में वह अग्रगामी मनुष्य उन से छिप गया। फिर उस अग्रगामी को भी

व्यर्थसाहस गड़हे में गिरता है।

अन्धकार के कारण पथ न सूझने से वह एक गंभीर गड़हे में गिर पड़ा। व्यर्थसाहस सरीखे मूर्खों के पकड़ने के निमित्त ही इस भूमि के स्वामी ने वह गड़हा खुदवाया था। (यशायाह ६ : १६) उस में गिरने से व्यर्थ साहस बहुत चूर भया। ख्रीष्टियान और आशावान ने उसके गिरने का शब्द सुनकर उससे पूछा, हे भाई! क्या हुआ क्या तू गिर पड़ा है। पर कुछ उत्तर न मिला केवल उस के कहरने का शब्द सुना। तब आशावान ने ख्रीष्टियान से कहा, अरे भाई! अब हम कहां हैं। उस समय ख्रीष्टियान उत्तर न देकर मन में सोचने लगा कि हाय हाय मैं अपने संगी को भी विपथ में ले आया हूं। इस समय अकस्मात् आंधी चलने, मेघ गर्जने, बिजली कड़कने और मेह ऐसा बरसने लगा कि पानी की बाढ़ आ गई। तब आशावान ने घबराकर कहा हाय! हाय!! मैं अपने मार्ग में क्यों न रहा। ख्रीष्टियान ने कहा, भाई! कौन जानता था कि इस पथ के चलने में हमारा मार्ग छूट जायगा। आशावान ने उत्तर दिया, मुझे तो पहिले ही इस का खटका था इस लिये मैं ने तुम से प्रश्न किया। मेरे चित्त में निषेध करने की इच्छा थी पर तुम को बड़ा जान संकोच कर चुप हो रहा। ख्रीष्टियान ने कहा, हे प्रियतम भाई! मैं ने बिना समझे बूझे तुम को इस मार्ग में लाकर ऐसी आपदा में डाला इसलिये मुझे बड़ा खेद होता है। मैं हाथ जोड़ अपने इस अपराध की क्षमा चाहता हूं क्योंकि मैं ने इसको तुम्हारी हानि की चेष्टा से नहीं किया। आशावान ने कहा, हे भाई! शान्त हो मैं ने तुम्हारा अपराध क्षमा किया तुम धीरज धरो मुझे निश्चय है कि इस आपदा से भी अन्त में हमारा कुछ लाभ ही होगा। ख्रीष्टियान ने कहा, मैं अति प्रसन्न हूं कि ऐसे क्षमाशील भ्राता का संग भया। पर अब इस स्थान में ठहरना अनुचित है चलो फिर जाने का यत्न करें।

आशावान ने कहा, हे प्रिय भाई ! मुझे आगे आगे चलने दो। खीष्टियान ने उत्तर दिया, नहीं, मैं ही आगे चलूंगा क्योंकि मेरे ही दोष से हम दोनों अपने पथ से बाहर हुए। कदाचित सन्मुख कोई आपदा आ पड़े तो प्रथम मेरे ही ऊपर पड़े। आशावान बोला, भाई ! तुम्हारा आगे चलना अच्छा नहीं होगा क्योंकि तुम्हारा चित्त व्याकुल हो रहा है कहीं फिर मार्ग भूल न जाओ यह वार्त्ता परस्पर करते थे कि अकस्मात् ऐसी एक वाणी सुनी कि जिस राजमार्ग होकर तुम जाते थे मन लगाय उसी मार्ग को फिर जाओ। (यरमियाह ३१ : २१) इस शब्द से उन को कुछ साहस हुआ परन्तु उस समय जल ऐसा बढ़ गया कि उन का चलना कठिन था। तब मैं ने सोचा कि मार्ग भूलना सहज है पर मार्ग को फिर पाना बड़ा कठिन है। उन्हों ने तो फिरने का बड़ा उद्योग किया पर एक तो घोर अन्धकार था दूसरे ऐसी बाढ़ बढ़ी कि वे नौ दश बेर गिरकर प्रायः डूब मरे। इस रीति से उन्हों ने बहुत युक्ति की पर रात्रि के अन्धकार के कारण जिस फाटक से वे आये थे वह उन्हें न मिला इस लिये शरण स्थान पाकर बिहान होने की अपेक्षा से वहां बैठ गये और श्रम के कारण सो गये।

दुबधा दुर्ग।

उस शरण स्थान के निकट ही दुबधा दुर्ग नाम एक गढ़ था उस गढ़ का स्वामी आशा भंग नाम एक दानव था उसी की भूमि में वे सो गये थे। भोर को वह दानव फिरता फिरता वहां आ निकला और खीष्टियान और आशावान को सोते देख अति कठोर वचन से कहने लगा अरे सोने वालो तुम कौन हो और कहां से आये हो और मेरी भूमि में क्या करते हो। इन्होंने कहा महाराज हम यात्री हैं और घोर अन्धकार के कारण मार्ग

भूल आये हैं। तब दानव ने कहा, तुम ने मेंड़ लांघ के मेरी भूमि में आ शयन किया इस से तुम अपराधी हुये। अब तुम को मेरे साथ चलना पड़ेगा। इन दोनों से वह दानव अधिक बल-

ख्रीष्टियान और आशावान को आशाभङ्ग दानव अपनी भूमि पर सोते हुए पकड़ता है।

वान था इस हेतु इन को उस के साथ जाना पड़ा और वे अपने को अपराधी जान कर कुछ उत्तर भी न दे सके। तब दानव ने

उन्हें आगे कर लिया और अपने गढ़ में ले जाकर एक अन्धेरी दुर्गंधमय कोठरी में मून्द रक्खा । वहां उन की बड़ी दुर्दशा हुई कि बुधवार के प्रातःकाल से शनिवार की संध्या लों अन्न जल बिना पड़े रहे और न उन्हें सूर्य्य की ज्योति मिली न किसी ने उन का कुशलक्षेम पूछा । (भजन ८८ : १८) उस समय खीष्टियान इस दुर्दशा को अपने ही कुपरामर्श का फल समझ द्विगुण शोक करता था । उन चार दिनों का वृत्तान्त मैं अब कहता हूं ।

शङ्का की सलाह ।

उस आशाभङ्ग दानव की शङ्का नाम्नी भार्य्या थी । पहिले दिन जो उस ने यात्रियों से किया था सो रात्रि को शयन समय अपनी स्त्री से कहा कि मैंने दो यात्रियों को भूमि लंघन करते हुए पकड़ के अपने कारागार में रक्खा है अब उन से मैं कौन सा व्यवहार करूं सो कह । तब स्त्री ने पूछा, वे कौन हैं, कहां से आये हैं और कहां को जाते हैं । जब दानव ने यह सब समाचार कह सुनाया तब स्त्री ने यह परामर्श दिया कि कल प्रातःकाल उठ कर उन्हें निर्दयी हो कर पीटो । सो वह दूसरे दिवस उठ वहां बड़ी लाठी लेकर गया और यद्यपि उन्होंने भला बुरा कुछ न कहा तथापि जैसे कोई कुत्ते को दुतकारे ऐसे उन्हें दुतकार बहुत सी गाली दे उस लाठी से ऐसा पीटा कि उन्हें कोई काम करने की क्या सामर्थ्य वे करवट भी न ले सके । फिर उन को बिलाप और हाहाकार करते छोड़ अपने स्थान को चला गया । उन दोनों ने मार की पीड़ा से रोते रोते और बिलाप करते करते समस्त दिवस बिताया । फिर रात्रि समय उस स्त्री ने स्वामी के साथ उन की चर्चा करने से जाना कि अब लों वे जीते हैं । यह जान स्वामी से कहा कि आत्मघात करने का परामर्श उन को दो । फिर वह दानव प्रातःकाल उठ वहां जा पूर्ववत् कठोर बचन सहित उन से

दुर्वचन कहने लगा और पहिले दिवस की मार से उन को अति पीड़ित देख कर कहा कि इस कारागार से तुम्हारा निकलना असम्भव है इस कारण तुम शीघ्र छुरी मारकर वा फांसी डाल कर अथवा विष खाकर प्राण त्याग करो तो तुम्हारा अधिक कल्याण होगा क्योंकि प्राण के रहने से जब इतना दु:ख होता है तो प्राण के बचाने से क्या लाभ। तब इन दोनों ने बिनती कर कहा, हे महाराज! हमें अनुग्रह कर छोड़ दीजिये। यह सुन वह अत्यन्त क्रुद्ध हो आंखों से घूरता हुआ ऐसे क्रोध से इन के ऊपर लपका कि इन को बचने का भरोसा न रहा। परन्तु बहुत दिनों से उस दानव को धूपकाल में जब तब मिर्गी आती थी जिस से उस के हाथ कुछ काल लों अशक्त हो जाते थे। सो उसी क्षण मिर्गी जो आई तो वह कुछ न कर सका इस लिये मेरे परामर्श को तुम फिर सोचो यह कह उन्हें छोड़ के चला गया।

आत्मघात का परामर्श।

तब ये दोनों बन्दी परस्पर विचार करने लगे कि उस के परामर्श के अनुसार करें वा नहीं। पहिले खीष्टियान बोला, हे भाई! अब क्या करें? ऐसी दशा में जीवता रहना वा फांसी डाल कर मर जाना इन दोनों में उत्तम कौन सी बात है यह निश्चय करना कठिन है। मेरी समझ में ऐसे जीने से मरना ही भला और इस कारागार में रहने से क़बर में रहना अच्छा है। (ऐयूब ७: १५, तुम क्या कहते हो हम दानव के परामर्श अनुसार करें वा नहीं? आशावान ने कहा, इस वर्त्तमान दुर्दशा में सदा रहने से तो मेरी समझ में मरना ही भला है परन्तु इस विषय में यह विवेचना करना उचित है कि जिस देश को हम जाते हैं उसी देश के प्रभु ने कहा है नरहिंसा मत करना। जो अन्य की हिंसा करना पाप है तो अन्य के परामर्श से आत्मघात करना

अधिक पाप है। यह भी कहता हूं कि जो अन्य की हिंसा करता है सो केवल उस के शरीर को घात करता है परन्तु जो आत्मघात करता है सो अपने शरीर और आत्मा दोनों को नाश करता है। और तुम जो कहते हो कि क़बर में रहने से सुख होगा तो क्या नरक के कष्ट को भूल गये हो। आत्मघाती को अवश्य नरक भोगना पड़ेगा क्योंकि ग्रन्थ में प्रमाण है कि अनन्त जीवन में नर-हिंसक का कुछ अधिकार नहीं है। फिर यह भी विचार करें कि सब बातें इस आशाभङ्ग दानव के बश में नहीं हैं क्योंकि मैंने सुना है कि हमारे ऐसे और लोग भी उस के बश में पड़ के फिर बच गये। सो क्या जाने जगतकर्त्ता की इच्छा से कहीं यह दानव मर जाए वा हम को बन्द कर के कदाचित् ताला देना भूल जाय अथवा मिर्गी रोग से अचांचक बलहीन हो जाय। ऐसा हो तो मैं साहस बांध कर अपने बचने की अवश्य यथाशक्ति युक्ति करूंगा। अहा ऐसी युक्ति की पहिले मुझे सुरत न आई यह बड़े शोक की बात है। देखें मुक्त होने का समय कब आवे किन्तु आत्मघाती न हों। कुछ काल सहिष्णुता कर धीरज धरें। इस रीति की बातों से आशावान ने अपने साथी का मन कुछ कुछ सुस्थिर किया इस भांति वे दोनों दिन भर अन्धकार में यह दुर्दशा भोगते रहे।

आशावान का सुबिचार।

बन्दियों ने मेरा परामर्श स्वीकार किया वा नहीं इस बात के जानने को वह दानव सांझ को वहां आया। कारागार में उतर कर देखा कि वे अब लों मरे नहीं हैं जीते हैं पर मार से और अन्न जल बिना मृत प्राय हो रहे हैं केवल श्वास मात्र रह गया है। इस ने जब जाना कि ये अभी जीते हैं तब अत्यन्त क्रोध कर कहने लगा कि तुम ने जो मेरा कहना न किया तो

तुम्हारी ऐसी दुर्दशा करूंगा कि तुम्हारा जन्म न होता तो तुम्हारे लिये भला होता । यह सुन वे दोनों थर थर कांपने लगे और ऐसा मुझे दृष्टि आया कि खीष्टियान तो मूर्छित हो गया । फिर कुछ देर पीछे जब चैतन्य हुआ तो दानव के कहने के समान कर्म्म करें वा नहीं इसी का वे दोनों फिर विचार करने लगे । खीष्टियान ने उस के वचन के अनुसार कर्म्म करने की इच्छा की पर आशावान ने उसे फिर दूसरी बेर इस रीति से समझाया कि हे भ्राता ! जिस रीति से तुम पहिले अपनी वीरता प्रगट करते थे सो क्या तुम भूल गये । तुम ने अपल्लुओन से युद्ध किया फिर मृत्युछाया की तराई में भूत प्रेतादि का सामना किया पर कोई तुम को पराजय न कर सका । फिर अन्य अन्य महादुःख क्लेश और भय से तुम बच आये हो अब इस समय ऐसे भयभीत क्यों हुए हो । देखो तुम्हारी अपेक्षा मुझ में स्वभाव से बल थोड़ा है और तुम्हारी नाई मैं भी कारागार में पड़ा हूं फिर जैसे दानव के हाथ से तुम घायल और पीड़ित हो तैसा मैं भी हूं उस ने मेरा भी अन्न जल बन्द किया है और तुम्हारी नाई मैं भी ज्योति से हीन हो रोदन करता हूं तो आओ हम दोनों और थोड़ी बेर लों धीरज धरें । देखो तुम ने मायापुर के मेले में कैसा पुरुषार्थ किया कि न शृङ्खल न पिंजरे न मृत्यु ही से डरे । इन बातों को तो तनिक सुरत करो । बहुत भय से कायर होना खीष्टियानों को निन्दा का कर्म्म है सो आओ हम यथाशक्ति धीरज धरें ।

फिर रात्रि समय उस दानव की स्त्री ने अपने स्वामी से पूछा कि हे नाथ ! वे बन्धी क्या करते हैं । उन्हों ने तुम्हारा परामर्श माना वा नहीं । स्वामी ने उत्तर दिया, वे बड़े कठोर हैं सर्व प्रकार की कठिन ताड़ना सहते हैं पर आत्मघाती होना

स्वीकार नहीं करते। तब उस की स्त्री ने कहा, हे स्वामी! कल उन को गढ़ के आंगन में जहां तुम ने अनेक यात्रियों को मारा है वहां ले जाकर उन मनुष्यों के हाड़ मुण्डादि

दानव का डरावा। दिखा उन्हें घुड़क कर कहो कि सुनो जो यहां आये उनकी ऐसी ही दशा हुई है सो इस सप्ताह में तुम्हारी भी यही दशा करूंगा अर्थात् तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर डालूंगा। प्रात समय उठ कर दानव ने अपनी स्त्री के परामर्श के अनुसार उन दोनों को कारागार से निकाल गढ़ के आंगन में ले जाय हाड़ मुण्डादि दिखाय कर कहा, देखो ये सब यात्री थे जो मेंड़ लांघ मेरी भूमि में आये। अपनी इच्छानुसार मैं ने उन के टुकड़े टुकड़े कर डाले हैं। दश दिन के भीतर तुम्हारी भी यही दशा करूंगा। अब तुम फिर उसी कारागार में जाओ। यह बात कह कर उन्हें मारता मारता उसी स्थान में फिर ले गया। तब वे पूर्ववत् दुर्दशाग्रस्त होकर शनिवार के दिन भर पड़े रहे।

फिर रात्रि समय उस शङ्का नाम्नी स्त्री ने अपने स्वामी से उन बन्दियों की वार्त्ता पूछी। तब इस वृद्ध ने कहा अरी देख इन दोनों के विषय में मुझे बड़ा आश्चर्य्य होता है कि न मेरे मारने से न मेरे परामर्श से उन का मरण होता है। यह बात सुनकर उस की स्त्री ने कहा, मुझे जान पड़ता है कि उन्हें कुछ भरोसा है कि कोई हमें यहां से छुड़ा ले जायेगा अथवा ताला तोड़ने का कोई हथियार उन के पास होगा। तब दानव ने कहा, तुम जो ऐसा कहती हो तो मैं प्रातः समय जाकर उन के कपड़े झाड़ के देखूंगा।

शनिवार की आधी रात से प्रातःकाल पर्य्यन्त उन दोनों बन्दियों ने ईश्वर से प्रार्थना की प्रभात होने से पहिले ख्रीष्टियान ने चैतन्य हो अकस्मात् यह बात कही, हाय! हाय!! मैं कैसा

अज्ञानी हूं। मैं तो निकलकर मुक्त हो सकता था फिर क्यों इस दुर्गंध कारागार में पड़ा रहता हूं। मेरी छाती पर के कपड़े में प्रतिज्ञा नाम एक ताली है और मैं जानता हूं कि उस से मैं इस दुबधादुर्ग के सब द्वारों के ताले खोल सकता हूं यह बात सुनकर आशावान ने कहा, भाई! यह बड़े मङ्गल की वार्त्ता है शीघ्र ताली निकालकर देखो कि उस से ताला खुलता है वा नहीं

प्रतिज्ञा नाम ताली।

खीष्टियान ताली निकालकर द्वार खोलने को उपस्थित भया। उस ताली में ऐसा गुण था कि लगाते ही प्रथम द्वार आप से आप खुल गया। फिर उस कोठरी से बाहर निकल उन्होंने बीच का द्वार भी उसी ताली से खोला। तब वे लोह निर्म्मित बाहर के फाटक पर आये परन्तु वह फाटक बड़ा दृढ़ था इस हेतु बड़ी कठिनता से खुला तब शीघ्र भागने के लिये उन्हों ने फाटक को हाथ से धक्का दिया और वह ऐसा खड़खड़ाकर खुला कि उस के शब्द से आशाभंग दानव जाग उठा और बन्दियों के पीछे पीछे दौड़ा परन्तु मिर्गी रोग से अकस्मात् पीड़ित हो उन्हें पकड़ न सका सो ये दोनों उस के अधिकार की भूमि से बाहर निकलकर राजपथ में आ निडर हो गये। जब वे पूर्वोक्त फाटक से निकल राजपथ में आ गये तब पीछे आनेवाले यात्री लोगों के उपकार के निमित्त ऐसा उपाय विचार करने लगे कि वे इस आशाभंग दानव के हाथ में न पड़ें। इस निमित्त वहां एक स्तम्भ खड़ाकर उस पर यह लिख दिया "कि इस फाटक से दुबधादुर्ग का मार्ग है उस का अधिकारी आशाभंग नाम दानव स्वर्गीय राजा को तुच्छ जानता है और उसके यात्रियों को बिनाश करता है। इस लिखित को पढ़कर अनेक यात्री उस आपदा से बचे"। स्तम्भ खड़ाकर ये दोनों यह गान करते हुए आगे बढ़े।

दोहा ।

पथ जौं अपनी छांडिके, धरै बिरानी कोइ ।
मम सम दुख कत पाइहै, जो मम अनुचर होइ ॥
दुबधा दुर्गहि देखि के, यात्री रहो सचेत ।
जाके आशाभंग पति, सरबस हरि तब लेत ॥
बन्दीगृह पुनि पाइ हौ, सीमा लांघि तिहार ।
दूरि तासु तातें रहो, चाहो जौं सुखसार ।

सोलहवां अध्याय ।

उस स्थान से जाते जाते खीष्टियान और आशावान रमणीय पर्वतों के निकट पहुंचे । इन पर्वतों का अधिकार पूर्वोक्त पर्वत के स्वामी को था ये दोनों यात्री बन उपबन दाख की बारी आदि देखने के निमित्त इन रमणीय पर्वतों पर चढ़े और वहां जा स्नान कर जलपान किया और दाख की बारियों से बहुत सा फल भोजन किया । इन पर्वतों के शिखर पर कितने एक गड़रिये अपनी भेड़ चरा रहे थे । उन को पथ के निकट खड़े देखकर इन यात्रियों ने उन के पास जा थकित यात्रियों की रीति के अनुसार अपनी अपनी लाठी पर उठंगकर उन से पूछा कि ये रमणीय पर्वत किस के हैं और इन भेड़ों के झुण्ड का अधिकारी कौन है? गड़रियों ने कहा, यह इम्मानुएल का देश है उस की राजधानी यहां से दीखती है और ये भेड़ें भी उसी की हैं । उस ने इन के निमित्त अपना प्राण दिया । फिर खीष्टियान ने पूछा, क्या स्वर्गपुर जाने का मार्ग यही है । गड़रिये बोले, हां ! तुम सीधे पथ में हो । खीष्टियान ने पूछा, यहां से स्वर्गपुर कितनी

रमणीय पर्वत ।

दूर होगा। मेषपालकों ने कहा जिन को निश्चय वहां जाना है उन के लेखे तो बहुत दूर नहीं है पर और सब लोगों के लेखे बहुत दूर है। खीष्टियान ने फिर पूछा, इस मार्ग में कुछ खटका

रमणीय पर्वत के मेषपालक खीष्टियान और आशावान से वार्तालाप करते हैं।

तो नहीं है मेषपालक बोले, जिन के लिये निःशंक किया गया है उन के लिये इस मार्ग में कुछ खटका नहीं किन्तु दुराचारी

इस में गिर पड़ते हैं। (होशिया १४ : ९) ख्रीष्टियान ने पूछा, क्या यहां थके हुए दुर्ब्बल यात्रियों के विश्राम का कोई स्थान है। मेषपालकों ने उत्तर दिया, इन पर्वतों के स्वामी ने हम लोगों को यही आज्ञा दी है कि तुम अतिथिसेवा से न चूको इस कारण इस स्थान में जो जो उत्तम द्रव्य हैं सो सब तुम्हारी सेवा के निमित्त हैं। (इब्रियों १३ : २)

इस रीति की वार्त्ता से जब मेषपालकों ने जाना कि ये सरल यात्री हैं तब इन से पूछा, तुम कहां से आये हो और इस पथ में किस रीति से प्रवेश कर साहस पूर्वक इतनी दूर आये। हम देखते हैं कि जो इस मार्ग में यात्रा प्रारम्भ करते हैं उन में से बिरला कोई इन पर्वतों तक आ पहुंचता है। तब इन्होंने जैसे अन्य अन्य स्थलों में उत्तर दिया था उसी रीति से यहां भी अपना वृत्तान्त कह सुनाया। मेषपालकों ने इन का वृत्तान्त सुन प्रसन्न हो शुभ दृष्टि से देखकर कहा, इन रमणीय पर्वतों पर तुम्हारा मङ्गल होय। तब ज्ञानी बहुदृष्ट सचेतन और सुधा ये चारों मेषपालक इन का हाथ पकड़ अपनी कुटी में ले गये और अनेक पदार्थ को भोजन करवा सन्तुष्ट किया। फिर मित्रभाव करके कहने लगे हम लोगों से वार्त्ता करने के निमित्त और इन पर्वतों के जो जो उत्तम पदार्थ हैं उन के द्वारा शान्ति पाने के लिये थोड़े दिवस यहां टिको तो तुम्हारा लाभ होगा। यात्रियों ने कहा अच्छा हम ठहरेंगे। फिर वार्त्ता करते करते रात्रि समय वे दोनों वहां ही सो रहे।

मेषपालकों की अतिथिसेवा।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि प्रात समय मेषपालकों ने ख्रीष्टियान और आशावान को जगाया और पर्वत दिखाने के निमित्त उन को साथ लेकर चले। जब वे पर्वत की चारों ओर

के रमणीय पदार्थ देखने के निमित्त बहुत देर तक टहलते रहे तब मेषपालकों ने इन्हें आश्चर्य्य वस्तु दिखाने का परामर्श आपस में कर पहिले भ्रम नाम पर्वत के शिखर पर उन्हें ले गये और कहा तुम नीचे देखो। तब उन्हों ने नीचे दृष्टि कर देखा कि कितने एक मनुष्य पर्वत के शिखर से गिरकर चूर हो वहां पड़े हैं। यह देख

भ्रम पर्वत।

ख्रीष्टियान ने पूछा कि इसका आशय क्या है। गड़रियों ने उत्तर दिया कि शरीर के पुनर्वार उठने के विषय में हुमिनई और फिलीत के मिथ्या वाक्य से जो लोग भ्रमित हुए थे उन का वृत्तान्त तुम ने क्या नहीं सुना। (२ तिमोथिय २ : १७, १८) इन्हों ने कहा, हां ! हम ने सुना है। तब मेषपालकों ने कहा, जो शव तुम पर्वत तले चूर्ण देखते हो वे सब उन्हीं लोगों के हैं जो भ्रमित हुए थे। अन्य अन्य लोग कहीं अति ऊंचे पर चढ़ कर इस पर्वत के शिखर पर न जावें इसी निमित्त ये आज तक गाड़े नहीं गये हैं परन्तु सब लोगों के चिताने के लिये इन के शव इसी भांति पड़े हुए हैं।

फिर मेषपालकों ने इन्हें चौकसाई नाम पर्वत की चोटी पर ले जा कहा, तुम दूर तक देखो। इन्हों ने देखकर अनुमान किया कि बहुत दूर एक क़बरस्थान में कई एक लोग फिरा करते हैं और फिर अनुमान किया कि वे सब अन्धे मनुष्य हैं क्योंकि फिरते फिरते वहां की क़बरों की ठोकर खाय खाय गिरते हैं और वहां से निकलने का मार्ग उन्हें नहीं मिलता। यह देख ख्रीष्टियान ने पूछा, इस का क्या अभिप्राय है। मेषपालकों ने कहा, इन पर्वतों के नीचे मार्ग की बाईं ओर जो मैदान है उस मैदान में जाने के निमित्त छोटा फाटक बना है वह क्या तुम ने नहीं देखा। इन्हों ने कहा, हां !

चौकसाई पर्वत।

देखा है। तब मेषपालक बोले, उस फाटक से होकर आशाभंग दानव के दुबधादुर्ग नाम गढ़ का सीधा मार्ग गया है। इतना कह फिर अंगुली से क़बरों में भ्रमण करनेवाले लोगों को दिखाकर कहा. ये लोग पहिले तुम्हारी नाईं यात्री थे जब उस फाटक पर आये तब सीधे मार्ग को खड़बिड़ देख उसे छोड़ उस चौरस मार्ग में चले गये। तब आशाभंग दानव आकर उन्हें दुबधादुर्ग में ले गया। उस स्थान में थोड़े दिवस तो उस ने उन्हें कारागार में रक्खा फिर उन की आंखें फोड़ उन्हें क़बरस्थान में छोड़ दिया। तब से वे वहां ही भ्रमते फिरते हैं। इस से ज्ञानवान का यह बचन पूरा भया कि जो कोई ज्ञान का पथ छोड़कर भ्रमण करे सो मृतसभा में पड़ा रहेगा। (दृष्टान्त २१ : १६) यह बात सुन ख्रीष्टियान और आशावान सजल नयन हो परस्पर देखने लगे परन्तु मेषपालकों से उन्हों ने कुछ न कहा।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि मेषपालक इन दोनों को नीचे वहां ले गये जहां पर्वत की एक अलंग में द्वार था उसे खोलकर इन से कहा कि इस के भीतर देखो। इन्हों ने उस के भीतर देखा तो अत्यन्त अन्धकार था इस कारण उस में कुछ दिखाई न दिया पर गन्धक की सी दुर्गन्ध आयी और पीड़ित लोगों का कराहना और अग्निका सा शब्द सुनाई दिया। तब ख्रीष्टियान ने पूछा इस का तात्पर्य्य क्या है। मेषपालक बोले यह नरक जाने का एक मार्ग है। इसी मार्ग होकर कपटी लोग नरक को जाते हैं। विशेष करके जो ऐसो की नाईं अपना अधिकार बेचते हैं वा यहूदी की रीति अपने स्वामी को बेचते हैं अथवा सिकन्दर की नाईं मङ्गल समाचार की निन्दा करते हैं वा अननियाह और उसकी स्त्री सफीरा के समान मिथ्यावादी और कपटी होते हैं वे सब इसी मार्ग होकर

नरकमार्ग।

नरक को जाते हैं । आशावान ने पूछा कि जिस भांति हम यात्री हैं उसी भांति क्या वे भी किसी समय में यात्री दिखाई दिये थे । मेषपालक बोले, हां ! बहुत दिन लों वे भी यात्री की नाईं दिखाई देते थे आशावान ने पूछा, वे इस में कितनी दूर आकर परित्राण से रहित हुए । मेषपालकों ने उत्तर दिया, कितने तो इन पर्वतों तक भी नहीं आये थे और कितने तो इन से आगे बढ़ गये थे । तब यात्रियों ने आपस में कहा, हम को सर्वशक्तिमान से शक्ति पाने की प्रार्थना करना आवश्यक है । मेषपालकों ने कहा, हां ! तुम्हें प्रार्थना करना उचित है और शक्ति प्राप्त होने से उस को काम में लाना भी तुम्हें उचित होगा ।

इस रीति से कितने दिवस पर्य्यन्त ये यात्री यहां रहे फिर मेषपालकों से आगे बढ़ने की आज्ञा मांगी तब मेषपालकों ने आज्ञा दी और पर्वत के अन्त लों उन को पहुंचाने गये । फिर मेषपालक परस्पर कहने लगे कि जो ये यात्री हमारी दूरबीन से देख सकें तो इन्हें यहां से स्वर्गपुर का द्वार दिखा दें । यह सुन यात्री बहुत प्रसन्न हुए । तब मेषपालक उन्हें निर्मल नाम एक ऊंचे पर्वत के शिखर पर ले गये और स्वर्गपुर का द्वार देखने के लिये दूरबीन दिया । यात्री उस दूरबीन से उस द्वार का दर्शन करने लगे परन्तु मेषपालकों ने जो भ्रमणकारी लोगों की वार्त्ता कही थी उस की सुरत पड़ने से उन के हाथ भय से कांपते थे इस लिये वे स्थिर होकर उसे अच्छी भांति न देख सके तौभी अनुमान से जाना कि स्वर्गद्वार सी कोई तेजोमय वस्तु दिखाई देती है । फिर प्रस्थान के समय यह गीत गाते हुए चले ।

निर्मल पर्वत ।

चौपाई।

भेद जो न जानत जग कोई। अर्थ गूढ़ अब लगि रह गोई॥
मेषपाल सो देहिं सिखाये। अनुचर तिहि जातें सुख पाए॥
तिहि ढिग तातें हे नर नारी। चलु जौं तुम चाहो सुख सारी॥
अन पथ लय जैहैं दुख ओरे। अनरथ पछतावन तब तोरे॥

फिर यात्रियों के प्रस्थान के समय मेषपालकों में से एक ने तो पथ वृत्तान्त का एक पत्र दिया। दूसरे ने कहा, फुसलाऊ से सावधान रहना। तीसरे ने कहा, मोहभूमि में सो मत जाना। चौथा बोला, ईश्वर तुम्हारा निर्वाह करे। इस रीति का स्वप्न देखते देखते मेरी आंख खुल गई।

सत्रहवाँ अध्याय।

अज्ञान और खीष्टियान का वार्त्तालाप।

पीछे मैं फिर निद्रागत हो स्वप्न देखने लगा कि ये दोनों यात्री पर्वतों से उतर राजपथ में हो राजधानी की ओर गमन करने लगे। इन पर्वतों के नीचे थोड़ी दूर पर बाईं ओर दर्प नाम एक देश था। उस देश से एक टेढ़ा तिरछा मार्ग आकर राजपथ में मिला था और उसी देश से

अज्ञान से भेंट।

अज्ञान नाम एक फुर्तीला युवा आकर इन यात्रियों से साक्षात भया। तब खीष्टियान ने उस से पूछा, तुम कहां से आये हो और कहां को जाओगे। अज्ञान बोला, हे महाराज! बाईं ओर को थोड़ी दूर पर दर्प नाम देश मेरा जन्मस्थान है और मैं स्वर्गपुर जाता हूं। खीष्टियान ने पूछा, तुम किस प्रकार से उस राजधानी के द्वार में प्रवेश

करोगे। क्या जाने वहां कुछ बाधा होय तो क्या करोगे। अज्ञान ने कहा, क्यों। जैसे और और सज्जन उस में प्रवेश करेंगे तैसे मैं भी प्रवेश करूंगा। कोष्टियान ने कहा, उस द्वार पर तुम कौन ऐसा पत्र दिखा सकोगे जो तुम्हारे निमित्त द्वार खोला जाय। अज्ञान ने कहा, मैं अपने प्रभु की इच्छा को जानता हूं और नाना प्रकार का सुकर्म्म किया करता हूं। मुझे जिस का जो देना होता है उसे मैं दिया करता हूं। फिर व्रत और प्रार्थना और दान पुण्य करता हूं और जिस स्थान को मैं जाता हूं उस स्थान के निमित्त मैं ने अपना देश त्यागा है। कोष्टियान ने कहा, भला तुम अपने विषय में जो कहो सो कहो परन्तु इस पथ के सिरे पर जो सकरा फाटक है उस से तुम ने प्रवेश न किया पर इस टेढ़े मार्ग से आये हो इस कारण मुझे यह सन्देह होता है कि विचार दिवस जब उपस्थित होगा तब राजधानी में तुम्हारा प्रवेश करना कठिन होगा। तुम्हारी गणना चोर और डाकुओं में होगी। अज्ञान ने उत्तर दिया, सुनो तुम लोगों से मेरा परिचय नहीं है मैं तुम्हें नहीं जानता हूं। जैसे तुम अपने देश के धर्म्माचार से सन्तुष्ट हो तैसा मैं अपने देश के धर्म्माचार से प्रसन्न हूं। बोध होता है कि इसीसे मेरा कल्याण होगा। तुम जिस सकरे फाटक की चर्चा करते हो वह हमारे देश से बहुत दूर है। इस बात को जगत के सब लोग जानते हैं। मुझे निश्चय है कि मेरे देश का एक मनुष्य भी उस फाटक को नहीं जानता होगा। इससे हानि क्या है क्योंकि देखो यह अत्यन्त रमणीय हरियाला पथ हमारे देश से आकर इस राजमार्ग में मिला है।

जब कोष्टियान ने इस रीति की बातें सुनी तब आशावान को धीरे से कहा कि यह अपनी ही वार्त्ता को दृढ़ रखता है। देखो ऐसे मनुष्य की अपेक्षा मूर्ख के सुधरने की अधिक आशा

होती है। (नीति० २६ : १२) और यह बात भी है कि जब अज्ञानी मनुष्य पथ में चलता है तब अधिक अज्ञानता प्रकाश करता है और मैं अज्ञान हूं यह बात सब पर प्रगट करता है। (उपदेशक १० : ३ सो क्या हम इस के साथ और वार्त्ता करें अथवा इस ने जो सुना है उस का विचार जब लों न करे तब लों उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ चलें और फिर उस से मिलकर देखें कि उस का कुछ कल्याण कर सकते हैं वा नहीं। इस के उत्तर में आशावान यह गान करने लगा।

दोहा ।

सुपथ कथा मन धारिके, चेत करो अज्ञान।
इत उत जातें सुख लहे, सम्मति यहि परमान ॥
परम सुखद शुभ मंत्रना, दूर टारि जो देहि।
आन कबहु नहिं पाइ है, कह परमेश्वर एहि ॥

आशावान ने और भी कहा मेरे चित्त में यह बात आती कि उस को एक ही बिरियां सब वार्त्ता कहना अनुचित है। जो तुम्हारी इच्छा हो तो इस काल उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ चलें और उस की शक्ति अनुसार उस से फिर किसी समय में वार्त्ता करें।

ऐसा विचार ये दोनों उसे पीछे छोड़ आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाने से उन्हों ने एक महा अंधकारमय पथ में प्रवेश करके देखा कि सात भूत एक मनुष्य को सात रस्सी से बांधे हुए पूर्वोक्त पर्वत की अलंग में के द्वार की ओर फेरकर ले जाते हैं। (मत्ती १२ : ४५। दृष्टान्त ५ : २२) यह देख खीष्टियान और आशावान भयातुर हो सोचने लगे कि यह कौन है। विशेष करके खीष्टियान ने फिरकर उस का मुंह देखने चाहा परन्तु वह चोर

की नाईं सिर नीचे किये चला जाता था इस कारण अच्छी रीति से उस का मुंह दिखाई न दिया परन्तु ख्रीष्टियान ने अनुमान से जाना कि यह धर्म्मत्याग नगर का रहनेवाला है और मुंहफेरू उस का नाम है। फिर जब भूत थोड़ी दूर निकल गये तब आशावान ने देखा कि उस बन्दी की पीठ पर एक पत्र साटा गया है उस में लिखा है कि यह सुखाभिलाषी ईश्वरोपासक और सर्वनाश के योग्य धर्म्मत्यागी है।

मुंहफेरू की दुर्दशा।

तब ख्रीष्टियान ने अपने साथी से कहा, इस स्थान के निकट किसी सज्जन पर जो बीत गया तिस का वृत्तान्त मुझे याद आता है उसे मैं तुम से कहता हूं सुनो। वह पुरुष सुधानगर का रहनेवाला था और उसका नाम अल्पविश्वासी था परन्तु वह भला मनुष्य था और हमारी भांति वह भी यात्री हुआ था। उस की वार्त्ता ऐसी है कि इस अन्धकारमय पथ के मुख पर चौड़ानद्वार नाम स्थान से एक क्षुद्र पथ पर आकर इस राजमार्ग पर मिलता है। उस में बहुत लोग मारे जाते हैं इस कारण वह मृतमार्ग नाम से प्रसिद्ध हुआ है। एक दिवस वह अल्पविश्वासी सुस्ताने के निमित्त वहां बैठ गया और अकस्मात् निद्रागत हो गया। उस समय तीन अति बटमार अर्थात् कातर सन्देह और अपराध नाम तीन सहोदर भ्राता चौड़ानद्वार से उस क्षुद्र पथ से आते आते मार्ग में अल्पविश्वासी को देख कर शीघ्र ही उसके निकट आये। वह उसी काल जाग उठा और प्रस्थान करने को उपस्थित हुआ। जब वह चलने लगा तब इन तीनों बटमारों ने उस को घुड़क कर कहा अबे खड़ा रह। इन की बात सुनते ही उस सज्जन का मुंह सूख गया और वस्त्र की नाईं श्वेत हो गया और वह ऐसा भयमान हो गया

कि उन से युद्ध करने वा भाग जाने को असमर्थ हुआ। तब कातर ने कहा, अरे, अपने रुपयों की थैली निकाल। अपने रुपये खो देने से उसे बहुत शोक उपजा इस कारण वह निकालने में विलम्ब करता था इतने में सन्देह ने उस के निकट आ उस के रुपयों की थैली छीन सब द्रव्य ले लिया। तब वह चोर चोर पुकारने लगा इस पर अपराध नाम बटमार ने जो भारी लाठी लिये खड़ा था आकर इस के सिर पर एक ऐसी लाठी मारी कि यह मूर्छा खाकर मुंह के बल पृथ्वी पर गिर पड़ा और उस के सिर में से इतना लोहू बहा कि वह मृतवत हो गया। ये बटमार कुछ देर तक वहां खड़े रहे परन्तु जब उन्होंने सुना कि सुसाहस नगर का निवासी महानुग्रह नाम पुरुष पथ में आता है तब अल्पविश्वासी को इसी दुर्दशा में छोड़ कर भाग गये। फिर थोड़ी बेर पीछे जब अल्पविश्वासी सचेत हुआ तब धीरे धीरे अपना मार्ग लिया।

अल्पविश्वासी की वार्त्ता समाप्त होने से आशावान ने कहा, इन बटमारों ने क्या उस का सर्वस्व हर लिया। खीष्टियान ने कहा, नहीं केवल रुपये ले लिये किन्तु जिस थैली में उस के रत्न थे वह थैली नहीं ली। पर रुपयों के चोरी जाने से वह बड़ा दुःखी हुआ क्योंकि उस के पास जो कुछ रुपये रह गये सो शेष पथ के व्यय के योग्य नहीं थे। मैंने ऐसा भी सुना कि वह मार्ग में भिक्षा मांगते हुए गया तिस पर भी उसे अनेक उपवास करने पड़े क्योंकि उसे अपने रत्न बेचने का निषेध था। (१ पितर. ४ : १८) आशावान बोला, राजधानी के प्रवेश के निमित्त जो उस के पास प्रमाणपत्र था सो उन बटमारों ने न छीन लिया यह आश्चर्य्य है। खीष्टियान ने उत्तर दिया, बटमारों को उस पत्र की सुध नहीं थी। कुछ अल्पविश्वासी को चतुराई

से वह बचा सो नहीं केवल ईश्वर की कृपा से बच गया क्योंकि बटमारों ने अकस्मात् उसे जो आ घेरा तो वह अपना कोई वस्तु नहीं छिपा सका उस की तो भय के मारे बुद्धि और शक्ति एकाएकी क्षीण हो गई थी। (२ तीमोथिय १ : १२, १४ और १ पितर १ : ५, ६) आशावान ने कहा, बटमारों ने जो उस का यह रत्नरूपी पत्र हरण न किया यह उस को बड़ी शांति का कारण भया होगा। ख्रीष्टियान ने कहा, वह उस पत्र को पीछे जैसा उचित था वैसा पाठ किया करता तो अवश्य उसे शान्ति मिलती परन्तु जिस ने मेरे सम्मुख यह वार्त्ता कही उस ने यही कहा कि उस के रुपये जाने से उसे ऐसा भ्रम हुआ कि शेष मार्ग भर उस पत्र के पढ़ने में बहुत मन न लगाया। किसी समय में उस का ध्यान करने से जो उस को कुछ सन्तोष होता भी था तौभी उन रुपयों की जो बटमारों ने छीन लिये सुरत पड़ने से शोक के मारे उस की बुद्धि चकित हो जाती थी। आशावान ने कहा, हाय ! हाय !! इस रीति की चोरी से उसको अवश्य महा कष्ट भया होगा। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, निश्चय उस को महा दुःख क्यों न हो। समझो कि उस के समान परदेश में जो हमारा शरीर घायल हो और हमारे रुपये चोरी जायें तो क्या हम को दुःख न होगा ? अजी वह उस शोक से मर न गया यही बड़ा आश्चर्य्य है। मैंने सुना है कि वह सम्पूर्ण मार्ग में अपने दुःख की वार्त्ता सब से कहता हुआ चला जाता था। जो जो मनुष्य उस को मिलते थे उन से जिस भांति उस की चोरी हुई और जिस रीति से मारा गया फिर जिस रीति से अपना प्राण बचाया यही वृत्तान्त कहा करता था। आशावान ने कहा, इस भांति चोरी होने के पीछे उस ने अपने ख़र्च्चे के लिये अपने कोई कोई रत्न नहीं बेच डाले न उन

को बन्धक रक्खा यह बड़े आश्चर्य्य की बात है । खीष्टियान बोला, तुम स्थूल बुद्धि से यह बात कहते हो । वह किस के पास ऐसे रत्न बन्धक रखता अथवा किस के हाथ बेचता । जहां उस की चोरी हुई वहां के लोग उन रत्नों को तुच्छ समझते थे और उस को उन लोगों की सहायता का कुछ प्रयोजन भी न था । और राजधानी के द्वार जाने पर जो वे रत्न मेरे पास न होवें तो मैं उस स्थान का अधिकारी न होऊंगा यह बात वह अच्छी रीति से जानता था और जैसी उस स्थान से निकाले जाने से उसको हानि होती वैसी दस सहस्र बटमारों की उपाधि से उस की हानि न होती । आशावान ने कहा, हे भाई ! तुम ऐसा कटु वचन क्यों बोलते हो । देखो जिस रीति से एसौ ने थोड़ी सी मसूर की दाल के लिये रत्न स्वरूपी अपने ज्येष्ठाधिकार को बेच डाला इसी रीति से यह अल्प विश्वासी क्यों नहीं कर सकता था । खीष्टियान ने कहा, एसौ ने जैसे अपना अधिकार बेच डाला तैसे औरों ने भी बेचा है और ऐसा करने से एसौ की नाईं अपने तईं परमगति से हीन किया है । परन्तु एसौ और अल्पविश्वासी में बहुत अन्तर है कि एसौ का अधिकार मूल द्रव्य को केवल छायामात्र था पर अल्प विश्वासी के रत्न मूल द्रव्य ही थे । एसौ का पेट ही उस का ईश्वर था परन्तु अल्पविश्वासी ऐसा नहीं था । एसौ की रुचि शरीर सम्बन्धी थी पर इस की रुचि वैसी नहीं थी । एसौ विषय वासना को तृप्त करने से अधिक और कुछ नहीं चाहता था क्योंकि उस ने आप कहा देखो अब मैं मरने पर हूं ज्येष्ठाधिकार से मुझे क्या फल होगा । (उत्पत्ति २५ : ३२) परन्तु अल्पविश्वासी का यद्यपि थोड़ा ही विश्वास था तिस पर भी उसी थोड़े विश्वास

अल्प विश्वासी की कथा ।

द्वारा उस ने उस रीति के दुष्कर्म्म से रक्षा पाई और अपने अधिकार को अमोल जान कर निज रत्नों को यत्न से रक्षा करने योग्य समझा। यह कहीं नहीं लिखा है कि एसौ को कुछ भी विश्वास था फिर इन्द्रिय दमन करने के लिये जिस को विश्वास नहीं वह अवश्य इन्द्रियों के वशीभूत रहेगा। और जो इन्द्रियों के वश में है वह मनुष्य अपना अधिकार और प्राणादि सर्वस्व नरकाध्यक्ष शैतान के हाथ बेचे तो कुछ आश्चर्य्य नहीं है। धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि वन गदही को जब काम उत्पन्न होता है तब उस को कोई नहीं रोक सकता है। (यर्मियाह २ : २४) इस भांति के लोग ऐसे ही हैं। जिस समय उन को सुख की इच्छा होती है उस समय जो हो सो हो पर उन्हें कोई रोक नहीं सकता है। अल्पविश्वासी का चित्त ऐसा नहीं था वह स्वर्गीय विषय पाने को आसक्त था और आत्मिक वस्तु को अपनी जीविका समझता था। इस कारण ग्राहक ठहरता तौभी वह अपने रत्न न बेचता क्योंकि असार वस्तुओं से उस को सन्तोष न होता। कोई मनुष्य अत्यन्त क्षुधित होने से भी क्या भोजन के लिये एक पैसे की घास लेगा क्या तुम्हारे समझाने से हंस गिद्ध की नाईं दुर्गन्धित मांस खायगा। इसी भांति शारीरिक अभिलाषा के पूर्ण होने के निमित्त अविश्वासी लोग यद्यपि अपना सर्वस्व, प्राण तक बन्धक रख सकते वा बेच सकते हैं तथापि जिस विश्वास द्वारा परित्राण प्राप्त होता है जिस को थोड़ा भी ऐसा विश्वास हो वह कभी नहीं ऐसा कर सकता है। सो हे भाई! तुम को इस विषय में भ्रम हुआ। आशावान ने कहा, तुम्हारी बात सब सत्य है पर मुझे तुम्हारे कटु बचन द्वारा कुछ क्रोध हुआ था। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, मेरे मुख से कुछ कड़ी बात निकली सही पर भाई अब उस को जाने दो और जिस बात की

चर्चा कर रहे हैं उस पर ध्यान लगाओ तो हमारा तुम्हारा दोनों का कल्याण होगा। आशावान बोला, हे भाई ! मैं निश्चय जानता हूं कि वे तीनों बटमार बड़े डरपोकने थे नहीं तो क्या एक मनुष्य की आहट से भाग जाते। भला अल्पविश्वासी ने क्यों नहीं थोड़ा साहस किया। एक बार वह मल्लयुद्ध तो करता जब उन्हें पराजय नहीं कर सकता तब हार मानता। ख्रीष्टियान ने कहा, उन बटमारों को बहुत लोग कायर कहते हैं पर परीक्षा के समय वे ऐसे कायर नहीं ठहरते हैं। अल्पविश्वासी में साहस का लेश भी नहीं था पर तुम्हारी वार्त्ता से जान पड़ता है कि जो तुम्हारी वैसी दशा होती तो तुम उन से एक बार मल्लयुद्ध करने के पीछे हार मानते। देखो भाई अब तो वे दूर हैं और जो उन के दूर रहते तुम्हारा केवल इतना ही साहस है तो क्या जाने उन के सन्मुख तुम भी अल्पविश्वासी के समान भयातुर होते। फिर विचार करो कि वे बटमार दूसरे के सेवक हैं अर्थात् अथाह कुण्ड के अध्यक्ष के आज्ञाकारी हैं और वह प्रयोजनानुसार आप आकर उन की सहायता करता है और सिंह के समान महा घोर शब्द से गर्जता है। (१ पितर ५ : ८) मेरा भी अल्पविश्वासी के समान उन से काम पड़ चुका इस हेतु उन के युद्ध की कठिनता मैं जानता हूं। एक समय इन तीनों बटमारों ने मुझे भी आ घेरा। जब मैं ख्रीष्टियान की रीति इन का साम्हना करने लगा तब उन्हों ने एक शब्द जो किया तो उसी क्षण उन का अध्यक्ष आ पहुंचा। जब मैं ने उसे देखा तब अपने प्राण को कौड़ी का भी न समझा। यद्यपि मैं ईश्वर की कृपा से नख से सिख लों चोखे चोखे शस्त्र पहिरे था तथापि वीरत्व से उस से युद्ध करना अत्यन्त कठिन था। इस रीति के युद्ध में जब तक मनुष्य आप नहीं पड़ता तब तक उस के

कष्ट का वर्णन नहीं कर सकता है। आशावान ने कहा, तुम ठीक कहते हो परन्तु जब उन्हों ने समझा कि महानुग्रह आता है तब वे भाग गये। इसका क्या कारण। खीष्टियान ने कहा, सत्य है महानुग्रह के दर्शनमात्र से वे तथा उन का स्वामी भी कई बार भागे। यह कुछ आश्चर्य्य का विषय नहीं क्योंकि वह राज-वीर है। परन्तु राजवीर और अल्पविश्वासी में बड़ा अन्तर है यह क्या तुम नहीं जानते। राजा की सम्पूर्ण प्रजा राजवीर नहीं हो सकती और युद्ध में राजवीर की भांति विजयी नहीं हो सकती। दाऊद ने जैसे जूलियत को लज्जित किया वैसे क्या कोई दूसरा बालक कर सकता था। बरद का बल क्या पिदड़ी में होगा। देखो कोई कोई बलवान हैं कोई कोई दुर्बल हैं कोई कोई दृढ़ विश्वासी हैं और कोई कोई अल्पविश्वासी हैं। यह दुर्बलों में से एक था इसलिये हार गया। आशावान फिर बोला, इन तीनों बटमारों की महानुग्रह के साथ भेंट होती तो अच्छा होता। खीष्टियान ने उत्तर दिया, महानुग्रह को भी इस युद्ध में कष्ट होता तो कुछ आश्चर्य्य नहीं महानुग्रह अस्त्र विद्या में बड़ी निपुण तो है इस लिये जितनी देर तक उन्हें अपने खड्ग के सन्मुख रखता उतनी देर तक उन्हें दबाये रखता परन्तु जो कातर वा सन्देह वा उनका सङ्गी खड्ग की वार बचा कर उस पर टूटता तो उस को भी गिरा देता और जब मनुष्य गिरा चुका तब क्या कर सकता है। वरन् कोई जो महानुग्रह का मुख भली भांति से देखे तो उस पर मेरी वार्त्तानुसार दाग़ वा घावों के चिन्ह अवश्य देखेगा। और मैं ने सुना है कि एक समय युद्ध में उस ने भी ऐसा कहा कि अब मुझे प्राण रक्षा की आशा नहीं। ये बटमार ऐसे निर्दयी और कठोर हैं कि उन्हों ने और उनके अध्यक्ष ने दाऊद को भी बड़े कष्ट में डाल के हाहाकार और

विलाप करवाया । फिर हेमन और हिजकियाह से भी जो राज-वीर थे ऐसा युद्ध किया कि वे ज्यों त्यों करके बचे और यह जाना कि हम बड़ी आपदा से छूटे । देखें वे मेरा क्या कर सकते हैं ऐसा कह पितर प्रेरित एक दिन उनके निकट गया । बहुत लोग यह कहते हैं कि वह प्रेरितों के मध्य में प्रधान था परन्तु उन दुराचारियों ने उसके साथ ऐसा निष्ठुर व्यवहार किया कि अन्त में वह एक दुर्बल दासी को देखकर डर गया । और यदि ये बटमार किसी समय किसी से हार जावें तो उन के पुकारते ही उन का स्वामी उन की सहायता करने को उपस्थित होता है क्योंकि वह उन से दूर नहीं रहता है और उस के विषय में कहा गया है कि खड्ग परशु, बाण, सांग आदि शस्त्र उसे बेध नहीं सकते हैं । वह लोहे को तृणवत और पीतल को सड़ी लकड़ी के समान जानता है । बाण से कोई उस को नहीं भगा सकता । ढिलवांस का पत्थर उसकी समझ में भूसी के तुल्य है वह गदा को कुछ नहीं समझता है बरछी की चोट से हंसता है । (ऐयूब ४१ : २६-२९) फिर मनुष्य उस का क्या कर सकता है । यह बात सत्य है कि ऐयूब ने जैसे घोड़े का बयान किया वैसा कदापि किसी का घोड़ा हो और वह उस के चढ़ने में प्रवीण हो तो युद्ध में वह अद्भुत चमत्कारी कर सकेगा क्योंकि उस घोड़े का गला घोरनाद विशिष्ट है वह फुनगे की नाईं कूदता है उसकी नासिका से अति भयानक शब्द होता है वह मैदान में टाप मारता है । और अपने पराक्रम से हर्षित होकर शस्त्रधारी का सामना करने जाता है । वह निर्भय हो कर परिहास करता है कुछ नहीं डरता है और खड्ग से अपना मुंह नहीं फेरता है । खड्ग और शूल और बरछे उस की चारों ओर झंझनाते

यात्रियों के युद्ध की कथा ।

रहते हैं वह क्रोधयुक्त गर्व से भूमि खनन करता है। तुरही का शब्द सुन वह साहसी होता है और हाहा शब्द करता है। वह बहुत दूर रहते भी संग्राम की गन्ध पाता है और सेनापति के शब्द और हुंकार टेर को सुन लेता है। (ऐयूब ३९:१९-२५) ऐसे घोड़े के चढ़वैये की और बात है पर हम दोनों सरीखे पैदल को चाहिये कि शत्रु के सन्मुख होने की इच्छा न करें और जब औरों के पराजित होने का समाचार सुनें तो हम उन लोगों से कुछ उत्तम युद्ध कर सकते इस अभिमान से अपनी बड़ाई न करें न अपने वीरत्व के विषय में दम्भ करें क्योंकि परीक्षा काल में ऐसे अभिमानियों का पराजय होना प्रत्यक्ष है। इस के प्रमाण में पूर्व्वोक्त पितर को देखो जिस ने बड़े अभिमान से यह बात कही कि मैं अपने स्वामी के निमित्त अन्य लोगों से अधिक साहस और सत्यता प्रकाश करूंगा'। पर देखो उन पापात्माओं से कौन मनुष्य कभी उस के तुल्य लज्जित किया गया।

राजपथ में भी ऐसी ऐसी डकैती होती है इस बात के सुनने से हमें दो बातें करना उचित है। पहली यह कि हम शस्त्र बांधे हुए गमन करें। विशेष करके ढाल अवश्य चाहिये क्योंकि जिस ने लिबियाथन से युद्ध करने में वीरत्व प्रकाश किया वह भी ढाल बिना उस को पराजय नहीं कर सका। मैं सत्य कहता हूं कि जो ये शत्रु हमारे पास ढाल न देखें तो किसी रीति से हम से न डरेंगे और जो पुरुष इस युद्ध में बड़ा निपुण था उस ने भी कहा है कि सब के ऊपर विश्वासरूपी ढाल धारण करो क्योंकि उस से तुम पापात्मा के सारे अग्निबाणों को निवारण कर सकोगे। (इफिसियो ६ : १६) दूसरी बात यह है कि हम अपने महाराजा से प्रार्थना करें कि वह अपने किसी सेवक को

हमारी रक्षा के निमित्त साथ कर दे वरन् आप हमारे साथ गमन करे। इस रीति के साथी के मिलने से दाऊद राजा मृत्युछाया की तराई में गमन करने के समय भी आनन्द युक्त रहा है। (भजन १६ : ८, ६ और २३ : ४) और मूसा ने ऐसा विचार किया कि जहां खड़ा हूं वरन् तहां ही मर जाना अच्छा है परन्तु ईश्वर संग न रहते तो एक डग आगे बढ़ना अच्छा नहीं था। (निर्गमन ३३ : १५) हे भाई जो यह हमारे साथ गमन करे तो दस सहस्र शत्रु भी हमारा क्या कर सकेंगे। (भजन ३ : ५-८ और २७ : १-३) परन्तु वह संग न हो तो अहंकारी सहायक मृतक सदृश लोगों के सामने पतित होते हैं। (यशायाह १० : ४) मैं तो युद्ध कर चुका हूं और उसी सर्वोत्तम की कृपा से अभी तक बचा हूं पर मैं अपनी कुछ बड़ाई नहीं कर सकता हूं और फिर जैसा संग्राम देखने की इच्छा भी नहीं रखता हूं। तिस पर भी बोध होता है कि अभी हम समस्त आपदाओं से पार नहीं हुए परन्तु जिस ने सिंह और भालू से हमें बचाया वही और दुःखदाई शत्रुओं से भी बचावेगा। यह बात कह खीष्टियान यह गान करता हुआ आगे बढ़ा।

चौपाई ।

पड्यो चोर के हाथहि जाए। सर्वस अपनो आप गमाए ॥
अल्पविश्वासिक एही अन्ता। तातें चेतहु हे बुधवन्ता ॥
तुम विस्वास बढ़ाओ तातें। बड़े बुद्धि बल तेरो जातें ॥
लेहुँ सहस शत्रुन तुम जीती। धरिहौ जौं मन इम परतीती ॥

इस रीति से वे आगे बढ़े और अज्ञान भी इन के पीछे पीछे चला आया। फिर कितनी दूर जाते जाते देखा कि दो पथ हमारे आगे हैं और दोनों सीधे देख पड़ते हैं इस कारण वे वहां खड़े हो विचारने लगे कि किस मार्ग से जाना उचित है क्योंकि

दोनों सूधे हैं। इतने में एक कृष्णवर्ण मनुष्य उजले वस्त्र पहिरे धीरे धीरे उनके पास आकर पूछने लगा कि तुम यहां क्यों खड़े हो। तब उन्होंने कहा, हम स्वर्गपुर को जाते पर किस मार्ग से होकर जाना होगा यह हम नहीं जानते हैं। उसने कहा, मैं भी वहां ही जाता हूं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ। यह वार्त्ता सुन वे उस के पीछे हो लिये। वह नवीन मार्ग से चलने लगा पर जब उन्हें थोड़ी दूर ले गया तब वह पथ बक्र होने लगा और घूमते घूमते निदान राजधानी से विपरीत दिशा को फिर गया तौभी उन्होंने उस मनुष्य का पीछा न छोड़ा। निदान उसकी चतुराई से वे ऐसे जाल में फंसे कि छूटने का कोई उपाय उन्हें नहीं सूझता था। जब उस कृष्णवर्ण मनुष्य के शरीर पर से वह उजला सूक्ष्म वस्त्र गिर पड़ा तब उन्होंने जाना कि हम कहां हैं फिर महा संकट में पड़ उस से मुक्ति पाने को असमर्थ हो कुछ काल हा! हा!! शब्द करते हुए वहां ही फंसे रहे। तब खीष्टियान ने आशावान से कहा, भाई! मैं देखता हूं कि मैं बड़े भ्रम में पड़ा हूं क्योंकि मेषपालकों ने हम से कहा था कि फुसलाऊ से सावधान रहना सो अब हम पर ज्ञानी का वह बचन पूरा हुआ कि जो मनुष्य अपने प्रतिवासी की स्तुति करता है वह उस के पैर फैलाने के लिये जाल बिछाता है। (दृष्टान्त २९:५) फिर आशावान ने कहा, हां, उन्हों ने पथ के वृत्तान्त का एक पत्र भी दिया पर हमें ऐसी भ्रान्ति हुई कि हम ने उस को न पढ़ा और विनाशकारक के पथ से रक्षा पाने का उपाय भूल गये। इस विषय में दाऊद हम से अधिक ज्ञानवान था क्योंकि उसने कहा है कि मनुष्य के कार्य्य के विषय में तेरे मुख की वार्त्ता द्वारा मैं ने विनाशक के पथ से अपनी रक्षा की (भजन १७:४)।

फुसलाऊ का छल।

वे दोनों इस प्रकार की बातें कर अपने को उपाय रहित जान उस जाल में फंसे रहे । निदान एक तेजस्वी पुरुष रस्सी का कोड़ा हाथ में लिये वहां आ इन से पूछने लगा, तुम कहां से आये हो और इस स्थान में क्या करते हो ! तब इन्हों ने कहा, हम अति दीन यात्री हैं सियोन पर्वत को जाते थे । जब मार्ग का हमें कुछ सन्देह हुआ तब उजला वस्त्र पहिरे कृष्ण-वर्ण एक मनुष्य ने आकर कहा, आओ मैं भी वहां ही जाता हूं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ । यह बात कहकर वह हमें मार्ग से भटका इस दुर्दशा में छोड़कर चला गया है । यह सुन उस तेजस्वी पुरुष ने कहा, वह दीप्तिमय दूत का वेषधारी झूठा प्रेरित है और उस का नाम फुसलाऊ है । (दानियेल ११ : ३२ और २ करिन्थि ११ : १३,१४) इतना कह जाल फाड़ उन्हें मुक्त किया और कहा तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ तुम को मैं राजपथ में फेर ले जाऊंगा । यह कह जिस मार्ग से फुसलाऊ इन को भुलाकर ले आया था उसी मार्ग पर इन्हें ले चला । तब उस ने उन से पूछा कि तुम कल रात को कहां टिके थे । इन्हों ने कहा, रमणीय पर्वत पर मेषपालकों की कुटी में । फिर उस ने पूछा, क्या उन्हों ने पथ वृत्तान्त का कोई पत्र तुम को नहीं दिया । इन्हों ने कहा, हां, दिया फिर उस ने पूछा कि जिस समय तुम को मार्ग का भ्रम हुआ उस समय क्या तुम ने उस पत्र को नहीं पढ़ा । इन्हों ने कहा, नहीं, हमें उस की सुरत न रही । उस ने कहा, क्या मेषपालकों ने तुम्हें फुसलाऊ के विषय में सावधान रहने को न चिताया । ये बोले, हां, उन्हों ने चिताया पर हमें यह अनुमान न था कि इस के ऐसा सुवक्ता पुरुष फुसलाऊ होगा । (रोमि. १६ : १७, १८) ।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि उस ने उन को भूमि पर औंधे मुंह लेटने की आज्ञा दी और कोड़े मारकर सतपथ में गमन करने के विषय में समझा दिया और कहा, मैं जिन पर प्रेम रखता हूं उन सभों का अनुयोग और ताड़ना करता हूं इस कारण तुम उद्योगी होकर पश्चात्ताप करो। (प्रकाश. ३ : १९) तब उस ने यह भी कहा कि और जो जो शिक्षा मेषपालकों ने दी हैं उन को सावधानी से चेत करते हुये यात्रा करो। तब इन्हों ने उस की बड़ी कृपा की स्तुति की और यह गान करते हुए अपने पथ में धीरे धीरे चले।

दोहा।

सतपथ यात्रिन छाड़ि जो . कुपथ चलहिं मतिमन्द।
दुर्गति ताको देखिए . धाय पर्‌यो जिमि फन्द॥
जसहु तसहु छुटि जौ गये . करि सत सम्मति चेत।
तोहूं घायल रहि गये . कुपथ दगा इमि देत॥

अठारहवां अध्याय।

नास्तिक से खीष्टियान की वार्त्ता।

जब वे थोड़ी दूर वहां से बढ़े तब देखा कि एक मनुष्य दूर से राजपथ में उन की ओर अकेला चला आता है उस को देखकर खीष्टियान ने अपने संगी से कहा, देखो एक मनुष्य सियोन पर्वत की ओर पीठ किये हमारी ओर चला आता है। आशावान ने कहा, हां, देखता हूं पर हम को सावधान होना उचित है क्या जाने यह भी कहीं फुसलाऊ के ऐसा न ठहरे।

इस रीति की वार्त्ता करते करते वह मनुष्य क्रम क्रम उस के निकट आ पहुंचा । उस का नाम नास्तिक था

नास्तिक से भेंट । और उस ने इन से पूछा, तुम कहां जाते हो । ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, हम सियोन पर्वत को जाते हैं । यह सुन नास्तिक खिलखिलाकर हंसने लगा । ख्रीष्टियान बोला, तुम हंसे क्यों ? नास्तिक ने उत्तर दिया, सुनो जब तुम सब प्रकार का कष्ट उठाय इस मार्ग के अन्त लों पहुंचोगे तब तुम्हारा कुछ लाभ नहीं होने का तिस पर भी तुम इस दुर्गम यात्रा में प्रवृत्त रहते हो तुम्हारी इस मूर्खता पर मुझे हंसी आई । ख्रीष्टियान बोला, क्या तुम यही समझते हो कि हमारा प्रवेश नहीं होगा । नास्तिक ने कहा, प्रवेश कहां किया चाहते हो । वह स्थान तो स्वप्न की भावनामात्र है नरलोक में ऐसा कोई स्थान ही नहीं है । ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, परलोक में तो है । नास्तिक ने कहा, तुम जो बात इस स्थान के विषय में कहते हो वह मैं ने भी स्वदेश में वास करते समय सुनी थी और उस की खोज के निमित्त मैं ने यात्रा भी की थी परन्तु खोजते खोजते बोस वर्ष हो गये आज लों उस का कहीं पता भी न मिला । ख्रीष्टियान ने कहा, हम ने तो सुना है कि वह स्थान है और उसका विश्वास भी किया है । नास्तिक बोला, जब मैं अपने घर पर था तब मुझे भी विश्वास था नहीं तो मैं इतनी दूर उस के खोजने को क्यों आता परन्तु वह मिला नहीं इस कारण मैं फिरा जाता हूं । वह स्थान होता तो अवश्य मुझे मिलता क्योंकि मैं तुम से अधिक दूर लों उसे ढूंढ़ आया हूं । अब तो यही निश्चय किया कि जिस विषय को त्याग करके गया था उसी के फिर मिलने से सन्तोष होगा । तब ख्रीष्टियान ने अपने साथी की ओर दृष्टि कर कहा क्यों भाई जो यह कहता है वह

क्या सत्य है। आशावान बोला, सावधान हो यह मनुष्य भी फुसलाऊ सा दिखाई पड़ता है ऐसे ही मिथ्यावादी लोगों के परामर्श के सुनने से हम कैसे कैसे दुःख पा चुके हैं इस का चेत करना। क्या सियोन पर्व्वत नहीं है। हम ने क्या रमणीय पर्वत पर से नगर का द्वार नहीं देखा। इस समय न दीखने से क्या अपने विश्वास को त्याग देवें। (२ करिन्थि. ५ : ७) फिर आशावान ने कहा, तुम चले आओ जी नहीं तो वह कोड़ेवाला फिर यहां आकर उपस्थित होगा। मैं तुम को ग्रन्थ का एक वाक्य सुनाऊंगा तुम को उचित था कि उस वाक्य की शिक्षा मुझे देते, यथा हे मेरे पुत्र! जो उपदेश तुम को ज्ञान की कथा से फिरावे उसका सुनना छोड़ दो। (नीति १९ : २७) हे भाई! उस मनुष्य की वार्त्ता सुनना छोड़ कर चले आओ हम आत्मा के त्राण के निमित्त विश्वास करें। (इब्रि. १० : ३९) खीष्टियान ने कहा, हे भाई! हमारा विश्वास क्या जाने मिथ्या है इस सन्देह से मैं ने वह प्रश्न नहीं किया किन्तु तुम्हारी परीक्षा के लिये और तुम्हारा विश्वास जानने के निमित्त। यह मनुष्य इस संसार के देव से अन्धा किया गया है यह निश्चय जानो। चलो हम तुम आगे बढ़ चलें क्योंकि हमें तो निश्चय है कि हम ने सत्य मत का अवलम्बन किया है और उस सत्य मत की कोई वार्त्ता मिथ्या हो नहीं सकती। (१ योहन २ : २१) तब आशावान बोला, मैं इस समय ईश्वर की महिमा की आशा से आनन्दित हुआ हूं। तब इन्होंने नास्तिक को त्याग किया और वह भी उन का उपहास करता हुआ चला गया।

फिर मैंने स्वप्न में देखा कि वे चलते चलते एक ऐसे देश में पहुंचे जिस के वायु में यही स्वाभाविक गुण था कि विदेशी उस वायु के लगने से सो जाता था। इस हेतु आशावान

निद्रालु होकर खीष्टियान से कहने लगा मुझे ऐसी ऊंघाई आती है कि मैं आंखें नहीं खोल सकता हूं, आओ इस स्थान में ठहर कर कुछ क्षण सोवें। खीष्टियान बोला, नहीं, नहीं, इस स्थान में सोने से कदाचित् फिर कभी न जागेंगे। आशावान ने उत्तर दिया, भाई! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो।

आशावान को निद्रित होने से बरजना।

थकित मनुष्य को निद्रा गुणकारक है सोने से थकाहट उतर जाएगी। खीष्टियान ने कहा, मेषपालकों में से एक ने यह कहा था कि मोह भूमि से सावधान रहना यह बात क्या तुम्हें याद नहीं है। इस का अर्थ यह है कि चौकस रहो उस भूमि पर सो न जाना। इस कारण हम औरों की नाईं न हो जावें परन्तु जागृत और सचेत रहें। (१ थिसलोनि. ५ : ६) तब आशावान ने चैतन्य होकर कहा, मैंने भूल का भाई! जो इस स्थान में मैं अकेला होता तो क्या जाने सो जाने से मेरा नाश होता। यहां बुद्धिमान् के वचन की सत्यता देख पड़ती है कि एक से दो उत्तम होते हैं। (उपदेशक ४ : ६) आज लों तुम्हारी संगति से मेरा लाभ ही हुआ है। ईश्वर तुम्हारे परिश्रम का तुम को उत्तम प्रतिफल देगा। तब खीष्टियान ने यह परामर्श किया कि आओ हम इस स्थान में निद्रा के निवारण के निमित्त पारमार्थिक विषयों की वार्त्ता करें। आशावान ने स्वीकार कर कहा, हां, मेरा भी चित्त उस से प्रसन्न होगा। खीष्टियान ने पूछा, तो प्रथम क्या चर्चा करें। आशावान ने उत्तर दिया कि जो कार्य्य ईश्वर ने पहिले हमारे हृदय में किया उस की चर्चा करना अच्छा होगा परन्तु तुम ही उस का प्रारम्भ करो। खीष्टियान ने कहा, पहिले मैं कुछ गान करता हूं सो सुनो।

दोहा।

पुण्यवान को चाहिये, नींद भर्यो जब नैन।
इन यात्रिन ढिग जाइके, श्रवन सुनें सुख बैन॥
तन मन आलस त्यागिकै, तिन्हतें सीखन जाहु।
यात्रिन के संसर्ग ते, इत उत शुभ अपनाहु॥

जब गान समाप्त भया तब खीष्टियान ने आशावान से प्रश्न किया कि भला तुम्हारे चित्त में जो इस समय भाव है सो किस रीति से उत्पन्न भया। आशावान ने कहा, किस भाव की बात कहते हो। तुम्हारा क्या यह अभिप्राय है कि मेरे चित्त में पारमार्थिक मंगल की चेष्टा कैसे उत्पन्न हुई। खीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, यही मेरा प्रश्न है। तब आशावान कहने लगा, अच्छा मैं कहता हूं। मैंने मायापुर के मेले में जा जो पदार्थ देखे जाते और जो जो द्रव्य बिकते हैं उन सब के भोग में बहुत वर्ष लों अपना काल व्यतीत किया पर अब मुझे जान पड़ता है कि मैं आज लों उन्हीं विषयों में प्रवृत्त रहता तो वे मुझे अवश्य नरक कूप में डुबा देते। खीष्टियान ने पूछा, वे कौन कौन विषय थे। आशावान ने कहा, सांसारिक धन और समस्त प्रकार के ऐश्वर्य्य। इन से अधिक मद्यपान, परस्त्रीगमन, लुच्चपन, झूठ, गाली इत्यादि जो सर्वनाशक क्रियायें हैं इन्हीं में मेरी प्रीति थी। किन्तु विश्वासी नाम जिस प्रिय धर्मिष्ठ पुरुष का अपने विश्वासयुक्त सदाचार के कारण मायापुर के मेले में प्राण दण्ड हुआ जब से मैं उस के और तुम्हारे मुख से पारमार्थिक विषयों का श्रवण कर अपने कर्म्मों का विचार करने लगा तब से मैं ने समझा कि इन सब का फल मृत्यु है और इस प्रकार के कर्मों के हेतु ईश्वर का क्रोध आज्ञाभंजक लोगों पर

पारमार्थिक वार्त्ता।

होता है। (रोमि. ६ : २१-२३ । इफिसि. ५ : ६) खीष्टियान ने पूछा, क्या इस रीति की चेतना पाने से तुम ने यों ही उस के अनुसार कर्म्म किया? आशावान ने कहा, नहीं पाप बहुत ही बुरी वस्तु है और उस के हेतु मनुष्य अवश्य नरक में जाता है इस बात के मानने की मुझे पहिले इच्छा नहीं थी इस कारण जब ईश्वर के वाक्य से मेरा चित्त व्याकुल होने लगा तब वाक्य-रूपी तेज से मैं ने अपने नेत्र मूंदने की चेष्टा की। खीष्टयान ने कहा, ईश्वर के पवित्र आत्मा ने जिस समय तुम को यह चेतना दी उस समय तुम ने जो ऐसा विरुद्ध भाव प्रकाश किया इस का कारण क्या? आशावान ने उत्तर दिया, इस के अनेक कारण थे। प्रथम-यह कि मैं नहीं जानता था कि यह चेतना ईश्वर की ओर से है और यह भी नहीं जानता था कि पाप के विषय में चैतन्य होना मन में सत्य विश्वास उत्पन्न होने का आरम्भ है। द्वितीय-यह कि उस समय शारीरिक भाव से मुझे पाप करना बहुत अच्छा लगता था इस कारण मैं उस के त्यागने की इच्छा नहीं करता था। तृतीय-यह कि अपने संगी लोगों को त्याग करना मुझे अति कठिन जान पड़ता था क्योंकि उन के साथ सम्भाषादि व्यवहार करना मुझे प्रिय लगता था। चतुर्थ-यह कि मेरे चित्त में पाप के विषय में जो चेतना होती थी सो मुझे ऐसी भयावनी और दुःखदाई समझ पड़ती थी कि उस की याद आने से भी मैं बिकल हो जाता था। खीष्टियान ने कहा, तो जान पड़ता है कि किसी किसी समय में तुम्हारे मन का दुःख छूट जाता था। आशावान बोला, हां, छूट जाता था किन्तु फिर फिर ऐसा उठता था कि मैं पहिले से अधिक दुःखी हो जाता था। खीष्टियान ने पूछा, किस किस बात के कारण तुम को अपने पाप का चेत होता था? आशावान ने उत्तर दिया कि अनेक

बातों से मुझे चेत होता था। पहिले—जो मार्ग में चलने के समय किसी सदाचारी से भेंट होती। दूसरे—जो मैं किसी को धर्म्म पुस्तक का पाठ करते सुनता। तीसरे—जो परमार्थिक वार्त्ता। मुझे मस्तक वा उदर की पीड़ा होती। चौथे—जो मैं किसी पड़ोसी की भारी पीड़ा का समाचार पाता। पांचवें—जो किसी के मरण से लोगों का विलाप सुनता। छठे—किसी दिवस मेरी मृत्यु होगी ऐसी चिन्ता जो मन में आती। सातवें—जो मैं किसी के अकस्मात् मर जाने का समाचार सुनता। आठवें—जो सुरत आती कि हमको शीघ्र ही विचार स्थान में जाना पड़ेगा तो ऐसे ऐसे समय मेरे चित्त में पाप की चिन्ता होती थी। खीष्टियान ने कहा, जब जब इस रीति से तुम्हारा मन पाप के दंड से डरता था तब क्या तुम सहज ही ऐसे भय को त्याग निर्भय हो सकते थे। आशावान ने कहा, नहीं निर्भय होने की चेष्टा करने से मन में अधिक बिकलता व्यापती थी। और दूसरी बेर पाप मार्ग में चलने की शङ्का भी जो उस समय मन में उपजती थी तो एक को चौगुना दुःख होता था। खीष्टियान ने फिर पूछा, तो तुम ने क्या किया? आशावान ने कहा, मैं ने यही बात अपने चित्त में स्थिर की कि अपना आचार व्यवहार सुधारने की चेष्टा करनी उचित है नहीं तो अन्त को नरक में जाऊंगा। खीष्टियान ने कहा तब तुम ने अपनी चाल सुधारने के निमित्त चेष्टा की कि नहीं? आशावान बोला, हां, मैं ने केवल पूर्व पापों को छोड़ा सो नहीं किन्तु बुरी संगति को त्याग कर धर्म्म के विषयों में चित्त लगाया विशेष कर के धर्म्म पुस्तक का पाठ और ईश्वर की प्रार्थना और पाप के निमित्त विलाप और प्रतिवासियों से धर्म्म की चर्चा इत्यादि अनेक अनेक धर्म्माचार करने लगा। खीष्टियान ने कहा, इन सब बातों से अब मेरा मङ्गल

भया ऐसा क्या तुम को बोध हुआ ? आशावान ने उत्तर दिया, हां ! कुछ दिन लों मुझे ऐसा बोध रहा किन्तु शेष में यह सम्पूर्ण धर्म्म क्रिया रूपी सेतु के टूटने से मेरा मन भयरूपी सागर में फिर मग्न हुआ । खीष्टियान ने कहा, यह बात कैसे हुई तुम तो उस समय में धर्म्माचारी थे? आशावान ने कहा, वह भय जो फिर उत्पन्न हुआ इस के अनेक कारण थे विशेष करके धर्म्म पुस्तक के अनेक वचनों से मुझे त्रास उत्पन्न हुआ यथा हमारे सकल धर्म्म कर्म्म अपवित्र वस्त्र की नाईं हैं । (यशायाह ६४ : ६ ।) व्यवस्था पालन द्वारा कोई प्राणी धर्म्मी नहीं गिना जाता । (गलाति. २ : १६) समस्त कर्म्म करने पर भी यही कहो कि हम निकम्मे दास हैं । (लूक १७ : १०) इन सब बातों से मैंने अपने मन में विचार किया कि जो ऐसा है कि हमारे सब धर्म्म कर्म्म मलीन वस्त्र के समान हुये और व्यवस्था पालन द्वारा कोई मनुष्य ईश्वर के निकट धर्म्मी न ठहरा और सब कर्म्म करने के पीछे भी हम निकम्मे दास गिने गये तो व्यवस्था पालन द्वारा स्वर्ग प्राप्त करने की आशा रखनी मूर्खता है । और मैं ने यह भी सोचा कि जो मनुष्य किसी साहूकार के हज़ार रुपये चाहता हो वह यद्यपि पीछे रुपये दे दे उस के साथ बहुत व्यवस्था करे तथापि जो वह पूर्वोक्त हज़ार रुपये न भर दे तो उस साहूकार का अधिकार है कि उसे उन रुपयों के लिये कारा-गार में जब चाहे तब डलवा दे । खीष्टियान बोला, भला इन बातों को तुम ने अपनी दशा से किस भांति मिलाया । आशावान ने कहा, मैं अपने मन में यही सोचने लगा कि मैं अपने पापों के द्वारा ईश्वर के यहां बड़ा ऋणी हुआ हूं और धर्म्माचार अभी करने से उस प्राचीन ऋण का शोधन नहीं हो जायगा इस कारण वर्त्तमान सुव्यवहार से भिन्न पूर्वकृत पाप के दण्ड से रक्षा पाने

का कोई और उपाय करना चाहिये। फिर सोचा कि ऐसा उपाय कहां पाऊं। खीष्टियान ने कहा, इन बातों का योग तुम ने अच्छा लगाया। फिर तुम ने क्या किया सो भी कहो? आशावान ने फिर ऐसा वर्णन किया कि मेरे मन के दुःख का दूसरा कारण यह था कि जब से मैं ने सदाचार में चित्त लगाया था तब से मेरी सर्वोत्तम क्रियाओं में भी मुझे पाप सूझता परमार्थिक वार्ता। था इस कारण मैं पूर्ववत् अभिमानी हो अपने धर्म्म कर्म्म की प्रशंसा न कर सका क्योंकि जो मेरा पूर्व आचार शुद्ध भी ठहरता तथापि इस नवीन धर्म्म कर्म्म में मुझे इतना दोष स्पष्ट देख पड़ता था कि उस से मुझे नरक होता। खीष्टियान ने पूछा, फिर तुमसे इस विषय में क्या किया। आशावान ने उत्तर दिया, विश्वासी से मेरा परिचय हुआ था इस लिये मैं ने अपने मन का सम्पूर्ण सन्देह उस से कहा। उस ने यह बात कही कि जब लों किसी निष्पापी पुरुष का धर्म्म तुम्हारा गिना न जाय तब लों तुम्हारे अपने धर्म्म वा समस्त जगत् के धर्म्म के द्वारा कभी तुम्हारा परित्राण न होगा। खीष्टियान ने फिर पूछा, उसकी वार्त्ता तुम को सत्य जान पड़ी? आशावान ने कहा, सुनो जिस समय मैं निज धर्म क्रिया से सन्तुष्ट रहा उस समय जो मुझ से वह ऐसी बात कहता तो मैं उस को अज्ञान कहकर तुच्छ जानता किन्तु उस काल मैं ने अपनी दुर्बलता और अपनी उत्तम क्रिया में पाप की मलीनता देख पाई थी इस हेतु मैंने उसकी वार्त्ता स्वीकार की। खीष्टियान ने कहा, भला जिसने कभी पाप नहीं किया ऐसा निर्दोषी पुरुष है यह वार्त्ता जब तुम ने विश्वासी से पहिले सुनी तब तुम को वह बात कैसी समझ पड़ी? आशावान् बोला, प्रथम तो मैंने इस को असम्भव करके जाना पर विश्वासी से फिर अनेक

प्रकार की चर्चा और सत्संग होने से मैंने उसकी सत्यता स्वीकार की। खीष्टियान ने फिर पूछा, भला वह निष्पापी पुरुष कौन है और उसके द्वारा किस प्रकार से धर्म्मी गिना जाऊं यह बात क्या तुमने विश्वासी से पूछी? आशावान बोला, हां, मैं ने पूछी। उसने उत्तर दिया कि सर्व प्रधान के दहिने हाथ पर रहनेवाला जो यीशु प्रभु है वही निष्पापी पुरुष भी है। (इब्रि. १० . १२.२१) उसी के द्वारा अर्थात् उसने पृथ्वी पर आकर जो जो काम किये और क्रूश पर टंगने के समय जो दुःख भोगा उसी पर भरोसा रखनेसे तुम धर्मी ठहर सकते हो। (रोमि. ४ : ५। कलस्सी. १ : १४ और १ पितर १ : १९) तब मैंने उस से पूछा कि उस का धर्म्म जो ईश्वर के सन्मुख औरों को धर्मी ठहराता है ऐसा गुण उस में किस प्रकार से हुआ। तब उसने मुझ से कहा कि वह पुरुष सर्वशक्तिमान् ईश्वर है और उसने जो कर्म्म किये और मृत्यु भोग किया सो अपने लिये नहीं किन्तु हम लोगों के निमित्त सहे इस हेतु जो हम उस पर विश्वास करें तो उस की क्रिया और उस क्रिया का धर्म्म हमारा ही गिना जाएगा। आशावान ने कहा फिर उसके पीछे तुमने क्या किया? खीष्टियान ने कहा मैंने विश्वास करने के विषय में नाना प्रकार के तर्क किये क्योंकि मुझ को यह संशय हुआ कि क्या जाने वह पुरुष मेरा उद्धार करना अङ्गीकार करे वा न करे। खीष्टियान ने पूछा, इसके विषय में विश्वासी ने क्या कहा? आशावान बोला, विश्वासी ने कहा, तुम उसके पास जा देखो। तब मैंने कहा जाने का साहस नहीं होता। उस ने कहा, क्यों? उसने तो तुमको बुलाया है। (मत्ती ११ : २८) यह कह कर यीशु के निकट जानेवाले मनुष्यों का साहस बढ़ाने के निमित्त जो पुस्तक यीशु की आज्ञानुसार लिखी गई

उसे मेरे हाथ में देकर कहा इस ग्रन्थ का हरएक विन्दु विसर्ग पृथ्वी आकाश से भी अधिक स्थिर जानना। (मत्ती २४ : ३५ तब मैंने पूछा, उसके पास जाकर मैं क्या करूं। उसने कहा, तुम उसके सन्मुख घुटने टेक कर अन्तःकरण से प्रार्थना करना कि हे पिता परमेश्वर ! यीशु को मुझ पर प्रगट कर। (भजन ६५ : ६ दानियेल ६ : १० । यरमियाह २६ : १२, १३) मैंने फिर पूछा कि उसके सन्मुख किस रीति से निवेदन करूं ?

पारमार्थिक वार्त्ता। उसने कहा कि जो लोग उसके निकट जाते हैं उन के अपराध क्षमा करने के लिये वह बारहों मास करुणासन पर बैठा है तुम वहां जाने से उसे देखोगे। (यात्रा. २५ : २२ । लेवीय १६ : २ । गिन्ती ७ : ८ । इब्रि. ४ : १६) मैं ने उस से कहा, वहां पहुंच कर मुझे क्या कहना पड़ेगा यह मैं कुछ नहीं जानता हूं ? उस ने कहा, तुम इस रीत से प्रार्थना करना कि हे ईश्वर मुझ पापी पर दया कर कि मैं यीशु खीष्ट को जानूं और उस पर विश्वास करूं क्योंकि उस की कृपा न हो वा उस की कृपा में मेरा विश्वास न हो तो मैं अवश्य नरकगामी होऊंगा यह मुझे स्पष्ट दिखाई देता है। हे दीनबन्धु ! मैं ने सुना है कि तू दयासागर है इसी निमित्त तू ने अपने प्रिय पुत्र यीशु खीष्ट को जगत्राता निरूपण किया है। इस हेतु हे करुणामय भक्तवत्सल दीनानाथ मुझ सरीखे दीन पापिष्ठ नरक योग्य मनुष्य पर अनुग्रह करके अपने पुत्र प्रभु खीष्ट के द्वारा मेरा परित्राण कर के अपने अनुग्रह की महिमा मेरे द्वारा प्रकाश कर। आमीन। खीष्टियान ने कहा, भला इस शिक्षा के अनुसार तुम ने प्रार्थना की ? आशावान ने उत्तर दिया, हां, मैं ने अनेक बार प्रार्थना की। खीष्टियान ने पूछा, उस प्रार्थना से क्या परमेश्वर ने अपने पुत्र को तुम पर प्रगट किया। आशा-

वान ने कहा, न तो पहिली न दूसरी न तीसरी न चौथी न पांचवीं न छठी प्रार्थना में भी उसे प्रगट किया। खीष्टियान ने कहा, तब तुम ने क्या किया? आशावान ने कहा, भाई! मुझे बड़ा संशय हुआ कि अब मैं क्या करूं। खीष्टियान ने कहा, ऐसा होने से क्या प्रार्थना त्यागने की इच्छा न हुई! आशावान बोला, हां, एक दो बार नहीं किन्तु सैकड़ों बार ऐसी इच्छा हुई। खीष्टियान ने पूछा, तब तुम ने प्रार्थना को न त्यागा इस का कारण क्या है? आशावान ने उत्तर दिया कि उस का यही कारण है कि खीष्ट के धर्म्म बिना सकल जगत के लोग मेरा उद्धार नहीं कर सकते हैं यह बात जो मैं ने सुनी थी मैं ने सत्य जानी इस कारण मैं ने यही विचारा कि प्रार्थना त्याग करने से मेरी मृत्यु तो अवश्य होगी सो करुणासन का शरण लेना चाहिये वहां बचूं तो बचूं नहीं तो अन्त में केवल मृत्यु ही होगी। इस रीति को सोच करते २ धर्म्मपुस्तक का यह वचन मेरे चित्त में आया कि वह बिलम्ब भी करे ताभी उसकी बाट जोह वह अवश्य उपस्थित होगा बहुत बिलम्ब न करेगा। (हबक्कूक २:३) इसी वचन का भरोसा करके जब लों पिता ने अपने पुत्र को मेरे निकट प्रकाश न किया तब लों मैं प्रार्थना करता रहा। खीष्टियान ने फिर पूछा वह किस रीति से तुम्हारे निकट प्रकाश हुआ। आशावान ने कहा, मैं ने बाहरी आंखों से तो उसे नहीं देखा किन्तु ज्ञान की आंखों के द्वारा मुझे दिखाई दिया। (इफिसि १:१८-१९) एक दिवस मैं ने अपने पाप को बहुत बड़ा और घृणा योग्य समझ कर ऐसा दुःख पाया कि कभी जन्म भर वैसा दुःख नहीं पाया था। उस समय मैं नरक में सदा कष्ट पाने की अपेक्षा करता था परन्तु अकस्मात् मुझे ऐसा दृष्टि पड़ा कि प्रभु आप ही मेरी ओर देखकर कहने लगा कि यीशु खीष्ट पर विश्वास कर

तो तेरा त्राण होगा। (प्रेरित १६:३१) तब मैं ने उत्तर दिया, हे प्रभु ! मैं तो महापातकी हूं। तब उस ने कहा, मेरे अनुग्रह से तेरा यथोचित उपकार होगा। (२ करिन्थ. १२:६) फिर मैं ने पूछा, हे प्रभु ! विश्वास क्या वस्तु है और उस से क्या होगा। उस ने उत्तर दिया कि जो मनुष्य मेरे पास आवे वह कभी भूखा न रहेगा और जो मुझ पर विश्वास करे वह कभी प्यासा न होगा (योहन ६:३५) इस वाक्यानुसार मैं ने जाना कि विश्वास करना और निकट आना एक ही बात है। जो पुरुष आता है अर्थात् जिस का चित्त यीशु खीष्ट के परित्राण के निमित्त आकर्षित होता है वही सत्य विश्वास करता है। जब मुझे ऐसी समझ हुई तब प्रेम के उमंग से मेरे नेत्रों से जल बहने लगा। फिर मैंने पूछा, हे प्रभु ! मेरे समान महापातकी क्या तुमसे परित्राण पा सकता है। उसने उत्तर दिया, जो मेरे समीप आवे उसे मैं कभी दूर नहीं करूंगा। (योहन ६:३७) मैं ने कहा, तुम्हारे समीप आने में मेरे चित्त में सत्य विश्वास उत्पन्न होने के लिये मैं तुम को क्या समझूं। उसने कहा, यही निश्चय रखना उचित है कि पापियों के परित्राण निमित्त खीष्ट इस संसार में आया। (१ तिमोथिय १:१५) प्रत्येक विश्वासी के धर्म्म के निमित्त व्यवस्था को वही पूर्ण करता है। (रोमि. १०:४) वह हम लोगों के अपराध के निमित्त समर्पण किया गया और हम धर्म्मी गिने जायें इसी निमित्त मृतकों में से उठाया गया। (रोमि ४ : २५) उस ने हम से प्रेम करके अपने रक्त से हमारे पापों को धो डाला। (प्रकाश १ : ५) वह ईश्वर और हमारे बीच में मध्यस्थ है। (१ तिमोथिय २ : ५) हमारे लिये प्रार्थना करने के निमित्त वह सर्वदा जीता है। (इब्रि.

पारमार्थिक वार्त्ता।

७ : २५) इन सब बातों से मैं ने यही जाना कि उसी से तो मेरे धर्म्मी ठहराने का उपाय है और उसी के रक्तद्वारा अपने पाप धोने की आशा रखनी उचित है क्योंकि पिता की व्यवस्था पालन करने में और उस में जो निरूपित दण्ड तिस में सहने में जो जो कार्य्य उसने किये सो अपने लिये नहीं किन्तु जो परित्राण के निमित्त उसका शरण लेते हैं उन के निमित्त किये। इस कारण यीशु के नाम और उस के मार्ग और उसके भक्तों के अति प्रेम से मेरा हृदय आह्लादित हुआ और नेत्रों से जल बहने लगा। खीष्टियान ने कहा, निश्चय तुम्हारे चित्त में यीशु का प्रकाश तो हुआ। फिर तुम्हारे मन में इस से क्या क्या फल उत्पन्न हुए सो मुझ से विस्तार सहित कहो। आशावान बोला, मुझ को यह दिखाई देने लगा कि यद्यपि संसार के लोग अनेक धर्म्म कर्म्म किया करते हैं तथापि वे दण्ड योग्य हैं। यह भी देखा कि ईश्वर पिता जो खीष्ट के शरणागत पापी को धर्म्मी ठहराता है न्यायसंयुक्त यथार्थ कर्म्म करता है। फिर भी मैं पूर्वाचरण की दुष्टता और अपनी मूर्खता देख अत्यन्त लज्जित हुआ क्योंकि जैसी सुन्दरता मैं ने यीशु खीष्ट को देखी वैसी मेरे ध्यान में कभी न आई थी। और मैं धर्म्माचरण की बड़ी चेष्टा और प्रभु यीशु के नाम की महिमा और गौरव प्रकाश करने की बड़ी अभिलाषा करने लगा। मैं अधिक क्या कहूं। मेरे शरीर में जो दश मन रक्त भी होता तो उसके निमित्त सम्पूर्ण रक्त बहा देता ऐसी मेरी इच्छा हुई।

उन्नीसवां अध्याय ।

मोह भूमि में प्रवेश ।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि इस रीति की बातें करते करते ये दोनों चले जाते थे कि किसी कारण से आशावान ने पीछे फिर के दृष्टि कर पूर्वोक्त अज्ञान को दूर पर देखा। उसे देख खीष्टियान से कहा, हे भाई ! देखो वह युवा कितनी दूर पिछड़ गया है। खीष्टियान ने कहा, हां, उसे देखता हूं मुझे बोध होता है कि वह हम से वार्त्तालाप की बहुत इच्छा नहीं रखता है। आशावान ने कहा, यह सत्य है पर जो वह इतनी घड़ी हमारे साथ रहता तो मैं जानता हूं कुछ उस की हानि न होती। खीष्टियान ने उत्तर दिया, सत्य कहते हो पर मुझे निश्चय है कि वह तो और ही समझता है। आशावान बोला, मैं भी यह जानता हूं तौभी भला उस के लिये ठहरें। ऐसा कह वे दोनों उसी ठौर खड़े हो रहे।

अज्ञान से वार्त्तालाप ।

फिर खीष्टियान ने उसे पुकार कर कहा, अजी चले आओ तुम इतना पीछे क्यों रह गये। अज्ञान ने उत्तर दिया, मैं अकेला ही चलना अच्छा जानता हूं क्योंकि जिन मनुष्यों से चित्त प्रसन्न नहीं रहता है उनके साथ जाने से अकेले चलने में विशेष सुख है।

तब खीष्टियान ने आशावान की ओर देख उसको धीरे से कहा कि वह हमारे साथ चलने में प्रसन्न नहीं है सो मैं ने तुम से कहा था कि नहीं। तौभी इस निर्जन स्थान में बातचीत तो करते चलें।

इस विचार से खीष्टियान ने फिर अज्ञान को पुकारकर कहा, हे भाई ! चले आओ तुम कैसे हो और ईश्वर के विषय में तुम्हारे मन का कैसा भाव है ? अज्ञान ने कहा, अच्छा भाव है क्योंकि

मेरा मन उत्तम भावना से सदा पूर्ण रहता है जिस से चलते हुए आनन्दित रहता हूं। ख्रीष्टियान ने कहा, वह कैसी भावना है सो मुझ से कहो। अज्ञान ने उत्तर दिया मैं स्वर्ग का और ईश्वर का ध्यान करता हूं। ख्रीष्टियान ने कहा, भूत और नरक बासी प्राणी भी इन्हीं का ध्यान करते हैं। अज्ञान ने कहा सच है पर मैं तो उन का ध्यान कर उन की आकांक्षा भी रखता हूं। ख्रीष्टियान ने कहा, जो वहां कभी न जायेंगे ऐसे अनेक मनुष्य उनकी आकांक्षा करते हैं। लिखा है कि आलसी वांछा करता पर उसे कुछ नहीं मिलता (नीति० १३ : ४) अज्ञान बोला, मैं ने उस विषय का अभिलाषी होकर अपना सर्वस्व परित्याग किया है ख्रीष्टियान ने कहा, मुझे इसका कुछ सन्देह है क्योंकि सर्वस्व त्याग करना बड़ा कठिन है इस की कठिनता थोड़े लोग समझते हैं। तुम ने स्वर्ग और ईश्वर के निमित्त सर्वस्व त्याग किया इस का क्या प्रमाण तुम को मिला है। अज्ञान ने कहा, मेरा मन ही मुझे प्रमाण देता है। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि जो मनुष्य अपने मन पर भरोसा रखता है वह मूर्ख है (नीति २८ : २६) अज्ञान बोला, वह दुष्ट मन के विषय में लिखा है मेरा मन तो उत्तम है। ख्रीष्टयान ने कहा, तुम्हारा मन उत्तम है इस का कुछ प्रमाण भी है। अज्ञान ने यह प्रमाण दिया कि मेरा मन स्वर्ग की प्रत्यआशा द्वारा मुझ को शान्ति देता है। ख्रीष्टियान ने कहा, यह तो मन के कपट का भी फल हो सकता है क्योंकि ऐसा हो सकता है कि जिस वस्तु की आशा रखने का कुछ भी अधिकार उसको नहीं है उसी वस्तु को आशा से भी मनुष्य का मन उसे शान्ति देवे। अज्ञान ने उत्तर दिया, मेरा मन और आचरण दोनों एक से हैं इस से मैं अपनी आशा को सत्य और यथार्थ जानता हूं।

ख्रीष्टियान ने कहा, तुम्हारा मन और आचरण एक ही है यह बात तुम से किस ने कही। अज्ञान बोला, मेरा मन मुझ से कहता है ख्रीष्टियान ने कहा, हां, चोर का साक्षी चोर तुम्हारा मन तुम्हारा साक्षी है यह कौन बात है इस विषय में ईश्वर के वाक्य को छोड़कर दूसरा प्रमाण व्यर्थ है। अज्ञान ने कहा, जिस के मन में निरन्तर उत्तम चिन्ता रहे क्या उस का मन अच्छा नहीं और ईश्वर के आज्ञानुसार जो चले उसका आचरण उत्तम नहीं। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, हां, उत्तम चिन्ता विशिष्ट मन अच्छा और ईश्वर आज्ञानुयायी आचरण भी उत्तम है किन्तु इस में कुछ विशेष है। ऐसा मन और आचरण रखना एक बात है और मेरा ऐसा मन और आचरण है केवल ऐसी भावना करना और ही बात है। तब अज्ञान ने पूछा, भला तुम उत्तम चिन्ता और ईश्वराज्ञानुयायी आचरण किस को कहते हो। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, उत्तम चिन्ता अनेक प्रकार की होती है। उन में कितनी तो अपने विषय में होती है कितनी ईश्वर के विषय में कितनी ख्रीष्ट के विषय में और कितनी अन्य अन्य बातों के विषय में। अज्ञान ने फिर पूछा, अपने विषय में उत्तम चिन्ता कौन कौन सी होती हैं। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, जो चिन्ता ईश्वर के वाक्य से मिले वही उत्तम होती है। अज्ञान ने कहा, अपने विषय में हमारी चिन्ता कब ईश्वर के वाक्य से मिलती है। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, हमारे विषय में जैसा ईश्वर के वाक्य से विचार होता है जो हम आप अपने विषय में वैसा विचार करें तो हमारी चिन्ता उत्तम है। मैं तुम को यह बात स्पष्ट समझा देता हूं सुनो। स्वाभाविक मनुष्य के विषय में ईश्वर का ऐसा वाक्य है कि धार्म्मिक कोई नहीं है

अज्ञान से ख्रीष्टियान की वार्त्ता।

सत्कर्म्म कोई नहीं करता। (रोमि. ३:१०,१२) और यह भी कि मनुष्य के अन्तःकरण की कल्पना सर्वदा दुष्ट रहती है। बाल्यावस्था से मनुष्य के चित्त में दुष्ट कल्पना होती है। (उत्पत्ति ६ : ५ और ८ : २१) ये सब बातें जान कर जो हम अपने विषय में वैसी ही चिन्ता करें तो हमारी चिन्ता उत्तम है क्योंकि वह ईश्वर के वाक्य के अनुसार है। अज्ञान ने कहा, यह बात कि मेरा मन ऐसा बुरा है इसकी मैं कभी प्रतीति नहीं करूंगा। ख्रीष्टियान ने कहा, जो ऐसी बात है तो तुम ने इतने वर्षों में अपने विषय में एक भी उत्तम चिन्ता कभी न की पर जिस विषय में मैं कहता था उसी में एक बात और कहता हूं। ईश्वर का वाक्य जिस रीति से हमारे मन के विषय में विचार करता है तैसा ही आचरण के विषय में भी विचार करता है इस हेतु जब मन और आचरण दोनों के विषय में

चिन्ता के विषय में।

हमारी चिन्ता उसी विचार से मिलती है तब वह उत्तम चिन्ता होती है। अज्ञान ने कहा, अपने वचन का अभिप्राय स्पष्ट वर्णन करो। ख्रीष्टियान ने कहा, धर्म्मपुस्तक में ईश्वर ने ऐसा कहा है कि मनुष्यों का मार्ग अत्यन्त टेढ़ा और बुरा है और यह भी कि मनुष्य स्वभाव ही से सत मार्ग से न्यारे होकर उसे भूल जाते हैं। (भजन १२५ : ५। नीति. २ : १५। रोमि. ३ : १२) इस कारण जब मनुष्य चेत कर आन्तरिक नम्रता से अपने आचरण को बुरा जानता है तब उसे निज आचरण के विषय में उत्तम चिन्ता होती है क्योंकि उस की चिन्ता ईश्वर वाक्य के अनुसार होती है। इतनी बात सुन अज्ञान ने फिर पूछा, ईश्वर के विषय में उत्तम चिन्ता कौन कौन सी होती है। ख्रीष्टियान ने उत्तर दिया, मैंने आत्मविषयिक चिन्ता के विषय में जो वार्त्ता कही है वही इस में भी यथार्थ है

अर्थात् ईश्वर के वाक्य में जो कुछ ईश्वर के विषय में कहा गया है जब ईश्वर के विषय में हमारी चिन्ता उसके साथ मिलती है तब वह उत्तम चिन्ता है। ईश्वर के ईश्वरत्व और गुण के विषय में जो शिक्षा उस का वाक्य करता है उस के अनुसार चिन्ता करना हम को उचित है किन्तु इस समय इस का वर्णन विस्तार सहित नहीं करता हूं। परन्तु उस के साथ जो हमारा सम्बन्ध है उस का कुछ वर्णन करता हूं।

ईश्वर के विषय में हमें यही समझना उचित है कि हम लोग आप जितनी कुछ अपनी दशा को जानते हैं उस से अधिक ईश्वर को हमारी दशा का ज्ञान है और हम ईश्वर के विषय में। अपने जिस पाप को नहीं देख सकते हैं उसे वह स्पष्ट देखता है और फिर वह मन के समस्त सोच विचार और गुप्त मनोरथ भी जानता है और यह भी कि हम जितनी धर्म्म क्रिया करते हैं उसे वह मानो दुर्गन्ध जानता है इस कारण जब तक हम अपने धर्म्म पर विश्वास करें तब तक वह हमें किसी प्रकार से अपने पास नहीं आने देगा। इन सब बातों को जब मन में स्थिर करते हैं तब तो ईश्वर के विषय में हमारी उत्तम चिन्ता होती है। अज्ञान ने कहा क्यों जी, क्या तुम केवल मुझे मूर्ख ही जानते हो। मुझ से ईश्वर अधिक दूरदर्शी है यह बात क्या मैं नहीं जानता हूं। और मैं अपने पुण्य द्वारा उसके निकट नहीं जा सकता हूं यह ज्ञान भी क्या मुझे नहीं है। खीष्टियान ने पूछा, तुम इसके विषय में कैसा ज्ञान रखते हो मुझे बताओ? अज्ञान ने कहा, मैं जो इस विषय में जानता हूं सो संक्षेप से कहता हूं कि पुण्यवान होने के निमित्त मुझे प्रभु यीशु खीष्ट पर विश्वास करना चाहिये। खीष्टियान ने कहा, क्यों जी खीष्ट का प्रयोजन जब तुम नहीं देखते हो

तब ख्रीष्ट पर विश्वास कैसे करते हो। तुम न तो अपना स्वाभाविक दोष न अपने किये हुए पाप को जानते हो पर अपने मन पर और अपनी क्रिया पर अभिमान करते हो इस से मैं स्पष्ट देखता हूं कि ईश्वर के साक्षात् धर्म्मी होने के निमित्त तुम ने कभी ख्रीष्ट का प्रयोजन नहीं देखा। फिर मैं ख्रीष्ट पर विश्वास करता हूं यह बात किस रीति से कहते हो? अज्ञान ने उत्तर दिया, मैं तो उत्तम रीति से विश्वास करता हूं। ख्रीष्टियान ने कहा, तुम किस बात का विश्वास करते हो? अज्ञान बोला, मैं यही विश्वास करता हूं प्रभु ख्रीष्ट ने पापियों के निमित्त प्राण का त्याग किया और मैं यदि उस की आज्ञा पालन करूं तो वह उस सदाचार को ग्रहण कर मुझे शाप से छुड़ाकर ईश्वर के सन्मुख धर्म्मी ठहरावेगा। इस का अर्थ यह है कि वह करुणानिधान यीशु अपने पुण्य द्वारा मेरे धर्म्माचरण को पिता के सन्मुख ग्रहण योग्य बनावेगा इस प्रकार मैं पुण्यवान गिना जाऊंगा। ख्रीष्टियान ने कहा, तुम्हारे विश्वास के विषय में मैं कुछ कहता हूं उसे सुनो। (१) तुम्हारा यह विश्वास स्वप्नवत् है क्योंकि इस रीति के विश्वास का प्रमाण ईश्वरीय शास्त्र के किसी ठौर में नहीं है। (२) तुम्हारा विश्वास सच्चा नहीं है क्योंकि तुम ख्रीष्ट के धर्म्म को धर्म्म का मूल नहीं जानते किन्तु निज धर्म्म को धर्म्म का मूल समझते हो। (३) तुम्हारे विश्वास द्वारा ऐसा बूझ पड़ता है कि ख्रीष्ट तुम ही को धर्म्मी नहीं ठहराता है पर तुम्हारी क्रिया का धर्म्म क्रिया ठहराती है और उस क्रिया के द्वारा तुम अपने को धर्म्मी समझते हो। ऐसा विश्वास व्यर्थ है। (४) इस कारण तुम्हारा विश्वास धोखा मात्र है और सर्वाध्यक्ष के आगमन के दिवस तुम को ईश्वर का क्रोधपात्र बनावेगा क्योंकि जिस विश्वास-

द्वारा मनुष्य धर्म्मी गिना जाता है तिस का लक्षण यह है कि जब परमेश्वर की व्यवस्था के द्वारा अपने को नरक योग्य जान भयातुर है तब ख्रीष्ट के धर्म्म का शरण लेने को दौड़ता है । और यह ख्रीष्ट का धर्म्म क्या अनुग्रह कर तुम्हारे धर्म्म कर्म्म को ईश्वर से ग्रहण करवा उस धर्म्म कर्म्म के द्वारा तुम्हें धर्म्मी गिनवाये यही अनुग्रह क्या ख्रीष्ट का धर्म्म कहलाता है नहीं परन्तु ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार जो कर्म्म करना और पाप के कारण दुःख भोगना हमें अवश्य था इस कारण हमारे स्थान पर ख्रीष्ट ने व्यवस्थाधीन बन के किया और भोगा यही उस का धर्म्म कहलाता है । जो मनुष्य सत्य विश्वासपूर्वक उस धर्म्म को ग्रहण करता है वही धर्म्मरूप वस्त्र से आभूषित हो ईश्वर के सन्मुख निर्दोष ठहरता है और उस का अनुग्रहीत हो नरक से बच जाता है ।

इस बात में सन्देह कर अज्ञान ने पूछा, हमारे धर्म्म कर्म्म बिना जो कर्म्म प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने आप ही किया है उसी कर्म्म पर हम भरोसा रक्खें क्या तुम्हारा ऐसे विश्वास से इन्द्रिय निरंकुश होंगी और हम अपनी अपनी अभिलाषानुसार आचरण करने लगेंगे । ख्रीष्ट में केवल विश्वास ही करने से जो हम उस के धर्म्मद्वारा धर्म्मी गिने जायें तो हमारे भले आचरण का कुछ प्रयोजन हो न रहा क्योंकि विश्वास ही से सब कुछ होता है ? ख्रीष्टियान ने कहा, तुम्हारी ऐसी विवेचना न होती तो तुम को लोग अज्ञान क्यों कहते । हाय ! हाय !! तुम्हारा जैसा नाम है वैसी ही मत भी है । जिस धर्म्म से मनुष्य धर्म्मी गिना जाता है उसे तुम जानते ही नहीं और विश्वासद्वारा उसी धर्म्म का अवलम्बन कर ईश्वर के क्रोध से अपने प्राण की रक्षा किस भांति से करना होगा इस का भी भेद तुम नहीं जानते हो । और

खीष्ट के धर्म्म के जिस विश्वास से त्राण होता है उस विश्वास का फल भी तुम नहीं जानते हो कि वह चित्त को ईश्वर को ओर फिराता है और उस के अधीन करता है और उस के नाम, वाक्य, पथ और भक्तों से स्नेह करवाता है। जो तुम जानते तो ऐसी अनर्थक वार्त्ता न करते।

तब आशावान ने खीष्टियान से कहा, इस से पूछो कि कभी खीष्ट तुम पर प्रकाशित हुआ था नहीं? इस बात के सुनते ही अज्ञान ने कहा, तुम क्या दर्शनों के अभिलाषी हो। मेरी प्रतीति है कि तुम और तुम्हारे ऐसे और लोग जो कुछ इस विषय में कहते हैं सो सब केवल बकवाद है। आशावान ने कहा, भाई जी तुम कैसी बात कहते हो। मनुष्य की स्वाभाविक बुद्धि के निकट खीष्ट तो ईश्वर में ऐसा गुप्त है कि जब लों पिता ईश्वर उस को प्रकाश न करे तब लों कोई मनुष्य उस को ऐसे नहीं जान सकता है कि उस का त्राण हो। अज्ञान बोला, तुम ऐसा विश्वास करते हो पर मैं नहीं करता हूं। यद्यपि तुम्हारी बुद्धि के तुल्य मेरी बुद्धि नहीं है तथापि मैं जानता हूं मेरा विश्वास तुम्हारे विश्वास के तुल्य है। खीष्टियान ने कहा, कुछ मेरी बात भी सुन लो। इस विषय को ऐसा तुच्छ जानना उचित नहीं है क्योंकि जो मेरे संगी आशावान ने कहा है वह सत्य है कि जब लों ईश्वर पिता खीष्ट का नहीं प्रगट करे तब लों उस का दर्शन कोई नहीं पा सकता और है जो सत्य विश्वास खीष्ट का अवलम्बन करता है सो विश्वास ईश्वर के अत्यन्त पराक्रम का फल है। (मत्ती ११ : २७ और १ करिन्थि. १२ : ३। इफिसि. १ : १५.२३) मैं देखता हूं कि तुम उस विश्वास का कर्म्म नहीं जानते हो। हे अज्ञान चैतन्य होकर अपनी सम्पूर्ण

अज्ञान साथ छोड़ देता है।

अवस्था को विचारकर प्रभु यीशु की शरण गहो तो तुम उस के धर्म्मद्वारा पुण्यवान होकर दण्ड से मुक्ति पाओगे क्योंकि वह आप ही ईश्वर है और उसी का धर्म्म ईश्वरी धर्म्म है। अज्ञान बोला, तुम लोग ऐसे शीघ्र चलते हो कि मैं तुम्हारे साथ चल नहीं सकता हूं मैं धीरे धीरे पीछे से आऊंगा। यह बात सुनकर खीष्टियान और आशावान यह गीत गाते चले।

चौपाई।

शुभ मन्त्रनहि सुन्यो कै बारा। तबहुं न चेत्यो मूढ़ गंवारा॥
पड़िहौ जब तुम कष्टहि भारी। बुझिहो तब अपनो दुरचारी॥
तातें चेतहु हे अभिमानी। होय नम्र सुनि लो हित बानी॥
तन मन भय तुम करहु गुदूरा। करत रहो शुभ आज्ञा पूरा॥

दोहा।

कुमति कुबुधि सब त्यागके, चेत करो अज्ञान।
जीवन की नहिं आस कछु, छन में निकसहि प्रान॥

तब खीष्टियान ने आशावान से कहा, हे भाई, फिर इसे पीछे छोड़कर पूर्ववत् आगे बढ़ चलना होगा। सो मैंने स्वप्न में देखा कि ये दोनों शीघ्र आगे बढ़े और अज्ञान उन के पीछे धीरे धीरे चला आता था। तब खीष्टियान ने अपने साथी से कहा, हे भाई! इस मनुष्य के निमित्त मेरा चित्त बड़ा दुःखी होता है क्योंकि अन्त में इसकी बड़ी दुर्दशा होगी यह मैं निश्चय जानता हूं। आशावान बोला, हाय! हमारे नगर में इस के सदृश कितने ही लोग हैं। उन में अनेक यात्री भी हैं और हमारे नगर में यदि इतने हैं तो उसकी जन्मभूमि में कितने न होंगे। खीष्टियान ने कहा, धर्म्मपुस्तक में ऐसा लिखा है कि

खीष्टियान और आशावान की बात चीत।

अविश्वासी लोगों के ज्ञानचक्षु शैतान ने अन्धे किये हैं इस कारण ईश्वर की प्रतिमा के अर्थात् खीष्ट के तेजोमय सुसमाचार की ज्योति उन के हृदय में प्रकाश नहीं होती। भला एक बात मैं पूछता हूं। इस रीति के मनुष्यों के हृदय में कभी पाप के निमित्त अनुताप होता है वा नहीं। और पाप के कारण हमारी दुर्दशा होगी यह भय उन को कभी व्यापता है या नहीं। आशावान ने कहा, तुम हम से बड़े हो तो इस प्रश्न का उत्तर आप ही क्यों नहीं देते। तब खीष्टियान बोला, अच्छा तो मैं अपनी बुद्धि अनुसार कहता हूं। मेरी बुद्धि में यही आता है कि उन के मन में कभी कभी पश्चात्ताप तो होता है परन्तु वे स्वभाव ही से अज्ञान हैं यह नहीं समझते हैं कि ऐसी चेतना से हमारा मङ्गल होगा इस कारण उस को मन से बिसारने की नित्य चेष्टा करते हैं और अहंकार पूर्वक अपने मन की वांछानुसार आप अपनी मिथ्या प्रशंसा करते हैं। आशावान ने कहा, हां, मैं भी ऐसा समझता हूं कि भय लोगों का हितकारक है विशेष करके यात्रा के प्रारम्भ के समय उन को सत्पथ में गमन कराता है। खीष्टियान ने कहा, जो वह भय यथार्थ रीति का भय हो तो निःसन्देह उपकारक होता है क्योंकि धर्म्म पुस्तक में ऐसा लिखा है कि "परमेश्वर का भय ज्ञान का आरम्भ है?" (ऐयूब २८ : २८। भजन. १११ : १०। नीति १ : ७ और ९ : १०) यह बचन सुन आशावान ने पूछा, यथोचित भय के कौन कौन लक्षण हैं सो वर्णन करो। खीष्टियान ने उत्तर दिया, यथोचित भय के तीन लक्षण हैं (१) पाप के विषय में मन की जो चेतना त्राण का कारण होती है वही उस भय का मूल है। (२) वह भय परित्राण पाने के निमित्त खीष्ट के शरण जाने की इच्छा मन में उत्पन्न करता है। (३) वह भय मन में ईश्वर का और उस के वाक्य और पथ का आदर

जन्माता है और अन्तःकरण को कोमल रखता है और सावधान करता है ऐसा न हो कि कभी सत्पथ से रहित हो कर किसी अपने कर्म्म के द्वारा ईश्वर का अपमान करे वा अपनी आन्तरिक शान्ति नाश करे वा पवित्र आत्मा को दुःखित करे वा शत्रु को धर्म्म की निन्दा करने की जगह दे। आशावान बोला, हां, जो तुम कहते हो यही मेरे विचार में भी आता है पर अभी हम मोहभूमि से पार हुये कि नहीं खीष्टियान ने कहा, क्यों? क्या इस रीति की वार्त्ता से तुम तृप्त हुए हो। आशावान ने कहा यह तो नहीं पर कितनी दूर आये हैं यह जानने के लिये मैंने तुम से पूछा। खीष्टियान ने कहा, मोहभूमि पार होने को एक कोस रह गया है सो हम फिर उसी विषय की वार्त्ता करें। यह बात कह फिर बोला कि मन की चेतना से भय उत्पन्न होता है उस से उन का मङ्गल होगा यह बात अज्ञानी लोग नहीं जानते हैं इस कारण वे अपने अपने मन से उन सब बातों के दूर करने की चेष्टा करते हैं। तब आशावान ने पूछा, भला वे किस रीति से और किस उपाय से उन बातों को अपने मन से दूर करने की चेष्टा करते हैं। खीष्टियान ने उत्तर दिया। पहिले—यह चेतना और यह भय ईश्वर का कार्य्य है वे इस को न जान सर्वनाशक शैतान का काम है ऐसा समझ कर उस की निन्दा करते हैं। दूसरे—वे उस भय को विश्वास नाशक समझ कर उस से मन को फेरते हैं परन्तु सच पूछो तो उनके हृदय में विश्वास तो कुछ है नहीं। तीसरे—वे अहङ्कार कर के समझते हैं कि हमारे भय करने का कुछ कारण नहीं है इस लिये अभिमानी और निश्चिन्त हो रहते हैं। चौथे—निज धर्म्म से धर्म्मी ठहरने की जो कल्पना वे करते हैं उसे वह भय कष्ट करता है इसी लिये उस भय के निवारण के निमित्त और भी यत्न करते हैं। आशावान बोला,

हां, मैं भी इस बात को सत्य जानता हूं क्योंकि जब लों मैंने अपनी दशा को यथार्थ रीति से न जाना तब लों मेरी भी वैसी ही चेष्टा थी।

फिर खीष्टियान ने कहा, अच्छा इस समय हम अपने प्रतिवासी अज्ञान की बात छोड़ कर और कोई लाभजनक वार्त्ता का आरम्भ करें। आशावान ने कहा, इस से तो मुझे बड़ा आनन्द होगा पर हे भाई! तुम ही आरम्भ करो। इस बात को अङ्गीकार कर के खीष्टियान बोला, अच्छा तो मैं तुम से एक बात पूछता हूं। दश वर्ष हुये होंगे तुम्हारे देश का चणिक नाम एक मनुष्य था जो अपने को बड़ा धार्म्मिक दिखाता था उसे तुम जानते थे। आशावान ने उत्तर दिया, हां, मैं उसे क्यों नहीं जानता था। सरलपुर नगर से कोस एक पर जो निरनुग्रह नाम ग्राम है उस में पीठफेरू नाम एक मनुष्य के घर के निकट ही वह रहता था। खीष्टियान ने कहा, ठीक वह उसी के घर में रहता था। उस मनुष्य को एक बार चेतना हुई थी। मुझे जान पड़ता है कि उस समय उस को अपने पाप और पाप के फल के विषय में ज्ञान हुआ था। आशावान ने कहा, हां, मैं भी ऐसा ही जानता हूं क्योंकि मेरे घर से वह गांव डेढ़ कोस पर है इस लिये वह मनुष्य अनेक बार रोता हुआ मेरे पास आता था। उसे देख कर मुझे बड़ी दया आती थी और उस के त्राण पाने की मेरी कुछ आशा थी परन्तु सब जो प्रभु प्रभु कर के बोलते हैं स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे इस का प्रमाण मुझे उस की गति से मिला है। खीष्टियान ने फिर कहा, उस मनुष्य ने एक समय मुझ से कहा, मैं ने भी तुम्हारी भांति यात्रा करने का विचार किया है। फिर अकस्मात् स्वरचक नाम एक पुरुष से उस का मेल जो हो गया तो उस की और मेरी संगति छूट गई। तब

आशावान ने कहा, हम ने इस समय क्षणिक के विषय में जो वार्त्ता की है उस के साथ इस बात की भी कुछ चर्चा करने की इच्छा होती है कि वह और जो जो और लोग उस के समान हैं सो अकस्मात् धर्म्म मार्ग से फिर जाते हैं इस का कारण क्या है । खीष्टियान ने कहा, हां, ऐसा विचार करने से हम को लाभ होगा परन्तु तुम ही पहिले कहो मैं सुनूं । तब आशावान ने यह कथा कही कि मेरे विचार में इस के चार कारण हैं ।

चार कारणों का क्रम से वर्णन ।

पहिला—कारण यह है कि ऐसे लोगों के हृदय में यद्यपि एक रीति की चेतना होती है तथापि उन का स्वभाव बदल नहीं गया है इस लिये अपराध विषयक भय जब क्रम क्रम से क्षीण होकर उन्हें धर्म्म में चलाने का बल नहीं रखता है तब वे अपने पिछले आचरण पर फिर चलते हैं । वे वमनशील कुत्ते की भांति हैं । वह जिस समय वमन करता है कुछ अपनी इच्छा से नहीं करता है । जब लग उस को ओंक लगती है तब लग वह वमन करता है किन्तु जीव के शान्त होने से वह कुत्ता अपनी छांट से घिन न खा उसे फिर चाट लेता है । इस से यह कहावत सत्य है कि "कुकर अपनी छांट को फिर गया" । (२ पितर २ : २२) इस हेतु मैं कहता हूं कि ऐसे मनुष्य केवल नरक की पीड़ा के भय से भयातुर हो स्वर्ग प्राप्ति की चेष्टा करते हैं । फिर नरक और दण्ड के भय के शान्त होने से स्वर्ग और परित्राण प्राप्त करने की जो उन की चेष्टा थी सो भी शान्त होती है और भय और लज्जा जब छूट जाती है तब स्वर्गीय राज्य की अभिलाषा भी उन के मन से क्षय हो जाती है इस कारण वे अपने पहिले मार्ग में फिर चलने लगते हैं ।

द्वितीय—कारण यह है कि उन के चित्त में ऐसा ऐसा भय उत्पन्न होता है कि उन का चित्त दमन हो जाता है। मैं मनुष्यों से डर जाने की बात कहता हूं जिस के विषय में धर्म्म पुस्तक में भी लिखा है कि मनुष्य का भय फंदे में डालता है (नीति २६ : २५ इस लिये जब लों हृदय में नरक का भय स्थित रहता है तब लों वे स्वर्ग जाने का यत्न करते हैं परन्तु उस भय के घट जाने से मनुष्य का भय उन के हृदय में जागता है तब फिर वे यह विचार करने लगते हैं कि सावधान रहना उचित है क्योंकि उस अनजाने विषय के निमित्त वर्त्तमान सर्वस्व त्यागकर आपदा में पड़ना उत्तम नहीं है। ऐसी विवेचना कर के वे फिर विषय वासना में मग्न हो जाते हैं।

तृतीय—कारण यह है कि अभिमान के कारण वे धर्म्म को तुच्छ और नीच वस्तु जानते हैं और धर्म्मावलम्बी होना लज्जा समझते हैं इस से बाधा खाये वे नरक और आगामी क्रोध से निर्भय होकर फिर पूर्व आचरण करने लगते हैं।

चतुर्थ—कारण यह है कि वे कभी अपने अपने दोष और दण्ड की ओर दृष्टि करना नहीं चाहते हैं। जो दृष्टि करते तो चेतना पाप धार्म्मिक लोगों के आश्रयस्थान में रक्षा पाने की चेष्टा अवश्य करते। परन्तु उनकी वैसी इच्छा ही नहीं है। फिर पूर्वोक्त रीति से जब पाप की चेतना और दण्ड का भय और ईश्वरीय क्रोध का त्रास उनके हृदय से मिट जाता है तब वे और भी आह्लादपूर्वक अपने अन्तःकरण को कठोर कर जिस कर्म्म से मन अधिक अधिक कठोर हो वही कर्म्म किया करते हैं।

यह सुन खीष्टियान बोला, तुम ने यथार्थ विचार किया है कि उन का मन और इच्छा नहीं बदल गई यही उन के धर्म्म-त्याग का मूल है। मन के न बदलने से वे कैसे हैं जैसा चोर जो

विचारकर्त्ता के सन्मुख खड़ा हो थर थर कांपता है। उस के कांपने से जान पड़ता है कि वह अपने दोष के निमित्त बड़ा खेद करता है परन्तु वह दोष के लिये तो नहीं कांपता है किन्तु फांसी का काठ देखकर थरथराता है। इस का प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि जो उसे छोड़ दो तो वह तुरन्त जाकर फिर चोरी वा डकैती करने लगेगा क्योंकि उसकी वह दुष्ट मति नहीं छूटी। जो छूटती तो वह फिर ऐसा दुष्ट कर्म्म न करता। आशावान ने कहा, ऐसे लोग जो एक बार चेतना पाय फिर विषय में मग्न होते हैं उसका कारण क्या है।

चेतना पाया हुआ जन के फिर जाने के विषय में।

अब तुम उन के फिर जाने की रीति बताओ? ख्रीष्टियान बोला, अच्छा मैं प्रसन्नता से कहता हूं। प्रथम—तो वे ईश्वर और मृत्यु और अन्त-दिवस के विचार की सुरत भरसक मन से बिसार देते हैं। द्वितीय—गुप्त प्रार्थना और इन्द्रियदमन और चौकसाई और पाप के निमित्त खेद करना इत्यादि जो आन्तरिक धर्म्मक्रिया हैं इन्हें वे क्रम क्रम त्यागते हैं। तृतीय—ख्रीष्ट में आसक्त और उद्योगी ख्रीष्टियान लोगों का संग छोड़ देते हैं। चतुर्थ—धर्म्मपुस्तक पाठ करना और उपदेश सुनना और धर्म्म के विषय में वार्त्तालाप करना इत्यादि जो प्रगट धर्म्मक्रिया हैं उन सब को त्याग देते। पंचम—वे दुष्टता से धार्म्मिक आचरण में दोष देखने लगते हैं कि यदि किसी रीति से उन मे दोष पाये जायें तो वे उनके बहाने से धर्म्माचरण त्याग दें। षष्ठम—वे पाखण्डी लम्पट आदि लोगों से मित्रता कर उनकी संगति में रहा करते हैं। सप्तम वे कामादि के विषय में रसीली वार्त्ता करते हैं और जब किसी धार्म्मिक पुरुष में उस दोष का चिन्ह देखते हैं तब, बड़े प्रसन्न होते हैं क्योंकि उसकी देखा देखी आप भी वैसा कर सकते हैं। अष्टम—

वे लघु पातकों का खेल सा समझते हैं। नवम—इस भांति अपने मन को कठोर करके वे अपने स्वभाव को प्रकाश करते हैं और महाभ्रम से भ्रमित हो जो ईश्वर की कृपा उन्हें न बचावे तो झट स्वर्गनाश सागर में डूब जाते हैं।

—

बीसवाँ अध्याय ।

बियूला देश से होकर जाना ।

इस पीछे मैं ने स्वप्न में देखा कि इस भांति से यात्रियों ने मोहभूमि से पार होकर बियूला नाम भूमि में प्रवेश किया। यशायाह ६२:४-१२ । श्रेष्ठ गीत २:१०-१२) इस स्थान की वायु सुगन्धित और सुखदायक थी और सीधा पथ उस के बीच से जाता था इस लिये वे सुख और आनन्द से कुछ काल वहां रहे। वहां चारों ओर सुन्दर सुन्दर फुलवारियां लगी थीं उन में मनोहर स्वच्छ पुष्प खिल रहे थे और वृक्षों पर भांति भांति के पक्षी मीठी मीठी मनभावनी बोलियां बोल रहे थे। उस देश में सूर्य्य सर्वदा उदय रहता था वहां रात्रि न होती थी। यह देश मृत्युछाया की तराई से और आशाभंग दानव के अधिकार से बाहर था और वहां से दुविधा दुर्ग दिखाई भी न देता था किन्तु उस स्थान से स्वर्गीय राजधानी जिस में यात्रियों को पहुंचने की अभिलाषा थी स्पष्ट दीखती थी फिर स्वर्गपुर के किसी निवासी से उन की भेंट भी होने लगी क्योंकि यह स्थान स्वर्ग के सिवाने ही पर था इस कारण वहां के दूत यहां आया जाया करते थे। जैसा बर और कन्या की परस्पर प्रीति से सुख होता है तैसा सुख इस ठौर उन्हें व्यापता था और जिस रीति से बर दुलहिन

से आनन्दित होता उस रीति से उस के प्रभु को उन के विषय में आनन्द होता था। वहां भांति भांति के खाद्य पदार्थ थे जिन की वे इच्छा करते थे वही उन्हें मिलता था। यहां उन्हों ने राजधानी से उच्च स्वर में यही वाणी सुनी तुम सियोन की कन्या से कहो कि देखो तुम्हारा त्राणकर्त्ता आता है देखो जो प्रतिफल वह देने पर है सो उस के हाथ में है। विशेष करके इस देश के लोग इन यात्रियों को पवित्र प्रजा और परमेश्वर के मुक्ति पाये हुए और मनोनीत लोग कहकर संबोधन करने लगे।

इस प्रदेश में चलने के समय जैसा उन्हें आनन्द भया वैसा मार्ग भर में उन्हें आनन्द कहीं नहीं हुआ था। फिर जैसे जैसे राजधानी के निकट पहुंचते थे तैसे तैसे वह स्पष्ट दिखाई देने लगी। वह नगर मोती माणिक्यादि रत्नों से खचित और उस का सम्पूर्ण मार्ग सुवर्ण से रचित था और सूर्य्य की किरण पड़ने से अधिक चमकता था। ख्रीष्टियान यह महातेज देख अत्यन्त आकांक्षा से पीड़ित हुआ और आशावान भी उसी रोग में ग्रस्त हुआ। और रोग से पीड़ित होकर वे आर्त्त शब्द कर कहने लगे, हे भाइयो! तुम को हमारा प्रियतम दिखाई दे तो तुम उस से कहना कि हम प्रेम से विवश हो पीड़ित हो रहे हैं। थोड़ी बेर में जब उन्हें कुछ बल मिला और वे प्रेम की पीड़ा सह सके तब फिर आगे बढ़े। जब राजधानी के और थोड़े निकट पहुंचे तब राजपथ की अलंग में मनोहर मनोहर वाटिका देखीं जिनके फाटक पथ की ओर खुले थे। फाटक पर माली खड़ा था उससे वे पूछने लगे, हे भाई! ये सब रमणीय वाटिका किसकी हैं। माली ने उत्तर दिया, ये वारियां

बियूला देश का सुख और आनन्द।

महाराज की हैं। वे उस के सुख के निमित्त और यात्रियों के तोष के निमित्त भी लगाई गई हैं। यह कह वह उन्हें बाटिका के भीतर ले गया और मनोहर पुष्प फलादि दिखा भोजनादि से इन की थकावट दूर की। फिर राजा के बिहार के निमित्त जो सुन्दर सुन्दर कुंज लगाये गये थे सो भी उन्हें दिखाये। इस रीति से वे उत्तम भोजन पानादि से तृप्त हो उस स्थान में सो गये। और मैं ने स्वप्न में यह भी देखा कि ये यात्री लोग नींद में बहुत सी वार्ता करने लगे। इस से मुझे आश्चर्य्य हुआ तो माली ने मुझ से कहा, तुम इस बात के लिये आश्चर्य्य क्यों करते हो। इस बाटिका के द्राक्षादि फलों का यह स्वाभाविक गुण है कि जो इन्हें खाता है सो इन की मिठास के गुण से नींद में वार्त्तालाप करता है। (श्रेष्ठ गीत ७ : ६)

फिर मैं क्या देखता हूं कि दोनों यात्री जब जागे तब आगे बढ़ कर नगर में जाने का उद्योग करने लगे किन्तु वह नगर निर्मल सुवर्ण से रचित था और सूर्य्य की किरण के पड़ने से ऐसा चमकता था कि उन की आंख देखने से चौंधिया जाती थीं इसलिये उन्हें चश्मा लगाना पड़ा। (प्रकाश. २१ : १८ और २ करिन्थ. ३ : ८) इतने में दो तेजोमय मनुष्य सुवर्ण वर्ण वस्त्र पहिरे इन के निकट आये। उन्होंने आते ही इन यात्रियों से पूछा कि तुम कहां से आये हो और कहां कहां तुम ने निवास किया और मार्ग में तुम्हारी क्या क्या दुर्दशा हुई और तुम्हें शान्ति किस किस प्रकार से मिली। जब इन्होंने अपना वृत्तान्त कह सुनाया तब उन पुरुषों ने उन से कहा कि अब तुम्हें और दो कठिनता रह गई हैं इन से जब पार हो जाओगे तब राजधानी में पहुंचोगे। तब खोष्टियान और उस के साथी ने उन से कहा, तुम कृपा करके हमारे साथ साथ चलो। उन्होंने कहा, अच्छा

चलेंगे पर तुम को अपने अपने विश्वास के द्वारा उस नगर में प्रवेश करना होगा। फिर मैं ने देखा कि जहां से राजधानी का द्वार दिखाई देता था वहां तक वे दोनों इन के साथ साथ गये।

फिर मैं स्वप्न में क्या देखता हूं कि उन के और उस द्वार के बीच से एक बड़ी गम्भीर नदी है। न तो वहां पुल है न कोई नाव है जिसे वे पार हो सकते। यह देख कर यात्री बहुत भयमान हुये। तब उन दोनों तेजोमय पुरुषों ने उन से कहा, इस नदी के बीच से होकर तुम्हें जाना पड़ेगा नहीं तो द्वार पर कभी नहीं पहुंच सकोगे तब यात्रियों ने पूछा, क्यों महाराज ! इस नदी के पार होने बिना और कोई मार्ग वहां जाने का नहीं है।

काल नदी का वर्णन।

उन्होंने कहा, हां, है किन्तु हनोक और एलियाह इन दो मनुष्यों के बिना सृष्टि के प्रारम्भ से जाने की अनुमति किसी को नहीं मिली और जब लों अन्तदिवस को तुरही न बजेगी तब लों किसी को नहीं मिलेगी। यह बात सुन यात्री लोग नदी पार होने की आशा छोड़ घबराने लगे; विशेष कर ख्रीष्टियान बिकल हो इधर उधर देखने लगा पर दूसरा कोई मार्ग सूझ न पड़ा। फिर उन पुरुषों से पूछा कि इस नदी का जल सर्वत्र समान है वा नहीं। तब उन्होंने कहा सुनो भाइयो समान नहीं है किन्तु स्वर्गाधिपति पर जैसा जिस का विश्वास है तैसा ही थोड़ा वा गम्भीर जल उस को मिलता है सो इस बात में हम तुम्हारा कुछ उपकार नहीं कर सकते।

यह सुनकर उन्होंने नदी पार जाने के लिये जल में प्रवेश किया किन्तु ख्रीष्टियान जब डूबने लगा तब भयातुर हो रोते रोते आशावान से बोला, हे भाई ! मैं तो बड़े गम्भीर जल में पड़ा हूं बड़ी बड़ी तरंगें मेरे सिर पर से होकर जाती हैं इन में मैं डूबा

जाता हूं। आशावान ने कहा, भाई! साहस करो यह देखो मुझे तो थाह मिलती है और मिट्टी कड़ी है। तब खीष्टियान बोला, हाय! हाय!! मेरा तो प्राण जाता है मुझे तो मृत्यु ने घेरा है मैं वह देश जहां दूध और मधु बहते हैं न देखूंगा। यह कहते कहते वह बड़े घोर अन्धकार में पड़ा और भयातुर हो ऐसा घबराया कि मार्ग में जो जो सन्तोषजनक पदार्थ देख आया था उन सब को भूल गया और मारे भय के उन्मत्त की नाईं बड़बड़ाने लगा। उस के वचन से अनुमान होता था कि उस को यही सन्देह हुआ कि मैं इसी नदी में नष्ट होऊंगा और राजधानी में न पहुंचूंगा। इस के सिवा यात्रा करने के पहिले और यात्रा के बीच में जो जो पाप उस ने किये थे उन के निमित्त शोकाकुल था। फिर भूत प्रेतादि के दर्शन से उस का मन अधिक विकल भया यह भी उस की बात से और अन्य अन्य प्रमाणों से भी जाना जाता था। ऐसी दशा होने से आशावान ने अपने भाई का सिर जल के ऊपर उठाने का बहुत यत्न किया तौभी वह किसी समय डूब जाता था और कभी फिर मृतवत् हो उछल आता था। इस रीति की दुर्दशा देख आशावान उस की शान्ति के निमित्त कहने लगा, हे भाई, स्वर्गद्वार दिखाई देता है और हमारी अगुवाई के निमित्त कई पुरुष द्वार पर खड़े हैं। तब खीष्टियान ने कहा, अरे भाई! मैं तो अब मरा वे लोग तुम्हारी ही बाट जोहते हैं क्योंकि जब से तुम्हारा साथ हुआ है तब से देखता हूं कि तुम्हारी आशा प्रबल है। आशावान ने उत्तर दिया, भाई, केवल मेरी ही नहीं किन्तु तुम्हारी भी प्रबल है। खीष्टियान ने कहा भाई, जो मैं सीधे पथ में ही रहता तो इस समय प्रभु अवश्य मेरी सहायता के निमित्त आता। मैं अत्यन्त पापी हूं इसी

खीष्टियान डूबने लगता है।

लिये उस ने मुझे इस दुर्दशा में छोड़ दिया है। आशावान ने कहा, भाई, मैं देखता हूं कि जो कष्ट तुम इस जल में पाते हो उस में ईश्वर से सताये जाने का कोई सबूत नहीं है क्योंकि दुष्ट लोगों ही के विषय में लिखा है कि वे मृत्यु के समय निर्भय रहते हैं उनका शरीर हृष्ट पुष्ट है अन्य मनुष्यों की भांति उन को कष्ट नहीं होता परन्तु और मनुष्यों के तुल्य उन को विपत्ति भी नहीं होती। (भजन ७३ : ४, ५) यह वचन क्या तुम भूल गये हो। ईश्वर के त्यागने से तुम को ऐसा क्लेश होता है सो नहीं। तुम जो दुःख पाते हो उसका हेतु यह है कि पथ भर में जो जो तुम पर अनुग्रह हुआ है इस दुःख के समय तुम उसका स्मरण करके ईश्वर पर भरोसा रख सकते हो वा नहीं इसकी परीक्षा इस दुःख के द्वारा होती है। फिर मैंने स्वप्न में देखा कि जब आशावान ने उसे इतना धीरज दिया तब ख्रीष्टियान कितनी बेर तक सोचता रहा। इतने में आशावान ने फिर कहा, हे भाई! सुस्थिर हो यीशु ख्रीष्ट तुम को स्वस्थ करता है। यह बात सुनते ही ख्रीष्टियान प्रसन्न हो उच्च स्वर से बोला, हां, हां, मैं देखता हूं वह मुझ से यही बात कहता है "जब तू जल में चलेगा मैं तेरे साथ होऊंगा जब तू नदी के बीच से होके जायगा वह तुझे न डुबावेगी," इस बात से उन दोनों को साहस हुआ और उस समय से उनके शत्रु पाषाण के समान चुप हो रहे। उस स्थान से वे पार लौं नदी का जल थोड़ा था सो ख्रीष्टियान को थाह मिल गई। इस रीति से उस नदी से पार हुए।

यात्रियों का नदी पार पहुँचना।

तब उन्होंने देखा कि वे ही दो तेजोमय पुरुष जिन से हम उस पार बातें करते थे इस पार भी हमारी बाट जोहते हुए

खड़े हैं। जब यात्री नदी से निकले तब उन्होंने तुरन्त आकर आदर संयुक्त उन से कहा, हम परित्राणाधिकारी लोगों की सेवा के निमित्त भेजे हुए दूत हैं। यह बात कहकर वे इन के साथ द्वार की ओर चले। फिर मैं ने यह आश्चर्य्य देखा कि यद्यपि वह नगर अत्यन्त ऊंचे पर्वत पर बसा है तथापि यात्री उस पर सहज ही चढ़ गये। इस का कारण यही था कि उन दोनों दूतों ने यात्रियों को हाथ पकड़ कर चढ़ा दिया। और वे जिन नाशमान वस्त्रों को पहिरे हुए नदी में पैठे थे उन्हें नदी के जल में छोड़ कर बाहर निकल आये थे। उस नगर की नेव भी मेघ से कहीं ऊंची थी तौभी उन तेजस्वी पुरुषों की सहायता से वे सहज ही आकाश मार्ग होकर शीघ्र नगर के द्वार की ओर चढ़े और नदी पार होने और इन तेजोमय संगियों के मिलने से बड़े प्रसन्न हो मनोहर वार्तालाप करते हुए चले। निज कर जिस स्थान को जाते थे उस स्थान की महिमा की चर्चा करने लगे। तब उन तेजोमय दूतों ने कहा, उस स्थान के महात्म्य और सुन्दरता का वर्णन मुख से नहीं कर सकते हैं। यहां सियोन पर्वत और स्वर्गीय यरूशलीम और अगणित दिव्य दूत और सिद्ध धार्म्मिकों की आत्मा हैं। (इब्रि. १२ : २२-२४) अब तुम ईश्वर के स्वर्गलोक को जाते हो जहां अमृतवृत्त देखोगे और उसके अक्षय फल तुम को खाने को मिलेंगे। उस स्थान में पहुंचने से तुम को अपूर्व श्वेत वस्त्र पहिरने को मिलेंगे और तुम सर्वदा महाराज के साथ फिरते हुए कथा वार्ता करोगे। (प्रकाश २ : ७ और ३ : ४,५ और २२ : ५) पृथ्वी पर रहते हुए रोग व्याधि शोक सन्ताप मृत्यु आदि जो जो कष्ट तुम ने पाये उन का वहां लेशमात्र भी नहीं है क्योंकि सम्पूर्ण प्राचीन विषय बीत

स्वर्गपुर में प्रवेश।

गये हैं। (यशायाह ६५ : १६, १७) इब्राहीम और इसहाक और याकूब और भविष्यद्वक्ता लोग और धर्म्म मार्ग में चलनेहारे साधु पुरुष जिन्हें ईश्वर ने आगामी दुःख से परे रक्खा और वे अपने अपने ठांव विश्राम करते हैं उनके निकट तुम अब जाते हो।

तब यात्रियों ने पूछा, उस पवित्र स्थान में हमें क्या क्या करना पड़ेगा उन्हों ने कहा, वहां तुम अपने परिश्रम का प्रतिफल पाओगे और मार्ग के महाराज के निमित्त रोदन और क्लेश और प्रार्थना रूपी जो बीज बोया है उस का फल भोगोगे। (गलाति ६ : ७,८) उस स्थान में सुवर्ण का मुकुट पहिरोगे और नित्य नित्य पवित्र महाराज का दर्शन करोगे क्योंकि जैसा उसका स्वरूप है तैसा ही तुम्हें दिखाई देगा। (१ योहन ३ : २) और तुम ने जिस की सेवा के निमित्त शरीर की दुर्बलता के कारण संसार में अति कष्ट उठाया है उस की सेवा वहां जाने से आनन्द के ध्वनि से स्तुति गान सहित नित्य करोगे और सर्वाधिपति के सुन्दर स्वरूप और मधुर वाक्य को देख सुन तुम्हारे नेत्र श्रवणादि और पुलकित होंगे। फिर वहां जो तुम्हारे भाई बन्धु धार्म्मिक लोग प्रथम पहुंचे हैं उन से भी तुम्हारी भेंट होगी और उन से सत्संग और वार्तालाप कर सकोगे और जो लोग इस स्थान में पीछे आवेंगे उनकी अगुवाई आनन्दसहित करने को जाओगे। अधिक क्या कहें तुम अतुल्य ऐश्वर्य्य को प्राप्त कर महाराज के साथ रथ पर चढ़ोगे और जब मेघारूढ़ हो तुरही के शब्द सहित आकर विचारासन पर बैठेंगे तब तुम भी उस के निकट बैठोगे और जब वह पापियों के दण्ड की आज्ञा देगा चाहे वे पापी लोग मनुष्य हों चाहे दूत हों उन

स्वर्गपुर की महिमा और आनन्द।

के दण्ड के विषय में तुम्हारा भी परामर्श सुना जायगा क्योंकि जैसे वे महाराज के शत्रु हैं तैसे ही तुम्हारे भी शत्रु हैं । अन्त में जिस समय महाराज अपनी राजधानी को फिर जायगा उस समय तुम भी महा विभव से तुरही के ध्वनि के सहित उसके साथ जाओगे और सर्वदा उस के साथ रहोगे । (१ थिसलोनि ४ : १३-१७ । यहूदा १४, १५ । दानियेल ७ : ९, १० और १ करिन्थि ६ : २, ३)

इस रीति की वार्ता करते करते जब वे नगरद्वार के निकट पहुंचे तब स्वर्गीय सेना में से एक दल उनको लिवा लाने को निकल आया । तब उन दो तेजोमय दूतों ने उस सेना से कहा,

नगरद्वार में स्वागत ।

इन यात्रियों ने संसार में हमारे प्रभु से स्नेह कर उसके पवित्र नाम के अनुराग से अपना अपना सर्वस्व त्याग दिया इस कारण हम को इन के लिवा ले जाने की आज्ञा महाराज से मिली है । अब ये लोग प्रवेश कर परमानन्द से अपने त्राणकर्त्ता प्रभु के मुखारविन्द का दर्शन करेंगे । यह बात सुनकर सेना ने मधुर वचन से कहा, धन्य वे जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाये गये हैं । (प्रकाश १९ : ९) तब अन्य अन्य कितने महाराजा के तुरही बजानेहारे सेवक तेजोमय वस्त्र पहिरे हुए यात्रियों के स्वागत के निमित्त मधुर और उच्च ध्वनियुक्त तुरही बजाते बजाते आकर उन से मिले और उनके बजाने के ध्वनि से सम्पूर्ण आकाशमण्डल गूंज उठा । इन्होंने भी ख्रीष्टियान और आशावान को मृत्युलोक से आने की और स्वर्गपुर पहुंचने की लाखों बार बधाइयां दीं इस रीति से स्वर्ग के अनेक निवासी इन यात्रियों की अगवानी करने आये और उन की रक्षा के निमित्त उनको चारों ओर से घेर लिया और बड़े आनन्द से

मधुर मधुर गान और तुरही का शब्द करते हुए अन्तरिक्ष मार्ग से साथ ले चले। स्वर्ग के लोग उन से भेंट करने में और उनके सत्संग में कैसे आनन्दित हुए तिस को तुरही बजानेवाले अपनी तुरही के शब्द द्वारा यात्रियों को जताते गये। इसके देखनेवाले लोगों को यह जान पड़ता था कि मानो स्वर्ग के सब लोग इकट्ठे निकलकर इनके लेने को आये हैं। और स्वर्गीय लोगों के दर्शन से और सुन्दर मृदु बाजे के सुनने से यात्री ऐसे मुदित और हर्षित हुए कि उन्हें जान पड़ता था कि हम अब स्वर्ग ही में आ पहुंचे हैं। इस स्थान से नगर उनको दिखाई देने लगा और मन में कहते थे कि हमारे आने के कारण स्वर्गपुर के सब घंटे आनन्द के मारे बज रहे हैं। फिर सोचा कि अहा! इन्हीं लोगों के साथ हम इस परम सुन्दर स्थान में सदा सर्वदा रहेंगे। इस भांति जब लों वे द्वार के निकट पहुंचे तब लों जैसा आनन्द हुआ उस को न लिख सकते न वर्णन कर सकते हैं।

जब इस रीति से यात्री द्वार पर पहुंचे तो उस पर सुवर्ण के अक्षरों में ये वाक्य लिखे देखे यथा जो उसकी आज्ञा पालन करते हैं सो धन्य हैं क्योंकि वे अमृतवृक्ष के अधिकारी होंगे और इस द्वार में होकर नगर में प्रवेश करेंगे। (प्रकाश २२ : १४) फिर मैंने स्वप्न में देखा कि इन दोनों ने उन दो तेजस्वी पुरुष की आज्ञानुसार पुकारा तो हनोक मूसा एलियाह इत्यादि अनेक लोग द्वार के ऊपर से देखने लगे। तब उन दो तेजोमय दूतों ने कहा, महाराज के स्नेह से ये दोनों यात्री नाशनगर से आये हैं। इस बात के कहते ही यात्रियों ने जो पत्र यात्रा के आरम्भ में पाये थे सो दे दिये। वे पत्र महाराज के पास पहुंचाये गये। महाराज ने बांचकर कहा, वे मेरे प्रिय सेवक कहां हैं। उत्तर दिया गया कि महाराज वे द्वार पर खड़े हैं। तब महाराजा

ने आज्ञा दी कि द्वार खोल दो सत्यता के आसक्त धार्म्मिक लोग नगर में प्रवेश करें (यशायाह २६ : २)

यात्रियों के हेतु स्वर्ग द्वार का खोला जाना।

फिर मैंने स्वप्न में देखा कि इन दोनों ने प्रवेश किया और द्वार के भीतर जाते ही उन का स्वरूप बदल गया और सुवर्ण के सदृश तेजोमय वस्त्र उन्हें पहिराये गये और उसी समय कई एक पुरुष बीणा और मुकुट ले आये और प्रतिष्ठा के निमित्त उन के सिर पर मुकुट और स्तुति के निमित्त उन के हाथ में बीणा दी। तब मैंने स्वप्न में सुना कि आनन्द के कारण राजधानी के समस्त घंटों का शब्द होने लगा और यात्रियों से यह बात कही गई कि तुम अपने प्रभु के आनन्द के भागी होओ। (मत्ती २५ : २३) यह बात सुनते ही ये दोनों भी उच्च स्वर से गान करने लगे कि जो सिंहासन पर बैठा है उसको और मेम्ने को धन्यवाद, और प्रतिष्ठा और गौरव और शक्ति सदा सर्वदा बने रहें। (प्रकाश ५ : १३)

जब इन यात्रियों के लिये द्वार खुला तब मैं ने अवकाश पाय नगर के भीतर दृष्टि कर देखा कि नगर सूर्य्य के समान तेजोमय था उस की सब सड़कें सुवर्ण से रचित थीं और वहां जिन जिन लोगों को फिरते देखा उन सबके सिर पर मुकुट और हाथ में खजूर के पत्र और गुणानुवाद के निमित्त सुवर्णमय वीणायें थीं। वहां अनेक लोगों को पंख विशिष्ट देखा वे नित्य परस्पर यही कहते थे प्रभु परमेश्वर पवित्र है। पवित्र है। पवित्र है। मैं ने जो सब बातें देखीं और सुनीं उन के कारण मुझे द्वार के बन्द होने पर वहां के लोगों के संग रहने की बड़ी लालसा हुई।

मैं यह सब बातें विचारता था कि इतने में पीछे ज्यों फिरके देखा त्यों क्या देखता हूं कि पूर्वोक्त अज्ञान भी उसी नदी के

तीर पर आकर खड़ा हुआ पर उन दो पुरुषों ने जितना कष्ट पार होने में पाया था उस का आधा भी उस ने न पाया और शीघ्र ही पार हो गया। कारण यह कि व्यर्थाशा नाम एक मनुष्य उस समय वहां नाव ले आया था उस की सहायता से वह सहज से नदी पार होकर अन्य यात्रियों की भांति द्वार पर जाने के लिये पर्वत पर चढ़ने लगा। पर जैसे उन दो यात्रियों के लिये तेजोमय दो पुरुष आये थे तैसे इस की सहायता के निमित्त कोई न आया वह अकेला ही उस पर्वत पर चढ़ द्वार पर जा खड़ा हुआ। फिर द्वार के ऊपर लेख देख उस ने मन में विचारा कि शीघ्र ही मुझे इस से भीतर जाने की अनुमति मिलेगी। ऐसा विचार वह उस द्वार के किवाड़ को खड़खड़ाने लगा। तब द्वार के ऊपर के कितने एक लोगों ने इस से पूछा, तू कहां से आया है और क्या चाहता है। इस ने कहा, मैं ने राजा के सन्मुख भोजन पान किया है और उस ने मेरे जन्म स्थान के पथों में शिक्षा दी है। जब उन्हों ने उस से अधिकारपत्र मांगा कि अपना पत्र दे हम उसे महाराजा को दिखावें। उस ने अपने सब वस्त्र ढूंढ़े पर पत्र न मिला तब उन्हों ने कहा, क्या तेरे पास पत्र नहीं है। यह चुप हो रहा उन्हों ने महाराज से जाकर इस का समाचार कहा। महाराज ने कहा, उसे दर्शन न होगा और जो दोनों तेजोमय पुरुष खीष्टियान और आशावान की अगुवानी करने गये थे उन्हीं को यह आज्ञा मिली कि इस अज्ञान के हाथ पैर बांधकर उसे दूर ले जाओ। फिर मैं ने देखा कि वे दोनों पुरुष प्रभु के आज्ञानुसार उस के हाथ पैर बांधकर उसे आकाशमार्ग होकर ले गये और पर्वत की अलंग में जो द्वार मैं ने देखा था उस के भीतर उसे कर दिया। तब मुझे जान पड़ा

अज्ञान का नदी पार करना।

कि जैसा नाशनगर से नरक का एक पथ जाता है वैसा ही स्वर्गपुर के द्वार पर से भी वहां जाने का एक मार्ग है। इस पर मैं जो जागा तो समझ गया कि यह स्वप्न ही था।

चौपाई।

स्वप्न कथा जो ताहि सुनाई। अर्थ तेहि तुम देहु लगाई॥
जातें मैं अरु लोग लुगाई। सत्य ज्ञान पावें सुखदाई॥
यथार्थहि अर्थ लगावहु ज्ञानी। भिन्न अर्थ तें बहु बिध हानी।
एते तब जानि रहहु सचेते। लाभ ठाम हो हानि न जेते॥

सवैया।

बाहरि अर्थहि त्याग दये रससार सुअर्थ निचोरिके पिज्जै।
कोप कुहांस बिहाय सुमंत्रनि मानि सदा हिय ठामहि दिज्जै॥
मैं उपमा जस दी तस बालक औ जड़ कारन जानि गुनज्जै।
जौं इमि बूझि सचेत रहो तुम तौं दिवधाम निजै करि लिज्जै॥

चौपाई।

सोना बहु मूलक मल साथें। जौं आवहि बुधवन्तनि हाथें॥
मल मार्जे पेलहिं अति दूरा। शुद्ध कनक लें मन परिपूरा॥
उपमा पट अब तुम देहू टारो। फेंकि त्वचा करु फल आहारी॥
जस ज्ञान लहे सुखदायक भारी। दीन्हि स्वप्नमह तस परचारी॥

दोहा।

सार त्वचा मल कनक जौं मानहु एक समान।
बहुरे देखव स्वपन में. जातें सुधरे ज्ञान॥

इति

यात्रा स्वप्नोदय पूर्वार्द्धसमाप्तः।

यात्रा स्वप्नोदय।

द्वितीय भाग।

ख्रीष्टियान की स्त्री और बालकों का स्वर्गपुर की यात्रा करना।

पहिला अध्याय।

हे प्रिय पाठको! जिस रीति से मैं ने अपने स्वप्न में ख्रीष्टियान को बड़े कष्ट की यात्रा द्वारा स्वर्गपुर पहुंचते देखा पूर्वार्द्ध में उस का वर्णन करने से निःसन्देह तुम्हारा उपकार हुआ होगा और मेरे चित्त को प्रसन्नता हुई। और उसके स्त्री पुत्रादि ने सब उस के संग यात्रा करना किसी प्रकार से अङ्गीकार न किया तब वह अकेला यात्रा को गया क्योंकि उस ने कुटुम्ब परिवार के साथ नाशनगर में अपने नाश के भय से रहना उचित न जाना परन्तु सब को त्याग कर चला गया इस बात को भी मैं वर्णन कर चुका हूं। परन्तु अनेक कार्यादि से फिर इतना अवकाश न मिला कि मैं उस देश जा ख्रीष्टियान के जो कुटुम्ब स्वदेश में रह गये उन का वृत्तान्त पूछ कर वर्णन करूं। परन्तु थोड़े दिवस हुये कि मैं किसी कार्य के निमित्त फिर उस नाशनगर की ओर चला और उस नगर से थोड़ी दूर पर एक बन में रात्रि व्यतीत करने के निमित्त टिका। जब सो गया तो फिर स्वप्न देखने लगा।

इस स्वप्न में क्या देखता हूं कि एक वृद्ध पुरुष मेरे शयन स्थान के निकट हो कर गया और मैं ने जब जाना कि जहां मुझे

जाना है उसी ओर यह भी जाता है तब मैं उठ कर उस के साथ हो लिया । फिर जाते जाते जैसी पथिकों की रीति है तैसे हम दोनों परस्पर वार्त्ता करने लगे । मैं ने उस वृद्ध से जिस का नाम बुद्धिमान था यह बात पूछी कि हे वृद्ध, हमारे पथ की बाईं ओर उस तराई में वह कौन सा नगर दिखाई देता है । उस पुरुष ने कहा, उस का नाम नाशनगर है वह भारी बस्ती है पर वहां के लोग महा आलसी और दुर्दशाग्रस्त हैं । मैं ने कहा, हां, मैं ने भी समझा था कि यह वही नगर है । उस में होकर मैं एक बार गया था इस लिये तुम जो कुछ वहां के लोगों के विषय में कहते हो सो सब सत्य है यह मैं आप भी जानता हूं । बुद्धिमान ने कहा, हां, वे ऐसे ही हैं जो वे प्रशंसा योग्य होते तो मैं प्रसन्नता से उन की प्रशंसा करता किन्तु सत्य कहना उचित है । तब मैं ने कहा, हे महाराज ! मैं देखता हूं कि आप बड़े सज्जन हैं उत्तम वार्त्ता के कहने और सुनने से आप को आनन्द होता है इस कारण आप से निवेदन करता हूं कि इस नगर का रहने वाला ख्रीष्टियान नाम एक मनुष्य यात्रा कर स्वर्गीय राजधानी को गया था उस का कुछ वृत्तान्त आपने सुना है । बुद्धिमान ने कहा, हां, सुना क्यों नहीं है । उस पर उस मार्ग में जाते हुये क्लेश, विपत्ति, युद्ध, बन्धन, रोदन, भय, शङ्का शोकादि जो कुछ आपदा बीती थीं वह सब मैं ने सुनी है । मैं और भी कहता हूं कि हमारा सम्पूर्ण देश उस की कीर्ति से परिपूरित हो रहा है और जिन लोगों ने एक बार भी उस का या उस के कार्य का समाचार सुना है वे लोग उस के वृत्तान्त की पुस्तक बड़े यत्न से ढूंढ़ ढूंढ़ पाठ करते हैं । अधिक क्या कहूं उस ने यात्रा में जो सङ्कट धीरता से सहा उसकी चर्चा सुन कर अनेक लोग उसकी प्रशंसा करते हैं । जिस समय वह इस देश में रहता था उस

काल सब कोई उसे उन्मत्त कहते थे किन्तु जब वह विदेश गया है तो इस समय सब लोग उस का बखान करते हैं। अब लोग ऐसा कहते हैं कि वह जिस जगह गया है वहां बड़ा सुख भोग करता है और जो लोग उस की नाईं कष्ट उठाना स्वीकार नहीं करते हैं उन का भी जी उस कष्ट का फल सुनकर ललचाता है। मैं ने कहा, जो उन का यथार्थ ज्ञान होता तो अब वह परम-सुख का भोगी है क्योंकि वह तो अमृत जल के सोते के निकट रहता है इस कारण इष्ट फल प्राप्त करने में उस को कुछ परिश्रम करना नहीं पड़ता है। अब उसका दुःख मिश्रित नहीं है। पर यह तो बताइये कि लोग उस के विषय में क्या क्या कहते हैं। बुद्धिमान ने कहा, अद्भुत वार्त्ता कहते हैं।

खीष्टियान के विषय में विचार।

कोई तो यह कहता है कि अब वह श्वेत वस्त्र पहिरे फिरता है और उस के गले में सुवर्ण का हार है और सिर पर मोतियों से खचित सुवर्ण मुकुट है। (प्रकाश. ३ : ४) कोई कहता है कि यात्राकाल में जो तेजोमय पुरुष कभी कभी उस को दर्शन देते थे अब वह उन्हीं पुरुषों के सत्सङ्ग में रहता है और जैसा यहां मित्रों में प्रीति संयुक्त वार्त्तालाप होता था वैसा वह वहां उन के साथ करता है। यह बात भी उस के विषय में जानी गई है कि जिस स्थान में वह रहता है उस ठौर के राजा ने उस को अपने घर में रमणीय रत्नजटित वासस्थान दिया है। उस राजा की ऐसी कृपा उस पर है कि वह नित्य नित्य राजा के साथ खानपान कथोपकथन आदि सत्सङ्ग कर के उस का अनुग्रहपात्र हुआ है। (जकरियाह ३:७। लूक १४:१४, १५) कोई कोई यह भी अनुमान करते हैं कि उस के यात्री होने के समय में जिन पड़ोसियों ने उसे तुच्छ जाना और उस का परिहास किया उस का स्वामी

अर्थात् उस देश का अधिपति थोड़े दिन पीछे आकर उन का यथार्थ विचार करेगा। (यहूदा १४, १५ पद) लोग कहते हैं कि अब उस पर राजा का इतना स्नेह है कि यात्राकाल में जो जो उस का अपमान हुआ उस को राजा अपना अपमान समझता है और अवश्य उस का प्रतिफल देगा। (लूक १० : १६) यह कुछ आश्चर्य्य की बात भी नहीं क्योंकि राजा के प्रेम ही के कारण खीष्टियान ने अपने प्राण को निछावर कर यात्रा की। तब मैं ने कहा, हां, तुम सत्य कहते हो। ये सब बातें सुनने से मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ है कि वह सज्जन बेचारा अपने परिश्रम से विश्राम पाकर अभी परमाह्लाद से अपने शोक सन्ताप का फल भोग करता है और शत्रुओं के अस्त्र शस्त्र से बचकर सम्पूर्ण आपत्ति से मुक्ति पाई है। (प्रकाश. १४ : १३। भजन १२६ : ५, ६) और इस देश में उसकी चर्चा सर्वत्र व्याप रही है यह भी आनन्द की बात है क्योंकि इसके द्वारा और और लोगों का भी कुछ उपकार होगा। हे महाराज ! एक वार्त्ता सुनने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई है सो मैं तुम से पूछता हूं।

खीष्टियानी की कथा।

खीष्टियान के स्त्री पुत्रादि के विषय में तुम ने कुछ सुना है। हाय ! हाय !! मैं नहीं जानता कि वे दीनहीन आज लों क्या करते हैं। बुद्धिमान बोला, क्या तुम खीष्टियानी और उस के सन्तानों की वार्त्ता पूछते हो ? सुनो खीष्टियान का जो कल्याण हुआ इन का भी वैसा ही कल्याण होगा ऐसा अनुमान होता है क्योंकि पहिले तो उन्हों ने अज्ञानता का कर्म्म किया अर्थात् खीष्टियान का कहना और विलाप करना मिथ्या समझ उस के साथ जाना अंगीकार न किया परन्तु सोचते सोचते पीछे उन का चित्त अद्भुत रीति से आकर्षित हुआ और वे भी अपनी अपनी गठरी

मोटरी बांधकर उस के पोछे चले गये। यह सुन मैं ने कहा, यह कैसी आनन्द की वार्त्ता तुम ने सुनाई। क्या उस के स्त्री पुत्रादि सब के सब गये। बुद्धिमान ने कहा, हां, सब के सब गये। इस बात को मैं भली भांति जानता हूं क्योंकि जिस समय वे गये तिस काल मैं वहां ही था इस कारण सब वृत्तान्त जानता हूं। तब मैं ने कहा, तो इस बात को सत्य जानना चाहिये। बुद्धिमान ने कहा, हां, इस में कुछ सन्देह न करना। मैं निश्चय कर कहता हूं कि वह स्त्री और उस के चारों पुत्र उसी यात्रा में गये हैं और मैं देखता हूं कि बहुत दूर तक तुम को और हम को साथ साथ चलना है यह अवसर पाय मैं उन का सारा वृत्तान्त तुम से कह सुनाऊंगा।

देखो उस स्त्री का नाम खीष्टियानी है। जब से वह अपने पुत्रों के सहित उस यात्रा में गई तब से उस का यह नाम पड़ा है। उस का स्वामो जब नदी पार हो गया और वह उस का और कुछ समाचार न पा सकी तब उस का मन अत्यन्त व्याकुल होने लगा। इस का एक कारण यह था कि उस के स्वामी के लोकान्तर प्राप्त होने से विवाहरूपी प्रेम का बन्धन टूट गया। तुम जानते हो कि अति प्रिय कुटुम्ब लोगों के वियोग से मन में स्वभाव ही से अत्यन्त शोक व्यापता है। सो वह स्वामी के बिरह से बहुत रोती थी। फिर खीष्टियानी विशेष करके अपने चित्त में यह सोचने लगी कि मैं ने अपने स्वामी से अनेक अनुचित्त व्यवहार जो किया क्या जाने इसी के कारण वह अब मुझे कभी दर्शन नहीं देता है। इस रीति की चिन्ता से जो जो निर्दय वा असंगत धर्म्म वा धर्म्म विरुद्ध व्यवहार उस ने अपने पति से किया था सब की उस को सुरत पड़ने लगी और उस

खीष्टियानी का पश्चात्ताप।

का मन खेदित होकर उस को दोषी ठहराने लगा । विशेष करके अपने स्वामी के आर्त्त वचन और रोदन और विलापादि के सोचने से और स्वामी ने जब अपने साथ जाने के लिये उस को और उस के सन्तानों को प्रीति और विनय कर समझाया था तब उन्हों ने जो निरादर और कठोरता प्रकाश की थी उस की सुरत पड़ने से उस का हृदय विदीर्ण होने लगा वरन् जिस काल पीठ पर बोझ था उस समय उस के स्वामी ने जो जो वार्त्ता कही थी और जो जो कर्म्म किया था सब का स्मरण बिजली के कड़कने की नाईं हृदय में ऐसा चमका कि उस की छाती फटने लगी । हाय ! हाय !! मैं परित्राण के निमित्त क्या करूं खीष्टियान के इस वचन के ध्यान करने से उस को सब से अधिक शोक होता था । तब उस ने अपने पुत्रों से कहा, हे पुत्रो ! हम सब नाश हुआ चाहते हैं । मैं ने कुव्यवहार द्वारा तुम्हारे पिता को उदास किया और वह चला गया । वह हम सब को साथ ले जाने की इच्छा करता था परन्तु मैं ने उस का कहना न मानकर तुम को भी अनन्तजीवन के मार्ग से रोक रक्खा । यह बात सुन सब लड़के अपने पिता के पीछे हो लेने के लिये विलाप करने लगे । तब खीष्टियानी कहने लगी, हाय ! हाय !! हम उस के साथ जाते तो हमारा मंगल होता । अब कहां ऐसा मंगल हो सकेगा । प्रथम मैं ने अपनी अज्ञानता से तुम्हारे पिता के दुःख के विषय में यह अनुमान किया कि उस के चित्त की विकलता केवल अनर्थ भावना अथवा वायुरोग से हुई है पर अब मुझे निश्चय हुआ कि उस का कारण और ही था अर्थात् यह कि उस को अनन्तजीवन का दिव्य ज्ञान हो गया था । अब मुझे बोध होता है कि उसी ज्ञानद्वारा उस ने मृत्यु के फन्दे से मुक्ति पाई । (याकूब १ : २३-२५ । योहन ८ : १२ । नीति १४ : २७) तब

वे सब फिर विलाप करने लगे कि हाय ! हाय !! अब हमारे कैसे दुःख के दिन आ पहुंचे ।

फिर रात्रि को ख्रीष्टियानी ने स्वप्न में देखा कि एक चौड़ी चर्म्मपत्री उस के सन्मुख खोली गई जिस में उस के सब कर्म्म लिखे थे और उस के समस्त दोष उस को काली घटा की नाईं दिखाई दिये । यह देखते ही वह निद्रा में चिल्ला उठी कि हे ईश्वर मुझ अत्यन्त पापिष्ठिनी पर कृपा कर । (लूक १८ : १३) यह बात उस के पुत्रों ने सुनी । फिर वह क्या देखती है कि बड़े कुरूप दो पुरुष उस की सेज के निकट खड़े होकर कहते हैं कि इस स्त्री को हम क्या करें । वह तो क्या सोते क्या जागते सर्वदा परमेश्वर की कृपा के निमित्त विलाप करती है । जो इसका विलाप करना हम न छुड़ा सकें तो जैसे इसका स्वामी हमारे हाथ से बच निकला है तैसे यह भी बच निकलेगी । पारमार्थिक भावना इस से दूर करना उचित है नहीं तो यह भी यात्रिनी हो जायगी और समस्त संसार के लोग इसे रोक न सकेंगे । इस रीति के स्वप्न से उस के सर्वांग से पसीना टपकने लगा और उस का शरीर थर थर कांपने लगा और निद्रा भंग हो गई ।

ख्रीष्टियानी का स्वप्न देखना ।

जब वह फिर सो गई तब स्वप्न में देखा कि उस का स्वामी ख्रीष्टियान एक आनन्दमय स्थान में अनेक अमर पुरुषों के मध्य में खड़ा होकर वीणा हाथ में लिये एक महापुरुष के सन्मुख जो मेघ धनुष ऐसा मुकुट पहिने सिंहासन पर विराजमान है वीणा बजाकर स्तुति करता है । फिर क्या देखती है कि उसका स्वामी सीस नवाय महाराजा की रत्नजटित पीढ़ी पर दण्डवत कर स्तुति में यों कहता है कि हे महाराज ! हे प्रभु ! आप जो मुझे इस स्थान में ले आये इस के निमित्त मैं अपने सारे अन्तःकरण

से आप का धन्यवाद करता हूं। इतनी बात के सुनते ही जो लोग चारों ओर खड़े थे सो ऊंचे स्वर से जय जयकार कर बीणा बजाने लगे परन्तु उन की स्तुति खीष्टियान और उसके संगियों को छोड़ और कोई न समझ सका।

दूसरे दिवस प्रातः समय खीष्टियानी उठ कर ईश्वर की प्रार्थना कर अपने लड़कों से वार्त्ता कर रही थी कि इतने में किसी ने आकर द्वार को बहुत खटखटाया तब इस ने कहा, जो तुम ईश्वर के नाम से आते हो तो भीतर आओ। तब आमीन कह कर उस ने द्वार खोला और कहा इस घर का कल्याण हो। ऐसा आशीर्वाद दे फिर कहा, हे खीष्टियानी मैं किस लिये आया हूं क्या तुम जानती हो? यह बात सुन कर खीष्टियानी लज्जा-युक्त हो कांपने और यह कहां से आया है क्या समाचार लाया है इस बात के जानने के लिये अकुलाने लगी। तब उस पुरुष ने कहा, मेरा नाम भेद है मैं स्वर्गवासी लोगों के साथ रहता हूं। मेरे स्वदेशियों में यह चर्चा हुई है कि तुम भी वहां जाने की इच्छा करती हो और यह भी कि तुम ने प्रथम अपने स्वामी की यात्रा से अपना अन्तःकरण कठोर कर के जो निज स्वामी को असन्तुष्ट किया और लड़कों को मूर्खावस्था में रखा अब तुम्हें इन बातों की बुराई का ज्ञान हुआ। सो हे खीष्टियानी कृपानिधि प्रभु ने मेरे हाथ यह कहला भेजा है कि मैं सर्वदा पाप क्षमा करने को तैयार हूं और बहुत अपराधों को क्षमा करने में मेरी बड़ी प्रसन्नता होती है। फिर महाराजा ने तुम को बुलाया है कि मेरे निकट आकर मेरे हाथ खान पान करो। जो तुम इस बात को स्वीकार करोगी तो महाराजा अपने घर का उत्तम द्रव्य और तुम्हारे पिता याकूब का अधिकार दे तुम को तृप्त करेगा यह जान रक्खो। फिर उस दूत ने कहा कि

जिस का दर्शन जीवनदाई है तिस के श्रीमुख को तुम्हारा स्वामी ख्रीष्टियान और लाख लाख उस के सङ्गी वहां देखते रहते हैं वे

भेद स्वर्गपुर के महाराजा का पत्र ख्रीष्टियानी को देता है।

सब पिता के गृह के द्वार पर तुम्हारे पैर की आहट सुन कर प्रसन्न होंगे।

यह बात सुन ख्रीष्टियानी ने लज्जायुक्त हो उस की दण्डवत की। फिर उस दूत ने एक पत्र निकाल कर कहा कि तुम्हारे

पति के प्रभु के पास से यह पत्र लाया हूं। पत्र लेकर जब उस स्त्री ने खोला तो उस में से अत्युत्तम सुगन्ध निकली (श्रेष्ट गीत १ : ३) उस पत्र के सुनहले अक्षर थे और पत्र का आशय यह था कि जो तुम्हारे पति खीष्टियान ने किया है वही तुम भी करो यही महाराजा की इच्छा है और राजधानी में पहुंचने के लिये और राजा के सन्मुख अक्षय आनन्द की प्राप्ति के निमित्त यही एक उपाय है दूसरा नहीं। इस बात से वह स्त्री आनन्द से परिपूरित हुई और दूत से कहने लगी, हे महाराज ! राजा की सेवा करने के लिये क्या तुम मुझ को और मेरे सन्तानों को अपने साथ ले चलोगे। दूत ने कहा, खीष्टियानी पहिले तीता तब मीठा। जैसे तुम्हारा पति जो तुम्हारे आगे स्वर्गपुर गया है अनेक कष्ट भोग कर वहां पहुंचा तैसे तुम्हें भी कष्ट सह के वहां जाना पड़ेगा। इस कारण मैं तुम को यह परामर्श देता हूं कि जो तुम्हारे स्वामी खीष्टियान ने किया वही तुम भी करो अर्थात् इस मैदान के अन्त में जो सकरा फाटक है वहां जाओ क्योंकि उस फाटक होकर तुम को जाना है। इस मार्ग के चलने में तुम्हारा कल्याण होय। एक और परामर्श देता हूं कि इस पत्र को तुम अपने पास यत्न से रक्खो और जब तक यह कण्ठाग्र न होय तब तक इस का पाठ आप करो और अपने सन्तानों को भी उसे सुनाया करो क्योंकि तुम को यात्रा के समय जिन गीतों को गाना पड़ेगा उन में से एक गीत यह है और पथ के अन्तद्वार में तुम को वह पत्र दिखाना पड़ेगा। (भजन ११६ : ५४)

प्रभु का पत्र।

फिर मैं स्वप्न में क्या देखता हूं कि जिस समय बुद्धिमान ये बातें कहता था उस के नेत्र डबडबाने लगे परन्तु थोड़ी देर के पीछे फिर वार्त्ता कर कहने लगा कि उस समय खीष्टियानी

अपने पुत्रों को बुला कर कहने लगी, हे मेरे प्रिय पुत्रो ! तुम्हारे पिता की मृत्यु से मेरा प्राण आज कल अत्यन्त विकल हो रहा है यह तुम ने अवश्य देखा होगा। यह नहीं कि मुझे उस के कल्याण का कुछ सन्देह हुआ सो नहीं मैं निश्चय जानती हूं कि उस का मंगल हुआ है पर अपनी और तुम्हारी पारमार्थिक अवस्था के विषय में मुझे अत्यन्त सोच है क्योंकि हमारी वर्त्तमान अवस्था बहुत बुरी है यह मैं निश्चय जानती हूं। और तुम्हारे पिता के दुःख के समय में जो मैंने उस के साथ अनुचित व्यवहार किया सो मेरे चित्त में बड़ा खटकता है इस का कारण यह है कि उस समय मैं ने अपना और तुम्हारा चित्त कठोर कर के उस के साथ यात्रा करना अङ्गीकार नहीं किया। इस चिन्ता के दुःख से अवश्य मेरी मृत्यु होती पर बीती रात्रि में जो स्वप्न देखा उस से और आज प्रातः समय में इस विदेशी ने मुझ से जो बातें कहीं इन से मेरे जी को कुछ शान्ति हुई है। सो हे मेरे बालको ! आओ हम अपनी अपनी गठरी मोटरी ले स्वर्ग राज्य के द्वार का पथ धारण करें। वहां जाने से तुम्हारे पिता का फिर दर्शन होगा और उस देश की रीति के अनुसार हम लोग तुम्हारे पिता और उस के सङ्गियों के साथ सुख से

यात्रा की तैयारी। रहेंगे अपनी माता के अन्तःकरण की ऐसी अभिलाषा जब पुत्रों ने देखी तब उन के नेत्रों से आनन्द के मारे जल बहने लगा और दूत के बिदा होने के पीछे वे अपनी यात्रा की सामग्री एकत्र करने लगे।

ये अपनी यात्रा की तैयारी कर रहे थे कि इतने में खीष्टियानी की दो पड़ोसिन आकर घर का किवाड़ खटखटाने लगीं तब फिर इस ने पूर्वोक्त रीति से उत्तर दिया जो तुम ईश्वर के नाम पर आया चाहो तो भीतर आओ। इस बात के सुनते ही

दोनों पड़ोसिन चकित भईं क्योंकि उन्हों ने कभी ऐसा वचन न ख्रीष्टियानी के मुख से न और किसी के मुख से सुना था। पर उन्होंने भीतर आकर देखा कि ये लोग अपना घरबार छोड़ यात्रा करने को उपस्थित हैं। तब उन्हों ने पूछा, हे पड़ोसिन! इन सब बातों का तात्पर्य्य क्या है। तब ख्रीष्टियानी ने भयातुरा नाम जेठी स्त्री से कहा मैं यात्रा को जाती हूं। भयभीत नाम मनुष्य दुर्गम पर्वत पर ख्रीष्टियान को मिला था और सिंहों के भय से उस को भी फिराना चाहता था यह भयातुरा उसी की बेटी थी। उस ने पूछा, कहां की यात्रा करोगी। ख्रीष्टियानी ने उत्तर दिया कि मेरे प्रिय पति ने जहां की यात्रा की। यह बात कहकर रोने लगी। भयातुरा बोली, हाय! हाय!! बहिन ऐसा कभी मत करियो। मैं तुम्हारे प्यारे पुत्रों के निमित्त विन्ती करती हूं, तू चार लड़कों की माता होकर इस रीति से अपना नाश आप ही मत कर। ख्रीष्टियानी बोली, मेरे लड़के भी मेरे साथ जांयगे उन में से एक भी यहां रहने की इच्छा नहीं करता है। भयातुरा ने कहा, हाय! हाय!! यह क्या आश्चर्य है कहो जी किस कारण वा किसकी सम्मति से तुम ऐसी उन्मत्त हुई हो। ख्रीष्टियानी ने उत्तर दिया कि हे बहिन! जैसा ज्ञान मुझ को हुआ है वैसा ही तुम्हें होता तो तुम भी अवश्य मेरे साथ चलतीं। भयातुरा बोली, यह कौन सा नया ज्ञान है जिसे पाकर तुम ने अपने कुटुम्ब मित्रादि से रूठ कर जिस देश का समाचार कोई नहीं जानता है उस देश को जाने का विचार किया है। ख्रीष्टियानी बोली, जब से मेरा पति मेरे पास से गया विशेष करके जब से वह नदी पार हो गया तभी से मेरा मन अत्यन्त व्याकुल हो रहा है और उस के चित्त के दुःख के समय जो मैं ने उस के विरुद्ध निष्ठुर आचरण किया उस से मेरे चित्त में

और भी अधिक खेद हुआ। फिर जैसी उस समय उस की दशा थी वैसी ही अब मेरी भी हुई है कि यात्रा बिना और किसी वस्तु से मेरा कल्याण नहीं। रात को मैं ने उसे स्वप्न में देखा। आहा! मेरा मन उस के पास जाने की कितनी लालसा करता है। वह तो उस देश के राजा के समीप निवास करता है उस के संग बैठता भी है और उस के संग भोजन भी करता है। वह अमर पुरुषों का साथी हो गया है और रहने के निमित्त उस को ऐसा भवन मिला है कि उस के सामने इस संसार का अत्युत्तम राजभवन मुझे केवल झोंपड़ी सा दीख पड़ता है। (२ करिन्थि. ५:१-४) उस स्थान के अधिपति ने मुझे भी बुला पठाया और कहा है कि जो तू आवेगी तो तुझे भी वैसा ही स्थान मिलेगा। उसका दूत अभी आकर मुझे निमंत्रणपत्र दे गया है। यह बात कह उसने पत्र निकाल उन दोनों को सुनाकर कहा, अब तुम क्या करती हो।

भयातुरा बोली, हाय! हाय!! तुम कैसी उन्मत्त हो जो अपने पति की नाईं तुम संकट में पड़ती हो। उस यात्रा के आरम्भ ही में तुम्हारे स्वामी की जो दशा हुई सो तुम ने अवश्य सुनी होगी और उस विषय में हमारा पड़ोसी हठी साक्षी दे सकता है क्यों कि वह और दुचित्ता कुछ दूर तक उस के साथ गये थे परन्तु संकट देखकर बुद्धिमानों की नाईं अपने अपने घर फिर आये। फिर सिंह के और अपल्लुओन असुर के मिलने से और मृत्युछाया की तराई में जो जो क्लेश हुए वह भी और ऐसे ऐसे अनेक विषय बारम्बार सुनने में आये हैं। फिर मायापुर के मेले में जो उसकी दुर्दशा हुई उसे भूलना तुमको उचित नहीं है। देखो वह तो पुरुष होकर ऐसी ऐसी विपत्ति में पड़ा भला तुम अबला होकर क्या कर सकोगी। फिर यह भी विचार करो कि ये तुम्हारे सुन्दर

सुन्दर चार बालक तुम्हारे हाड़ मांस के तुल्य हैं। तुम यदि अविवेक कर अपने तईं नष्ट करने जाओ तौभी गर्भफलों की तो ममता करके घरमें रहो। खीष्टियानी ने उत्तर दिया, हे पड़ोसिन! हम को अधिक लोभ मत दिखाओ। महासुख प्राप्त करने का अवसर अब मिला है। जो मैं इस अवसर पर चूकूं तो अत्यन्त मूर्ख ठहरूंगी। और मार्ग में ऐसी आपदा होगी यह जो तुम ने कहा है इससे मैं कभी कातर नहीं होने की वरन् और भी साहस करूंगी क्योंकि वे सब सत्पथ के लक्षण हैं। पहिले तीता तब मीठा। तीती वस्तु खाकर पीछे मीठी खाय तो उसकी अधिक मिठास जान पड़ती है। अब मुझे जान पड़ा कि तुम मेरे घर आई तो ईश्वर के नाम से नहीं आई सो विनय पूर्वक कहती हूं कि कृपा कीजिये अब मुझे अधिक दुःख न दीजिये।

तब भयातुरा खीष्टियानी की निन्दा कर अपनी सखी से कहने लगी अरी करुणा आओ इसे छोड़कर चलें अब इस के मन में जो आवे सो यह करे क्योंकि न यह हमारी बात मानती न हमारी संगति की इच्छा करती है। पर करुणा के मन में कुछ सन्देह हुआ इस लिये वह अपनी पड़ोसिन का कहना न मानकर खड़ी रही। इस के दो कारण थे प्रथम यह कि खीष्टियानी से उसकी बड़ी प्रीति थी इस लिये अपने मन में सोचने लगी कि जो मेरी पड़ोसिन अकेली ही जायगी तो मैं कुछ दूर तक उस के पहुंचाने को जाऊंगी। द्वितीय यह कि अपनी दशा के विषय में उस के चित्त में भय उत्पन्न हुआ इसलिये कि जो जो बातें खीष्टियानी ने कही थीं वे सब उसके मन में चुभ गई थीं। इस कारण उस ने अपने मन में यह भी विचारा कि खीष्टियानी से और भी पूछा चाहिये। जो उस की बात सत्य और जीवन-दायी ठहरे तो मैं भी एकाग्र चित्त हो इसके साथ जाऊंगी। इस

हेतु उसने भयातुरा को उत्तर दिया कि हे भयातुरा मैं कीष्टि-यानी से मिलने के लिये तुम्हारे साथ आई थी और देखो वह हमारे देश से बिदा होकर जाती है इस लिये मेरी यह इच्छा है कि इस निर्मल प्रभात समय कुछ दूर इसके साथ जाऊं। परन्तु उस ने अपने चित्त का पूर्वोक्त द्वितीय भाव भयातुरा से न कहा अपने मन में रक्खा। भयातुरा बोली, अच्छा मैं देखती हूं कि तू भी इस की नाईं उन्मत्त हो भ्रमण करने की इच्छा करती है। देख समय रहते सावधान और ज्ञानवती हूजियो। जब लों तू संकट से बाहर है तब लों उस से बचने का उपाय हो सकता है पर उस में पड़ने से उसे भुगतना ही अवश्य होगा। यह बात कह भयातुरा तो अपने घर फिर गई और कीष्टियानी ने यात्रा आरम्भ की।

भयातुरा और उसकी सखियों।

फिर भयातुरा ने घर पहुंचते ही उलूकनयनी अविवेकिनी लघुचित्ता और ज्ञानहीना नामी चार पड़ोसिनियों को बुला भेजा। जब वे सब आईं तब भयातुरा कीष्टियानी के यात्रा करने की कथा उन्हें सुनाने लगी कि हे बहिनो! आज प्रातः समय घर में कुछ विशेष कार्य्य नहीं था सो कीष्टि-यानी से भेंट करने गई। उस के घर पर पहुंच के मैंने साधारण रीति के अनुसार जो उस के द्वार को खटखटाया तो उसने भीतर से यह बात कही कि जो तुम ईश्वर के नाम पर भीतर आया चाहो तो आओ। सब कुशल मंगल है यह समझकर मैं भीतर गई तो देखती क्या हूं कि वह अपने पुत्रों के समेत नगर छोड़ने की तैयारी कर रही है। मैं ने पूछा, इस तैयारी का तात्पर्य्य क्या उस ने संक्षेप से यह कहा कि जैसे मेरे पति ने यात्रा की तैसी ही यात्रा करने की मेरी भी अभिलाषा है। उस ने यह भी कहा कि मैं ने स्वप्न

देखा है और उस के पति के बासस्थान के राजा ने जो एक निमन्त्रणपत्र उस के पास भेजा है वह भी उस ने मुझे दिखाया । यह समाचार सुन ज्ञानहीना ने पूछा, अरी क्या वह जायगी । भयातुरा ने कहा, हां, जो हो सो हो पर वह अवश्य जायगी यह मैं निश्चय जानती हूं क्योंकि घर में रहने का जो एक विशेष कारण मैं ने उसे रोकने के निमित्त समझाकर कहा, अर्थात् मार्ग में तुझ पर ऐसी ऐसी आपदा आन पड़ेगी उस से उसका चित्त फिरे क्या वरन् और भी यात्रा करने की लालसा दृढ़ हुई । उस ने स्पष्ट कह दिया कि पहिले तीता तब मीठा । मीठी वस्तु के पहिले कुछ तीती खाइये तो मीठी अधिक मीठी लगे । तब उलूकनयनी बोली, हाय ! वह क्या अन्धी हुई वा उन्मत्त हुई । उस के स्वामी को इतना कष्ट हुआ तौभी क्या उसे ज्ञान नहीं हुआ भला जो उस के मन में आवे सो करे पर मुझे तो यह सूझता है कि जो कदाचित् उसका स्वामी फिर यहां होता तो भले चंगे शरीर से सन्तुष्ट हो घर ही में रहता फिर कभी व्यर्थ क्लेश भोगने न जाता ।

फिर अविवेकिनी कहने लगी अरी ऐसी बावली स्वप्न देखनेवाली स्त्री नगर छोड़ दे तो अच्छा है । मेरी समझ में ऐसे लोगों का निकल जाना मानो आपदा का दूर होना है । ऐसी स्त्री यहां रहेगी और उस का ऐसा ज्ञान बना रहेगा तो उसके कारण कोई सुख न पावेगा क्योंकि वह उदास चित्त हो मौन साध रहेगी अथवा पड़ोसियों से रूठी रहेगी अथवा जो वार्त्ता ज्ञानी लोगों के सुनने के योग्य नहीं ऐसी वार्त्ता किया करेगी इस कारण मैं तो उस के जाने से क्षणमात्र भी दुःखित न होऊंगी । अरी उसको जाने दे उसके स्थान में कोई उत्तम स्त्री ले लो जब तक ऐसे उन्मत्त लोग इस संसार में रहेंगे तब तक

सुख कभी न होगा। तब लघुचित्ता बोली ये सब बातें जाने दो सुनो मैं कल कामुकी ठकुरानी के यहां गई थी वहां बड़ा रंगरस हुआ। वहां कौन थे सो जानती हो? मैं भी और रतार्थिनी और उसकी तीन चार सखी थीं और लम्पट महाराज और मलिन मति ठकुरानी और कई एक और भी थे। उस समय नाच रंग आदि अनेक प्रकार के कौतुक हुए। सत्य जानो वह कामुकी ठकुरानी अति सुशील है और लम्पट महाराज भी वैसा ही शिष्टाचारी है।

कीष्टियानी का यात्रा को चलना।

इतने में कीष्टियानी अपने सन्तानों के सहित यात्रा को चली और करुणा भी उस के साथ साथ चली जाती थी। जाते जाते कीष्टियानी इस रात्रि की वार्त्ता करने लगी कि हे करुणा मैं नहीं जानती थी कि तुम अपना घर छोड़ कर थोड़ी दूर मेरे पहुंचाने के लिये चलोगी तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है। तब यह नवबाला करुणा कहने लगी, सुनो, तुम्हारे साथ जाने से मेरी मनसा पूर्ण होगी इसका कोई प्रमाण मुझे मिलता तो मैं उस नगर को कभी न फिर जाती। कीष्टियानी ने कहा अच्छा करुणा तुम मेरे साथ चलो। इस यात्रा के अन्त में जो सुख प्राप्त होगा उसे मैं निश्चय कर जानती हूं। मेरा स्वामी इस समय जिस स्थान में है उस स्थान के छोड़ने के लिये कोई सुमेरु पर्वत के समान उस को सुवर्ण दे तौभी वह छोड़ने को स्वीकार न करेगा। जो तुम केवल मेरे कहे से भी उस स्थान में जाओगी तो भी तुम्हें कोई वहां से निकाल न देगा। वहां का महाराजा जिस ने मुझे और मेरे सन्तानों को बुलाया है दया करने में अति प्रसन्न है। और नहीं तो जो तुम यही अच्छा जानो तो मैं वेतन दे तुम्हें नौकर करके ले चलूंगी पर तौभी सब वस्तुओं में मेरा

और तुम्हारा समान व्यवहार होगा । जिस रीति से तुम्हारी इच्छा हो उसी रीति से चलो पर मेरे संग चलना न छोड़ो । करुणा बोली, वहां का महाराजा मुझे भी ग्रहण करेगा इस बात का निश्चय मुझे किस प्रकार से होगा ? कोई महापुरुष जिसे इस बात का ज्ञान हो यदि इसका निश्चय मुझे करवा दे तो मैं किसी बाधा से न रुकूंगी परन्तु सर्वशक्तिमान उपकारक की सहायता के भरोसे तुम्हारे संग पथ धारण करूंगी और क्लेश कितना ही हो सब क्लेश तृणवत समझ कर अन्त लों गमन करूंगी । खीष्टियानी बोली, हे प्रिय करुणा, तुम को एक उपाय बताती हूं तुम यही कीजियो । उस सकरे फाटक लों मेरे साथ चलो उस स्थान में मैं तुम्हारे विषय में पूछूंगी जो उस स्थान में तुम्हें भरोसा न मिले तो अपने घर फिर आइयो । और तुम उस स्थान तक मेरे साथ चल कर मेरी और मेरे सन्तानों की जो सेवा करोगी उस का वेतन मैं तुम को दूंगी । करुणा बोली, अच्छा जो हो सो हो मैं चलूंगी । स्वर्गीय प्रभु के अनुग्रह से उस स्थान में मेरा भला ही होवे । इस बात से खीष्टियानी अत्यन्त प्रसन्न हुई । इसका एक कारण यह कि उसको संगिनी मिली । दूसरा यह कि उस ने इस दीन कन्या के हृदय में परित्राण पाने की चेष्टा दिखाई थी । फिर उस के साथ जाते जाते करुणा रोने लगी । यह देख खीष्टियानी बोली, हे बहिन ! तुम क्यों रोती हो । करुणा ने उत्तर दिया, हाय ! हाय !! हमारे पापमय नगर में जो हमारे कुटुम्ब रह गये हैं उनकी दुर्दशा के सोचने से किस के नेत्रों से आंसू बहे और मेरे अधिक दुःख का कारण यह है कि उन का उपदेश करने वाला वा आनेहारे दुःख के विषय में उन्हें चिताने वाला कोई नहीं है । खीष्टियानी बोली, करुणा करना यात्रियों का धर्म्म है । तुम जिस भांति अपने

कुटुम्ब के निमित्त शोक करती हो उसी भांति मेरा धर्म्मी स्वामी जब मुझे छोड़ गया तब शोक करता था। विशेष कर मैं ने उस के वाक्य पर ध्यान न दिया इस पर उसने अधिक विलाप किया। पर मेरे और उस के प्रभु ने उन आंसुओं को एकत्र कर अपनी शीशी में भरा है और इस समय मैं और तुम और मेरे प्रिय बालक उनका शुभ फल भोगते हैं। हे करुणा ! मुझे भरोसा है कि यह तुम्हारा नेत्र जल वृथा न बहेगा क्योंकि सत्यवादी का वाक्य है कि जो रोते रोते बीज बोते हैं सो हंसते हंसते खेती काटेंगे और जो रोता हुआ बीज लेकर बाहर निकलता है सो हंसता हंसता बोझे लेकर घर आवेगा। भजन १२६ : ५, ६) तब करुणा यह गान करने लगी।

चौपाई।

हे परमेश्वर करों निहोरा। होवहु पथदर्शक तुम मोरा॥
सियोन गिरि लग मम करधारी। देहु लंघाय विकट पथ भारी॥
भटकि चलों न कुपथ हम जाते। धीर धरै नित मो मन तातें॥
करहु कृपा तुम मोपर ऐसे। सदा लहै शुभ मोको जैसे॥
अरु सुत मम परिजन परिवारा। आश्रित तेरो लहैं कृपारा॥
होहि सदा इमि बिनती मेरो। करुणानिधान नाम है तेरो॥

———

दूसरा अध्याय।

सकरे फाटक पर पहुंचना।

फिर मेरे प्रिय वृद्ध बन्धु बुद्धिमान ने इस रीति से वृत्तान्त सुनाया कि जब खीष्टियानी निराश पङ्क के निकट पहुंची तब खड़ी हो कहने लगी कि इस स्थान में मेरे प्रिय स्वामी ने दलदल में पड़कर प्राणान्त कष्ट पाया था। फिर उस ने देखा कि यद्यपि राजा ने यात्रियों की सुगमता के निमित्त इस मार्ग के सुधारने की आज्ञा दी थी तथापि वह और भी बिगड़ गया है। यह बात बुद्धिमान से सुन कर मैं ने उस से पूछा कि यह क्या सत्य है। उसने कहा, हां, यथार्थ तो है क्योंकि राजपथ को सुधारने के निमित्त हम राजसेवक हैं। बहुत हैं जो छल से ऐसा कह कर उस में पाषाण के बदले अनेक प्रकार का कूड़ा कर्कट डालकर उसे और भी बिगाड़ते हैं। सो खीष्टियानी अपने सन्तानों के सहित खड़ी हो रही। तब करुणा ने कहा, आओ साहस कर सावधानी से चलें। यह बात सुन वे बड़ी सावधानी से पत्थरों पर पैर रखती हुईं बड़े परिश्रम से पार हुईं परन्तु खीष्टियानी दो तीन बार गिरने से बची। पार होते ही उन्होंने एक ऐसी वाणी सुनी कि तुम धन्य हो जो तुम ने विश्वास किया इसी हेतु से परमेश्वर का कहा हुआ वाक्य तुम्हारे विषय में सिद्ध होगा। (लूक १ : ४५) फिर वे आगे बढ़ीं। तब करुणा ने खीष्टियानी से कहा कि सकरे फाटक में कुशल पूर्वक ग्रहण होने की जैसी तुम्हारी प्रामाणिक आशा है ऐसी जो मेरी भी होती तो यह निराश पंक मुझे कभी निराश न कर सकता। तब उसने कहा, तुम को जैसा तुम्हारा दुःख भारी जान पड़ता है तैसा मुझ को मेरा दुःख।

निराश पङ्क।

हे प्यारी ! जब तक यात्रा का अन्त नहीं होगा तब तक क्या जाने कितने दुःख भोगने पड़ेंगे। हम जब ऐसे तुल्य ऐश्वर्य्य को प्राप्त करने की इच्छा रखती हैं और उस ऐश्वर्य्य और सुख के विषय में लोग हम से ऐसी ईर्षा करते हैं तो मार्ग में शत्रुओं से क्लेश त्रासादि भोगने में कौन आश्चर्य्य है।

इतनी कथा सुनाय बुद्धिमान मेरे पास से चला गया और मैं स्वप्न में अकेला रह गया तब क्या देखता हूं कि ख्रीष्टियानी और करुणा और चारों लड़के चलते चलते जब सकरे फाटक के निकट आये तब परस्पर विचारने लगे कि द्वार पर जाकर किस रीति से खटखटाना चाहिये फिर द्वारपाल को कैसा उत्तर देना चाहिये। इन बातों का विचार कर उन्होंने यही सिद्धान्त ठहराया कि सब से बड़ी ख्रीष्टियानी है वही खटखटावे और द्वारपाल से वार्त्ता करे। तब ख्रीष्टियानी द्वार को खटखटाने लगी और अपने पति की भांति इसने भी बराबर आघात किया पर किसी ने कुछ उत्तर न दिया वरन् इसके बदले ऐसा सुन पड़ा कि बड़ा भयंकर कुत्ता भूंकता हुआ उन के सन्मुख चला आता है। यह सुन के दोनों स्त्री बालकों के सहित भयमान हुईं और खटखटाना छोड़ दिया कि कहीं यह कुकुर हमारे ऊपर न झपटे। फिर क्या करें क्या न करें कुछ निश्चय न कर सकीं और अत्यन्त विकल हो गईं क्योंकि कुकुर के भय से द्वार खटखटा नहीं सकती थीं और कदाचित द्वारपाल देख कर क्रोध करे इस भय से लौट भी नहीं सकती थीं। निदान कोई और उपाय जब न सूझा तब उन्हों ने द्वार को अधिक कर के खटखटाया इस पर द्वारपाल ने पूछा, कौन है। तब कुत्ता चुप हो गया और द्वारपाल ने द्वार खोल

सकरा फाटक।

कुत्तों का डर।

दिया। तब खीष्टियानी ने प्रणाम कर कहा राजद्वार के खटखटाने के निमित्त प्रभु अपनी दासियों पर क्रुद्ध न हो। द्वारपाल ने पूछा, तुम कहां से आई हो और तुम्हारी क्या इच्छा है। खीष्टियानी ने उत्तर दिया, जिस स्थान से और जिस अभिप्राय से खीष्टियान यहां आया था उसी स्थान से और उसी अभिप्राय से हम सब भी यहां आये हैं सो यह है कि आप की जो कृपादृष्टि हो तो हम स्वर्गीय राजधानी को जाने के निमित्त इस द्वार से प्रवेश करें। खीष्टियान जो स्वर्गपुर जा पहुंचा है मैं उस की स्त्री खीष्टियानी हूं। तब द्वारपाल ने अचम्भा कर कहा क्या जिस ने थोड़े दिवस हुए यात्रिकधर्म को तुच्छ किया था सोई अब यात्रिन हुआ चाहती है। यह सुन इस ने सिर नीचा कर कहा, हां, महाराज यह सत्य है और मेरे ये प्रिय बालक भी यात्री हुए हैं। तब द्वारपाल ने खीष्टियानी का हाथ पकड़ उसे भीतर ले आकर कहा, इन बालकों को मेरे पास आने दो। यह बात कह द्वार मूंद फाटक की छत पर जो तुरही बजानेवाला था उसे पुकारकर कहा, खीष्टियानी की प्रतिष्ठा के निमित्त आनन्द के शब्द करो। उस ने उस के आज्ञानुसार तुरही का ऐसा शब्द किया कि सारा आकाश गूंज उठा।

फाटक के भीतर।

इतनी देर तक करुणा द्वारपाल से आग्राह्य होने के भय से द्वार पर खड़ी हो रोती थी। जब खीष्टियानी पुत्रों के सहित भीतर गई तब अपनी सखी करुणा के निमित्त इस भांति विनती करने लगी कि हे प्रभु! जिस कारण मैं आई हूं उसी के निमित्त मेरी एक सखी भी आई है सो बाहर खड़ी है। मैं तो अपने स्वामी के राजा की बुलाई आई हूं और वह बिना बुलाये आई है इसी सन्देह से उस का चित्त अत्यन्त विकल है।

इतने में करुणा बाहर अत्यन्त अधीर हुई उसे एक एक पल युग के समान बीतता था। खीष्टियानी विस्तार के सहित उस के लिये निवेदन करने भी न पाई कि उसने आप द्वार को खटखटाया और ऐसे शब्द से खटखटाया कि खीष्टियानी चौंक उठी।

करुणा द्वार के बाहर रही

तब द्वारपाल ने पूछा, यह कौन है। इसने कहा, मेरी सखी है। यह सुन द्वारपाल ने द्वार खोलकर देखा कि करुणा मूर्छित हो बाहर पड़ी है। उस ने समझा कि मेरे लिये कोई द्वार न खोलेगा इस भय से निराश हो मूर्छित पड़ी थी। तब द्वारपाल ने उस का हाथ पकड़कर कहा, हे लड़की उठ खड़ी हो। तब उस ने चैतन्य होकर कहा, हे प्रभु! मैं अत्यन्त निर्बल हो गई हूं मुझ में शक्ति न रही। द्वारपाल ने कहा, सुन पूर्वकाल में एक ने यह कहा कि मेरा प्राण जब मूर्छित हुआ उस समय मैं ने परमेश्वर का स्मरण किया और मेरी प्रार्थना उसके पवित्र मन्दिर में पहुंची। (यूना. २ : ७) सो तू शंका मतकर खड़ी हो जा और जिस के निमित्त आई है सो मुझ से कह। तब करुणा बोली, महाराज! मेरी सखी खीष्टियानी जिस के निमित्त राजा की बुलाई हुई आई है उसी के निमित्त मैं बिना बुलाई उसके साथ आई हूं। मैं केवल सखी की बुलाई आई इस लिये मुझे पैठने का साहस नहीं होता। तब द्वारपाल ने पूछा, खीष्टियानी ने क्या तुम को इस जगह आने को कहा था। करुणा ने कहा, हां, कहा था इस कारण मैं आई हूं सो आप देखते हैं। जो अब भी पाप की क्षमा आप के अनुग्रह से हो सके तो मैं विनयपूर्वक प्रार्थना करती हूं कि इस दीन दुखिया दासी पर भी दया और क्षमा कीजिये। तब द्वारपाल उसका हाथ पकड़ धीरे धीरे उसे भीतर ले जाकर कहने लगा, जो लोग किसी उपाय से शरणागत होकर

मुझ पर विश्वास करते हैं मैं सब के निमित्त प्रार्थना करता हूं। फिर उसने निकटवर्त्ती लोगों से कहा, करुणा की मूर्छा छूट जाय इस के निमित्त कोई सुगंध द्रव्य उस के सूंघने के लिये ले आओ। वे कुछ गन्धरस ले आये उस के सूंघने से थोड़ी बेर में उसको चेत आ गया।

इस भांति प्रभु ने खीष्टियानी और उस के पुत्रों और करुणा को मार्ग के सिरे पर ग्रहण करके उन के साथ मधुर भाषण किया। तब इन सब ने उससे यही निवेदन किया कि हे महाराज! हम अपने अपने पाप कर्म्म के निमित्त खेदित हैं इसलिये आप से क्षमा मांगते हैं और अब हमें क्या करना उचित है सो हम को कृपा कर कहिये। इस विषय में उस ने कहा, मैं वाक्यद्वारा और कार्य्यद्वारा क्षमा करता हूं। वाक्यद्वारा अर्थात् क्षमा की प्रतिज्ञा से। कार्य्यद्वारा अर्थात् उस उपाय से जिस करके मैं ने पापियों के निमित्त क्षमा प्राप्त की। वह प्रतिज्ञा अभी चुंबन के सहित मेरे मुख से ग्रहण करो और वह कार्य्य ज्यों ज्यों प्रकाश किया जायगा त्यों त्यों ग्रहण कीजिये। (श्रेष्ठ गीत १ : २। योहन २० : २०) फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि उसने अनेक मधुर वाक्य इन से कहे जिनसे उनका चित्त आनन्दित और प्रफुल्लित हो गया। फिर उन्हें फाटक की छत पर ले जाकर कर्म्म द्वारा उन का परित्राण हुआ उसका दर्शन करवाकर कहा, मार्ग में जाते जाते जब तुम को इस का पुनर्वार दर्शन होगा तब तुम सन्तुष्ट होगे।

फिर उन को एक सुखदाई बैठक में लाकर वह कुछ काल के निमित्त उन्हें वहां छोड़ गया। तब ये परस्पर वार्त्ता करने लगे। पहिले खीष्टियानी बोली हम लोग यहां कुशल से पहुंचे इस से मैं अति प्रसन्न हूं। करुणा ने कहा, तुम को तो प्रसन्नता हुई पर

सब से अधिक मुझे अतिप्रसन्न होना चाहिये। खीष्टियानी बोली, जिस समय मैं ने द्वार पर खटखटाया और किसी ने उत्तर न दिया विशेष कर जब वह भयानक कुत्ता ऐसे घोर शब्द से भूंकने लगा तब मैं ने समझा कि इतनी दूर आने का श्रम व्यर्थ हुआ। करुणा ने कहा, तुम पर जब अनुग्रह हुआ और तुम भीतर ली गई पर मैं बाहर ही छोड़ी गई तब तो मुझे बड़ा भय हुआ। उस समय मुझे यही सूझा कि धर्म्मग्रन्थ में जो वचन लिखा है सो सफल हुआ कि दो स्त्री चक्की पीसती होंगी उन में से एक ग्रहण की जायगी और दूसरी त्यागी जायगी। (मत्ती २४ : ४१) मेरा सर्वनाश होगा यह विचार करके मैं चिल्लाने पर थी उस समय मुझे अत्यन्त क्लेश हुआ। द्वार पर और कुछ खटखटाने का मुझे साहस न रहा परन्तु द्वार के ऊपर जो लिखा है उस के पढ़ने से मुझे कुछ ढाढ़स हुआ। निदान यही विचारा कि पुनर्वार आघात किये बिना मेरा मरण है यह निश्चय कर के मैं ने फिर खटखटाया पर किस रीति से खटखटाया यह बात मुझे कुछ सुरत नहीं आती। उस समय मरूंगी वा जीऊंगी मुझे इस बात का कुछ निश्चय नहीं था। खीष्टियानी ने कहा तुम क्या नहीं जानती कि तुम ने कैसे खटखटाया मैं तो यह जानती हूं कि तुम ने खटखटाने से ऐसा शब्द किया कि मैं उसको सुनकर चौंक उठी। मैं ने जन्म भर कभी ऐसा खटखटाना नहीं सुना मैं ने तो जाना कि बल द्वारा प्रवेश करोगी वा राज्य को लड़कर लोगी (मत्ती ११:१२) करुणा ने उत्तर दिया, हाय ! हाय !! मेरी ऐसी दुर्दशा में पड़नेसे कौन नहीं ऐसा करता। तुम ने भी देखा कि एक तो द्वार मूंदा गया था दूसरे मेरे सुनने में भयंकर कुत्ते का घोर शब्द हो रहा था इस से मेरा चित्त भयातुर था ऐसे समय में भला कौन नहीं अपने सारे

बल से खटखटाता नहीं। मेरी ढिठाई से प्रभु क्रोधित तो न हुआ। उसने तुम से उस समय क्या कहा। खीष्टियानी ने कहा, वह

हितार्थी करुणा को सकरे फाटक के भीतर ले जाता है।

तुम्हारी खटखटाना सुनकर मुसकुरा के रह गया। मुझे जान पड़ा कि वह ऐसे खटखटाने से प्रसन्न हुआ क्योंकि उसकी

अप्रसन्नता का कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। पर वह ऐसा कुत्ता रखता है यह बड़ा आश्चर्य है? जो मैं पहिले जानती तो निश्चय है कि ऐसे डरावने स्थान में आने का मुझे साहस न होता। भला अब तो हम सब भीतर आ चुके और हमें यह शरण मिली है इस से मुझे बड़ा आनन्द हुआ। करुणा बोली, तुम्हारी सम्मति हो तो जब द्वारपाल नीचे आवे मैं उस से पूछूंगी कि तुम ने ऐसा कुत्ता क्यों पाल रक्खा है। ऐसा न हो कि वह मेरा पूछना अनुचित समझे। तब बालकों ने कहा, हां, आप अवश्य पूछिये। वरन् तुम उस कुत्ते को मार डालने का परामर्श देना नहीं तो चलने के समय कहीं हमें काट न खावे।

बहुत देर के पीछे द्वारपाल वहां आया, तब करुणा ने उसे दंडवत कर विनय पूर्वक कहा, महाराज! मैं वचनद्वार जो स्तुतिरूपी नैवेद्य आप के सन्मुख चढ़ाती हूं उसे आप ग्रहण कीजिये। द्वारपाल ने कहा, तेरा कल्याण हो उठ। परन्तु वह उसी रीति से मुंह के बल पड़ी रही और बोलने लगी महाराज आप यथार्थ न्यायी तो हैं इस में सन्देह नहीं तौभी मैं आप के न्याय के विषय में कुछ निवेदन किया चाहती हूं आज्ञा हो तो कहूं। आप ऐसा भयंकर कुत्ता क्यों पाल रखते हैं जिस के भय से हम सरीखी अबला और ऐसे बालक द्वार पर से भाग जाने की इच्छा करते हैं। उस ने उत्तर दिया, सुनो इस कुत्ते का स्वामी मैं नहीं हूं। वह दूसरे की भूमि में बंधा है पर मेरे यात्री उस के भूकने का शब्द सुनते हैं। दूर पर जो गढ़ देखती हो उसी गढ़ में का वह कुत्ता है पर वह इस स्थान की भीत तक आ सकता है। उस का भयंकर शब्द सुनकर अनेक साधु यात्रियों ने मिथ्या आश्रय छोड़ सत्य आश्रय गहा है। उसका स्वामी मेरे वा मेरे यात्रियों के उपकार के निमित्त उस को रखता हो

यह नहीं किन्तु यात्री लोग यहां मेरे निकट न आवें और भय मान हो के द्वार को न खटखटावें इसी हेतु उस ने उस को पाल रक्खा है। कभी २ इस कुत्ते ने बाहर निकल कर मेरे प्रिय लोगों को काट भी खाया है। मैं अभी तक उस का यह व्यवहार सहता चला आता हूं तौभी मैं अपने यात्रियों की शीघ्र ही उस से रक्षा करता हूं उन को उस के बश में नहीं पड़ने देता हूं इस कारण वह अपने निष्ठुर स्वभाव से जो किया चाहता है वह नहीं करने पाता है। पर हे मेरी मुक्त की हुई जो तू इस कुत्ते का सारा वृत्तान्त पहिले से जानती भी तो मैं जानता हूं तू इस से कभी न डरती। जो भिखारी घर घर भिक्षा मांगते हैं वे कभी कुत्ते के भूंकने से नहीं हटते न उस के काटने से डरते हैं भिक्षा की आशा से भयावने स्थान में भी निडर होते हैं। यह कुत्ता तो दूसरे के आंगन में रहता है और इस के शब्द से मैं यात्रियों का कल्याण बढ़ाता हूं क्या ऐसा कुत्ता मेरे पास आने में यात्रियों की बाधा कर सकता है। मैं सिंह के मुख से उन की रक्षा करता हूं और कुत्ते के पराक्रम से अपने प्रिय को उद्धार करता हूं। करुणा ने कहा, मैं अपनी अज्ञानता मान लेती हूं। मैं ने बिन जाने कहा था। मैं अब निश्चय जान गई कि आप के सब कर्म्म उत्तम हैं।

फिर खीष्टियानी ने यात्रा की चर्चा प्रारम्भ करके मार्ग का वृत्तान्त पूछा। तब द्वारपाल ने इन के पैर धुलवा भोजन करवा खीष्टियानी के पति को जो जो बातें कही थीं सो सब इन्हें भी कह सुनाई और निरूपित मार्ग में जाने की शिक्षा दी। फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि वे सब अपनी यात्रा को चले और उस समय बयार आदिक उन्हें बहुत सुखदाई थी और खीष्टियानी यह गान गाती चली।

दोहा।

जा दिनतें यात्री भए . धन्य दिवस कह सोइ।
मोहि सुमङ्गल कन लह्यो . भयो न खटका कोइ॥
धन्य धन्य नित सोइ जन . जो पथ दियो चढ़ाय।
बहु बिलम्ब जौंपैं भयो . बेगि चलों अब धाय॥
अमर जीव के कारने . शोक विपति जो म्याय।
आदि कठिन जौं लखि पड़हि . शेष सुलभ सुखदाय॥

तीसरा अध्याय।

खोष्टियानी और उसके संग के यात्री जिस पथ में जाते थे उस पथ की भीत की पर्ली ओर एक वाटिका थी वह वाटिका उसी भयंकर कुत्ते के स्वामी की थी। उस के कितने एक वृक्षों की शाख भीत पर से पथ की ओर लटकती थी। कोई कोई पथिक उन वृक्षों के फलों को पके देख तोड़कर खाते थे पर उन के खाने से पीड़ा होती थी। खीष्टियानी के लड़कों ने जो इन फलों को देखा तो प्रसन्न हो अपने बालस्वभाव से उन्हें तोड़ तोड़ खाने लगे। यद्यपि उन की मां ने उन्हें बर्जा तौभी उन्हों ने खा लिया। तब उन की मां ने कहा, देखो तुम आज्ञा उल्लंघन करते हो ये फल हमारे नहीं हैं। खीष्टियानी नहीं जानती थी कि ये फल उसी शत्रु के हैं कदाचित यह बात जानती तो भय से मृतवत् हो जाती। इसके पीछे वह आगे बढ़े।

फिर वहां से दो तीर दूर जाने से उन्हों ने देखा कि दो कुरूप मनुष्य हमारी ओर दौड़े आते हैं। तब खीष्टियानी और उसकी सखी करुणा लड़कों को आगे कर के मुख पर कपड़ा

डाल खड़ी न रहीं किन्तु आगे बढ़ चलीं। जब वे मनुष्य निकट आये तब स्त्रियों के आलिंगन करने का उद्योग दो कुरूप मनुष्यों करने लगे। तब खीष्टियानी बोली, दूर हो सुजन का आघात। की नाईं अपना मार्ग लो। पर इन दोनों ने खीष्टियानी की बात सुनी अनसुनी कर उन पर हाथ चलाना चाहा। तब खीष्टियानी ने बड़ा क्रोध करके उन की ओर लात चलाई और करुणा ने भी उन के हटाने को जो उपाय बन पड़ा सो किया। फिर खीष्टियानी ने उन से कहा, दूर हो, दूर हो, चले जाओ हम यात्रिन हैं हमारे पास रुपया पैसा नहीं है भिक्षा से हमारा पालन होता है। तब उन में से एक ने कहा, हम धन के निमित्त तुम्हारे पास नहीं आये पर यह बात कहने आये हैं कि हम तुम से एक अल्प वस्तु की याचना करते हैं तुम हमारी लालसा पूरी करो तो सर्वदा सुखी बनी रहोगी। यह वार्त्ता सुन खीष्टियानी उन का अभिप्राय समझ फिर बोली, हम तुम्हारी बात नहीं सुनेंगी न तुम्हारी कामना पूरी करेंगी। हमें शीघ्र चलना है हम ठहर नहीं सकतीं। हम प्राण रक्षा के निमित्त भागी जाती हैं। यह कह खीष्टियानी और उस की सखी ने इन को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने का उद्योग किया परन्तु इन दोनों दुराचारियों ने उन्हें रोककर कहा, हम तुम्हारा प्राण नाश करना नहीं चाहते हमारी तो और ही मनसा है। तब खीष्टियानी ने कहा, मैं समझती हूं तुम हमारा शरीर और आत्मा दोनों को सर्वनाश करने आये हो परन्तु जिस बात से हमारा पारलौकिक मङ्गल नष्ट हो ऐसी बात के फन्दे में पड़ने से वरु हमें अभी प्राण का त्याग करना अच्छा है। यह बात कह डाका पड़ा डाका पड़ा चिल्लाकर पुकारने लगीं और स्त्री की रक्षा के निमित्त जो व्यवस्था है उसी का आश्रय लिया

(विवाद २२:२५—२७ तौभी उन मनुष्यों ने न मान कर फिर उन पर हाथ चलाने चाहा तब फिर वे अधिक चिल्ला उठीं।

उस समय वे द्वार से बहुत दूर नहीं गई थीं इस हेतु उन का शब्द वहां सुन पड़ा और वहां के कितने लोग घर से निकल खोष्टियानी का शब्द पहचान उसकी सहायता को दौड़े। निकट आकर उन्होंने देखा कि दोनों स्त्रियां बड़ी खैंचाखैंची में पड़ी हैं और लड़के खड़े होकर रो रहे हैं तब एक पुरुष जो उन के बचाने को आगे बढ़ा तिस ने इन दुराचारियों को धमकाकर कहा, अरे, तुम यह क्या कर्म करते हो। मेरे प्रभु के भक्तों से क्या तुम आज्ञा उल्लंघन करवाना चाहते हो। यह कह जब उस ने उनके पकड़ने का यत्न किया तब वे उस कुत्ते के स्वामी की बाटिका में भाग गये सो वही कूकर उनका रक्षक हुआ। फिर जो पुरुष उनके उद्धार के निमित्त आया था सो स्त्रियों के निकट आ पूछने लगा क्या तुम्हारी कुछ हानि हुई। तब स्त्रियों ने कहा आप के अधिपति के अनुग्रह से हम बच गईं केवल भय मात्र हमको व्यापा है और आप ने भी बड़ा अनुग्रह किया जो आकर हमारी रक्षा की नहीं तो अवश्य हम इन शत्रुओं से नहीं बचतीं। इस रीति की अनेक वार्त्ता करके इस उद्धारक ने फिर कहा, तुम अबला स्त्री जाति अति दुर्बल हो तुम ने द्वार पर अतिथि होने के समय पथदर्शक न मांगा यह बड़े आश्चर्य की बात है। जो तुम याचना करती तो अवश्य एक अगुवा मिलता तब तुमको यह सब आपदा और शङ्का न होती। खोष्टियानी ने कहा, हाय! हम वर्त्तमान सुख में ऐसी भूल गई कि भावी दुःख की हमें कुछ भी सुरत न रही। हम नहीं जानती थीं कि राज-गृह के निकट ही ऐसे ऐसे दुष्ट लोग छिप रहे हैं। जो हम प्रभु से अगुवे के निमित्त प्रार्थना करतीं तो अवश्य हमें बड़ा लाभ

होता । भला प्रभु तो इसको जानता ही था उसने किसी को साथ न कर दिया इस से मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। तब इस उद्धारक ने कहा, बिन मांगे विषय को दान करना बुद्धिमान का व्यवहार नहीं है क्योंकि ऐसे देने से वह विषय लेनेहारे को तुच्छ जान पड़ता है परन्तु जिस विषय के बिना क्लेश उत्पन्न हुआ है वह विषय क्लेश भोगने के पीछे जब मिल जाता तब लेनेहारा उसे अति प्रिय जान यत्न से रखता है। मेरा प्रभु जो अगुवा तुम्हारे साथ कर देता तो तुम जो प्रार्थना करनी भूल गई उसी भूल के निमित्त जैसे इस समय विलाप करती हो तैसे न करती । इस रीति से सब बातों से तुम्हारा मङ्गल होता है और तुम्हारी सावधानी की वृद्धि होगी । यह सुन खीष्टियानी ने पूछा, तो हम फिर प्रभु के निकट जा अपना अपराध स्वीकार कर उससे एक अगुवा मांगें । उस उद्धारक ने कहा, तुम्हारे दोष स्वीकार करने की वार्त्ता मैं उससे जाकर कह दूंगा अब तुम्हारे फिर जाने का कुछ प्रयोजन नहीं है । तुम जिस जिस स्थान में पहुंचोगी तुमको किसी स्थान में किसी वस्तु की घटी न होगी क्योंकि यात्रियों के लिये इस पथ के निकट प्रभु ने जो जो बासस्थान बनाये हैं उन सब स्थानों में यात्रियों के दुःख दूर करने के लिये जो जो वस्तु आवश्यक हों सो सब मिलती हैं परन्तु वह अनुग्रह करके समय पर उन वस्तुओं को दान करे इसके निमित्त उस की प्रार्थना नित्य करना आवश्यक है। (हिजकेल ३६ : ३७) जो वस्तु प्रार्थना के योग्य नहीं वह किस काम की वस्तु होगी। यह बात कह वह निज स्थान को फिर गया और यात्रियों ने अपना मार्ग लिया ।

तब करुणा बोली, देखो जहां किसी खटके की जगह न थी तहां यह कैसी दुर्दशा हुई । मैं ने तो जाना था कि हम सब

आपदायें भुगत चुकीं अब किसी प्रकार के क्लेश में न पड़ेंगी। खीष्टियानी ने कहा, हे बहिन! मैं तुम को इस विषय में दोष नहीं दे सकती हूं क्योंकि तुम्हें इस आपदा की कुछ शङ्का नहीं थी। इस में केवल मेरा बड़ा दोष है क्योंकि घर से निकलने के पहिले ही मैं ने ऐसी आपदा की बाट जोही तौभी अवसर पाकर भी उसके निवारण करने का उपाय न किया इससे मेरा ही बड़ा अपराध है। करुणा बोली, तुम ने घर से निकलने के पहिले यह बात कैसे जानी यह मुझे समझा दो। खीष्टियानी ने कहा, घर से निकलने के पहिले एक रात्रि में अपनी सेज पर सोई हुई थी। उस समय मैं ने इस विषय में स्वप्न देखा कि इन दोनों के समान दो मनुष्य मेरी सेज के निकट खड़े होकर मेरे परित्राण के विषय में बाधा डालने का विचार करते थे। उन्होंने जो कहा सो भी मैं तुम से कहती हूं। उस समय उन्हों ने मेरे चित्त का बड़ा शोक देखकर यह बात कही कि इस स्त्री को क्या करें क्योंकि यह जैसे जागते तैसे स्वप्न में भी क्षमा पाने के निमित्त प्रार्थना ही किया करती है। जो हम इसको न रोकें तो जिस भांति इसका स्वामी हमारे हाथ से बच निकला है उसी रीति से यह भी बच निकलेगी। इस स्वप्न की सुरत करके जो मैं अवसर पाकर उपाय करती तो इस बार हम पर यह क्लेश न पड़ता। करुणा बोली, इस आपदा के पड़ने से जैसे हमने अपने दोषों को समझने का अवकाश पाया तैसे हमारे प्रभु ने अपनी कृपा और अनुग्रह प्रकाश करने का सुयोग पाया। देखो हमारी प्रार्थना बिना उसने अनुग्रह कर इन दुष्टों के हाथ से हमारी रक्षा की।

इस रीति की वार्त्ता करते करते यात्री लोग आगे बढ़े और थोड़ी देर में मार्ग के निकट जो घर यात्रियों का श्रम काटने के

निमित्त बना था उसके पास पहुंचे। यह घर अर्थकारक का कहा बता है। इस यात्रा स्वप्नोदय[1] का पूर्वार्द्ध में इस घर का वर्णन विस्तार से किया गया है। जब वे द्वार के निकट पहुंचे तब उन्हें भीतर से लोगों के बोलने का शब्द सुनाई दिया। कान लगा कर जो उन्होंने सुना तो खीष्टियानी का नाम सुनने में आया। इसका कारण यह है कि इनके पहुंचने के पहिले ही उस गृह के लोगों ने सुना था कि खीष्टियानी जो अपने पति के साथ यात्रा करने का अस्वीकार करती थी सो अब पुत्रों के सहित यात्रिन हुई है। इस वार्त्ता के सुनने से वे सब प्रसन्न थे। इस रीति से खीष्टियानी द्वार पर उन लोगों के मुख से अपनी चर्चा सुनने के लिये अपनी सखी के सहित कुछ क्षण खड़ी रही। फिर उसने जैसे सकरे फाटक पर खटखटाया था तैसे इस गृह के द्वार पर खटखटाया तब तुरन्त ही शुद्धमति नाम एक कन्या ने किवाड़ खोलकर देखा कि दो स्त्री द्वार पर खड़ी हैं। तब उसने कहा, तुम किस से भेंट किया चाहती हो। खीष्टियानी ने कहा, हमने सुना है कि यह घर यात्रियों के निमित्त बनाया गया है। हम यात्रिन हैं इस लिये प्रार्थना करती हैं कि हम अतिथि होयें। तुम देखती भी हो कि सन्ध्याकाल हुआ इस लिये आज हम आगे बढ़ने की इच्छा नहीं करतीं। तब कन्या ने कहा, कृपा कर के अपना नाम बतलाओ तो मैं भीतर जाकर अपने प्रभु से कहूं। इसने कहा, मेरा नाम खीष्टियानी है। कितने एक वर्ष हुए कि खीष्टियान नाम एक यात्री इसी मार्ग से होकर गया मैं उसी की स्त्री हूं और ये चारों बालक उसी के हैं और मेरे साथ जो यह कन्या है सो भी यात्रिन है।

अर्थकारक का घर।

---

१. अध्याय पांच।

यह बात सुन यह कन्या भीतर जा कहने लगी द्वार पर कौन खड़ी है जानते हो। खीष्टियानी अपने सन्तानों और सखी के सहित अतिथि होने की इच्छा से द्वार पर खड़ी है। इस बात के सुनते ही वे आनन्द से फूले न समाये अपने प्रभु के पास गये और उसको सब समाचार सुनाया। वह उठकर द्वार पर आया और खीष्टियानी से कहने लगा, कहो वह धर्म्मी खीष्टियान यात्री होने के समय जिस को छोड़ गया था क्या तुम वही खीष्टियानी हो? उसने उत्तर दिया, हां, प्रभु जिसने अपने स्वामी का दुःख न विचार उसको त्यागकर यात्रा में अकेला जाने दिया वही अधर्म्मी मैं हूं और ये चारों उसी के सन्तान हैं परन्तु अब मैं भी आई हूं क्योंकि मुझे निश्चय हुआ है कि इस पथ को छोड़कर दूसरा कोई सत्य पथ नहीं है। तब अर्थकारक ने कहा, तब तो धर्म्मग्रन्थ की वह बात आज पूरी हुई कि किसी ने अपने पुत्र से कहा, तू मेरे दास की बारी में जा काम कर। उस ने कहा, मैं नहीं जाऊंगा पर पीछे पछता कर आप ही गया।" (मत्ती २१:२८, २९ खीष्टियानी बोली महाराज वैसा ही होवे। ईश्वर मेरे विषय में अपना यह वाक्य सफल करे और अन्त में मुझे अकलंकित और निर्दोष कर अपने सामने आनन्द से खड़ी करे। तब अर्थकारक ने कहा, तुम इतनी देर द्वार पर क्यों खड़ी हो। हे इब्राहीम की पुत्री भीतर आओ इस समय हम तुम्हारी ही चर्चा करते थे क्योंकि तुम्हारे आने के पहिले ही हम ने तुम्हारे यात्रिन होने का समाचार पाया। हे बालको! भीतर आओ। हे युवती भीतर आ। ऐसा कह वह सब को भीतर ले गया।

जब सब भीतर आये तब उसने उन्हें विश्राम के निमित्त बैठने की आज्ञा दी। फिर वहां के जो मनुष्य यात्रियों की सेवा

के निमित्त नियुक्त थे उन में से कई एक इन के देखने को आये और खीष्टियानी यात्रिन हुई है यह देखकर सब के सब प्रसन्न हुए। फिर बालकों को देख स्नेह-पूर्वक, उन के सिर पर हाथ फेरने लगे। इसी भांति करुणा से भी प्रसन्न हो कहने लगे कि हमारे प्रभु के घर में जो तुम्हारा आगमन हुआ सो हमारा बड़ा भाग्य है। भोजन तैयार होने में कुछ बिलम्ब था इस लिये अर्थकारक इन सब को अपनी शिक्षा देने की कोठरियों में ले गया और जो जो वस्तु खीष्टियान को दिखाई थीं सो सब इनको भी दिखाई अर्थात् लोहे के पिंजड़े में जो मनुष्य बन्द था और भयावना स्वप्न देखनेहारा और खड्गद्वारा शत्रुओं के बीच से होकर निकलनेहारा योद्धा और अत्युत्तम पुरुष का चित्र इत्यादि जो जो फलदाई विषय खीष्टियान ने देखे थे सो सब इन्हें भी दिखाये।

कोठरियों की चीज़ों का दर्शन।

खीष्टियानी और उस के साथी इन सब वस्तुओं को देखकर जब उन का कुछ विचार कर चुके तब अर्थकारक उन्हें एक कोठरी में ले गया वहां जाकर इन्हों ने देखा कि एक मनुष्य भूमि की ओर निरन्तर दृष्टि किये हाथ में फावड़ी लिये खड़ा है और दूसरा एक मनुष्य पथ में स्वर्गीय मुकुट ऊंचे पर लिये हुए फावड़ी के बदले उसे देने को खड़ा है पर उसने तो एक बार भी ऊपर दृष्टि न की किन्तु नीची दृष्टि किये हुए भूमि पर के कूड़े कर्कट आदि का संग्रह कर रहा है। खीष्टियानी इसे देखकर कहने लगी कि इसका आशय मुझे कुछ कुछ समझ पड़ा। हे महाराज! क्या यह सांसारिक मनुष्य का दृष्टान्त नहीं है। अर्थकारक ने कहा, हां, तुमने सत्य कहा है। उसको फावड़ी

फावड़ी वाला मनुष्य।

उसके सांसारिक स्वभाव का दृष्टान्त है। और स्वर्गीय मुकुट लिये हुए जो पुरुष उसे पुकारता है वह उसकी बात नहीं सुनता है परन्तु कूड़ा कर्कट आदि के संग्रह करने में मग्न रहता है इस से यही बात स्पष्ट होती है कि कितने लोग स्वर्गीय वार्त्ता को केवल बकवाद जानकर इस संसार के तुच्छ विषय ही को सार समझते हैं। और यह जो तुमने देखा कि यह नीचे दृष्टि किये है और दूसरी ओर नहीं देखता है इसका तात्पर्य्य यही है कि मनुष्य जब सांसारिक विषय में लीन हो रहा है तब एक बेर भी ईश्वर की ओर दृष्टि नहीं करता और ईश्वर से उसका अन्तःकरण विमुख रहता है। खीष्टियानी बोली, ईश्वर ऐसी फावड़ी से मुझे परे रक्खे। (नीति ३० : ८) अर्थकारक ने कहा, प्रार्थनारूपी रत्न बहुत काल से कोने में पड़ा है इस में मैल बैठ गया है। मुझे धन्यवाद न कीजिये ऐसी प्रार्थना लाखों मनुष्यों में एक भी न करता होगा। वर्त्तमान समय के लोग प्रायः सब कोई कूड़ा कर्कट सदृश विषय को सार पदार्थ समझ कर उसी के संचय करने में लीन रहते हैं। यह सुन खीष्टियानी और करुणा रोने लगीं और बोलीं हाय ! हाय !! यह सत्य-वचन है।

फिर अर्थकारक उन्हें उस गृह की सब से उत्तम कोठरी में ले जाकर बोला, चारों ओर दृष्टि करके देखो तुम्हें इस में कोई फलदायक वस्तु दृष्टि आती है वा नहीं। तब इन्होंने बारम्बार दृष्टि की पर कुछ दिखाई न दिया। उस कोठरी में एक मकड़े को छोड़ और कुछ देखने में नहीं आया उस मकड़े का उन्हों ने विचार न किया। तब करुणा बोली, महाराज ! मुझे तो कुछ भी यहां दिखाई नहीं देता पर खीष्टियानी चुप हो खड़ी रही। तब अर्थकारक ने कहा, फिर देखो। तब उसने

फिर देखकर कहा, एक कुरूप मकड़ा हाथ पैर चिपटाये हुए भीत पर से लटक रहा है और कुछ दृष्टि नहीं आता है। तब उसने कहा, क्या इतनी बड़ी कोठरी में तुम्हें एक ही मकड़ा दृष्टि आता है। खीष्टियानी की बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी उस के नेत्र से जल डबडबाने लगा तब बोली, हे प्रभु ! इसे छोड़ और भी हैं जिनका विष इसके विष से अधिक मारू है। तब अर्थकारक ने मुसकुरा कर कहा, तुम सत्य कहती हो। यह बात सुन करुणा लज्जित हुई और बालकों ने भी अपना अपना मुंह वस्त्र से ढांक लिया क्योंकि वे सब इस दृष्टान्त को कुछ कुछ समझने लगे। तब अर्थकारक ने कहा, देखो मकड़ा अपने हाथ पैरों से भीत पकड़ कर राजभवनों में भी बास करता है। (नीति ३० : २८) धर्म्मग्रन्थ में यह जो लिखा है इस का यह तात्पर्य्य है कि पापरूपी विष से परिपूर्ण होकर भी जो तुम विश्वासरूपी हाथ से भीत धरे रहो तो स्वर्गीय राजगृह में के उत्तम उत्तम स्थान में भी निवास कर सकोगे। खीष्टियानी बोली, मैं ने इस विषय में कुछ कुछ अनुमान किया था पर सम्पूर्ण विषय नहीं समझ सकी। इतना ही जानती थी कि हमारा मकड़े का सा स्वरूप है अत्युत्तम घर में रहे तौभी कुरूप दिखाई देती हैं। परन्तु किस भांति विश्वास करना उचित है यह बात हम इस विषैले और घिनौने मकड़े से सीखें सो तो मेरे विचार में नहीं आया था। पर सच है यह अपने हाथ के द्वारा भीत पकड़कर सर्वोत्तम घर में बास करता है ऐसे ही हमें भी करना चाहिये। ईश्वर ने कोई वस्तु निरर्थक नहीं बनाई है। उस काल वे सब प्रसन्न हुए और उनके नेत्रों में जल भर आया तब उन्होंने एक दूसरे की ओर देखकर अर्थकारक को प्रणाम किया।

मकड़े का दृष्टान्त ।

फिर वह इन को दूसरी कोठरी में ले गया वहां एक मुर्गी को उसके बच्चों के सहित इन्हें दिखाकर कहा, देखो ये क्या क्या करते हैं । फिर उन में से एक बच्चा पात्र में से जल पीने गया तो एक एक बूंद चोंच में ले ले ऊपर दृष्टि कर पीने लगा । तब उस ने कहा, देखो यह बच्चा क्या करता है । तुम्हारा मङ्गल केवल ईश्वर से होता है इस लिये इसी रीति से ऊर्द्धदृष्टि करके धन्यवाद करना उचित है इस बच्चे से यही शिक्षा लो । तब उस ने कहा, फिर चित्त लगाकर देखो । तब ये क्या देखते हैं कि मुर्गी अपने बच्चों को चार प्रकार के शब्द से पुकारती है । प्रथम—एक साधारण शब्द जिस से वह दिन भर पुकारती है । दूसरा—एक विशेष शब्द जिस से कभी कभी पुकारती है । तीसरा—पंख तले बच्चों के एकत्र करने का एक शब्द । (मत्ती २३ : ३७) चौथा—भय के समय एक चिचियाने का शब्द । अर्थकारक ने कहा, इस मुर्गी को अपने राजा का दृष्टान्त और इन बच्चों को उस के आज्ञाकारी लोगों के दृष्टान्त करके मानो क्योंकि इस मुर्गी की नाईं प्रभु भी अपनी प्रजा से चार प्रकार का व्यवहार करता है अर्थात् साधारण शब्द द्वारा कुछ नहीं देता है फिर उसके विशेष शब्द से जाना जाता है कि कुछ दिया चाहता है और शरणागत लोगों के निमित्त एक स्नेह संयुक्त शब्द करता है और शत्रु को समीप देखकर उनकी चेतना के निमित्त एक ऊंचा शब्द करता है । हे प्रियो ! इस रीति के विषय की कोठरी में तुम्हें इसीलिये लाया कि तुम अबला और बालक हो तुम को इसी रीति का सरल ज्ञान सहज ही आता है ।

तब ख्रीष्टियानी ने कहा, महाराज हम को और भी कुछ दिखाइये । तब वह इन्हें रसोई बनाने के स्थान में ले गया वहां एक मनुष्य भेड़ को बध करता था । उस भेड़ ने मौन साध धीरज

धर मृत्यु स्वीकार की। तब उसने कहा इस भेड़ से तुम धीरज धरना सीखो अर्थात् कोई तुम से झगड़ा करे तो

भेड़ का दृष्टान्त। उस से विवाद न कर उस का उपद्रव सह लो। देखो यह भेड़ कैसे शान्त स्वभाव से मृत्यु को स्वीकार करती है। इसकी खाल खींची जाती तौभी कुछ नहीं बोलती। तुम्हारा राजा तुम को भेड़ के समान समझता है।

फिर अर्थकारक उन्हें अपनी फुलवारी में जो नाना वर्ण के फूलों से सुशोभित थी ले गया और कहा, यह सब देखते हो। खीष्टियानी बोली, हां, देखते हैं। अर्थकारक ने

फूलों का दृष्टान्त। कहा, ये सब पुष्प आकार स्वभाव वर्ण गन्ध आदि गुणों में भिन्न भिन्न हैं। फिर कोई कोई पुष्प उत्तम है कोई कोई मध्यम है। परन्तु माली ने जिस स्थान में जो पेड़ लगाया है वह उसी स्थान में खड़ा है और कोई वृक्ष दूसरे वृक्ष से विवाद नहीं करता है।

फिर उन्हें एक खेत में जहां उस ने गेहूं आदि अन्न बोया था ले गया वहां उन्होंने ने देखा कि गेहूं की बालें कट गई हैं अब केवल डांठे खड़े हैं। तब उसने कहा, देखो

गेहूं की बालें। इस खेत में का अन्न तो हम काट ले गये अब केवल डांठे रह गये हैं इनको क्या करना उचित है। खीष्टियानी बोली, कुछ जला दो कुछ रुंदवा दो। यह सुनकर अर्थकारक ने कहा, देखो लोग फल ही को चाहते हैं। इन निष्फल तृणों के विषय में तुम कहती हो कि कुछ जला दो कुछ मनुष्यों के पैर से रुंदवा दो। सावधान रहना इस विचार के द्वारा अपने को दोषी मत ठहराना।

जब वे सब घर को फिर आने लगे तो मार्ग में देखा कि एक बया बड़ा सा मकड़ा मुंह में लिये है। यह देख अर्थकारक

ने कहा, इस पक्षी को देखो। यह सुन कर सब उसकी ओर देखने लगे और करुणा देखकर आश्चर्य करने

बया का दृष्टान्त

लगी। तब जीोष्टियानी ने कहा, देखो बया जो अति सुन्दर पक्षी और अन्य पक्षियों से अधिक प्रिय है और मनुष्यों के साथ रहने में प्रसन्न होता है वह भी ऐसा अभक्ष्य आहार करता है यह बड़ी निन्दा की बात है। मैं जानती थी कि यह चावल आदि रुचि की वस्तु भक्षण करता है अब इस पक्षी को मैं पूर्ववत् भला नहीं जानती हूं। तब अर्थ-कारक ने उत्तर दिया, यह बया धर्म्मवेषधारी लोगों का दृष्टान्त है कि जैसा स्वर और वर्ण और चाल में यह पक्षी सुन्दर है तैसे वे भी सुन्दर दिखाई देते हैं। जो निष्कपट धार्म्मिक हैं उनकी ओर वे बड़ा प्रेम प्रकाश कर ऐसा दिखाई देते हैं कि सदा उन से वार्त्तालाप करने से उनका मन तृप्त रहता है। इस छल से वे नित्य नित्य धार्म्मिकों के घर वा ईश्वर के भजनालय में जाया करते हैं। परन्तु अकेले हों तो इस बये की भांति मकड़ा निगल जाते हैं अर्थात् धर्म्माचरण त्यागकर अधर्म्म को ग्रहण करते हैं और पाप को जल नाईं निगल जाते हैं।

फिर जब वे घर में आये तब भोजन में कुछ देरी जान ख्रीष्टियानी ने अर्थकारक से निवेदन किया कि आप कृपा करके और कोई फलदाई वस्तु दिखाइये वा उसको वर्णन कीजिये। अर्थकारक ने आरम्भ कर अनेक उपदेश किये कि शूकर जितना पुष्ट होता है उतना ही कीचड़ में लोटना अधिक चाहता है और बैल जितना मोटा हो उतना ही खेल कूद कर कसाई के घर जाता है इसी भांति कामी मनुष्य जितना निरोगी हो उतनी ही कुकर्म्म की इच्छा करता है। वस्त्र आभूषणादि से सिंगार करने की जैसी स्त्री की इच्छा होती है तैसे ईश्वर के सेवक जो

वस्तु बहुमूल्य है उस वस्तु से विभूषित होने की इच्छा रखना भक्त को उचित है। वर्ष भर जागने से जैसा दो तीन रात्रि का जागना सहज है तैसा अल्प दिवस लों धर्म्म का भेष धारण करना सहज है परन्तु जन्म भर ईश्वर की भक्ति निबाहना कठिन है। आंधी आने से मांझी अपनी प्राण रक्षा के निमित्त अल्पमोल की वस्तु जल में शीघ्र फेंक देता है परन्तु बहुमूल्य वस्तु को पहिले कौन फेंकता है। ईश्वर से जो विमुख हो सोई ऐसा करता है। जैसे एक छेद से नाव डूब जाय तैसे एक पाप से मनुष्य नष्ट होता है। जो अपने मित्र को भूल जाता है वह अपने मित्र का धन्य न मानने से मित्र का अनहित करता है परन्तु जो अपने त्राणकर्त्ता को भूलता है सो निर्दयी हो अपने तईं नाश करता है। जो पापाचरण कर परलोक में सुख की इच्छा करता है वह ऐसा है जैसे कोई घास का बीज बोकर अपनी बखारी को अन्न से भरने की आशा करे। मनुष्य सदाचारी होने की इच्छा करे तो उचित है कि अपने अन्त समय की सुरत किया करे। लोगों की कानाफूसी और विभिन्न भावना जो हो रही है सो जगत् में पाप होने का प्रमाण जानो। ईश्वर की दृष्टि में अति तुच्छ जो यह संसार सो जो मनुष्य को बहुमूल्य और प्रिय जान पड़ता है तो ईश्वर जिसकी प्रशंसा करता है अर्थात् स्वर्गधाम कैसा श्रेष्ठ होगा। जब वर्त्तमान जीवन जिस में अगणित दुःख भोगने पड़ते हैं हमें ऐसा प्रिय लगता है तो स्वर्गीय अनन्त जीवन कैसा अधिक प्रिय होगा। मनुष्य का दातापन देख कर हर कोई प्रशंसा करता है पर ईश्वर की दानशीलता की कहो कौन यथा योग्य स्तुति करता है। जब हम भोजन करते हैं तब अवश्य थोड़ा बहुत बच रहता है तैसे यीशु खीष्ट

अनेक उपदेशों की वार्त्ता।

के गुण और पुण्य के प्रताप से जगत् के सारे लोगों का कल्याण प्राप्त होने पर भी उस पुण्य का वैसा ही प्रताप बना रहेगा।

यह सब कथा समाप्त करके अर्थकारक ने इन को फिर अपनी फुलवारी में से जाकर एक वृक्ष दिखाया। वह वृक्ष भीतर से सड़कर खोखला हो गया था परन्तु उस की छाल और पत्र हरित थे। यह देख करुणा ने कहा, इसका क्या अभिप्राय है अर्थकारक बोला, यह वृक्ष जो बाहर से सुन्दर दीखता परन्तु भीतर सड़ा गला है ईश्वर की वाटिका में के अनेकों का दृष्टान्त है। वे मुख से ईश्वर की स्तुति करते हैं परन्तु उस के आज्ञानुसार कुछ नहीं करते। उनके पत्ते सुथरे हैं परन्तु अन्तःकरण निकम्मा है मानो केवल शैतान की चमक से आग झाड़ने की ज्वाला है।

खोखला वृक्ष।

फिर जब भोजन तैयार हुआ तो उन में से एक ने ईश्वर का धन्य माना तब सब भोजन करने लगे। भोजन के समय यात्रियों की प्रसन्नता के निमित्त बाजा के सहित गान करवाना अर्थकारक का व्यवहार था इस कारण उस के बजनिये आकर बाजा बजाने लगे। उन में से एक मनुष्य बहुत सुन्दर मृदु शब्द से गाता था उसने यही गान किया।

भजन।

दोहा।

जो मम पोषण करत है. तोषण जो नित देत।
है मेरो परमेश सो. कौन कमी का हेत॥

जब गान समाप्त हुआ तब अर्थकारक ने खीष्टियानी से पूछा, यात्रिन होने की अभिलाषा पहिले तुम्हारे मन में कैसे उपजी। खीष्टियानी ने उत्तर दिया, पहिले तो मैं अपने पति के वियोग से अत्यन्त दुःखी हुई। भला वह तो स्वाभाविक स्नेह

मात्र था। पीछे मेरे स्वामी का शोक और कष्ट और यात्रा करना और उस के साथ मेरा निष्ठुर व्यवहार यह सब मेरे चित्त में आये उस से मैं अपना दोष जान कर ऐसी विकल हुई की मेरे मन में आया कि मैं किसी नदी में डूब मरूं। परन्तु उस समय ईश्वर के अनुग्रह से मैंने एक ऐसा स्वप्न देखा कि उस के द्वारा मेरे स्वामी के कुशल का मुझे समाचार मिला और जिस देश में वह निवास करता है वहां के राजा का एक निमंत्रणपत्र भी मैंने पाया इस रीति के स्वप्न और पत्र से मेरा चित्त ऐसा आकर्षित हुआ कि मैं शीघ्र ही यात्रिन हो गई।

खीष्टियानी अपनी कथा सुनाती है।

अर्थकारक ने पूछा घर से निकलने के समय तुमको किसी ने रोका तो न था। खीष्टियानी बोली, हां, भयातुरा नाम एक पड़ोसिन ने मुझे रोकने की इच्छा की। जिस मनुष्य ने सिंहों का भय दिखाकर मेरे पति को फेरने चाहा था यह भयातुरा उसी की बेटी है। उसने यात्रा को विपत्ति का कारण कहकर मुझे उन्मत्त कहा और मेरे स्वामी पर पथ में जो जो दुःख क्लेशादि पड़ा था उसका वर्णन कर के मुझे डराने की बहुत चेष्टा की पर मेरा चित्त डिगा नहीं। फिर उस समय मैंने एक स्वप्न देखा कि दो कुरूप मनुष्य मेरी यात्रा भंग करने का परामर्श कर रहे थे उस स्वप्न से मुझे बड़ी विकलता हुई। अब भी उसके स्मरण से मेरा चित्त भयातुर होती है मार्ग में जिस किसी से भेंट होती है उससे मैं डरती हूं कि कदाचित यह आकर मुझे सुपथ से भुलाकर कुपथ में न ले जाय। जब हम सकरे फाटक से इस घर के पथ पर थोड़ी दूर आईं तब हम दोनों पर दो मनुष्यों ने ऐसा हल्ला किया कि रक्षा के निमित्त हमें डांका पड़ा कहकर बहुत चिल्लाना पड़ा। जिन दो मनुष्यों के हम पर हल्ला

किया वे दोनों मेरे स्वप्न में के मनुष्यों की नाईं थे। यह बात मैं सब से नहीं केवल आप ही से कहती हूं। अर्थकारक ने कहा, तुम्हारी यात्रा का आरम्भ उत्तम है और अन्त में तुम्हारा बहुत अधिक मङ्गल होगा।

फिर उसने करुणा से पूछा, हे प्यारी लड़की तेरी यहां आने की अभिलाषा कैसे हुई। यह सुन करुणा संकोच कर कंपायमान हो चुपकी हो रही। अर्थकारक ने कहा, मत डर केवल विश्वास कर और अपने मन की बात कह।

करुणा अपनी कथा सुनाती है।

करुणा बोली, महाराज! मैं ने बहुत देखा सुना नहीं है इस हेतु बोलने की इच्छा नहीं करती हूं और डरती भी हूं कि कहीं अन्त में मैं अग्राह्य न हो जाऊं। मैं अपनी सखी खीष्टियानी की भांति स्वप्न वा दर्शन की वार्त्ता नहीं कह सकती हूं और धार्मिक कुटुम्ब के लोगों के परामर्श को तुच्छ करने से जो पश्चात्ताप होता है उसका भी मुझे ज्ञान नहीं है। अर्थकारक ने कहा, तब तो हे प्यारी! इस यात्रा में पैर धरने का साहस तुम को कैसे हुआ। करुणा बोली, महाराज! मेरी सखी खीष्टियानी जिस समय यात्रा की वस्तु तैयार करने लगी उस समय मैं एक दूसरी स्त्री के साथ उससे भेंट करने गई। फिर हम दोनों द्वार पर खटखटाकर जब घर में गईं तब इसका बांधना छांदना देखकर पूछा कि इसका क्या तात्पर्य्य है। इसने कहा, मैं अपने पति के निकट जाने को बुलाई गई हूं। स्वप्न में भी उसे देखा है कि वह इस समय अति सुन्दर स्थान में अमर पुरुषों के संग निवास कर मस्तक पर मुकुट धारण किये हाथ में बीणा लिये सर्वदा राजा की स्तुति करता है और महाराजा के साथ भोजन पान किया करता है। ये सब बातें सुनते सुनते मेरे अन्तःकरण

में बड़ा उमंग भया और मन ही मन मैंने यही विचार किया कि जो ये बातें सत्य हों तो मैं भी माता पिता कुटुम्ब जन्म भूमि आदि छोड़ कर खीष्टियानी के साथ यात्रा को चलूंगी। इसी आशा से मैं ने उससे और भी वार्त्ता कर पूछा कि क्या ये सब बात सत्य है और तुम मुझको अपने साथ ले चलोगी। उस समय मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि अपने नगर में रहने से किसी दिवस मेरा सर्वनाश होगा पर चलने के समय मेरा चित्त उदास हुआ। यहां आने के कारण उदास हुआ सो नहीं पर मेरे कुटुम्ब के अनेक लोग जो उस नगर में रह गये हैं उनकी दुर्गति होगी यह निश्चय कर उदास हुआ। पर मैं तो अन्तः-करण की पूरी अभिलाषा से यहां आई हूं और बन पड़ेगा तो इस खीष्टियानी के साथ इसके स्वामी के निकट जाकर महा-राज का दर्शन मैं भी करूंगी। अर्थकारक बोला, बेटी तेरी यात्रा बहुत उत्तम है क्योंकि तू ने सत्यता की प्रतीति की है। तू रूत के समान है जो नओमी के और उसके ईश्वर के प्रेम से अपना पिता माता और स्वदेश त्यागकर अनजाने लोगों के साथ रहने गई। परमेश्वर तेरी प्रीति का फल तुझे देवे और इसरायेल का प्रभु परमेश्वर जिसके पक्ष के नीचे तू शरणागत हुई है तुझे सम्पूर्ण प्रतिफल देवे। (रूत २ : ११, १२)

फिर भोजन के उपरान्त स्त्री लड़के सब पृथक् पृथक् स्थान में जाकर सो रहे। करुणा शय्या पर जाकर सोई पर मारे आनन्द के उसे नींद न आई क्योंकि उसको जो स्वर्ग प्राप्ति में सन्देह था सो जाता रहा इस लिये ईश्वर ने जो महा अनुग्रह उस पर किया था इसका ध्यान करके वह ईश्वर का धन्यवाद और स्तुति करती करती सो गई।

चौथा अध्याय।

फिर प्रातः समय उठ मुंह हाथ धो वे सब प्रस्थान करने को उपस्थित हुए। अर्थकारक ने कहा, थोड़ी देर ठहरो इस स्थान से तुम को नियमानुसार सुशोभित होकर जाना होगा। फिर जिस कन्या ने पहिले इन के लिये द्वार खोला था उसी से कहा फुलवारी में जो स्नान स्थान है इन्हें वहां ले जाकर स्नान करवा इनकी देह में जो मार्ग की धूल लगी हो सो धो डाल इन्हें स्वच्छ कर ले आ। शुद्धमति इन्हें फुलवारी में ले जाकर स्नान स्थान दिखा कहने लगी कि इसी स्थान में तुम्हें स्नान कर के देह स्वच्छ करना होगा। जितनी यात्रिन स्त्रियां हमारे प्रभु के यहां उतरती हैं उन सभों को वह इसी प्रकार से स्वच्छ करवाता है। तब स्त्री बालक सभों ने जाकर स्नान किया। स्नान करने से केवल स्वच्छ नहीं हो गये वरन् उनका शरीर बलवान और तेजस्वी हो गया। जब स्नान करके घर में आये तो पहिले से अधिक सुन्दर दृष्टि आते थे। तब अर्थकरक ने उनका मुख देख कर कहा, अब तुम चन्द्रतुल्य सुन्दर हुए। फिर यात्री लोग जिस मुद्रा से स्नान के पश्चात् अङ्कित किये जाते हैं वह मुद्रा उसने मंगाकर इन्हें मुद्राङ्कित किया इस कारण कि जितने टिका-श्रय इन्हें मार्ग में मिलेंगे वहां के लोग इस मुद्रा चिन्ह से इन्हें पहिचान लेवें। वह कैसी मुद्रा थी सो सुनो। जिस समय इसरायेली लोग मिश्र देश से बाहर निकले उस काल निस्तारपर्व का भोज हुआ उसका सार जो मेम्ना था तिस का आकार उस मुद्रा के द्वारा उन सभों के माथे पर अंकित हुआ। (यात्रा १३ : ८-१०) यह मुद्रा एक अलंकार सा था उससे उन

स्नान कर शुद्ध होना।

का मुख अति सुन्दर देख पड़ा और उनकी अधिक गंभीरता हुई और वे स्वर्गीय दूत के समान सुन्दर दिखाई देने लगीं।

फिर अर्थकारक ने स्त्रियों की सेवा करनेहारी कन्या को आज्ञा दी कि वस्त्रालय में जाकर इन सभों के लिये वस्त्र ले आ। वह वहां जाकर सुन्दर श्वेत वस्त्र ले आई और उनके आगे रख दिये। तब अर्थकारक ने श्वेत सूक्ष्म वस्त्र पहिरने की आज्ञा दी। फिर दोनों स्त्री इन वस्त्रों से आभूषित हो परस्पर आश्चर्य्य करने लगीं इस कारण कि प्रत्येक अपनी शोभा तो नहीं देखती थी केवल एक को दूसरे की शोभा उन्हें दृष्टि आती थी। हर एक अपने से दूसरी को अधिक शोभायमान समझती थी।

श्वेत सूक्ष्म वस्त्र पहिनना।

यह कहने लगी कि तू मुझ से बहुत सुन्दर है वह कहने लगी तू ही अधिक रूपवती है। बालक भी अपनी अपनी शोभा देख-कर चकित हो रहे थे।

तब अर्थकारक ने महात्मा नाम एक अपने सेवक को बुला-कर कहा तू टोप खड्ग ढालादि अपने शस्त्र ले मेरी इन कन्याओं को रम्य नाम राजगृह में पहुंचा दे वहां उन्हें विश्राम करना होगा। ऐसी आज्ञा पाकर यह शस्त्र धारण कर उनके आगे आगे चलने लगा। तब अर्थकारक ने कहा, ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करे और वहां के अन्य अन्य लोगों ने भी अशीर्वाद देकर उन्हें बिदा किया तब वे आनन्दित हो यह गान गाती चलीं।

रम्य राजगृह।

दोहा।

द्वितीय थान विश्राम में . मो पर विषय विधान।
प्रभु प्रसाद प्रगटित भयो . जोय गुह्य मति आन॥

कीट मकोड़ा जन्तु जे . भये सुशिक्षक मोर ।
जौपैं सीखों ज्ञान सत . इमि प्रभु मन मम ओर ॥
पक्षीगण अरु तरु लता . हरियर नीरस जेतु ।
प्रभुक दया अरु प्रेम की निश दिन साखी देतु ॥
इन्ह की आशय के लिये . चेतन पावों चित्त ।
करो प्रार्थना यीशु की . बिन कछु खटके मित्त ॥
ध्यान धरो प्रभु यीशु को . भय सों मन को फेरि ।
नित प्रति वाके कृपा में . चित्त लगाओ हेरि ॥

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि ये स्त्रियां आगे बढ़ने लगीं और महात्मा उनके आगे आगे चला। फिर जिस स्थान में क्रीष्टियान का बोझा पीठ से गिर पड़ा और क़बर में जा समाया ये सब उसी स्थान पर आ पहुंचे। यहां वे कुछ देर तक ठहरे और ईश्वर का गुणानुवाद किया। तब क्रीष्टियानी बोली, हम वाक्य द्वारा और क्रिया द्वारा क्षमा किये जांयगे यह बात जो द्वार पर हम से कही गई इस समय मुझे सुरत आती है। वाक्य द्वारा इस का अर्थ प्रतिज्ञा द्वारा। कार्य्य द्वारा इस का अर्थ क्षमा की प्राप्ति द्वारा। वह प्रतिज्ञा कैसी है सो मैं कुछ कुछ समझती हूं परन्तु क्रिया अर्थात् क्षमा की प्राप्ति द्वारा क्षमा किये जाने का हे महात्मा आप ही जानते होंगे इस कारण इसका अर्थ हमें समझा-कर कहिये। महात्मा ने कहा, कार्य्य द्वारा जो क्षमा है सो ऐसी है कि जिस मनुष्य को पाप की क्षमा आवश्यक है उस मनुष्य के लिये अन्य पुरुष द्वारा प्राप्त होती है अर्थात् जिसे क्षमा का प्रयोजन है वह आप उसे प्राप्त नहीं कर सकता है किन्तु दूसरे के विशेष उपाय करने से क्षमा प्राप्त होती है। इस का विषय मैं कुछ विस्तार के सहित कहता हूं कि तुम्हारी और करुणा की

कार्य द्वारा क्षमा का अर्थ।

और इन लड़कों की जो पाप की क्षमा हुई है वह अन्य पुरुष से अर्थात् जिस ने तुम को द्वार में प्रवेश करने दिया उस ही से प्राप्त की गई। उसने तुम्हारे पहिरने के निमित्त धर्म्मरूपी वस्त्र

महात्मा पथदर्शक ख्रीष्टियानी आदि यात्रियों की अगुवाई करता है।

प्रस्तुत किया और तुम्हारे धोने के निमित्त अपना लोहू बहाया। इन दो उपायों से उस ने तुम्हारी पाप क्षमा करवाई है। ख्रीष्टियानी बोली, जो वह अपना धर्म्म हम को देता है तो अपने लिये

क्या रखता है। महात्मा ने कहा, तुम्हारे और अपने निमित्त जो प्रयोजन है उस से भी अधिक उसका धर्म्म है। खीष्टियानी ने कहा, यह किस भांति हुआ सो वर्णन कीजिये। महात्मा बोला, अच्छा मैं कहता हूं तुम सुनो। पहिले यह कहना अवश्य है कि जिस की चर्चा हम करते हैं वह अद्वैत पुरुष है अर्थात् उस के समान दूसरा कोई नहीं है। वह एक ही है पर उस के दो स्वभाव हैं। इन दोनों स्वभावों का भेद स्पष्टता से जाना जाता है पर उन का अलग होना असम्भव है। उन दोनों स्वभावों का अपना अपना धर्म्म है और प्रत्येक स्वभाव से उस का धर्म्म ऐसा संयुक्त है कि स्वभाव के लोप होने बिना उस के धर्म्म का पृथक् करना असाध्य है। उन दोनों धर्म्मों के भागी हम नहीं हो सकते। हम को धर्म्मी वा जीवन के अधिकारी बनाने के निमित्त वे नहीं दिये जा सकते हैं। फिर उन दो स्वभाव के संयुक्त होने से उस पुरुष का तीसरा एक धर्म्म उत्पन्न होता है। मनुष्यत्व को छोड़ जो उस का ईश्वरत्व है उस ईश्वर का यह तीसरा धर्म्म नहीं है वा ईश्वरत्व छोड़ कर जो उस का मनुष्यत्व है उस मनुष्यत्व का भी नहीं है किन्तु उन दोनों स्वभाव के युक्त होने से उत्पन्न हुआ अर्थात् वह जो ईश्वर से मध्यस्थ स्थापित हुआ है उस मध्यस्थता के साधन के निमित्त जो धर्म्म आवश्यक है यही तीसरा धर्म्म है। प्रथम—धर्म्म के त्यागने से वह ईश्वरत्व से हीन हो जाता। द्वितीय—धर्म्म के त्यागने से वह मनुष्यत्व की पवित्रता से रहित हो जाता। और तृतीय धर्म्म के त्यागने से वह मध्यस्थ पदवी के लिये जो सिद्धि आवश्यक है उस से रहित हो जाता। इन धर्म्मों को छोड़ कर क्रिया से अर्थात् ईश्वर की आज्ञा पालन करने से उस का एक और धर्म्म उत्पन्न होता है यही धर्म्म पापियों को दिया जाता है इसी से

उन का पाप ढक जाता है। इस विषय में लिखा है कि जैसा एक मनुष्य की आज्ञा लंघन करने से बहुत लोग पापी बनाये गये तैसे ही एक मनुष्य की आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी बनाये जायंगे। (रोमि. ५ : १६)

यह सुन खीष्टियानी बोली, क्या अन्य तीनों धर्म्मों से हम को कुछ फल नहीं प्राप्त होता है। महात्मा ने कहा, हां, होता है। उन से तो उस के स्वभावों की सत्ता और कार्य्य का साधन होता है इस लिये ये किसी को दिये नहीं जा सकते। तौ भी उस का वह धर्म्म जिस के गुण से हम लोग धर्म्मी गिने जाते हैं उन्हीं तीन धर्म्मों के गुण से फलदाई होता है अर्थात् उस के ईश्वरत्व का जो धर्म्म है तिस के द्वारा उसका आज्ञापालन गुणवान होता है और उस के मनुष्यत्व का जो धर्म्म है उस के द्वारा उस के आज्ञा पालन में मनुष्य को धर्म्मी ठहराने की सामर्थ्य होती है और उस के दोनों स्वभाव के युक्त होने से जो धर्म्म उत्पन्न होता है उस से उस को अपने धर्म्म द्वारा मनुष्य को धर्म्मी ठहराने का अधिकार मिलता है। तो देखो आज्ञापालन से जो खीष्ट का चौथा—धर्म्म है उस से ईश्वरत्व के भाव से खीष्ट को कुछ प्रयोजन नहीं है क्योंकि वह इस के बिना भी ईश्वर है। फिर मनुष्यत्व के भाव से खीष्ट को उस से प्रयोजन नहीं है क्योंकि इस के विना भी वह निर्दोष मनुष्य है। फिर ईश्वरत्व मनुष्यत्व इन दोनों के युक्त होने के भाव से उसको इस धर्म्म से प्रयोजन नहीं क्योंकि इस के बिना भी वह इन दोनों के समान स्वभाव संयुक्त निर्दोषी पुरुष है। सो किसी प्रकार से खीष्ट को इस धर्म्म से अपने विषय में प्रयोजन नहीं है इस लिये वह औरों को इसे दे सकता है अर्थात् जिस धर्म्म के द्वारा मनुष्य धर्म्मी गिना जाता है उस को अपने लिये इस की

कुछ आवश्यकता न होने से वह उसको मनुष्यों को देता है इसी से वह धर्म्म का दान कहलाता है। (रोमि. ५ : १७). और जब प्रभु यीशु खीष्ट ने अपने को व्यवस्थाधीन किया तो उस धर्म्म को बांटना उचित है क्योंकि व्यवस्थाधीन पुरुष को केवल न्याय से चलना अवश्य है सो नहीं किन्तु दान करना भी उचित है। यदि उस के पास दो वस्त्र हों तो व्यवस्थानुसार एक वस्त्र वस्त्रहीन को देना उचित है। हमारे प्रभु के पास धर्म्मरूपी दो वस्त्र हैं एक तो उसका प्रयोजनीय है और दूसरा अधिक है। इस कारण जिसके पास नहीं है उसको वह एक वस्त्र दान करता है। अब हे खीष्टियानी ! हे करुणा ! हे बालको ! बिचारो कि तुम्हारे पाप की क्षमा कार्य्य द्वारा अर्थात् अन्य पुरुष के श्रम द्वारा हुई वा नहीं। तुम्हारे प्रभु यीशु खीष्ट ने परिश्रम किया और उससे जो फल उत्पन्न हुआ उसको वह दीन हीन भिखारियों को दान करता है। सुनो और एक बात कहता हूं। कार्य्य द्वारा पाप की क्षमा होने के निमित्त केवल हमारे पहिरने का धर्म्मरूपी वस्त्र चाहिये इतना ही नहीं किन्तु ईश्वर को परित्राण का कुछ दाम भी देना अवश्य है। धर्म्म के व्यवस्थानुसार हम लोग पाप करने से स्रापपात्र हुए इस लिये हम ने जो पाप किये हैं उनका जो दंड उचित है सो जब लों न दिया जाय तब लों हम उस स्राप से मुक्त नहीं हो सकते हैं। तुम्हारे प्रभु ने तुम्हारा बदला हो तुम्हारे अपराधों का फल जो मृत्यु है सोई मृत्यु निज रक्त बहाकर तुम्हारे बदले भोग किया वही रक्त परित्राण का दाम ठहरा। इस रीति से उस ने अपने रक्त द्वारा तुम को पाप से छुड़ाया है और तुम्हारे अपवित्र और कुरूप आत्मा को धर्म्मरूप वस्त्र से शोभायमान किया है। (रोमि. ८ : ३४) इस हेतु अन्त जब ईश्वर जगत्

का विचार करने आवेगा तब तुम को दण्ड नहीं देगा। (गलाति. ३ : १३)

खिष्टियानी ने कहा, यह कैसी आनन्ददायी अलौकिक वार्त्ता है। अब मुझे बूझ पड़ा कि वाक्य और क्रिया से हमारा पाप क्षमा होता है यह बात हमारे ज्ञान को बढ़ाने वाली है। हे करुणा! हमें उचित है कि इस बात को स्मरण किया करें और हे बालको! देखो इस वार्त्ता को तुम भूल मत जाना। महाशय! मैं जानती हूं कि इसी कारण मेरे पति खीष्टियान का बोझा उस के कन्धे से गिर पड़ा और आनन्द के मारे वह तीन बार उछल उछल कर कूदा। महात्मा ने कहा, हां, सत्य है। और किसी उपाय से उसका बोझा न उतरता। इसी वार्ता का विश्वास करने से वह बोझे से मुक्त हुआ। इसका गुण उस पर प्रगट हो इसी के निमित्त उसको क्रूश तक बोझा ढोते हुए आना पड़ा। खीष्टियानी बोली, मुझे इसका निश्चय होता है क्योंकि मेरा अन्तःकरण आगे भी आनन्दित था परन्तु इस समय दश गुण अधिक प्रफुल्लित है। यद्यपि इन बातों का मेरे मन में बहुत ज्ञान तो न हुआ तौभी जो हुआ उससे मुझे बूझ पड़ता है कि सारे जगत में जिस मनुष्य की पीठ पर सब से अधिक भारी बोझ हो वह भी जो मेरी नाईं यहां आकर दर्शन और विश्वास करे तो उसका भी अन्तःकरण इसी भांति सुखी और आह्लादित होगा। महात्मा ने कहा, इन सब बातों के देखने और विचारने से हमको केवल सन्ताप और बोझे से मुक्ति ही नहीं होती वरन् हम लोगों के अन्तःकरण में बड़ी प्रीति उत्पन्न होती है क्योंकि पाप की क्षमा केवल प्रतिज्ञा के अनुसार नहीं किन्तु हमारे प्रभु की ऐसी क्रिया से भी होती है उसका ध्यान जो

खीष्टियानी का विलाप।

कोई एक बेर भी करे वह परित्राण के अद्भुत उपाय से आश्चर्य्य कर अन्तःकरण से त्राणकर्त्ता पर स्नेह क्यों न करेगा। खीष्टियानी बोली, सत्य है उसने हमारे निमित्त अपना रक्त बहाया है इसके बिचारने से मेरा अन्तःकरण मानो छिद जाता है। हे प्रेम सिन्धु परम धन्य प्रभु मुझ पर तेरा ही अधिकार है तू ने मुझे मोल लिया है। मेरी देह आत्मादि सर्वस्व तेरा है मेरे लिये तू ने मूल्य से दश सहस्र गुण अधिक मोल दिया है। हाय ! इस दर्शन से जो मेरे स्वामी के नेत्र से जल बहने लगा चेतना होगी। परन्तु अन्य दुष्टों की ओर आनन्द के कारण फुर्ती से आगे बढ़ा तो कुछ आश्चर्य्य नहीं। निश्चय उसको यह इच्छा थी कि मैं भी उसके साथ जाती पर हाय ! मैं बड़ी अधम हूं जो मैं तो उसे इस यात्रा में अकेला जाने दिया। हे बहिन करुणा, तुम्हारे पिता माता यहां होते और भयातुरा भी यहां होती हां, कामुकी भी होती तो मेरे मन में क्याही आनन्द होता। कदाचित् वे होतीं तो उन का अन्तःकरण क्यों न छिद जाता। न भयातुरा का भय न कामुकी का कामाभिलाष उनको इस यात्रा से फेर कर घर ले जा सकता। महात्मा बोला, तुम इस समय स्नेह की प्रबलता से कहती हो। तुम्हारा सर्वदा यही भाव रहेगा तुम क्या ऐसा अनुमान करती हो फिर देखो कि सभों पर यह अनुग्रह नहीं होता है। जो यीशु के मरण के समय खड़े थे और उसके हृदय से रुधिर को बहाते भूमि पर गिरते देखा उन में से अनेक मनुष्य थे जिन्होंने शोक क बदले ठट्ठा किया और इस अतुल्य दर्शन से भी उसके अधीन न हुए परन्तु इसके विपरीत उनका हृदय और भी कठोर हो गया। सो हे मेरी कन्याओ ! देखो तुम्हारे चित्त में यह जो भाव उत्पन्न हुआ है सो ईश्वर के विशेष अनुग्रह का फल है जिसने मेरे कहे हुए वचन का विचार

करने में तुम्हारी सहायता की है। चेत करो कि तुम से कहा गया था कि मुर्गी अपनी सामान्य पुकार से अपने बच्चों को भोजन नहीं देती इससे जानो कि तुम्हारा यह भाव ईश्वर के विशेष अनुग्रह का फल है।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि वे आगे बढ़ खीष्टियान की यात्रा में भोला आलसी और निःशंक ये तीनों जिस स्थान में सो गये थे उस स्थान पर पहुंचे। उस स्थान पर आ उन्हों ने पथ की एक ओर थोड़ी दूर पर इन तीनों की देह को संकल से बन्धी हुई फांसी के काष्ठ में लटकती देखीं। तब करुणा ने पथदर्शक से पूछा, महाराज ! ये तीनों कौन हैं और किस लिये फांसी पड़े। महात्मा बोला, इन तीनों की बड़ी कुमति थी। वे आप यात्री होने की इच्छा नहीं रखते थे वरन् अपनी शक्ति भर दूसरों की यात्रा में विघ्न डालते थे। वे आप ही अज्ञानी और आलसी थे और जो लोग उन की बात सुनते थे उन्हें अपने ऐसे आलस्य और अज्ञानता की शिक्षा देते थे और यही मिथ्या आशा उन्हें दिखाते थे कि अन्त में तुम्हारा कल्याण होगा। खीष्टियान के गमन समय ये सोते थे इस काल तुम इन्हें फांसी के काठ से लटके हुए देखती हो। तब करुणा ने पूछा, ये किस किस को अपने मत में लाये। महात्मा ने कहा, बहुतों को मार्ग से भटका दिया। एक तो मन्दगामी को इन्हों ने कुपरामर्श देकर अपने ही समान कर दिया। फिर अल्पश्वास असाहसी कामातुर और निद्रालु इन सभों को और मन्दमति नाम्नी एक स्त्री को भी वे भरमाकर अपने संग कुपथ में ले गये। फिर तुम्हारे प्रभु को इन्हों ने क्रूर स्वामी कहकर अनेक मनुष्यों के आगे उस की निन्दा की और उस के उत्तम देश की भी निन्दा

भोला आलसी और निःशंक का नाश।

करके कहते थे कि उस का जो यश लोग गाते हैं उस का आधा भी सच नहीं है और उस के उत्तम उत्तम दासों को दुर्नाम धर धर परकार्य्य में हाथ डालनेहारे और दुःखदाई कहते थे। फिर वे ईश्वर की दी हुई रोटी को भुस के समान और उस के सन्तानों के सुख को भावना मात्र और यात्रियों के क्लेश और परिश्रम को अनर्थक कहते थे। यह सुनकर खोष्टियानी ने कहा, वे लोग ऐसे थे तो मैं उन के निमित्त कभी शोक न करूंगी उन को यथार्थ दण्ड हुआ है। और वे राजपथ के निकट लटकाये गये यह भी अच्छा हुआ क्योंकि इन्हें देखने से औरों को भी चेतना के निमित्त जो इन के कुकर्म्मों की कथा किसी लोहे वा पीतल के पत्र पर खुदवा कर यहां टांगी जाती तो क्या और भी भला न होता। महात्मा ने कहा, वह भी है तुम भीत के निकट जाओ तो उसे भी देखोगी। तब करुणा बोली, चलो उन्हें लटके रहने दो। उन का नाम न रहे उन के पाप उन के विपरीत सदा साक्षी होवें बहुत अच्छा हुआ कि हमारे यहां आने से पहिले ये फांसी पड़े नहीं तो हम सरीखी अबला स्त्रियों से न जानिये क्या करते। फिर वह इस विषय का गीत बना कर गान करने लगी। यथा—

दोहा।

धर्म विपक्षी जो भये . पायो सो गति शूल।
अनुमति तेहि के जो चलें . तिन की गति तस तूल॥
असगति दुर्जन के निरखि . होंय नित सावधान।
यात्री जे जत आवहीं . करि निज मन अनुमान॥
तातहुँ चेतहु प्राण प्रिय . कहौं तोहि समुझाय।
यात्रिन सह शुभ प्रेम करु . शील भाव दर्शाय॥

पांचवां अध्याय ।

दुर्गम पर्वत पर चढ़ने और रम्य राजगृह में प्रवेश करने का वृत्तान्त ।

इस रीति से चलते चलते ये सब दुर्गम पर्वत के समीप पहुंचे । इस स्थान में खीष्टियान की यात्रा के समय जो कुछ हुआ था उसे महात्मा ने इन को कहना उचित जान सोते के पास ले जा कर कहा देखो इस पर्वत के चढ़ने के पहिले खीष्टियान ने इसी सोते का जल पिया उस समय इस का जल बहुत निर्म्मल था पर अब गंदला हुआ है इस का कारण यह है कि यात्री लोग इस जल को पान कर के अपनी तृषा न बुझावें इसी निमित्त दुष्टों ने इस का जल अपने पैरों से रौंद डाला है । (हिजकेल ३४ : १८,१९) करुणा ने कहा, वे पराया सुख देख कर इतना क्यों जलते हैं । महात्मा बोला, इस का कुछ सोच मत करो क्योंकि इस जल को एक उत्तम पात्र में धरो तो इस की मिट्टी नीचे बैठ जायगी और निर्म्मल हो जायगा । तब खीष्टियानी को और उस के संगियों को वैसा ही करना पड़ा । उस जल को उन्हों ने थोड़ी देर तक एक मिट्टी के पात्र में धर दिया जब उस का मैल नीचे बैठ गया और निर्म्मल हो गया तब इन्हों ने उस को पान किया ।

दुर्गम पर्वत ।

फिर उस पर्वत के नीचे जो दो पथ थे जिन में व्यवहारगामी और कपटी भटक कर नष्ट हुए थे महात्मा ने उन्हें दिखा कर कहा, इन दोनों मार्गों में बड़ा खटका है । जब खीष्टियान यहां से होकर गया तब दो मनुष्य इन्हीं पथों में जाने से नष्ट हुए । अब

तो जैसा तुम देखती हो वे बाड़े और खाईं से बन्द किये गये हैं तौ भी कोई कोई पर्वत पर चढ़ने के परिश्रम से डर के इन पथों में जाने की जोखिम उठाते हैं खीष्टियानी बोली, आज्ञालंघन करनेहारों का मार्ग कठिन है। (दृष्टान्त १३ : १५) इस पन्थ में जाते समय उन के हाथ पैर नहीं टूटते यह बड़ा आश्चर्य्य है महात्मा ने कहा, वे खटके की जगह जान कर भी नहीं रुकते हैं। जो किसी समय राजा के कोई सेवक उन्हें जाते देखते हैं और उन को पुकार कर कहते हैं यह तुम्हारा पथ नहीं है तुम इस पथ हो कर मत जाओ तुम पर विपत्ति पड़ेगी तो वे ठट्ठा मारकर उत्तर देते हैं तुम महाराजा के नाम से हम को जो बात कहते हो सो हम न मानेंगे जो हमारे मुख से निकला है सो हम करेंगे। (यरमियाह ४४ : १६, १७) फिर उस ने कहा, जो तुम आगे बढ़ कर देखा चाहो तो देखो यह सम्पूर्ण मार्ग लोगों के सावधान होने के निमित्त अच्छी रीति से बन्द किया गया है। केवल खाई और बाड़ा नहीं है किन्तु चारों ओर से कांटे लगाये गये हैं तौ भी वे इसी मार्ग से जाना भला जानते हैं। खीष्टियानी बोली, वे आलस्य कर परिश्रम नहीं किया चाहते हैं। पर्वत का चढ़ना उन को दुःख जान पड़ता है। धर्म्म ग्रन्थ में जो लिखा है सो उनके विषय में सुफल होता है कि आलसी का मार्ग कांटों के बाड़े की नाईं है। (नीति. १५ : १९) वे फंदे पर पांव देकर चलना वरन् अच्छा जानते हैं पर चढ़ाव होकर स्वर्गपुर जाने की इच्छा नहीं करते।

दो मार्ग।

फिर ये सब आगे बढ़ एकाग्र चित्त से पर्वत पर चढ़ने लगे परन्तु शिखर तक न पहुंचे कि इतने में खीष्टियानी हांप कर कहने लगी, मुझ को जान पड़ता है कि यह हंपानेवाला पर्वत है। जो लोग अपने आत्मा के कल्याण से लौकिक सुख भोग

को अधिक प्रिय जानते हैं वे उस सुगम पथ को स्वीकार करें तो कुछ आश्चर्य नहीं है। तब करुणा कहने लगी, मुझे तो बैठ कर सुस्ताना होगा और बालकों में से छुटका थककर रोने लगा। तब महात्मा ने कहा, इस जगह मत बैठो थोड़ी दूर पर राजा का लगाया हुआ कुञ्ज है वहां चलो। यह कह छुटके लड़के का हाथ पकड़ कर उस कुंज तक उन्हें ले गया। वहां जाकर वे सब परिश्रम से पसीने में हो हो बैठे तो बैठने से उन्हें बहुत सुख हुआ। तब करुणा बोली, परिश्रमी मनुष्यों को विश्राम कैसा सुखदाई होता है। (मत्ती ११ : २८) और हमारा राजा जिस ने यात्रियों के लिये ऐसा उत्तम विश्राम स्थान बनाया है कैसा दयालु है। यह कुञ्ज मैं ने कभी देखा तो नहीं था पर इसकी अनेक वार्त्ता सुनी है। यहां हमें उचित है कि ऊंघने से सावधान रहें ऐसा न हो कि सो जायें। मैं ने सुना है कि यहां सो जाने से खीष्टियान को बड़ा दुःख भोगना पड़ा था। तब महात्मा लड़कों से कहने लगा, हे प्रिय बालको! इस समय तुम कैसे हो और यात्री होना तुम अब कैसा समझते हो। तब छुटका बालक बोला, महाराज! मेरा प्राण तो नथुनों तक आ गया था तुम जो हाथ पकड़ कर मुझे चढ़ा लाये इस को मैं तुम्हारा बड़ा अनुग्रह मानता हूं। इस समय मुझे मेरी माता की बात सुरत पड़ी कि स्वर्ग का मार्ग सीढ़ी चढ़ने की नाईं है और नरक का मार्ग पर्वत पर से उतरने के समान पर मैं पर्वत पर उतर के मृत्यु-राज्य में नहीं जाया चाहता हूं मैं तो सीढ़ी चढ़ने के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त किया चाहता हूं। करुणा ने कहा, लोग कहते हैं कि पर्वत पर से उतरना ही सहज है। तब उस बालक ने जिस का नाम याकूब था कहा, मेरी समझ में ऐसा दिवस भी आवेगा जिस में पर्वत पर से उतरना सब से कठिन कर्म होगा।

यह सुन महात्मा बोला, वाह रे बालक ! तूने बहुत अच्छा उत्तर दिया। तब करुणा मुसकुराई पर बालक कुछ लज्जित हुआ।

इतने में खीष्टियानी बोली, इस स्थान में विश्राम करते हुये कुछ जल पान कर मुंह मीठा करें। अर्थकारक महाराज ने उस घर से चलने के समय मुझे कुछ अनार कुछ मधु का छत्ता और शीशी में कुछ द्राक्षारस दिया था सो मेरे पास है। करुणा ने कहा, मैं समझती थी कि तुम्हें उस ने कुछ दिया होगा क्योंकि तुम को एक ओर ले गया था इतना मैं ने देखा। खीष्टियानी ने कहा, हां, उसी समय दिया था और हे करुणा चलते समय जो मैंने कहा था सो अब भी कहतीं हूं कि तुम मन की सुइच्छा से मेरी सङ्गिन हुई हो इस कारण मेरे सब सुख सम्पति में तुम्हारा भी अंश होगा। यह कह कर खीष्टियानी ने लड़कों और करुणा को खाने को दिया। ये सब खाने लगे। फिर महात्मा से कहा, महाराज ! आप हमारे साथ कुछ खायेंगे। उस ने कहा, मेरी चिन्ता न करना। तुम तो यात्रा में गमन करते हो मैं थोड़ी देर में घर फिर जाऊंगा। तुम जो खाते हो उस से तुम्हारा मंगल परमेश्वर करे मैं तो घर में ऐसे ऐसे पदार्थ प्रतिदिन खाया करता हूं। पीछे जब वे भोजन पान कर कुछ ठहर बातचीत कर चुके तब पथदर्शक ने कहा, अब बेरा झुक गई है चलो हम आगे बढ़ें। तब वे सब उठे और बालक उन के आगे आगे चले। परन्तु खीष्टियानी द्राक्षारस की शीशी भूल आई थी उस के लेने के लिये छुटके पुत्र को भेजा। तब करुणा बोली, यह स्थान न जाने कैसा है कि जो यहां टिकता है सो कुछ न कुछ छोड़ ही आता है। खीष्टियान यहां अपना अधिकार पत्र खो गया और खीष्टियानी

जलपान करना।

द्राक्षारस की शीशी।

अपनी शीशी भूल आई है। हे महाराज! इस का क्या कारण। पथदर्शक ने उत्तर दिया, इस का कारण निद्रा वा भूल है। कोई तो जब जागने का समय है तब सो जाते हैं और कोई जब स्मरण रखना चाहिये तब भूल जाते हैं इसी कारण विश्राम स्थान में यात्रियों की हानि हो जाती है। सर्वदा जागते रहना और सुख भोगने के समय मे आगे पाये हुए पदार्थों का स्मरण रखना यात्रियों का धर्म्म है। ऐसा न करने से कभी कभी यात्रियों को आनन्द के अन्त में शोक करना पड़ता है मानो उन के ऊपर आकाश निर्म्मल होने के पीछे घटा छा जाती है। इसका दृष्टान्त चाहो तो इस ठौर खीष्टियान की जो दशा हुई सो देखो।

फिर जिस स्थान में संशयी और भयभीत ने खीष्टियान को सिंहों का भय दिखाकर फिर जाने का परामर्श दिया था उसी स्थान पर पहुंच कर इन्हों ने एक मंच देखा और उस मंच पर मार्ग की ओर एक तांबे का पत्र सटा था जिस में चौपाई खुदी थी और इस मंच के स्थापन का कारण भी उस के नीचे लिखा था। वह चौपाई यह है—

चौपाई।

देखि सोइ अब रहु सचेते। मन बच राखहु निज बस तेते॥
जाते होय न दुर्गति तेरी। पूर्व भयो जिमि लोगन केरी॥

इसके नीचे यह बात लिखी थी कि भय अथवा संशय से जो लोग इस पथ में आगे न बढ़ेंगे उन को दण्ड देने के निमित्त यह मंच खड़ा किया गया है। संशयी और भयभीत ने खीष्टियान की यात्रा निवारण करने की चेष्टा की थी इस लिये इस मंच पर उन की जिह्वा तप्त लोहे से छेदी गई। तब करुणा बोली, यह वाक्य प्रीतम प्रभु के उस वाक्य के समान है कि हे छली जिह्वा

तुझे क्या दिया जाएगा व तुझ से क्या किया जाएगा । वीरों के तीक्ष्ण बाण और बबूल के अंगारे । (भजन १२० : ३, ४)

सिंहों का भय ।

फिर ये लोग आगे बढ़े और चलते चलते जहां दो सिंह बंधे थे उस स्थान पर पहुंचे । महात्मा तो बलवान पुरुष था इस कारण सिंहों से नहीं डरता था । परन्तु ज्यों वे उस स्थान पर पहुंचे त्यों बालक जो आगे आगे चले जाते थे एकाएकी सिंह को देखते ही भयातुर हो हट आये और सब के पीछे हो लिये । तब पथदर्शक हंसकर कहने लगा, हे बालको ! यह क्या ! तुम निर्भय समय में आगे आगे दौड़े जाते थे अब सिंहों को देखते ही पीछे क्यों हो लिये । फिर महात्मा खड्ग निकाल सिंहों के बीच में से यात्रियों के निमित्त मार्ग खोलने का उद्योग करने लगा । अकस्मात् सिंहों का सहायक एक दानव दिखाई दिया । वह पथदर्शक से पूछने लगा कि तुम्हारे यहां आने का कारण क्या ? उसका नाम घोराकार वा हत्यारा था क्योंकि वह यात्रियों को मार डालता था । महात्मा ने उत्तर दिया, ये दोनों स्त्रियां और ये बालक यात्रा को जाते हैं और यही इन के जाने का मार्ग है इस लिये तुम्हारी वा सिंहों की बाधा से वे न रुकेंगे । घोराकार ने कहा, यह इन के जाने का मार्ग नहीं है और न इस मार्ग से मैं उन्हें जाने दूंगा । मैं उन के रोकने और सिंहों की सहायता करने के निमित्त आया हूं । इस स्थान में इतना कहना उचित है कि इन सिंहों की भयानकता और उन के सहायक घोराकार की दुष्टता के कारण यह मार्ग बहुत दिनों से पथिकहीन रहा था और उस में घास जम गई थी । यह देख खीष्टियानी ने कहा, मैं देखती हूं कि बहुत दिन से यह राजपथ पथिकहीन हो रहा है और यात्री लोग पगडंडी हो कर जाते

हैं। पर अब से ऐसा न होगा क्योंकि मैं इस्राएल के वंश में माता रूप उत्पन्न हुई हूं। (न्यायियों ५ : ६, ७) यह सुन घोराकार ने सिंहों की किरिया खाकर कहा, तुम जो इस स्थान से

महात्मा और घोराकार दानव का युद्ध।

मार्ग निकाला चाहती हो सो नहीं होगा। इस मार्ग से फिर जाओ नहीं तो सब नाश किये जाओगे। यह सुनते ही उस पथदर्शक महात्मा ने घोराकार दानव पर झपट कर उस को ऐसा खड्ग मारा कि वह पीछे हटकर कहने लगा तुम क्या मेरे

अधिकार की भूमि में मुझे मारोगे। महात्मा ने कहा, हम तो अपने राजा के अधिकार की भूमि में हैं। उसी की भूमि में तुम ने सिंहों को बांध रक्खा है। तुम्हारे सिंह जो कर सकें सो करें पर यात्रियों को नहीं रोकने पावेंगे। यद्यपि ये स्त्री बालक दुर्बल हैं तथापि इसी मार्ग से जायेंगे। यह कह फिर एक ऐसी मार मारी कि वह दानव घुटनों के बल गिरा और उस का टोप फट गया। फिर तीसरी मार से उसकी एक बांह उड़ा दी। तब वह ऐसे भयंकर शब्द से चिचियाने लगा कि स्त्रियां उस के शब्द से तो डर गईं परन्तु उसे पृथ्वी पर लोटता हुआ देखकर प्रसन्न हुईं। वे दोनों सिंह तो संकल से बंधे हुए थे इस लिये किसी पर झपट नहीं सकते थे। जब उनका सहायक घोराकार मर गया तब यात्रियों से महात्मा ने कहा, अब तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ ये सिंह किसी प्रकार से तुम्हें दुःख नहीं दे सकते हैं। तब वे चले पर जब सिंहों के निकट से हो कर निकलने लगे तब स्त्रियां भयातुर हो कांपने लगीं और बालक तो मृतवत् हो गये पर वे सब कुशल से निकल कर आगे बढ़े।

दानव का मार डालना।

फिर थोड़ी दूर जाने से जब उन को रम्य नाम राजभवन के द्वारपाल का घर दिखाई दिया तब वे शीघ्र शीघ्र चलने लगे क्योंकि संध्याकाल हो चुका था और रात्रि को उस स्थान में चलने से भय था। जब वे उस के द्वार पर पहुंचे और महात्मा ने द्वार पर खटखटाया तब द्वारपाल ने पुकार कर कहा, कौन है? इस ने उत्तर दिया मैं हूं। इस का शब्द पहिचान द्वारपाल तुरन्त नीचे आया क्योंकि यह कई बिरियां पथदर्शक हो यात्रियों को पहुंचा जाता था। फिर द्वारपाल ने आकर द्वार खोला और यात्री जो पीछे खड़े थे इस कारण उन्हें न देख

केवल पथदर्शक को खड़ा देख कहने लगा, हे महात्मा ! भाई ! आज क्या है जो तुम इतनी रात बीते यहां आये हो। इस ने कहा, मैं कई एक यात्रियों को साथ लाया हूं। हमारे प्रभु की आज्ञा से वे सब आज रात्रि को यहां ही टिकेंगे। मैं इस समय से बहुत पहिले आता पर सिंहों की सहायता करनेहारे दानव ने जब हमें रोकने का यत्न किया तब मुझे उस के साथ घोर संग्राम करना पड़ा निदान उसे मार यात्रियों को कुशल के सहित यहां ले आया हूं। तब द्वारपाल ने पूछा, तुम क्या भीतर आकर प्रातःकाल लों नहीं रहोगे महात्मा बोला, नहीं मैं अभी अपने प्रभु के निकट फिर जाऊंगा। यह सुन खोष्टियानी बोली, हे महाराज ! आप क्या पथ के बीच में हमें छोड़कर फिर जायेंगे। इस बात को मैं कैसे मानूं। आप हमारे विश्वासपात्र और प्रेमी सहायक हैं और हमारे निमित्त आप ने बड़ी बीरता से युद्ध किया है फिर बड़ी सरलता से हम को सदुपदेश दिया है। आप ने जो हमारे ऊपर कृपा की है उस को मैं जन्म भर न भू ंगी। फिर करुणा बोली, हाय ! हाय !! हमारी यात्रा की अन्त लोंजो आप हमारे साथ चलते तो बहुत ही अच्छा होता। महाराज हम दीन अबलाएं इस आपदायुक्त मार्ग में रक्षक बिना अकेली किस भांति निबहेंगी। फिर याकूब नाम कनिष्ठ बालक बोला, हे महाराज ! कृपा करके हमारे साथ चलिये क्योंकि हम सब निर्बल हैं और पथ अति भयंकर है। तब महात्मा ने उत्तर दिया कि मैं अपने प्रभु की आज्ञा के अधीन हूं। जो वह मुझे समस्त पथ का दर्शक कर दे तो मैं प्रसन्नता से तुम्हारे साथ साथ चलूंगा। पर यह तुम से चूक हो गई। जिस समय प्रभु ने मुझे तुम्हारा पथदर्शक किया जो तुम उस समय कहते तो

द्वारपाल द्वार खोलता है।

वह तुम्हारा मनोरथ पूर्ण कर मुझे यात्रा भर तुम्हारी रक्षा करने की आज्ञा देता । अब इस समय मुझे विदा होना पड़ा । हे खीष्टियानी ! हे करुणा ! हे प्रिय बालको ! अब प्रभु तुम्हारा साथी होवे ।

महात्मा की विदाई ।

फिर जागृत नाम द्वारपाल ने खीष्टियानी के देश कुटुम्बादि के विषय में पूछा । तब इस ने उत्तर दिया मैं नाशनगर से आई हूं बिधवा हूं और मेरे पति का नाम खीष्टियान यात्री था । यह सुन द्वारपाल बोला, तुम क्या खीष्टियान यात्री की स्त्री हो । खीष्टियानी बोली, मैं वही हूं और ये उसके लड़के हैं । फिर करुणा की ओर देखकर कहा यह युवती मेरे देश की है । तब द्वारपाल जो अपनी रीति के अनुसार घण्टा बजाया इस पर नमचित्ता नाम एक कन्या आकर उपस्थित हुई । द्वारपाल ने उस से कहा, भीतर जाकर समाचार कहो कि खीष्टियान की स्त्री खीष्टियानी और उस के सन्तान यात्री होकर यहां आये हैं । तब उस कन्या ने भीतर जाकर कहा । उस के मुख से इस बात के निकलते ही घर में अत्यन्त आनन्द-ध्वनि होने लगी । खीष्टियानी तो द्वार पर खड़ी थी उस से भेंट करने के लिये घर के लोग तुरन्त द्वार पर चले आये और उनमें से जो अति मान्य थे सो कहने लगे, हे खीष्टियानी ! उस साधु पुरुष की भार्य्या हे धन्य स्त्री अपने सब संगियों के सहित भीतर आओ भीतर आओ । तब वह भीतर गई और उस के पीछे उस की सखी और उस के सन्तान भी भीतर आये । जब वे सब भीतर गये तब घर के लोगों ने उन्हें एक बड़े स्थान में ले जा कर सब को बैठाया । फिर थोड़ी देर पीछे उस घर के प्रधान लोग अतिथियों के आने का समाचार पाय देखने को आये । वे आकर सभों से परिचय कर चूमा ले कहने लगे, हे ईश्वर के अनुग्रह-

गृह प्रवेश ।

पाओ आओ आओ तुम हम लोगों को भ्राता के समान जान आनन्द से बास करो ।

उस समय रात्रि बहुत गई थी और ये सब युद्ध के और भयंकर सिंहों के देखने से हार गये थे और मार्ग के चलने से थक गये थे इस लिये उन्हों ने शीघ्र शयन करने की आज्ञा मांगी। तब गृह के लोगों ने कहा, नहीं, नहीं, पहिले कुछ खा लो तब शयन कीजियो क्योंकि द्वारपाल ने तुम्हारे आने का समाचार पाकर हम से कहा तब हम ने तुम्हारे लिये अपने नियमानुसार एक भेड़ का बच्चा बिजन के सहित पका कर रक्खा है। (यात्रा १२ : २१ । योहन १ : २६) फिर भोजन के पश्चात् गीत और प्रार्थना समाप्त करके उन्हों ने शयन करने की इच्छा की। तब खीष्टियानी ने विनती की कि मुझे आज्ञा हो तो एक बात कहूं सो यह है कि जिस कोठरी में मेरा पति रात्रि को रहा था उसी कोठरी में हमें सोने की इच्छा है। तब घर के लोग उन्हें उसी कोठरी में ले गये वहां वे सब शयन करने को लेटे। फिर खीष्टियानी और करुणा शयन के समय वार्त्ता करने लगीं। खीष्टियानी बोली, जिस समय मेरा स्वामी यात्री होकर गया तिस समय मैं उसके पीछे आऊंगी ऐसी भावना कभी मेरे चित्त में न आई। करुणा ने कहा, यह भी तुम्हारे चित्त में न आया होगा कि जहां मेरे पति ने शयन किया था मैं भी उसी कोठरी में आकर सोऊंगी। खीष्टियानी ने कहा, यह अनुमान भी कभी न हुआ कि मैं अपने स्वामी का मुख आनन्द से फिर देखूंगी और उस के साथ उस के और अपने महाराजा और प्रभु की सेवा करूंगी पर इस समय इन सब बातों की आशा रखती हूं। इतने में करुणा बोली, सुनो तो क्या कोई शब्द तुम्हें सुनाई देता है। खीष्टियानी बोली, सुनती हूं। जान पड़ता है कि हमारे आने

के आनन्द से बाजा बजता है। तब उस की सखी ने कहा, क्या आश्चर्य है हमारे आने से घर में और अन्तःकरण में और स्वर्ग में सर्वत्र आनन्द के गान शब्द होते हैं। ऐसी ऐसी बातें करते करते वे सो गईं।

प्रात समय जब वे जागीं तब खीष्टियानी करुणा से कहने लगी, तुम जो रात्रि को सोती सोती हंसने लगी इसका कारण क्या जान पड़ता है कि तुमने स्वप्न देखा होगा। करुणा बोली, हां, मैंने अत्यन्त सुखदायक स्वप्न देखा। पर मैं हंसी

करुणा का स्वप्न।

यह बात क्या तुम निश्चय जानती हो। खीष्टियानी ने कहा, हां, तुम बहुत हंसती रहीं। तुम ने क्या स्वप्न देखा सो मुझ से कहो। करुणा ने कहा, मैंने स्वप्न में देखा कि मैं किसी निर्जन स्थान में अकेली बैठकर अपने अन्तः-करण की कठोरता के निमित्त रो रही हूं। फिर मैं क्या देखती हूं कि मुझे देखने और मेरा विलाप सुनने के लिये अनेक मनुष्य मेरी चारों ओर आकर खड़े हुए पर मैं अपनी कठोरता के निमित्त वैसा ही विलाप करती जाती थी। तब उन लोगों में से कोई कोई मेरी हंसी करने और कोई कोई मुझे उन्मत्त कहने और कोई कोई धक्का मारने लगे। इतने में मैंने देखा कि आकाश से कोई पुरुष उड़ता हुआ मेरी ओर चला आता है। वह सीधे मेरे निकट आ कहने लगा, हे करुणा! तुझे क्या दुःख व्यापा है। जब मैंने अपने दुःख की वार्त्ता उससे कही तब उसने कहा तेरा कल्याण हो। फिर उसने अपने रूमाल से मेरे आंसू पोंछ सुनहरे रुपहरे वस्त्र पहिरा मेरे गले में हार कर्ण में कुण्डल और सिर पर सुन्दर मुकुट पहिराया। (हिजकेल १६ : ८,१२) फिर मेरा हाथ पकड़ कर कहा, हे करुणा! तू मेरे पीछे पीछे चली आ। ऐसा कहकर वह आकाश की ओर चला

और मैं भी उसके पीछे पीछे चलती चलती एक स्वर्णद्वार पर पहुंची। जब उसने द्वार पर खटखटाया तब भीतर के लोगों ने द्वार खोला। फिर वह पुरुष भीतर गया और मैं भी उसके पीछे जाते जाते एक सिंहासन के निकट पहुंची। उस सिंहासन पर जो पुरुष बैठा था तिसने मुझे देखकर कहा, हे पुत्री! तेरा कल्याण हो। वह स्थान मुझे तारे की ज्योति से अधिक वरन् सूर्य्य के तेज की नाईं प्रकाशमान दिखाई दिया और मैंने तुम्हारे पति को भी वहां देखा। फिर मेरा स्वप्न भंग हो गया। पर क्या मैं हंसी थी। खीष्टियानी ने कहा, हां, तुम खिलखिला के हंसी थीं। अपने को ऐसे सुन्दर स्थान में देखकर हँसोगी नहीं? और मैं कहती हूं कि यह बड़ा शुभ स्वप्न है। जैसा तुम पर उस का प्रथम भाग सुफल हुआ है तैसा पिछला भी अन्त में सुफल होगा। ईश्वर एक बार वचन कहकर क्या दूसरी बार उसे स्पष्ट नहीं करता है। रात्रि में स्वप्न देखने के समय अर्थात् मनुष्य जिस समय सो जाता है वा बिछौने पर ऊंघता है उस समय वह ऐसा करता है। (ऐयूब ३३ : १४, १५) सोने के समय ईश्वर से वार्त्तालाप करने के निमित्त जागना अवश्य नहीं है। निद्रा के समय में भी वह हमारे निकट आकर अपना वाक्य सुना सकता है। कभी कभी निद्रा के समय में भी हमारा अन्तःकरण जागता रहता है तब ईश्वर वाक्य वा उपदेश वा चिन्ह वा दृष्टान्त के द्वारा जैसे जागृत मनुष्य से तैसे हमारे मन से वार्त्ता कर सकता है। करुणा बोली, मुझे इस स्वप्न से बड़ा आनन्द हुआ और उस का फल देखने की इच्छा करती हूं। उस के देखने से मुझे फिर हंसी आवेगी।

फिर खीष्टियानी बोली, अब हमारे उठने का समय हुआ। आओ उठकर देखें कि अब हमें क्या करना पड़ेगा। तब करुणा

ने कहा, हे बहिन ! मैं विनय करती हूं कि जो गृह के लोग हम को कुछ दिन रहने के लिये कहें तो हम इस बात को सुनते ही स्वीकार करें क्योंकि मैं देखती हूं कि बुद्धिवन्ती धर्म्मिष्ठा और प्रीतिवन्ती ये तीनों कन्या बड़ी सुघड़ और सुमत हैं सो यहां ठहरकर इनसे अधिक परिचय करूं यह मेरी इच्छा है। खीष्टियानी ने कहा, भला देखें वे क्या कहेंगे। फिर वे कपड़े पहिरकर शयनस्थान से नीचे की कोठरी में उतर आईं और घर के लोगों ने आकर इन से पूछा कि कहो रात्रि को कैसे सोईं। तब करुणा ने कहा, मुझे निद्रा अच्छी आई। मैं जन्म भर कभी आज के ऐसे सुख से नहीं सोई। तब बुद्धिवन्ती और धर्म्मिष्ठा कहने लगीं कि इस स्थान में जो तुम हमारी बात को स्वीकार करके कुछ दिन ठहरो तो हम इस गृह के नियमानुसार अपनी शक्ति भर तुम्हारा आतिथ्य करेंगी। प्रीतिवन्ती भी बोली कि हम बड़े आनन्द से तुम्हारी पहुनई करेंगी। तब इन्हों ने स्वीकार किया और न्यूनाधिक एक मास लों वहां रहीं और आपस के सत्संग से सभों को बड़ा लाभ हुआ।

रम्य राजगृह में विश्राम।

खीष्टियानी ने अपने पुत्रों को कैसी शिक्षा दी है इस बात के जानने के लिये एक दिन बुद्धिवन्ती ने उन लड़कों से कुछ प्रश्न करने की इच्छा की। जब खीष्टियानी ने सम्मति दी तब बुद्धिवन्ती ने याकूब नाम कनिष्ठ पुत्र से पूछा, हे याकूब कहो तो तुम को किस ने सृजा। याकूब ने उत्तर दिया, पिता पुत्र और पवित्र आत्मा जो अद्वैत ईश्वर है उसी ने मुझे सृजा। बुद्धिवन्ती ने कहा, तुम ने अच्छा कहा! फिर बोलो तुम्हारा त्राणकर्त्ता कौन है। बालक ने उत्तर दिया, पिता पुत्र और पवित्र आत्मा जो अद्वैत ईश्वर वही मेरा

बालकों से प्रश्न।

त्राणकर्त्ता है। बुद्धिवन्ती बोली, यह भी तुम ने अच्छा कहा है। अब बताओ ईश्वर पिता तुम्हारा त्राणकर्त्ता कैसे हुआ ? याकूब ने कहा, अपने अनुग्रह के द्वारा। उस ने फिर पूछा, ईश्वर पुत्र किस रीति से तुम्हारा त्राणकर्त्ता हुआ। याकूब बोला, अपने धर्म्म और मृत्यु और रक्त और जीवन के द्वारा। फिर प्रश्न किया कि ईश्वर पवित्र आत्मा तुम्हारा त्राणकर्त्ता किस प्रकार से हुआ। लड़के ने उत्तर दिया कि हृदय में प्रकाश करने से और नया जन्म देने से और रक्षा करने से। याकूब के मुख से उत्तर सुनकर बुद्धिवन्ती प्रसन्न हो खीष्टियानी से कहने लगी कि तुम ने जो ऐसी रीति से इन बालकों को शिक्षा दी है इस हेतु तुम प्रशंसा योग्य हो। कनिष्ठ पुत्र ने जब ऐसा यथार्थ उत्तर दिया है तो इन्हीं प्रश्नों को और तीन बालकों से पूछने का कुछ प्रयोजन नहीं मैं इस से जेठे पुत्र से दूसरा विषय पूछूंगी।

तब उस ने यूसफ नाम तृतीय पुत्र को बुलाकर पूछा, हे यूसफ मैं तुम से कई एक प्रश्न जो करूं इस में तुम प्रसन्न होगे। यूसफ बोला, हां, अवश्य मैं बहुत प्रसन्न होऊंगा। तब इस ने पूछा, मनुष्य किस को कहते हो। यूसफ ने कहा, मनुष्य चैतन्य प्राणी है और जैसा मेरे छोटे भाई ने कहा ईश्वर का सृजा हुआ है। बुद्धिवन्ती ने फिर पूछा, परित्राण शब्द से बोध क्या होता है। यूसफ ने कहा, इससे यह बोध होता है कि मनुष्य ने अपने पाप के द्वारा अपने को आप बन्दी और दुःखी किया है। फिर इस ने पूछा, परमेश्वर से उस का परित्राण होता है इस से तुम को क्या बोध होता है। लड़के ने उत्तर दिया यह बोध होता है कि पाप ऐसा बली क्रूर उपद्रवी है कि उस के हाथ से परमेश्वर बिना और कोई नहीं छुड़ा सकता है और यह कि ईश्वर मनुष्यों पर ऐसा दयालु और कृपालु है कि उन्हें इस दुःख से उद्धार

करता है। तब उसने पूछा, ईश्वर दीन मनुष्यों का उद्धार किस लिये करता है। यूसफ बोला, अपने नाम की और अनुग्रह न्यायादि गुणों की महिमा प्रकाश करने के निमित्त और अपने सृजे हुए प्राणियों को अनन्त सुख देने के निमित्त। फिर बुद्धि-वन्ती ने पूछा, कौन कौन लोग परित्राण पावेंगे। यूसफ ने कहा, जो लोग परित्राण को विश्वास द्वारा ग्रहण करे उन्हीं का परि-त्राण होगा। इन उत्तरों को सुन बुद्धिवन्ती प्रसन्न हो बोली, वाह यूसफ तुम्हारी माता ने तुम को उत्तम शिक्षा दी है और तुम ने उस के वाक्य को चित्त लगाकर धारण किया है।

तब उस ने शमुएल नाम द्वितीय पुत्र को बुलाकर पूछा, हे शमुएल मैं तुम से कुछ पूछने की इच्छा करती हूं तुम क्या कहते हो। शमुएल बोला मैं प्रसन्न हूं आप मुझ से पूछिये। तब उस ने पूछा स्वर्ग क्या है? शमुएल ने उत्तर दिया, स्वर्ग परमसुख का स्थान है क्योंकि वहां ईश्वर आप निवास करता है। फिर इस ने पूछा, नरक क्या है? शमुएल ने कहा, नरक भयानक दुःख का स्थान है क्योंकि वहां पाप और शैतान और मृत्यु का निवास है। तब इस ने फिर पूछा, तुम स्वर्ग जाने की इच्छा क्यों करते हो? शमुएल बोला, वहां परमेश्वर का दर्शन पाकर स्थिर चित्त हो उस की सेवा करूं और खीष्ट का दर्शन पाकर निरन्तर उस के प्रेम में आनन्दित रहूं और पवित्र आत्मा की जो पूर्णता इस लोक में प्राप्त नहीं हो सकती है उस को अपने अन्तःकरण में नित्य भोग करूं इन बातों के निमित्त मुझे स्वर्ग जाने की इच्छा है। यह सुन उस कन्या ने कहा, तुम भी बहुत उत्तम बालक हो और तुम ने उत्तम शिक्षा पाई है।

फिर बुद्धिवन्ती ने मत्ती नाम जेठे पुत्र को बुलाकर पूछा, हे मत्ती! तुम से मैं कोई धर्म्म की वार्त्ता पूछूं। मत्ती ने कहा,

पूछिये । तब उस ने पूछा, क्या ईश्वर के पहिले कुछ था वा नहीं । मत्ती ने उत्तर दिया, नहीं कि क्योंकि ईश्वर अनादि और अनन्त है । सृष्टि के प्रथम ईश्वर को छोड़ और कुछ नहीं था। परमेश्वर ने ही छः दिवस में आकाश पृथिवी समुद्र आदि सब कुछ सिरजा । फिर बुद्धिवन्ती ने पूछा कि धर्म्म पुस्तक को तुम क्या समझते हो । मत्ती ने कहा, धर्म्म पुस्तक ईश्वर का पवित्र वाक्य है। उस ने फिर पूछा, धर्म्म पुस्तक में कोई ऐसी बात भी है जिसे तुम नहीं समझ सकते हो । मत्ती ने उत्तर दिया, हां ऐसी अनेक बातें हैं । उस ने फिर पूछा, ऐसी गूढ़ कथा जब मिलती है तब तुम क्या करते हो । मत्ती बोला, मैं यही समझता हूं कि परमेश्वर मुझ से अधिक बुद्धिमान है और यह प्रार्थना उस से करता हूं कि जो जो बातें मेरी हितकारक हों उन्हें वह मुझे समझा दे । तब उस ने यह प्रश्न किया कि मनुष्यों के मरने के पीछे फिर जी उठने के विषय में तुम्हारा विश्वास कैसा है । मत्ती ने उत्तर दिया कि जितने मनुष्य मुए हैं वे सब उठेंगे पर नाशमान अवस्था में न उठेंगे यह मेरा विश्वास है और इस विश्वास के दो कारण हैं एक यह कि ईश्वर ने इस की प्रतिज्ञा की है और दूसरा यह कि जो उस ने प्रतिज्ञा की है उस को पूरा करने को वह समर्थ है ।

फिर बुद्धिवन्ती ने लड़कों से कहा कि आगे भी तुम अपनी माता के वाक्य में मन लगाना क्योंकि वह तुम को और भी शिक्षा दे सकती है । और अन्य धार्म्मिक लोग तुम्हारे सुनने में धर्म्म की जो चर्चा करें वह भी तुम्हें स्मरण रखना उचित है क्योंकि वे लोग जो वार्त्ता कहेंगे सो तुम्हारे हित की ही कहेंगे । और भी आकाश मण्डल से वा पृथ्वी से जो शिक्षा मिले उसे भी ग्रहण करो । विशेष कर के जिस ग्रन्थ ने तुम्हारे पिता को

यात्री होने की शिक्षा दी उस का अधिक अभ्यास किया करो। और हे बालको जब लों तुम यहां रहोगे तब लों मैं तुम्हें अपनी बुद्धि के अनुसार शिक्षा देऊंगी और पारमार्थिक विषयों को बूझने के निमित्त जो जो तुम मुझ से प्रश्न करोगे उन का उत्तर देने में मैं बड़ी प्रसन्न होऊंगी।

छठवां अध्याय।

रम्य राजगृह में विश्राम करना।

जब इन यात्रियों को वहां रहते एक अठवारा हो गया तब एक मनुष्य करुणा से भेंट कर उस को अपना प्रेम जताने लगा। उस का नाम फुर्त्तीला था। वह अच्छे कुल का था और अपने को धार्म्मिक दिखाता था पर सच पूछो तो संसार के विषयों में आसक्त था। इस ने दो तीन बार करुणा से भेंट करने के पीछे उस से विवाह करने की बात चलाई क्योंकि करुणा अति सुन्दरी और मन मोहिनी थी और सर्वदा किसी न किसी कार्य में लगी रहती थी। जब अपना कोई काम न था तब कङ्गालों को देने के निमित्त वस्त्र सिया करती। फुर्तीला तो नहीं जानता था कि करुणा ये सब वस्त्र बना कर क्या करती है पर उस को सर्वदा काम करते देख कर यही विचारता था कि यह स्त्री घरनी होने के योग्य है। फिर करुणा ने उस घर की कन्याओं से इस फुर्तीले की चर्चा की और उन से पूछा, यह कैसा मनुष्य है क्योंकि वे उस का चरित्र अधिक जानती थीं। तब उन्होंने कहा, यह बड़ा काम-

फुर्तीला करुणा से विवाह करना चाहता है।

काजी मनुष्य है और धर्म्म के विषय में भी अपने को यत्नवान दिखाता है तथापि हमें बोध होता है कि इस के अन्तःकरण में धर्म्म का मूल नहीं है। यह सुन करुणा बोली, जो वह ऐसा है तो मैं कभी उस का मुख भी न देखूंगी। मैंने मन में यह प्रणकर रक्खा है कि जिस बात से मेरे आत्मा को भक्ति में बाधा हो उस बात को मैं किसी रीति से अङ्गीकार न करूंगी। यह बात सुन बुद्धिवन्ती बोली, तो उस को निवृत्त करना कुछ कठिन नहीं है। जिस भांति तुम अब दरिद्रों की सहायता करती हो उसी रीति से जो करती चली जाओ तो वह आप ही शिथिल हो जायगा। जब फुर्तीले ने फिर आकर इस को दरिद्रों के निमित्त वस्त्र बनाते पाया तब बोला, तुम क्या सर्वदा कार्य में लगी रहती हो। इस ने कहा, हां, अपना हो वा पराया हो पर मुझे काम करने ही में प्रसन्नता होती है। यह सुन फुर्तीले ने पूछा, इस काम से तुम दिन भर में कितना कमाती हो। करुणा ने कहा, सुकर्म्मरूपी धन से धनवती होऊं और अनन्त जीवन पाने के लिये परलोक के निमित्त उत्तम धन संचय करूं यही मेरी अभिलाषा है इसीलिये मैं यह सब काम किया करती हूं (१ तिमोथिय ६ : १७-१९) फुर्तीले ने फिर पूछा तुम इन वस्त्रों को लेकर क्या करती हो सो कृपा कर कहो। करुणा ने कहा, मैं नङ्गों को पहिनाती हूं। इस बात के सुनते ही उस का मुख सूख गया और उस ने उस दिन से इस के निकट आना छोड़ दिया। जब किसी ने न जाने का कारण उस से पूछा तब उस ने उत्तर दिया कि हां करुणा अति सुन्दरी तो है परन्तु जो नियम उस ने बांधे हैं उन से अप्रसन्न हो मैंने उस के पास जाना छोड़ दिया।

जब फुर्तीले ने उस के निकट आना छोड़ दिया तब बुद्धिवन्ती ने कहा, देखो बहिन ! मैं ने कहा न था कि यह तुम को

शीघ्र ही त्यागेगा हां वह केवल त्याग ही नहीं देगा किन्तु यहां से जाकर तुम्हारी निन्दा भी करेगा। यद्यपि वह धर्म्म का अनुराग और करुणा की अभिलाषा प्रकाश करता था तथापि करुणा के और उस के स्वभाव में इतना अन्तर है कि कभी इन का मेल न होगा। करुणा बोली, मैंने अब लों किसी से यह चर्चा नहीं की थी कि इस के पहिले भी मेरा विवाह कई बेर हो जाता पर जो लोग मुझे चाहते थे उन्हों ने यद्यपि मेरे स्वरूप का कोई दोष न पाया तथापि मेरे नियम को अंगीकार न किया इस कारण मैंने उन के साथ प्रेम भी न किया। बुद्धिवन्ती बोली, करुणा की तो इन दिनों में अनेक लोग मुख से प्रशंसा करते हैं पर करुणा के चलन को जो तुम्हारे नियम के अनुसार है बहुत थोड़े मनुष्य अंगीकार करते हैं। करुणा ने कहा, अच्छा कोई मुझे ग्रहण न करे तो मैं कुंवारी ही रहूंगी मेरा नियम ही मेरा पति होगा अपने स्वभाव को मैं नहीं बदल सकती हूं इस लिये जो कोई मेरे स्वभाव से प्रतिकूल हो उसे मैं जन्म भर कभी स्वीकार न करूंगी। दानशीला नाम मेरी बहिन का एक ऐसे ही सूमड़े से विवाह हुआ पर उन दोनों में कभी नहीं बनती थी। मेरी बहिन तो अपने नियम के अनुसार कंगालों पर दया करना न छोड़ती थी तब उसके पति ने उस को घर की सम्पत्ति उड़ानेवाली ठहरा के पहिले चौक में जाकर उस की निन्दा की फिर घर में से उस को निकाल दिया। बुद्धिवन्ती ने कहा तौभी मुझे अनुमान है कि उस पुरुष ने अपने को धर्म्मिष्ठा प्रकाश किया होगा। करुणा बोली। हां, वह धार्म्मिक कहलाता था। वैसे धार्म्मिकों से तो जगत आजकल भरा पड़ा है परन्तु उस रीति के धार्म्मिक से मुझे कुछ प्रयोजन नहीं है।

करुणा और बुद्धिवन्ती।

इतने में मत्ती नाम खीष्टियानी के जेठे पुत्र के उदर में शूल उठा जिसकी पीड़ा से वह बड़ा व्याकुल होने लगा। उस घर के निकट निपुण नाम अति प्रवीण प्राचीन वैद्य रहता था। खीष्टियानी के कहने से घरवालों ने उसे बुला भेजा। उसने शीघ्र आ घर में प्रवेश कर उस लड़के को देखकर जाना कि इन को शूल हुआ है। तब उसकी माता से पूछने लगा कि आजकल इसने क्या क्या खाया है। खीष्टियानी बोली, अच्छा भोजन इस को मिला है कोई बादी वस्तु तो इसने खाई नहीं। वैद्य बोला, अवश्य इसने कुछ कठोर वस्तु खाई है जो नहीं पची है और औषध बिना पचेगी भी नहीं। जुलाब देने बिना यह बचेगा नहीं। यह सुन शमुएल ने कहा, हे! मां जब हम इस मार्ग के सिरे पर के द्वार को छोड़ थोड़ी दूर आये तब वे कौन से फल थे जो भाई ने तोड़ तोड़ खाये। तुम्हें सुरत आती होगी कि पथ की बाईं ओर एक फुलवारी थी उसके कितने वृक्षों की डालियां भीत पर झुक रही थीं उन्हीं डालियों से भाई ने फल तोड़ तोड़ खाये। खीष्टियानी बोली, हां बेटा, तू ने सत्य कहा इसने वहां कुछ तोड़कर खाया था। मैंने इसे बर्जा तौभी इसने न माना। यह सुन वैद्य बोला, देखा इसने बादी की वस्तु खाई न। मैं निश्चय जानता था कि खाई थी। और सब से अधिक बादी वे फल हैं। वे बालजिबूल की फुलवारी के फल थे। बड़ा आश्चर्य है कि किसी ने उन फलों के खाने से तुम लोगों को न चिताया। अरे वे फल खाकर तो बहुत लोग मर गये हैं। यह सुन खीष्टियानी रोकर कहने लगी हाय! आज्ञाभंजक लड़का। हाय! अचेत माता। हाय! अब अपने पुत्र के निमित्त मैं क्या करूंगी। निपुण बोला घबड़ाओ मत। जुलाब और वमन हो जाने से परमेश्वर

वालजिबूल की फुलवारी के फल।

चाहे तो यह चंगा हो जायगा। खीष्टियानी ने कहा, हे महाराज ! इसकी लागत जो हो सो हो पर अपने जानते भर इसका उपाय कीजिये। निपुण ने उत्तर दिया कुछ भय नहीं है तुम्हारा बहुत पैसा खर्च न लगेगा।

इतनी बात कह वैद्य ने एक जुलाब तैयार करके इसे दिया पर उस से कुछ गुण न हुआ। कहते हैं कि यह औषधि बकरी के लोहू और बछिया की राख और पसोब पेड़ के रस से बनाई गई थी। (इब्रि. ९ : १३, १९ और १० : १-४) जब वैद्य ने देखा कि इस औषध से लड़के को कुछ लाभ न हुआ तब उस ने दूसरी एक उत्तम औषधि बनाकर दी। हे पढ़ने वालो तुम जानते हो कि कभी कभी वैद्य लोग अद्भुत औषधें देते हैं तैसे निपुण ने भी एक आश्चर्य्य की औषधि तैयार करके दी। यह औषधि खीष्ट के रक्त और मांस से निर्म्मित हुई थी। (योहन ६ : ५४—५७। इब्रि. ९ : १४) दो एक प्रतिज्ञा और कुछ नोन मिलाकर इस औषधि की गोलियां बनाई गईं। (मार्क ९ : ४९) इन के खाने की विधि यह थी कि उपवास के सहित एक छटांक पश्चात्ताप से उत्पन्न किये हुए नेत्रजल में तीन तीन गोली खाना होता था। (जकरियाह १२। १०) जब यह औषधि तैयार करके लड़के के निकट लाये यद्यपि वह उस समय शूल की पीड़ा से ऐसा दुःखी था कि उसका शरीर फटा जाता था तौभी उस ने खाने की इच्छा न की। तब वैद्य ने कहा, नहीं, नहीं, ऐसा मत करो इसे तो खाना ही पड़ेगा। बालक ने कहा, इस औषधि के खाने से मुझे घृणा होती है। तब माता बोली, मैं तेरी कोई बात न सूनूंगी तुझे खाना पड़ेगा। बालक ने कहा, मैं खाऊंगा भी तो वमन करके फेंकूंगा। यह सुन खीष्टियानी ने वैद्य से पूछा, महाराज !

मत्ती का औषधि खाना।

इस का स्वाद कैसा है। उस ने कहा, इस का स्वाद बुरा नहीं है। तब खीष्टियानी ने एक गोली ले अपनी जीभ पर धर के चीखी। फिर अपने पुत्र से कहा, अरे बेटा! यह औषधि मधु से भी मीठी है। जो तू मुझे और अपने भाइयों को और करुणा को और अपने प्राण को प्रिय जानता है तो इस को खा ले। इस भांति बहुत मनाने से उस ने ईश्वर के आशीर्वाद की प्रार्थना करके वह औषधि खाई। खाते ही उसे शीघ्र ही गुण जान पड़ा। निदान इस औषधि के खाने से उस को खुल कर जुलाब हुआ और पीछे नींद भी आ गई। फिर पसीना भी छूटा और थोड़ी बेर में शूल की पीड़ा जाती रही। फिर थोड़ी देर में वह उठ के लाठी के सहारे से घर में इधर उधर फिरने लगा। तब बुद्धिवन्ती और धर्म्मिष्ठा और प्रीतिवन्ती से अपने दुःख की और उस से चंगे होने की वार्त्ता करने लगा।

जब मत्ती स्वस्थ हो गया तब खीष्टियानी ने वैद्य से पूछा, हे महाराज! आप ने मेरे और मेरे बालकों के लिये जो परिश्रम और क्लेश उठाया है उसके निमित्त मैं आपको क्या देकर सन्तुष्ट करूं। उस ने उत्तर दिया, मुझे कुछ नहीं चाहिये पर निरूपित नियमानुसार जो देना उचित हो सो वैद्यों के विद्यालय के अध्यक्ष को दो। (इब्रि. १३ : ११-१५) खीष्टियानी ने पूछा, महाराज! इस गोली से क्या अन्य रोग भी शान्त होते हैं। निपुण वैद्य बोला, यह सर्व रोगनाशक है। विशेष करके यात्रियों को जितने रोग व्यापते हैं उन सभों में यह औषधि चलती है और अच्छी रीति से तैयार की जाय तो कभी नहीं बिगड़ेगी। यह सुन खीष्टियानी बोली, महाराज! आप मुझे इस औषधि की बारह डिबिया तैयार करके दीजिये तो आप की

गोलियों की डिबिया साथ ले ली।

बड़ी कृपा होगी क्योंकि इस औषधि के रहते मैं दूसरी कोई औषधि न खोजूंगी। वैद्य भी बोला कि इस गोली से केवल रोगी चंगे होते हैं सो नहीं किन्तु स्वस्थ लोगों के रोग का निवारण होता है। और भी मैं निश्चय कहता हूं कि कोई मनुष्य जो इस औषधि का यथोचित साधन करे तो अमर हो जाय। (योहन ६ : ५८) परन्तु जैसा मैं ने तुम को बता दिया है उस के बिना और किसी विधि से यह औषधि खाओ तो कुछ गुण न करेगी। फिर उसने खीष्टियानी के और उसके सन्तानों के और करुणा के लिये औषधि देकर मत्ती से कहा सावधान रहो तुम कच्चे बेर फिर मत खाना। यह बात कह सभों का चूमा ले बिदा हुआ।

इस के पहिले बुद्धिवन्ती ने बालकों से कहा था कि तुम जो मुझ से कोई पारमार्थिक विषय का प्रश्न किया चाहो तो करो मैं उस का उत्तर दूंगी। तब मत्ती ने जो रोग से चंगा हुआ था उस से पूछा कि प्राय: सब औषधें मुख में कड़वी क्यों लगती हैं। बुद्धिवन्ती ने उत्तर दिया इस से बूझ पड़ता है कि सांसारिक मनुष्य को ईश्वर का वाक्य और उसका गुण अच्छा नहीं लगता है। मत्ती ने फिर पूछा कि जिस औषधि से उपकार होता है उस से जुलाब वा वमन क्यों होता है। उस कन्या ने उत्तर दिया, यह हमें दिखाता है कि ईश्वर का वाक्य जब गुण करता है तब अन्तःकरण और चित्त को शुद्ध करता है। जैसे औषधि शरीर को तैसे ईश्वर का वचन अन्तःकरण को शुद्ध करता है। फिर मत्ती ने प्रश्न किया कि अग्नि की शिखा ऊपर जाती है और सूर्य्य की हितकारक किरणें नीचे आती हैं इस से क्या शिक्षा होती है। इस ने उत्तर दिया कि अग्निशिखा के

मत्ती का प्रश्न बुद्धिवन्ती से।

ऊपर जाने से हमें शिक्षा होती है कि पारमार्थिक अभिलाषा के तेजरूपी स्वभाव द्वारा हमें स्वर्ग की ओर चढ़ जाना उचित है। और सूर्य की किरण जो नीचे आकर हितकारक होती है इस से जाना जाता है कि यद्यपि जगत्राता हम से बहुत ऊंचे पर है तथापि उस का अनुग्रह और प्रेम सूर्य्य की किरण के समान हम पर पहुंचता है। तब उस लड़के ने फिर पूछा कि मेघों का जल कहां से आता है। बुद्धिवन्ती ने कहा, समुद्र से। मत्ती बाला, इस से क्या शिक्षा निकलता है। उसने उत्तर दिया, इस से यही शिक्षा हाती है कि ज्ञान का आकार जो परमेश्वर से ज्ञान पाकर उपदेशक लोग दूसरों को ज्ञान बतावें। फिर पूछा, मेघ जो पृथ्वी पर जल बरसाते हैं इस से क्या समझना चाहिये। इस ने कहा, उपदेशकों ने जो ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान पाया है उसे लोगों को देना उचित है यही शिक्षा पाई जाती है। मत्ती ने फिर पूछा कि सूर्य्य की किरण से जो धनुष पड़ता है इसका तात्पर्य्य क्या है। तब उस ने यह बताया कि हमारे साथ परमेश्वर ने जो अनुग्रह के नियम बांधा है सो खीष्ट से स्थिर भया है इसी के जताने के निमित्त यह धनुष दृष्टि आता है। फिर पूछा, सोतों का जल जो समुद्र से खिंचकर भूमि होकर फूट निकलता है इस से क्या सीखना चाहिये। बुद्धिवन्ती बोली ईश्वर का अनुग्रह जो खीष्ट के शरीर द्वारा हमें मिलता है उसी का दृष्टान्त यह है। लड़के ने फिर पूछा कि कोई कोई झरने बड़े ऊंचे पर्वत की चोटी से निकलते हैं इसका आशय क्या। उसने कहा, इससे यही जाना जाता है कि पवित्र आत्मा का अमृतरूपी अनुग्रह जैसे अनेक दीनहीन और नीच पद के मनुष्यों के हृदय में प्राप्त होता है तैसे ही किसी किसी महान और उच्च पदधारी पुरुष के चित्त में भी दिया जाता है। मत्ती ने फिर कहा, बत्ती में आग क्यों लगाई जाती

है। बुद्धिवन्ती ने उत्तर दिया कि इस का तात्पर्य यह है कि जब लों ईश्वर का अनुग्रह मनुष्य के हृदय में नहीं विराजेगा तब लों अनन्त जीवन की सत्य ज्योति उस में प्रगट नहीं होगी। मत्ती ने फिर पूछा कि दीपक की ज्योति की रक्षा के निमित्त उस के तेल और बत्ती दोनों ख़र्च क्यों होते हैं। यह बोली, उस से यह ज्ञान होता है कि हम लोगों के अन्तःकरण में जो ईश्वर का अनुग्रह रूपी तेज है उस की रक्षा के निमित्त तन मन आदि अपना सर्वस्व ख़र्च करना उचित है। फिर मत्ती ने प्रश्न किया कि पेलिकन नाम जो पक्षी है सो अपनी चोंच से अपनी छाती को आप चीरती है सो क्यों? इसने उत्तर दिया कि अपने रक्तद्वारा अपने बच्चों के पालने के निमित्त वह अपनी छाती को आप चीरती है। इस दृष्टान्त से हमें समझना चाहिये कि यीशु परम दयालु अपने विश्वासियों को अपने सन्तानों के समान जान उन पर ऐसा स्नेह करता है कि अपने रक्तद्वारा उनको नरक से बचाता है। मत्ती ने फिर पूछा, मुर्ग़ के बांग देने से क्या शिक्षा होती है? बुद्धिवन्ती बोली, उससे पितर के पाप और उसके पश्चात्ताप का स्मरण करना उचित है। फिर भी उससे यह जान पड़ता है कि दिन अब होगा इस कारण उस शब्द को सुनकर अन्त में जो महा भयंकर विचार का दिवस होगा उसका चेत किया चाहिये।

फिर जब एक महीना पूरा हो गया तब यात्रियों ने घरवालों से कहा अब हमारे चलने का समय हुआ। तब यूसफ ने अपनी माता से कहा, हे माता! महात्मा जी हमें अन्त लों पहुंचा दें इस की प्रार्थना करने के निमित्त अर्थकारक महाराज के यहां किसी को भेजना न भूलना। खीष्टियानी ने उत्तर दिया, हे बेटा! तुम ने अच्छी बात कही मैं तो भूल ही गई थी। यह कह उस ने

पथ सहायक के लिए प्रार्थना।

एक प्रार्थना पत्र लिख जागृत द्वारपाल को देकर कहा। आप किसी योग्य पुरुष के हाथ यह पत्र हमारे परम हितकारी अर्थकारक महाराज के यहां भेज दें तो बड़ी कृपा हो फिर अर्थकारक ने पत्र पढ़ इन का आशय समझ पत्र लानेवाले मनुष्य से कहा तुम जाकर उन से कह दो कि मैं भेज दूंगा।

जब घरवालों ने जाना कि अब ये जाने की तैयारी करते हैं तब हम ने ऐसे हितकारी अतिथि पाये इस के निमित्त अपने राजा का धन्यवाद करने के लिये सब परिवार को बुलाया। जब धन्यवाद समाप्त हुआ तब उन्हों ने ख्रीष्टियानी से कहा, पथ में चलते चलते ध्यान करने के लिये जैसे हम अन्य यात्रियों को यहां का विषय दिखाया करते हैं तैसे तुम को भी दिखाया चाहते हैं। इतना कह उन्हों ने इन यात्रियों को एक कोठरी में ले जाकर जिस प्रकार के फल हव्वा ने खाये थे और अपने स्वामी आदम को दिये जिन के खाने से वे दोनों अदन की वाटिका से निकाले गये वैसा एक फल इन को दिखाकर ख्रीष्टियानी से पूछा, क्या तुम जानती हो यह कौन सा फल है? उसने उत्तर दिया मैं नहीं जानती हूं कि यह विष है वा फल है। तब उन्हों ने उस फल का वृत्तान्त इन को समझाया। इस से इन्हें बड़ा आश्चर्य्य हुआ। (उत्पत्ति- ३ : ६। रोमि ७ : २४)

विष फल।

फिर इन को दूसरे स्थान में ले गये और वहां याकूब की सीढ़ी दिखाई। (उत्पत्ति २८ : १२) उस समय कोई कोई स्वर्गदूत उस पर चढ़ते थे। उन्हें चढ़ते देख ख्रीष्टियानी और उस के सब साथी टकटकी बांधकर देखने लगे। फिर घरवालों ने जब इन को दूसरे स्थान में ले जाने की चेष्टा की तब ख्रीष्टियानी के पुत्र

याकूब की सीढ़ी।

याकूब ने अपनी मां से कहा, हे मां! यह तो बड़ी चमत्कृत वस्तु दृष्टि पड़ती है इन से कहो कि यहां कुछ और ठहरें। सो वे वहां कुछ देर तक ठहरे और खड़े खड़े चित्त लगाकर वह मनोहर दर्शन देखने रहे। (योहन १ : ३६)

फिर उन्हें दूसरे ठौर ले गये जहां सोने का एक लंगर टंगा था। उस को दिखा कर खीष्टियानी से कहा कि तुम इस को उतार लो यह तुम को अपने साथ ले जाने के लिये मिलेगा क्योंकि आंधी झड़ी के समय इसी को थांभना होगा। यह परदे के भीतर लाग धरके तुम्हें स्थिर रक्खेगा सो यह तुम्हारे प्रयोजन का है। (इब्रि. ६ : १९ । योएल ३ : १६) तब वे उसे लेकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

इब्राहीम की बेदी।

फिर हमारा पिता इब्राहीम जिस पर्वत के ऊपर अपने पुत्र इसहाक को बलि देने के निमित्त गया था उसी पर्वत पर इन को ले जाकर उस की बेदी और काठ और अग्नि और छुरी आदि सब दिखाईं कि वे सब आज तक वर्त्तमान हैं। (उत्पत्ति २२ : ९, १०) यह देख यात्री प्रसन्न हो हाथ उठा कहने लगे आहा॰ ईश्वर धन्य है। इन्द्रियों के दमन और ईश्वर के प्रेम के बिषय में इब्राहीम कैसा ही महात्मा था।

जब घरवाले ये समस्त विषय यात्रियों को दिखा चुके तब बुद्धिवन्ती उन्हें एक बैठक में ले गई जहां एक अत्यन्त उत्तम बाजा था वहां पूर्वोक्त वस्तुओं की गीत बनाकर बाजा बजाते बजाते गाने लगी। यथा—

दोहा।

हव्वा ये फल देखिके, रहो सचेते चित्त।
याकूब की सोपान में दूतारोहण हित्त॥

हाटक लंगर पाय के . मति तुम रहो अघाइ ।
त्यागो अति प्रिय वस्तु को . इब्राहिम की नाइ ॥

इतने में किसी ने आकर द्वार पर खटखटाया तब द्वारपाल ने द्वार खोलकर देखा कि महात्मा खड़ा है। जब वह भीतर आया तब उस के देखने से इन यात्रियों को जो आनन्द हुआ उस का वर्णन नहीं कर सकते क्योंकि इसी ने थोड़े दिन हुए घोराकार हत्यारा नाम दानव को मार हमें सिंहों के मुख से बचाया यही वार्त्ता इस के देखते ही उन्हें सुरत पड़ी। फिर महात्मा ने खीष्टियानी और करुणा को संबोधन करके कहा कि तुम्हारे मार्ग के निर्वाह के निमित्त हमारे प्रभु ने एक एक शीशी द्राक्षारस और कुछ भूना हुआ अनाज और दो अनार दिये हैं और बालकों के लिये कुछ अंजीर और मुनक्के भेजे हैं सो लो।

महात्मा का दर्शन।

जब ये सब चलने को उपस्थित हुए तब बुद्धिवन्ती और धर्म्मिष्ठा इन के साथ कुछ दूर पहुंचाने चलीं। जब द्वार पर आईं तब खीष्टियानी ने द्वारपाल से पूछा, क्या कोई इस मार्ग से होकर आगे गया है। द्वारपाल ने कहा, आज तो कोई नहीं गया पर कितने एक दिन हुए कि एक ने इधर से जाते हुए मुझ से कहा कि थोड़े दिन हुए इस राजपथ में एक बड़ा डाका पड़ा पर वे डाकू पकड़े गये हैं और शीघ्र उन के प्राणदण्ड का विचार होगा। यह बात सुन खीष्टियानी और करुणा भय करने लगीं परन्तु मत्ती ने कहा, हे माता! जब तक महात्मा हमारा पथदर्शक हो हमारे संग जाय तब तक हमें कुछ भय नहीं। तब द्वारपाल से खीष्टियानी बोली, हे द्वारपाल जी जब से हम लोग यहां आये तब से तुम ने जो आज तक मेरा उपकार और मेरे लड़कों पर स्नेह किया है सो मैं तुम्हारा बड़ा निहोरा मानती हूं। मैं कौन

सो वस्तु देकर इस का बदला चुकाऊं। वैसी कोई वस्तु मेरे पास नहीं है पर मेरे धन्यवाद का कुछ चिन्ह मुझ से ग्रहण करो। यह कहकर उस ने एक मोहर उसे दी। तब द्वारपाल प्रणाम कर बोला तुम्हारे वस्त्र सर्वदा उजले रहैं और तुम्हारे सिर का तेल न घटे। (उपदेशक ९ : ८) और करुणा सदा जीवती रहे मृत्यु उस के समीप न आवे और उस के सत्कर्म्म प्रतिदिन बढ़ते जावें। (विवाद ३३ : ६) फिर बालकों से कहा कि तुम युवावस्था की कुअभिलाषा छोड़ धीर और ज्ञानवान पुरुषों के संग धर्म्म के अभिलाषी हो। ऐसा करने से तुम अपनी माता का चित्त प्रसन्न करोगे और समस्त बुद्धिमान पुरुषों की प्रशंसा के योग्य होगे। यह सुन द्वारपाल को नमस्कार करके सब बिदा होकर चले।

सातवां अध्याय।

मृत्युछाया घाटी से पार होना।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि ये सब चलते चलते उस पर्वत के छोर पर आ उपस्थित हुए। इतने में धर्म्मिष्ठा कहने लगी, हाय! हाय!! खीष्टियानी और उस के संगियों को जो देना विचारा था सो मैं भूल आई हूं। मैं तुरन्त जाकर ले आती हूं। यह कह कर लाने गई। जिस ठौर वे खड़े खड़े धर्म्मिष्ठा की बाट जोहने लगे वहां से थोड़ी दूर पर दहिनी ओर एक कुंज था उस कुंज में से उस समय खीष्टियानी ने एक अनूठा मधुर शब्द सुना जब उस को चित्त लगाकर सुना तो उसे यह बचन सुनाई दिया।

दोहा।

मेरी बिन्ती मानके . पूरहु मन की आस।
सदा भवन दिव तोर में . होहि हमारी बास॥

यह सुनते सुनते किसी को इस का उत्तर देते भी सुना, यथा—

नित्य स्थायी मोर प्रभु . दया कृपा की खान।
सत्य सुखद शुभदायिनी . तेहि सुभाव परमान॥

यह सुन खीष्टियानी ने बुद्धिवन्ती से पूछा कि ऐसा सुन्दर गान कौन कर रहा है। (श्रेष्ठ गीत २ : १-१, १२) उस ने कहा यह गान हमारे देश के पत्ती करते हैं। पर सर्वदा ऐसे स्वर से गान नहीं करते। जब वसन्त ऋतु आती है और नाना प्रकार के पुष्प खिलते हैं और मधुर तपन होती है तभी ये ऐसा गान करते हैं। ऐसे समय में दिन भर गाते रहते हैं। मैं बारंबार उन का गान सुनने को घर से बाहर निकलती हूं और ऐसे पत्ती को हम लोग घर में भी पालती हैं। जब चित्त उदास होता है तब इन के शब्द के सुनने से प्रसन्नता व्यापती है और इन पत्तियों से ये वन उपवन अत्यन्त रमणीय जान पड़ते हैं। इतने में धर्म्मिष्ठा आ पहुंची, और खीष्टियानी से कहने लगी देखो जो जो विषय तुम हमारे घर में देख आई हो उन सब का चित्र लाई हूं। तुम जब कोई विषय भूल जाओ तो इस चित्र में देखने से फिर अपनी शित्ता और सन्तोष के निमित्त उस का स्मरण कर सकोगी।

फिर वे पर्वत से नम्रता नाम तराई में उतरने लगे। उतरने की घाटी बड़ी फिसलाऊ थी परन्तु वे सावधानी से उतरे इस कारण उन्हें कुछ दुःख न हुआ। जब उतर चुके तब धर्म्मिष्ठा ने

कहा, हे खीष्टियानी! इसी स्थान में तुम्हारे पति से और अपल्लु-
नम्रता की तराई। ओन से बड़ा भयंकर युद्ध हुआ था। उस का वृत्तान्त तुम ने अवश्य सुना होगा पर डरना मत क्योंकि जब लों यह महात्मा जी तुम्हारा रक्षक और पथदर्शक है तब लों तुम्हारे ऊपर किसी विपत्ति को पड़ने की शंका नहीं है। फिर ये दोनों कन्या यात्रियों को पथदर्शक को सौंपकर घर फिर आईं तब पथदर्शक आगे हो लिया और ये सब उसके पीछे पीछे चले। उस समय महात्मा कहने लगा इस तराई को देखकर भय मत करना। कोई भय का कारण नहीं है। हम जो अपने कर्त्तव्य से अपने पर कोई आपदा न लावें तो इस स्थान में हमारी हानि का कुछ भय नहीं है। हां, इस स्थान में अपल्लु-ओन से खीष्टियान की भेंट हुई और उन दोनों में भयंकर युद्ध हुआ था सहा परन्तु वह जो उतरते समय फिसला था उस फिसलने का फल था क्योंकि जो उतरते समय फिसल जाता है उसी को इस तराई में युद्ध भी करना पड़ता है। इसी कारण इसी तराई का नाम बुरा हुआ है। जब अज्ञानी लोग सुनते हैं कि किसी स्थान में किसी मनुष्य पर भारी विपत्ति पड़ी तब वे तुरन्त अनुमान करते हैं कि वहां किसी भयानक राक्षक वा भूत का बास है पर हाय! यह उन्हें सूझता नहीं कि लोग अपने कर्म्म के फल से ऐसी विपत्ति में पड़ते हैं। देखो यह नम्रता की तराई स्वभाव ही से उर्वरा है। पक्षी भी जो सर्वत्र उड़ते फिरते हैं इस से उत्तम स्थान कहीं न पाते होंगे। खीष्टियान का इस जगह अपल्लुओन से युद्ध क्यों हुआ मुझे निश्चय है कि इसके बताने के लिये कोई न कोई चिन्ह यहां अवश्य मिलेगा। इतने में याकूब ने अपनी मां से कहा, हे मां, देखो तो वहां एक खम्भा खड़ा है और उस पर कुछ लिखा देख पड़ता है चलो हम

जाके देखें। तब उन्हों ने जाकर खम्भे पर यह लिखा देखा कि

इस स्थान पर पहुंचने के पहिले ख्रीष्टियान ने

खम्भे पर का लेख। जो ठोकर खाई थी और इस के निमित्त उस

को यहां जो घोर युद्ध करना पड़ा इन का यात्री

लोग स्मरण करके सावधान होयें। तब पथदर्शक ने कहा, देखो मैं ने तुम से पहिले ही कहा था कि ख्रीष्टियान को दुर्गति का कारण बताने का कोई चिन्ह यहां अवश्य मिलेगा। यह कहकर उस ने ख्रीष्टियानी से कहा तुम ऐसा मत समझना कि इस बात से लोग हमारे पति ही को विशेष करके दोष देते हैं क्योंकि यहां अनेकों की वैसी ही गति हुई है। इस पर्वत पर चढ़ने से इस पर से उतरना अधिक कठिन है पर यह बात इसी पर्वत के विषय में सच ठहरती है और किसी पर्वत के नहीं। परन्तु इस विषय में अधिक कहना कुछ अवश्य नहीं है। वह उत्तम पुरुष तो अपने शत्रु पर सम्पूर्ण जय करके अभी निःशंक विश्राम करता है। सर्वप्रधान परमेश्वर ऐसा अनुग्रह करे कि हम लोग जब उस की नाईं परीक्षित होयें तब उस से अधिक दुर्दशाग्रस्त न होवें। भला अब तो हम सब इस नम्रता की तराई की ओर चित्त लगावें इस देश में वही भूमि सब से उत्तम और अति फलदाई और यहां ढोर चराने योग्य हरियाला मैदान बहुत है। रमणीय स्थान के देखने की जिस की इच्छा हो ऐसा मनुष्य जो हमारी भांति वसन्त ऋतु में इस स्थान पर आवे तो नेत्रों के सुखदायक अनेक पदार्थ देखेगा। देखो इस तराई में कैसी हरियाली है और यह सोसन के पुष्पों से कैसी लहलहा रही है। (श्रेष्ठ गीत २ : १) मैं कितने एक गृहस्थों को जानता हूं जो इस तराई में बहुत सी भूमि जोतकर धनवान हुए हैं क्योंकि ईश्वर अहङ्कारियों से विमुख रहता है

किन्तु नम्रों पर बड़ा अनुग्रह करता है। (याकूब ४ : ६ और १ पितर ५ : ५) सत्य है कि यह भूमि बहुत उर्वरा है इस में अनाज मनों उपजता है। कितनों की ऐसी इच्छा होती है कि पिता के घर जाने का मार्ग अन्त लों इस तराई के ऐसा सुगम होता पर्वत पर चढ़ने उतरने का प्रयोजन न होता पर मार्ग जो है वह यह है दूसरा मार्ग नहीं है क्या करोगे।

ये सब इस रीति की वार्त्ता करते चले जाते थे कि इतने में एक लड़का दृष्टि पड़ा जो अपने पिता की भेड़ें चरा रहा था। इस के कपड़े तो दरिद्र के ऐसे थे पर लड़का हृष्टपुष्ट हंसमुख और सुन्दर था। वह अकेला बैठा हुआ गा रहा था। यह देख महात्मा ने कहा, सुनो यह मेषपालक का बालक क्या गा रहा है। ये सब सुनने लगे। वह यों गा रहा था।

दोहा।

नीचनि को नहिं गिरन की . होहि जगत में भीति।
पथदर्शक परमेश नित . नम्र जिन्हन की रीति॥
सदा सुखी संसार में . भोगैं बहु वा थोर।
टेक धरे भगवान पर . जग की आशा छोर॥
पथिकन सोवत भार लघु . उठा चले निज धाम।
इत कठिनाई काटिके . पावैं उत मन काम॥

यह सुन पथदर्शक ने कहा, अब तुम ने इस का गान सुना। मैं निश्चय जानता हूं कि जो मखमल पाटम्बर आदि के बहुमूल्य वस्त्र पहिरा करते हैं उन से यह बालक अधिक आनन्द से काल व्यतीत करता है। यह सर्वदा शान्तिरूपी पुष्पों की माला पहिरे रहता है। अब मैं इस तराई का कुछ और वर्णन करता हूं सो सुनो। इस तराई में आगे हमारे प्रभु के रहने का भी एक स्थान

था। इस स्थान की वायु बहुत सुखदाई है इस कारण यहां निवास करने से और इन क्षेत्रों में फिरने से उसे बड़ा आनन्द होता था। जो मनुष्य यहां रहते हैं सो संसार के रगड़े झगड़े से बचे रहते हैं। जितने ऊंचे वा नीचे पद हैं सभों में जंजाल और

नम्रता की तराई में मेषपालक का लड़का गान करता है।

बखेड़े होते हैं केवल यही नम्रता की तराई एकान्त स्थान है जहां किसी प्रकार की धूमधाम नहीं होती। ध्यान के भंग होने का कारण जैसा अन्य स्थानों में होता है तैसा यहां नहीं है। यात्रिक

धर्म्मानुरागियों को छोड़ और कोई इस तराई में नहीं फिरता है। यद्यपि खीष्टियान का ऐसा संयोग हुआ कि इस स्थल में अपल्लुओन के मिलने से घोर युद्ध हुआ तथापि पूर्वकाल में यहां किसी किसी को स्वर्गीय दूत मिलते थे और किसी किसी ने दिव्य मोती पाया और किसी किसी को जीवनदायक वाक्य-रूपी धन प्राप्त हुआ। (होशेया० १२ : ४, ५। मत्ती १३ : ४६। नीति ८ : ३५) मैं ने कहा था कि यहां पहिले हमारे प्रभु का वासस्थान था और इस स्थान में फिरनेसे वह प्रसन्न था। फिर मैं यह बात भी कहता हूं कि जो लोग इस स्थान में फिरकर प्रसन्न होते थे सो यहां से मार्ग का खरचा पाकर अपनी अपनी यात्रा में आनन्द से बढ़ जावें इसी अभिप्राय से उस ने यहां धन रक्खा है और समय समय पर ऐसे यात्रियों को उस धन के बांट देने की आज्ञा दिई है।

फिर चलते चलते शमुएल ने महात्मा से कहा, हे महाराज! मैं ने समझा कि इस तराई में मेरे पिता से और अपल्लुओन से युद्ध हुआ परन्तु तराई बड़ी लम्बी चौड़ी है आप कृपा करके दिखाइये कि यहां किस स्थान में युद्ध हुआ था। महात्मा ने उत्तर दिया कि हम अब भूलक्षेत्र होकर जाते हैं इस क्षेत्र के आगे एक सकरा पथ है वहां तुम्हारे पिता ने युद्ध किया था। इस समस्त देश में वही स्थान सब से भयंकर है क्योंकि भूलक्षेत्र। जब यात्री अपनी अयोग्यता को भूल जाते हैं और जो उन का उपकार किया गया है उस को स्मरण नहीं करते हैं तब ही उन पर आपदा आ पड़ती है। उस स्थान में बहुतों की दुर्दशा हुई है। वहां पहुंचने से मैं उस का और भी वर्णन करूंगा क्योंकि वहां कोई खम्भा अथवा इस युद्ध का और कोई चिन्ह अवश्य वर्त्तमान होगा।

इतने में करुणा बोली, पथ के और स्थानों से अधिक इसी स्थान में मुझे सुख और स्वस्थता बूझ पड़ती है। यह मेरा मन-भावना स्थान है। यहां घोड़ों वा रथों की खड़खड़ाहट नहीं है मेरा मन ऐसे स्थान में ठहरने को चाहता है। अनुमान होता है कि इस स्थान में हम कौन हैं कहां से आये हैं और क्या क्या करते चले आये हैं और महाराजा ने हमें क्यों बुलाया है इन बातों का ध्यान करने की कोई बाधा नहीं है। इस स्थान में वह गम्भीर शोच हो सकता है जिस से अन्तःकरण पिघल जाय और नेत्र आंसुओं से पूर्ण हो हिषबोन के सरोवरों की नाईं हो जाय। (श्रेष्ठ गीत ७ : ४) यह यद्यपि बाका अर्थात् रोदन की तराई है तथापि सच्चे यात्रियों के चलने के समय आनन्दरूपी तड़ाग हो जाती है और मेंह जो परमेश्वर आकाश से यहां के पथिकों के निमित्त बरसाता है पोखरों को पूर्ण करता है। (भजन ८४ : ५-७) इसी तराई में महाराजा अपनी प्रजा को द्राक्षा के क्षेत्र देगा। (होशेया० २ : १५) अपल्लुओन के साथ युद्ध होने पर भी खीष्टियान ने जैसा यहां गान किया अब जो लोग इस में होकर जाते हैं वे भी उसी रीति से आनन्द के गान करेंगे। यह सुन पथ दर्शक बोला, तुम सत्य कहती हो। मैं इस तराई से अनेक बार गया हूं अरु और स्थानों से मुझे भी यहां अधिक सुख होता है। और जिन यात्रियों को मैंने मार्ग दिखाया है उन्हों ने भी इस की वैसी प्रशंसा की है। हमारे महाराजा का वाक्य है कि जो नम्र और चूर्णमन है और मेरे बचन से कांपता है उस मनुष्य की ओर मेरी कृपादृष्टि रहेगी। (यशयाह ६६:२) फिर चलते चलते जब वे उस संग्राम के स्थल पर पहुंचे तब पथदर्श ने खीष्टियानी से और उस के पुत्रों से और करुणा से कहा, देखो इसी स्थान में खीष्टियान युद्ध करने को खड़ा हुआ

था और उधर से अपल्लुओन उस का सामना करने आया था।

युद्धस्थल। और देखो मैं ने सत्य कहा व नहीं कि इन पाषाणों पर अब तक तुम्हारे पति के रक्त का चिन्ह वर्त्तमान है। और भी देखो अपल्लुओन के टूटे बाणों के टुकड़े जहां तहां पड़े हैं और युद्ध के समय जहां जहां उन दोनों ने अपनी अपनी रक्षा निमित्त स्थान बदला वहां वहां उन के पदचिन्ह भी वर्त्तमान हैं और देखो जहां जहां उन के शस्त्र चूक कर पाषाणों पर लगे तहां तहां उन की चोट से पत्थरों के टुकड़े टुकड़े उड़ गये हैं। यहां खीष्टियान ने निःसन्देह अपना पुरुषार्थ प्रकाश किया कदाचित वीर विक्रमादित्य आप होता तो भी इतना पराक्रम प्रकाश न कर सकता अपल्लुओन जब हार गया तब मृत्युछाया नाम दूसरी तराई को भागा जहां हम थोड़ी देर में पहुंचेंगे। फिर वह खम्भ जो तुम को सन्मुख दिखाई देता है उस पर खीष्टियान की कीर्ति के निमित्त उस के युद्ध और विजय का वृत्तान्त लिखा गया है। यह सुन सब खम्भ के निकट जाकर उसे बांचने लगे। उस में यह लिखा था यथाः—

चौपाई।

अपल्लुओन दैत्य दुर्नामा। खीष्टियान साथे यहि ठामा॥
घोर युद्ध कीन्ही तिहि पाए। जाते प्राण शीघ्र हति जाए॥
खीष्टियान पुरुषत्व प्रकाशे। भूतराज भाग्य तिहि त्राशे॥
मोहि मानु ताकी जिमि केतू। लिखि दीन्हा तिहि सुमिरन हेतू॥

यहां से चलते चलते ये सब मृत्युछाया की तराई के निकट पहुंचे दूसरी तराई से वह तराई बड़ी है और यहां भूतादि अनेक भयङ्कर वस्तुओं का दर्शन होता है। इस का प्रमाण बहुत लोग दे सकते हैं। पर दिवस के समय इस में हो कर जाने से

और महात्मा के साथ रहने से स्त्री और लड़के लोग इस तराई से कुछ कुछ सुगमता से निकल गये। इस तराई में पैठते ही इन्हें मरणतुल्य मनुष्यों के कहरने का सा शब्द सुनाई दिया और अतिशय पीड़ा होने से कोई चिल्लावे ऐसी चिल्लाहट उन्हें सुनाई दी। ऐसे शब्द सुन कर बालक भयातुर हो कांपने लगे और भय से स्त्रियों का भी मुख सूख गया। यह देख पथदर्शक ने कहा, तुम कुछ भय मत करना निडर रहना। फिर कुछ आगे बढ़ने से इन्हों ने अनुमान किया कि हमारे पैरों के नीचे की भूमि ऐसी कांपती है कि मानो नीचे फोक है और सर्प्प की फुङ्कार के समान शब्द होता है पर कुछ देखने में नहीं आया। तब बालकों ने पूछा, क्या इस भयानक भूमि का अन्त निकट नहीं है। पथदर्शक बोला, तुम किसी बात से डरो मत परन्तु ऐसा न हो कि किसी फन्दे में पड़ो इस लिये सावधान होकर पैर रक्खो।

मृत्यु छाया की घाटी होकर जाना।

इतने में याकूब का जी मचलाने लगा। इसका कारण केवल शङ्का था। तब उस की माता ने जो द्राक्षारस अर्थकारक के घर से मिला था उस में से कुछ और निपुण वैद्य ने जो गोलियां दी थीं उन में से तीन गाली उसे दीं उन से कुछ उसे स्वस्थता हुई। इस रीति से वे मृत्युछाया की तराई के आधे तक पहुंचे थे इतने में खीष्टियानी ने कहा, देखो पथ पर सामने यह क्या बिकट रूप दिखाई देता है। ऐसा रूप मैं ने कभी नहीं देखा। यूसफ ने कहा, हे मां! क्या है। खीष्टियानी बोली, अरे बेटा, बड़ा कुरूप है कोई अति कुरूप वस्तु देख पड़ती है। फिर बालक ने पूछा वह किस वस्तु की नाईं है। माता ने कहा, मैं नहीं कह सकती। जब वह और भी निकट हुआ तब बोली अरे निकट

आ गया । तब महात्मा ने कहा, अच्छा अच्छा आने दो और जो भयातुर हो सो मेरे निकट होकर चले । जब वह भूत इनके और

मृत्युछाया की तराई में ख्रीष्टियानी आदि को महात्मा ढाढ़स देता है ।

भी निकट आया तब महात्मा के उस के सन्मुख होते ही वह लोप हो गया । तब जो पूर्व में कहा गया था कि शैतान का

सामना करो तो वह भाग जावेगा इस बचन की उन्हें सुरत पड़ी। फिर वे कुछ शान्त होकर आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाकर करुणा ने पीछे जो देखा तो देखती क्या है कि सिंह के समान कोई भयंकर रूपधारी बड़े वेग से पीछे चला आता है। उस की घोर गर्जना थी और उस की गर्जना से सारी तराई गूंज उठी। उस से पथदर्शक को छोड़ सब के सब घबड़ा गये। जब वह निकट आया तब पथदर्शक ने यात्रियों को आगे कर लिया और आप उन के पीछे पीछे चलने लगा। इतने में वह सिंह निकट आते ही महात्मा उससे युद्ध करने को उपस्थित हुआ। (१ पितर ५ : ८, ९) जब उस ने पथदर्शक को युद्ध का यत्न करते देखा तब पीछे हट कर खड़ा हो गया।

जब ये फिर आगे बढ़े तब पथदर्शक फिर इन के आगे आगे चलने लगा। थोड़ी देर में वे एक ऐसी जगह में पहुंचे जहां मार्ग में खाईं इस ओर से उस ओर तक खुदी थी। वे उसके पार जाने के विचार में थे कि एकाएकी ऐसा कुहिरा और अंधकार छा गया कि वे कुछ नहीं देख सके। तब यात्री पुकार कर कहने लगे कि अब हम क्या करें। पथदर्शक ने कहा, डरो मत खड़े रहो और इस के अन्त में क्या होगा सो देखो। जब इस रीति से उनका पथ बन्द हुआ तब वे आप ही खड़े हो गये। उस समय शत्रुओं का कोलाहल और वेग से आने जाने का शब्द सुनाई देने लगा और अथाह कुण्ड की अग्नि और धूआं स्पष्ट दिखाई दिया। तब खीष्टियानी करुणा से कहने लगी, मैं ने इस स्थान की कथा अनेक बार सुनी है पर अभी पहिली बार यहां आई हूं। इस स्थल में जाते हुए जो जो दुःख मेरे पति को हुआ उस का बोध अब मुझे हुआ। हाय ! हाय !! बेचारा वह रात्रि के समय इस मार्ग में होकर अकेला गया। इस तराई के प्रायः अन्त लों पहुंचा तब

पौ फटने लगी और इन भूतों ने उसे ऐसे घेर लिया कि मानो उस को टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे। इस मृत्युछाया की तराई का वर्णन मैं ने बहुत लोगों से सुना है पर अपने आने बिना कैसे कोई जाने कि यह स्थान कैसा भयंकर है। लिखा है कि अन्तःकरण अपनी पीड़ा आप जानता है और अन्य मनुष्य उसके सुख का भागी नहीं हो सकता है। (नीति १४ : १०) हाय ! हाय !! इस स्थान में कैसा खटका होता है। यह सुन महात्मा बोला यहां का गमन करना महासागर में पैठ कर कार्य करने वा पर्वत के नीचे सुरंग खोदने के तुल्य है। समुद्र में मग्न होने से वा पर्वत के नीचे दब जाने से जैसी दुर्दशा होती तैसी इस काल हमारी हो रही है। इस समय हमें कैसा जान पड़ता है मानो पृथिवी के अड़ंगे अनन्त काल के निमित्त हम पर बन्द किये गये हैं। परन्तु जो लोग अन्धकार में गमन करते हैं और उन्हें उजेला नहीं मिलता है सो परमेश्वर के नाम पर विश्वास करें और अपने तईं ईश्वर को समर्पण करें। (यशायाह ५० : १०) मैं ने तुम से कहा था कि मैं कई बिरियां इस मार्ग होकर गया हूं और इस से अधिक विपत्ति में पड़ा हूं तौ भी तुम देखते हो कि मैं अभी तक जीता हूं। मैं गर्व करना नहीं चाहता हूं क्योंकि मैं अपना रक्षक आप नहीं हूं पर इतना भरोसा रखता हूं कि अच्छी रीति से हमारा निर्वाह हो जायगा। आओ जो हमारे अन्धकार में ज्योति दे सकता है और नरक के समस्त भूत प्रेतादि को दपट सकता है हम उसी से उजेले के निमित्त प्रार्थना करें। तब उन्हों ने पुकार पुकार ईश्वर से प्रार्थना की इस पर उन्हें ज्योति दिखाई और उन का निस्तार किया यहां लों कि उन को फिर कुछ रोक न हुई विशेष करके जिस जगह खाईं से मार्ग रुका था उस स्थान में भी कोई बाधा न रही तथापि ये

अब तक इस तराई के अन्त लों नहीं पहुंचे थे। कुछ आगे बढ़ने से ऐसी दुर्गन्ध आई कि इन का प्राण दुःखी होने लगा। तब करुणा ने खीष्टियानी से कहा, इस पथ के द्वार पर वा अर्थकारक के यहां अथवा रम्य राजगृह में जैसा सुख था ऐसा यहां सुख कहां। यह सुन एक बालक ने कहा, हां, इस तराई में गमन करना दुःखदायी तो है पर सर्वदा इस में रहना इस से अधिक दुःख का कारण होता। मुझे जान पड़ता है कि जो घर हमारे निमित्त बना हुआ है उस में पहुंचने से हमें अधिक सुख जान पड़े इसी के निमित्त हमें ऐसे मार्ग होकर जाना होता है। यह सुन पथदर्शक प्रसन्न हो बोला, हां, शमुएल तू ठीक कहता है तेरी बात बुद्धिमान की सी है। बालक ने कहा, जो हम कभी इस स्थान से पार हो जायें तो पूर्व से मैं प्रकाश को और सुगम मार्ग को बहुत अधिक सुखदायक जानूंगा। तब पथदर्शक ने कहा, अब थोड़ी सी देर में हम पार होंगे। फिर जाते जाते यूसफ बोला, क्या अब भी इस तराई का अन्त नहीं दीखता है। पथदर्शक बोला, नीचो दृष्टि करके सावधानी से पैर धरो क्योंकि जहां तहां फन्दे बिछे हैं। तब वे नीची दृष्टि करके चलने लगे परन्तु फन्दों के कारण उन्हें बड़ा कष्ट होता था। फन्दों के बीच जाते जाते पथ की बाईं ओर गढ़े में उन्हों ने एक मनुष्य की लोथ जिस का मांस सर्वत्र फोड़ा चीरा गया था पड़ी देखी।

निश्चिन्त की मृत देह।

तब पथदर्शक ने कहा, यह भी इसी मार्ग का यात्री था इस का नाम निश्चिन्त था यह बहुत काल से इसी स्थान में पड़ा है। जिस समय यह फन्दे में पड़ के मारा गया उस काल इसके साथ सचेत नाम दूसरा पुरुष था वह सावधान होने से बटमारों के हाथ से बच गया। मैं नहीं कह सकता हूं कि कितने लोग

यहां मारे जाते हैं तौ भी बहुत लोग आगे से शोच नहीं करते पर यात्रा करना सहज जान पथदर्शक बिना यात्रा करने की चेष्टा करते हैं। बेचारा खीष्टियान यहां से बच कर गया यह बड़ा आश्चर्य है। इस का कारण यह है कि एक तो वह ईश्वर का प्यारा था और फिर स्वाभाविक अति साहसी था। ऐसा न होता तो कभी इस स्थान से पार न होता।

इतने में ये सब इस पथ के छोर के निकट आये। फिर खीष्टियानी ने इधर से जाते हुए जो गुफा देखी थी उस में से गदाबीर नाम एक दानव निकला जो आगे मिथ्या वादानुवाद करके जवान यात्रियों को भरमाता था। यह दानव पथदर्शक से पुकार कर कहने लगा अरे महात्मा रे! मैंने यह काम करने से तुझे कितनी बार बरजा है तौभी तू मानता नहीं। महात्मा बोला, कौन सा काम। तब उसने कहा, हां, कौन सा काम। क्या तू जानता नहीं। पर अब की बार मैं तेरा यह व्यवहार छुड़ा दूंगा। महात्मा बोला, कुछ मेरी भी तो सुनो। युद्ध करने के पहिले कुछ सोचो भी कि हमारे तुम्हारे युद्ध का कारण क्या? यह सुन बालक और स्त्री सब अपने को निरुपाय जान खड़े खड़े कांपने लगे। दानव ने कहा, तू चोर है और सब चोरों से नीच चोर है तू इस देश में बहुत उपद्रव करता रहता है। महात्मा ने कहा, अरे मुंह संभाल के बोल गोल बात क्यों कहता है विशेष कर मेरी कैसी चोरी है सो तो कह। वह बोला, तू मनुष्यों का चोर है कि तू स्त्री और बालकों को घेरकर विदेश में ले जाता है तेरा यही धन्धा है इससे तू मेरे राजा के राज्य की हानि करने वाला ठहरा। यह सुन महात्मा बोला, मैं स्वर्गाधिपति ईश्वर का दास हूं मेरा यही काम है कि पापियों के चित्त को

गदावीर दानव से भेंट।

फेरकर ईश्वर की ओर लगाऊं। बाल वृद्ध स्त्री पुरुषादि सब कोई अंधकार से निकल कर ज्योति की ओर फिरें और शैतान के कर्तृत्व से बचकर ईश्वर की ओर लगें शक्ति भर ऐसी चेष्टा करने की तो मुझे आज्ञा मिली है। तुम्हारे लड़ने का यही कारण है तो आ जब तेरा जी चाहे तब ही हम युद्ध आरम्भ करें।

यह सुनते ही गदावीर दानव युद्ध करने को आगे बढ़ा और महात्मा भी अपना खड्ग खैंच उसके सन्मुख हुआ। दानव के हाथ में गदा थी। जब युद्ध का आरम्भ हुआ तब गदा की पहिली चोट से महात्मा घुटनों के बल गिरा। तब स्त्री और बालक भय से चिल्लाने लगे। परन्तु महात्मा ने तुरन्त उठ बड़े साहस से युद्ध कर दानव के हाथ में खड्ग मारा। इस रीति से इन दोनों में घड़ी भर ऐसा घोर युद्ध होता रहा कि दानव के मुख से श्वास ऐसे निकलने लगा जैसे बटुए में से भाप निकले तब वह विश्राम के निमित्त बैठ गया परन्तु उस काल महात्मा प्रार्थना करने लगा। युद्ध के समय दोनों स्त्री और बालक सब खड़े खड़े रोते और कांपते थे। थोड़ी देर पीछे बल पाकर उन्हों ने फिर युद्ध का आरम्भ किया तब महात्मा ने दानव को ऐसा खड्ग मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। तब उसने चिल्ला कर कहा, ठहर जा मुझे उठने दे। तब महात्मा ने उसे उठने दिया और वह उठकर फिर युद्ध करने लगा। इस युद्ध में महात्मा पर ईश्वर की कृपा न होती तो उसका सिर दानव की गदा से चूर्ण हो जाता। यह देख महात्मा ने वीरता कर दौड़ कर उसकी पसली में ऐसी हूल मारी कि वह मूर्छित हो पृथ्वी पर गिरा और फिर गदा नहीं उठा सका तब महात्मा ने खड्ग से उसका सिर काट डाला।

दानव से युद्ध।

यह देखते ही स्त्री और बालक आनन्द करने लगे और महात्मा इस उद्धार के निमित्त ईश्वर की स्तुति करने लगा। पीछे यात्रियों ने मिलकर एक खम्भ बना उस पर गदावीर का मस्तक खड़ा किया और पथिक लोगों के जानने के निमित्त उस खम्भ पर ऐसे दोहे लिखे यथा —

दोहा।

मुण्ड देखि तुम जानिहो . यात्रिन शत्रु महान।
औ पथरोधक सर्वदा . वर्द्धक सर्वहि जान॥
यात्रि विपत्ती निरखि के . ठाढ़ भयो यहि ठाम।
कियो महात्मा नाश तेहि . गदावीर जेहि नाम॥

आठवां अध्याय।

सरल और भययुक्त की कथा।

फिर मैं स्वप्न में क्या देखता हूं कि उस स्थान से बढ़ कर थोड़ी देर में ये यात्री एक डीह पर पहुंचे। यात्री उस पर चढ़ के दूर तक अपना पथ देखें इसके निमित्त यह डीह बना था। यहां खीष्टियान ने पहिले विश्वासी नाम अपने संगी यात्री का दूर से देखा था। इस लिये उन्होंने थोड़ी देर तक यहां ठहर के विश्राम किया और भयंकर शत्रु के हाथ से बचने के हेतु वहां बैठकर कुछ खान पान करके आनन्द किया। भोजन के समय खीष्टियानी ने पथदर्शक से पूछा, इस युद्ध में आप को कहीं चोट तो न लगी। उसने कहा, नहीं मेरे शरीर में कुछ थोड़ी सी चोट लगी है पर उससे मैं अप्रसन्न नहीं हूं क्योंकि

जो स्नेह मैं अपने प्रभु पर और तुम लोगों पर करता हूं वह अब तो उस स्नेह का चिन्ह है और अन्त में ईश्वर के अनुग्रह-द्वारा मेरे प्रतिफल की वृद्धि का कारण होगा। ख्रीष्टियानी ने फिर पूछा, हे महाराज! जिस काल वह दानव गदा लेकर तुम्हारे ऊपर टूटा उस समय तुम को भय नहीं लगा। महात्मा बोला, मुझे उचित है कि अपनी शक्ति पर भरोसा न रक्खूं परन्तु सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा रक्खूं। ख्रीष्टियानी ने कहा, जब तुम उसकी पहिली चोट से गिरे तब तुम क्या सोचते थे। महात्मा ने उत्तर दिया, उस समय मैं यही सोचता था कि मेरे प्रभु पर भी ऐसा ही बीता पर अन्त में वह जयमान हुआ। (२ करिन्थि. ४ : १०. ११ । रोमि. ८ : ३७) इतने में मत्ती बोल उठा कि आप लोगों के कहने के पीछे मैं भी एक यह बात कहता हूं कि इस तराई में से और इस भयंकर शत्रु के हाथ से बचाने में ईश्वर ने हमारे ऊपर अद्भुत कृपा प्रकट की है। इस कारण कहता हूं कि ऐसे समय मे और ऐसे स्थान में ऐसे शत्रु के विषय में ईश्वर के अनुग्रह का प्रमाण पाकर भी जो हम ईश्वर पर विश्वास न करें तो इससे अधिक अनुचित कोई बात नहीं है। तब वे उठ के आगे बढ़े।

वहां से कुछ आगे बढ़कर क्या देखते हैं कि एक वृक्ष के नीचे एक वृद्ध यात्री सोता है। उसके वस्त्र और लाठी और पटुका देखने से उन्होंने जाना कि यात्री है। जब महात्मा ने उसे जगाया तब वह बूढ़ा आंखें खोल ऊंचे शब्द से कहने लगा, कौन है कौन है क्या हुआ क्या हुआ तुम कौन हो क्या चाहते हो। महात्मा ने कहा, हे भाई! इतना क्रोध क्यों प्रकाश करते हो। यहां तुम्हारा शत्रु कोई नहीं है। यह सुनकर भी वह इनका विश्वास न करके सावधानी से खड़ा हो कहने लगा, तुम कौन

हो मुझे बताओ तब पथदर्शक ने कहा, मेरा नाम महात्मा है ये यात्री जो स्वर्गपुर जाते हैं इनका मैं पथदर्शक हूं। तब उस वृद्ध ने जिसका नाम सरल था कहा, मुझे क्षमा करो और मन में बुरा मत मानो क्योंकि जिन डाकुओं ने कितने दिन हुए अल्पविश्वासी का धन हरण किया था मुझे ऐसा भ्रम हुआ कि तुम भी उन्हीं में के हो परन्तु अब मैं देखता हूं कि तुम तो सज्जन हो तब महात्मा ने कहा, जो हम उन्हीं में के होते तो तुम अपनी रक्षा के निमित्त क्या करते सो कहो। सरल बोला, मैं और क्या करता। जब तक सांस रहती तब तक युद्ध करता और मैं निश्चय जानता हूं कि मैं ऐसा करता तो तुम मुझे किसी प्रकार से पराजित न कर सकते क्योंकि खीष्टियान लोग जब तक आप नहीं हार मानें तब तक कोई उन्हें जीत नहीं सकता। तब महात्मा अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला, अच्छा बाबा तुम ठीक कहते हो। इसी वाक्य से मैं ने तुम्हें जाना कि तुम सच्चे पुरुष हो क्यों कि तुमने सत्य कहा है। सरल ने कहा, तुम्हारी वार्त्ता से मैं ने भी जान लिया कि यात्री का यथार्थ धर्म्म तुम भली भांति समझते हो क्योंकि अन्य लोग हमारा पराजित होना सहज समझते हैं। महात्मा ने कहा, भला अब तुम्हारा शुभ दर्शन हम ने पाया है तो बतलाओ तुम्हारा नाम क्या है और कहां के रहने वाले हो। सरल बोला, मैं अपना नाम न कहूंगा पर जड़ बुद्धि नगर मेरी जन्म भूमि है। यह नगर नाशनगर से प्रायः सवा सौ कोस उत्तर है। यह सुन महात्मा बोला कि हां, है। तुम उस देश के हो तो मैं तुम्हें कुछ कुछ जानता हूं तुम्हारा नाम क्या सरलता है वा नहीं। उस वृद्ध ने नीचा सिर कर कहा, सरलता नहीं पर मेरा नाम सरल है और जैसा नाम है तैसा ही मेरा

सरल से बातचीत।

स्वभाव हो यही मेरी इच्छा है। परन्तु हे महाराज ! मेरे देश का नाम सुन कर तुम ने मेरा नाम कैसे जाना। महात्मा ने कहा, मैं ने अपने स्वामी के मुख से तुम्हारा वृत्तान्त सुना है। पृथिवी में जो कुछ होता है सब वह जानता है। तुम्हारे देश से कोई मनुष्य भी यात्री हो जाय इस से मुझे बड़ा आश्चर्य होता है क्योंकि वह नगर नाशनगर से भी बुरा है। सरल बोला, तुम जो कहते हो सो सत्य है क्योंकि नाशनगर से हमारा नगर सूर्य से अधिक दूर है इस लिये हम लोग ठिठुरे और मूढ़ रहते हैं। पर जो लोग मानो हिमालय की चोटी पर रहें उन के ऊपर भी जो धर्म्म का सूर्य उदय हो तो उन का भी जमा हुआ हृदय पिघल जायगा। इस का प्रमाण मैं हूं। महात्मा बोला, हे बाबा सरल मैं तुम्हारा विश्वास करता हूं और निश्चय जानता हूं कि तुम सत्य कहते हो।

फिर यह वृद्ध प्रेम के सहित पवित्र चूमा ले सब से मिल उन का नाम और पथ का समाचार पूछने लगा। तब खीष्टि-यानी ने कहा, मेरा नाम तो कदाचित् आप ने सुना होगा। मेरे पति का नाम खीष्टियान था और ये चारों लड़के उसी के हैं। हे पाठक लोगो यह वृद्ध खीष्टियानी की यह बात सुनते ही कैसे आश्चर्य मान कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ इस का वर्णन मैं किस रीति से करूं। वह कितनी देर तक कूदता नाचता और गाता रहा और सहस्रों आशीर्वाद दे खीष्टियानी से बोला, तुम्हारे स्वामी का विषय अर्थात् जिस समय उस ने यात्रा की उस काल की उस की वीरता युद्ध और क्लेश का समाचार मैं ने बहुत सुना है। सो मैं तुम्हारे सन्तोष के निमित्त कहता हूं कि इस देश में तुम्हारे पति की कीर्त्ति फैल रही है। यहां उसके विश्वास और साहस और धीरज और सरलता के कारण उस

का नाम प्रसिद्ध है। फिर बालकों की ओर देख कर उनसे पूछा कि तुम्हारे क्या क्या नाम हैं। लड़कों ने अपना

सरल बालकों को आशीष देता है

अपना नाम बताया। तब उसने मत्ती से कहा, हे मत्ती तुम अधर्म्म में नहीं पर धर्म्म में मत्ती कर उगाहनेहारे के समान हो। (मत्ती १० : ३) हे शमुएल तुम शमुएल भविष्यद्वक्ता के समान विश्वासी और प्रार्थना के अनुरागी हो (भजन ६६ : ६) हे यूसफ जैसे पुती-फार के घर में यूसफ शुद्धमति और परीक्षा के समय में दृढ़ ठहरा तैसे तुम भी बने रहो। (उत्पत्ति ३६ पर्व) हे याकूब तुम धार्म्मिक याकूब के समान और हमारे प्रभु के भ्राता याकूब की नाईं हो। (प्रेरित. १:१३,१४) फिर करुणा जिस रीति से अपनी जन्मभूमि कुटुम्बादि छोड़ कर खीष्टियानी और उसके लड़कों के साथ आई सो सब वृत्तान्त सरल को सुनाया गया। यह सुन वह वृद्ध बोला, अच्छा तुम्हारा नाम करुणा है तुम करुणा द्वारा पथ के सकल कष्ट से रक्षित होगी और अन्त में परमानन्द के स्थान में प्रसन्नता से करुणानिधान का दर्शन करोगी। ये सब बातें सुनते सुनते पथदर्शक उस की ओर देख कर प्रसन्न हो हंसता था।

फिर संग संग चलते चलते पथदर्शक ने बाबा सरल से पूछा कि भययुक्त नाम तुम्हारे देशका एक मनुष्य यात्री हुआ तुम उस को जानते थे। सरल बोला, हां, मैं उसे भली भांति जानता था। उसमें धर्म्म का मूल तो था पर उसके समान दुःखदाई यात्री मैंने कोई न देखा। पथदर्शक बोला, मुझे निश्चय होता है कि तुम उसे जानते थे क्योंकि तुम ने उसके चरित्र का यथार्थ वर्णन किया है। सरल ने कहा, मैं क्यों न जानूं मैं उसके साथ बहुत रहा हूं। जब वह पहिले पहिले परलोक की चिन्ता करने लगा

तब मैं उसके साथ था। महात्मा ने कहा, मैं अपने प्रभु के घर से ले स्वर्गपुर के द्वार लों उसका पथदर्शक रहा। सरल बोला, भला वह दुखःदाई था। यह तुम जानते होगे। पथदर्शक ने कहा, हां, वह दुःखदाई तो था पर मैं उससे अप्रसन्न न था क्योंकि बहुत बार ऐसे ही लोग पथदर्शक के हाथ सौंपे जाते हैं। तब सरल बोला, भला तो मैं तुम से बिनती करता हूं जब तक वह तुम्हारे साथ रहा तब तक उसकी कैसी निबही सो कृपा कर कहो। महात्मा ने उत्तर दिया कि जिस स्थान पर जाने की इच्छा करता हूं उस स्थान तक पहुंचने की क्या जाने मुझे सामर्थ्य न हो उसे यह शंका नित्य रहती थी। और जो कभी कुछ भी खटक वा विघ्न का समाचार सुनता तो बहुत डर जाता। मैं ने सुना है कि वह निराश पंक के तीर पर एक मास भर रोता हुआ पड़ा रहा। उसने अनेक मनुष्यों को साहस करके पार होते देखा पर उसको साहस न हुआ। कितने लोगों ने हाथ का सहारा देने को कहा, पर उसने अंगीकार न किया तिस पर भी अपने देश फिर जाने की उसने कुछ भी इच्छा न की वह सर्वदा यही कहता कि मुझे मृत्यु का भय नहीं पर स्वर्गपुर में न पहुंचने का बड़ा भय है। फिर भी वह अल्प बाधा देखते ही उदास होता था यहां तक कि मार्ग में कोई उसके साम्हने तृण भी डाल दे तो उससे उसकी ठोकर लगे। जब वह बहुत दिवस उस निराश पंक के तीर पर ठहरा रहा तब एक दिन प्रातः समय निर्मल आकाश पाय वह साहस करके पार हो गया परन्तु मैं पार हुआ हूं इसका भी उसे विश्वास न हुआ। उसका चित्त निराश पंक रूप हो गया था इस लिये जहां वह जाता तहां उसे वही दृष्टि पड़ता। मह बात न होती तो वह ऐसा मनुष्य न होता। जब वह इस पथ के सिरे पर के सकरे फाटक पर आया

तो खटखटाने को भी डरा और बहुत देर तक वहां खड़ा रहा। जब कभी द्वार खुलता तो वह दूसरे को मार्ग देने के निमित्त आप पीछे हट जाता और यह कहता कि मैं भीतर जाने योग्य नहीं हूं। इस लिये अनेक लोग जो उसके पीछे उस फाटक पर आये उसके पहिले भीतर पैठे। इस रीति से यह कितनी देर तक वहां खड़ा रहा और ऐसा कांपता और

भययुक्त की कथा। थरथराता था कि हर एक देखनेहारे को दया आती थी पर लौट जाना नहीं चाहता था। फिर कितनी देर पीछे उसने जो मोगरी फाटक पर टंगी थी उसे उठा धीरे धीरे दो बार खटखटाया। तब एक ने द्वार खोला तौभी यह पूर्ववत् पीछे हटा। तब उसने बाहर आकर कहा, हे कम्पित मनुष्य तेरी क्या इच्छा है। इतनी बात के सुनते ही वह भय के मारे भूमि पर गिर पड़ा। तब द्वारपाल ने उसकी दुर्बलता पर आश्चर्य कर उससे कहा, तेरा कल्याण हो उठ खड़ा हो मैंने तेरे ही निमित्त द्वार खोला है भीतर आ तू आशीर्वाद पात्र है। यह सुन वह उठ कर कांपते हुए भीतर गया। भीतर जाने पर भी उसे अपना मुंह दिखाने को लाज आती थी। फिर जब वह नियमानुसार वहां कितने दिवस अतिथि रहा तब वहां के निवासियों ने उसे मार्ग दिखा आगे बढ़ने को कहा। यह क्रम क्रम हमारे घर के निकट आया फिर जैसा चरित्र सकरे फाटक पर प्रगट किया तैसा ही मेरे स्वामी अर्थकारक के द्वार पर भी दिखाया अर्थात् डर के मारे पुकारा नहीं किन्तु बाहर ही जाड़े में पड़ा रहा पर लौट जाना स्वीकार नहीं करता था। उस काल में रात्रि बड़ी और जाड़ा बहुत पड़ता था। उस के पास मेरे स्वामी के नाम पर एक पत्र था उसमें लिखा था कि इसे आतिथ्य भाव से घर में लेकर बड़े सुख से रखना और चलने के समय

इसे एक बलवान वीर पथदर्शक देना क्योंकि यह बड़ा डरपोकना है तौभी उसको पुकारने में संशय हुआ और वह वहां इतने काल तक बिना आहार पड़ा रहा कि क्षुधा से मृतवत् हो गया। वह ऐसा डरपोकना था कि कितनों को उसने पुकारने से भीतर जाते देखा तौभी उसको पुकारने का साहस न हुआ। एक बिरियां मैं ने खिड़की में से उसको देखा कि द्वार के आसपास टहल रहा है तब मैंने बाहर जाकर उससे पूछा, तुम कौन हो तो वह रोने लगा। इस से उस के चित्त का अभिप्राय जान मैंने भीतर जा लोगों से उसका सुसमाचार कहा और हम सभों ने अपने प्रभु को जताया। तब मैं प्रभु की आज्ञा पा बाहर जा उसे बड़ी कठिनता से भीतर लाया। तब हमारे प्रभु ने उसे ग्रहण करके उससे बड़े प्रेम का व्यवहार किया और जो जो उत्तम उत्तम पदार्थ घर में थे उन से उस को भोजन कराया। तब उसने वह पत्र दिया पत्र बांचकर प्रभु ने कहा, तेरी इच्छा पूर्ण होगी। कितने दिन वहां रहने से भययुक्त का कुछ कुछ साहस और शांति बढ़ने लगी क्योंकि हमारा स्वामी अति दयालु है और डरपोकने लोगों पर विशेष कृपा करता है इस कारण उसने इससे भी वही व्यवहार किया जिससे उसका साहस बढ़े। पीछे नियमानुसार उसे वहां के सब पदार्थ दिखाये गये और जब वह स्वर्गपुर चलने को तैयार हुआ तब प्रभु ने जैसे खीष्टियान को दिया था तैसे इसको भी एक शीशी द्राक्षारस और कुछ स्वस्थदायी पदार्थ मार्ग में खाने के निमित्त दिया और मुझे उसका पथदर्शक किया जब मैं उसे लेकर चला तो मार्ग में चुपचाप मेरे पीछे पीछे लंबी सांसें भरता हुआ हो लिया। जब हम उस स्थान पर आये जहां तीन मनुष्य फांसी के काठ पर टंगे थे तब वह उन्हें देखकर बोला, मुझे सन्देह है कि क्या जाने अन्त में मेरी भी यही दशा

होगी। पर जब उसने क्रूश और कबर देखी तब प्रसन्न हो उन के देखने के निमित्त कुछ ठहरने की इच्छा की और देखने के पीछे थोड़े काल लों कुछ कुछ सन्तुष्ट और आनन्दित देख पड़ा। दुर्गम पर्वत पर चढ़ने में उसको कुछ क्लेश न हुआ और सिंहों को देखकर वह बहुत नहीं डरा क्योंकि ऐसे विषयों से वह नहीं डरता था। मुझ पर क्या जाने अन्त में कृपा न हो यही उसकी शंका थी। फिर रम्य राजगृह में जाने की उसको विशेष इच्छा नहीं थी। परन्तु मैंने वहां ले जाकर वहां की रहनेवाली कन्याओं से उसकी भेंट करवाई पर वह बहुत लोगों की संगति में बैठने नहीं चाहता था किन्तु लज्जा के मारे एकान्त में रहने की इच्छा करता था तौभी सत्य कथा सुनने का बड़ा अभिलाषी था इस लिये बहुत बार पर्दे के पीछे खड़ा खड़ा बातें सुना करता था। प्राचीन विषयों को देखने और उन का ध्यान करने की उस को बड़ी लालसा थी। वह मुझ से एक दिन कहने लगा जिन दो घरों में हम अभी रह आये अर्थात् एक वह जो फाटक के निकट है दूसरा अर्थकारक का घर उन में रहने की मेरी बड़ी इच्छा थी पर इसके निमित्त प्रार्थना करने को मुझे साहस न हुआ। फिर रम्य राजगृह से आगे बढ़ के जब नम्रता की तराई में उतरने लगे तब यह ऐसा सुस्थिर होकर उतरा कि मैंने जन्म भर किसी को ऐसी अच्छी रीति से उतरते नहीं देखा क्योंकि उसको तो नीच अवस्था से घृणा नहीं थी केवल अन्त में सुख पाने की नित्य चिन्ता रहती थी। और इस तराई से तो जानो उसका कुछ सम्बन्ध था क्योंकि जैसा सुखी मैंने उसे इस स्थान पर देखा वैसा और किसी स्थान पर न देखा। कहीं कहीं वह लेटकर भूमि को मानो आलिंगन करता और इस स्थान के पुष्प

भययुक्त की कथा।

उठाकर चूमता और प्रतिदिन प्रातः समय उठ तराई में आनन्द से फिरता था (विलाप ३ : २७-२८) फिर जब हम मृत्यु-छाया की तराई के सिरे पर आये तब तो मैंने जाना कि अब को मैं अपने साथी को खो दूंगा। वह जो पीछे फिरने चाहता था सो नहीं इससे तो उसको बड़ी घृणा थी परन्तु उसे ऐसी शंका हुई कि वह मारे डर के मरने पर था इस स्थान में मुझे भूत चिपटेंगे ऐसा कहकर चिल्लाया करता। मैं उस की शंका किसी भांति से छुड़ा न सका। वह ऐसा चिल्लाता था कि उस का शब्द वहां के भूत सुनते तो अवश्य हमारे ऊपर आकर टूटने का हियाव पाते पर मैं ने यह आश्चर्य देखा कि वह तराई उस के चलने के समय सूनी थी कोई न दिखाई दिया। ऐसी सूनी मैं ने उस को कभी नहीं देखा। मुझे जान पड़ता है कि हमारे प्रभु ने ऐसा उपाय किया कि जब तक भययुक्त इस भूमि से पार न हुआ तब तक कोई भूतादि शत्रु उसे दिखाई न दे। जो मैं भययुक्त का सम्पूर्ण वृत्तान्त कहूं तो बड़ी देर लगेगी इस लिये उस के विषय की दो तीन बात और कहता हूं। जब वह मायापुर के मेले में पहुंचा तो वहां के लोगों की मूर्खता देख क्रोधित हो सब लोगों से लड़ने को उपस्थित हुआ यहां लों कि मैं डर गया कि कहीं हम दोनों के सिर फोड़े जायें। फिर मोहभूमि में उस को कुछ भी ऊंघाई न लगी। पर जब वह उस नदी पर पहुंचा जिस का पुल नहीं है तब उसे फिर बड़ी शंका हुई। तब उदास होकर बोला कि अब तो मैं अवश्य डूबकर मरूंगा। हाय ! जिस स्वरूप के दर्शन के निमित्त मैं इतनी दूर आया हूं उसे कभी आनन्द से न देखूंगा। इस स्थान में भी मैं ने आश्चर्य देखा कि उस नदी का जल घटकर ऐसा उथला हुआ कि भययुक्त को केवल घुट्टी तक पानी था।

ऐसा थोड़ा जल मैं ने उस नदी में कभी नहीं देखा था। जब वह नदी पार होकर राजधानी के द्वार की ओर चला तब मैं उस से यह कहकर बिदा हुआ कि तुम्हारा स्वर्गराज्य में आनन्द से प्रवेश होवे यही मेरी प्रार्थना है। उस ने उत्तर दिया, हां, अवश्य ऐसा ही होगा। इस रीति से मैं बिदा होकर आया तब से मैं ने उस को फिर नहीं देखा।

भययुक्त का नदी पार होना।

यह सब वृत्तान्त सुन सरल बोला, तो अन्त में उसका कल्याण हुआ। महात्मा ने कहा, हां, अवश्य हुआ इस में सन्देह नहीं। वह तो अत्युत्तम पुरुष था केवल अपने को अति दीनहीन जानने से वह नित्य मानो बड़े भार से क्लेशित रहता था और औरों को भी दुःख देता था। यह और लोगों से अधिक पाप से डरता था और विशेष कर के क्या जाने किसी की मुझ से हानि हो इस भय से जिस सुख का निषेध नहीं उस से भी बहुत बार परे रहता था ऐसा न हो कि किसी को उस के कारण ठोकर लगे। (रोमि॰ १४ : २१ और १ करिन्थि ८ : १३) सरल बोला, भला ऐसा उत्तम पुरुष जन्म भर अन्धकार में रहे इस का कारण क्या। महात्मा ने उत्तर दिया, इस के दो कारण हैं। एक तो यह कि सर्वज्ञानी परमेश्वर की ऐसी इच्छा है कि कोई बंशी बजावे और कोई रोवे। भययुक्त तो एक उदासी बाजा बजानेवाला था। वह और उस के समान जो लोग हैं सो अन्य बाजा छोड़ के रामसिंगा जिस का स्वर अति गम्भीर है बजाया करते हैं। कोई कोई कहते हैं कि सब से गभीर जो स्वर है सो सरिगम का मूल है। दूसरे मैं यह कहता हूं कि जिस भक्ति का आरम्भ मन की गम्भीरता से नहीं है वह भक्ति निष्फल है। बीणा का बजाने वाला उस के सब स्वरों के मिलाने के

निमित्त जैसे प्रथम खर्ज को छेड़ता है तैसे ईश्वर जब अपने निमित्त मनुष्य के चित्त रूपी यन्त्र को मिलाता है तब पहिले गम्भीर स्वर अर्थात् खर्ज स्वर का मिलान करता है। भययुक्त का केवल इतना दोष था कि वह खर्ज को छोड़कर और कोई स्वर मृत्यु समय लों नहीं बजा सका। देखो प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में लिखा है कि परित्राण पाये हुए लोग बीणा और तुरही बजा बजा सिंहासन के सन्मुख स्तुति गान करते हैं। (प्रकाश ५ : ८ और १४ : २, ३) इसी लिये मैं ने जवानों की ज्ञानबुद्धि के निमित्त दृष्टान्त द्वारा यह बात कही है। सरल बोला, तुम्हारी बात से जान पड़ता है कि भययुक्त बड़ा धर्म्मानुरागी पुरुष था, क्योंकि दुर्गम पर्वत से वा सिंहों से वा मायापुर के मेले से उसे कुछ भय न हुआ वह केवल पाप और मृत्यु और नरक से भय करता था क्योंकि उसे सन्देह था कि मैं क्या जाने स्वर्गराज्य का अधिकारी होऊंगा वा नहीं। महात्मा बोला, तुम ठीक कहते हो। उसकी शंका इसी विषय में रही क्योंकि उस का मन इस विषय में दुर्बल था नहीं तो यात्रियों के आवश्यक कर्म्मों में वह बड़ा साहसी था और धीर ऐसा था कि दुःख रूपी समुद्र को गोपद के समान समझ के उसे टपकर अपने पथ में आगे बढ़ता। पर जिस भावना के भार से वह भारग्रस्त था वैसी भावना किसी के चित्त में कदाचित् उपजे तो वह शीघ्र उसे दूर नहीं कर सकता है।

इन सब बातों को सुनकर ख्रीष्टियानी ने कहा भययुक्त का वर्णन सुनने से मुझे बड़ी शांति हुई है। पहिले मैं जानती थी कि मेरे समान कोई नहीं है पर अब मैं देखती हूं कि इस साधु पुरुष की दशा और मेरी दशा कुछ कुछ मिलती है केवल दो बातों में भिन्न हैं। एक यह कि वह अपना दुख कह देता था पर मैं

तो मन में रखती हूं। और दूसरी यह कि उस का दुःख वा भय इतना अधिक था कि उस को आतिथ्य के घरों के द्वारों पर खटखटाने का साहस न रहा परन्तु मेरा भय इतना ही है कि उसके हेतु मैं अधिक खटखटाया करती हूं। तब करुणा भी बोली, मुझ को भी जो मन की बात कहने की आज्ञा हो तो मैं भी कह सकती हूं कि इस पुरुष का स्वभाव कुछ कुछ मुझ में भी है। अन्त में कहीं मेरा स्वर्गवास न हो पर नरक कुंड में रहना पड़े इस बात की जितनी शंका मुझे है उतनी किसी और बात की नहीं होती है जो मैं जगत का सम्पूर्ण सुख सम्पत्ति गंवाकर भी स्वर्गपुर में बास करने पाऊं तो मुझे परमानन्द होगा। फिर मत्ती ने भी कहा, मेरे मन में भय व्यापने के कारण मुझे भी सन्देह था कि मैं क्या जाने परित्राण पथ का पथिक नहीं हूं। पर अब मैं जानता हूं कि जो उस साधु का अन्त में भला हुआ तो मेरा भी भला होने की आशा है। तब याकूब ने कहा, सुनो जहां भय नहीं तहां अनुग्रह नहीं। जो नरक का भय करते हैं वे सब के सब अनुग्रहपात्र हैं यह नहीं कह सकते हैं पर जो ईश्वर से भय नहीं करता वह किसी प्रकार से अनुग्रहपात्र न होगा यह तो निश्चय कह सकते हैं। महात्मा बोला, हे याकूब तू सच कहता है तू ने इस का मर्म्म अच्छी रीति से बूझा है क्योंकि ईश्वर का भय ज्ञान का प्रारम्भ है पर जिस ने आरम्भ प्राप्त नहीं किया है वह मध्य और अन्त कहां से पावेगा। अब इन दोहों के द्वारा भययुक्त की प्रशंसा करके हम उस को वार्त्ता समाप्त करें।

दोहा।

धन्य धन्य भययुक्त तुम . ईश्वर तें भयमान।
दूर कार्य न कीन्हो इते . राखि लयौ निज प्रान॥

त्रासयुक्त संसार में . सदा रह्यो तुम मीत ।
सम्मति आन मनुष्य तव . धारि लभें जग जीत ॥
नरक कुण्ड के भीतियुत . को तव सम बुधवन्त ।
अनिष्ट आपन साधने . को जाने अस तन्त ॥

नौवां अध्याय ।

स्वेच्छाचारी का मत ।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि भययुक्त की वार्त्ता जब समाप्त हुई तब सरल ने स्वेच्छाचारी नाम किसी पुरुष के इतिहास का आरम्भ किया । उस ने कहा, यह स्वेच्छाचारी अपने को यात्री कहा करता था पर उस की वार्त्ता से जान पड़ा कि यह सकरे फाटक हो कर नहीं आया था । महात्मा ने पूछा, उस के साथ यात्रा के विषय में तुम्हारी वार्त्ता कभी हुई । सरल ने कहा, कई बार हुई पर मैं ने सर्वदा उसे उस के नाम के समान स्वेच्छा-चारी ही देखा । वह न तो लोगों का कहना न उदाहरण न प्रमाण मानता जो उस के मन में आता वही करता किसी और बात से प्रसन्न न होता । महात्मा ने फिर पूछा, उस का मत क्या था तुम कह सकते हो । सरल बोला, वह कहता था कि यात्रियों के गुण अवगुण दोनों का अनुगामी होना उचित है इस से त्राण पाने में कुछ बाधा नहीं होती । महात्मा ने कहा, भला वह यदि यह कहता कि जो उत्तम लोग यात्रियों के सद्-गुण के भागी हैं उन का यात्रियों के समान दोषी भी होना असं-म्भव नहीं है तो यह उस की भारी भूल न होती क्योंकि जाग्रत और यत्नवान न रहने से पतित होने का भय सभों को है । पर

तुम्हारे कहने से जान पड़ता है कि उस का यह अभिप्राय नहीं था किन्तु लोगों को पापकर्म्म करने की अनुमति ही है यही उस का आशय था। सरल ने उत्तर दिया, हां, उसकी वार्त्ता का यही तात्पर्य्य था और वह वैसा ही करता भी था। महात्मा ने पूछा, वह अपनी इस कथा का कौन कौन प्रमाण लाता था। सरल ने कहा, वह तो कहता था कि मेरा प्रमाण धर्म्मपुस्तक है। महात्मा ने कहा सो कैसा। क्या तुम कुछ विस्तार करके बता सकते हो। सरल बोला, हां, वह कहता था कि ईश्वर के प्रिय दाऊद ने परस्त्रीगमन किया इस लिये मैं भी वह काम कर सकता हूं। एक स्त्री से सन्तोष न कर सुलेमान ने अनेक स्त्रियां कीं तो मैं भी क्यों न करूं। फिर कहा कि सारः और मिसर देश की दाइयां जो धर्म्मी कहलाईं और राहब जिस ने परित्राण पाया ये सब झूठ बोलीं तो क्या मैं झूठ न बोल सकूं। फिर प्रभु की आज्ञा से उस के शिष्य पराया गधा ले गये तो मैं क्या वैसा न करूं। और देखो याकूब ने छल कपट करके अपने पिता का धन ले लिया तो मेरे भी ऐसा करने में कौन सा दोष"। इन बातों को सुन कर महात्मा ने कहा, लो भला प्रमाण यह लाया था। क्या तुम निश्चय जानते हो कि उस का मत था। सरल ने उत्तर दिया, हां, भाई मैं ने उसे अनेक विवाद द्वारा और धर्म्म पुस्तक के अनेक प्रमाण द्वारा इस मत को स्थापन करते सुना है। महात्मा ने कहा, ऐसा घृणा योग्य मत किसी प्रकार से मानना उचित नहीं है। सरल बोला, मेरी बात का तात्पर्य उलटा मत समझो। वह यह नहीं कहता था कि पूर्वोक्त कुकर्म्म करना सब लोगों को उचित है परन्तु यह कि जिस मनुष्य में उन धर्म्मी लोगों के सद्गुण हों उस में उन के ऐसे अवगुण भी

स्वेच्छाचारी का मत।

हों तो कुछ हानि नहीं। महात्मा ने कहा, इस सिद्धान्त से अधिक भ्रान्ति कौन सी होगी। किसी धार्मिक पुरुष ने कदाचित् अज्ञानता से कोई पाप किया हो तो क्या इस कारण उस को जान बूझ के पापकर्म करने की अनुमति मिलती है। कोई बालक जो पवन के झकोर से अथवा ठोकर खाने से कीचड़ में गिर पड़ा तो क्या उस ने शूकर की नाईं कीचड़ में लोटने की अनुमति पाई। हाय! कौन कभी समझता कि कामनावश हो ऐसे लोग अन्धे हो जाते। परन्तु यह जो लिखा है अवश्य सफल होगा कि वे आज्ञाभंजक होने से ईश्वर के वाक्य से ठोकर खाते हैं और इस के लिये ठहराये भी गये। (१ पितर २:८) और जो लोग धर्म्मियों के दूषित कर्म्म जान बूझ कर किया करते हैं उन में उन के सद्गुण भी रह सकते यह बात भी जो उस ने समझ रक्खी है दूसरी बात की नाईं मिथ्या है। जिस रीति से कुत्ता मैला चाटे उस भांति ईश्वर के धार्मिक लोगों के अवगुणरूपी दुर्गन्ध से तृप्त होना धार्मिकों के गुणों के रखने का लक्षण नहीं है। (होशेया० ४:८) ऐसे मिथ्या मत के धारण करनेहारों के मन में ईश्वर का प्रेम अथवा विश्वास है इस बात की मुझे प्रतीति नहीं। पर मुझे निश्चय है कि तुम ने उस मत के खंडन में दृढ़ प्रमाण दिया होगा उस का उत्तर उस ने क्या दिया सो कृपा करके कहो। सरल बोला, उस ने यह कहा कि ऐसे कुकर्म्मों में दोष मान उन कर्मों का करना बहुत बुरा है परन्तु उन्हें निर्दोष समझ कर करना सरल स्वभाव का लक्षण है। महात्मा ने कहा, यह उत्तर बड़ा धर्म्म विरुद्ध है। अपने धर्म्मज्ञान के विपरीत पाप करना अति मन्द तो है परन्तु पाप को निर्दोष ठहरा के करना अधिक बुरा है। उस से देखनेहारे कभी कभी ठोकर खाते हैं परन्तु इस से तो वे पाप के फन्दे

में फंस जाते हैं । सरल ने कहा, इस मनुष्य का मत बहुत लोग धारण करते हैं पर उस की सी वार्त्ता नहीं कर सकते हैं । उन के कुकर्म्मों के कारण बहुत लोगों के यात्री होने में बाधा होती है । महात्मा ने कहा, तुम्हारी बात सत्य है और यह बड़े शोक का विषय है परन्तु जो स्वर्गीय राजा से भय करता है वह संपूर्ण बाधा से उद्धार पावेगा । खीष्टियानी बोली, हाय ! हाय !! इस संसार में अनेक प्रकार के मत दृष्टि पड़ते हैं । मैं ने भी एक मनुष्य को यह कहते सुना कि मरण का समय पाप के लिये पश्चात्ताप करने का यथार्थ समय है । महात्मा ने कहा, वह ज्ञानी की वार्त्ता न थी । जिसे प्राणरक्षा के निमित्त एक अठवारे में दस कोस दौड़ना अवश्य हो सो जो उस अठवारे की पिछली घड़ी तक टाल दे तो उस को ज्ञानवान कौन कहेगा । सरल ने कहा, तुम यथार्थ कहते हो तथापि जो अपने को यात्री समझते हैं उन में से अनेक लोग ऐसा ही व्यवहार करते हैं । मैं वृद्ध और बहुत काल से इस पथ का पथिक हूं अनेक विषय मैं ने देखे हैं । जिन लोगों को मैं ने देखा उन में से कितने तो ऐसे देखने में आये कि यात्रा के आरम्भ में ऐसे उद्योगी थे कि मानो समस्त जगत के लोगों को अपने संग ले जायेंगे परन्तु थोड़े दिवस में इस्रायेली लोगों की नाईं बन में प्राण त्याग किया और प्रतिज्ञा किये हुए देश का दर्शन नहीं पाया । कोई कोई यात्री होने के काल में ऐसे निर्बल थे कि जान पड़ता था वे एक दिन भी जीते न रहेंगे परन्तु अन्त में वे उत्तम यात्री हुए । कोई कोई पहिले बड़ी शीघ्रता से यात्रापथ में दौड़ने लगे परन्तु उस से अधिक शीघ्रता से यात्रापथ से लौट आये । कोई कोई पहिले तो यात्रा की प्रशंसा करते थे पीछे उस की निन्दा की । कितने ऐसे देखे कि स्वर्ग प्राप्त के निमित्त यात्रा करने के समय तो कहते थे कि निःसन्देह

स्वर्ग कोई स्थान है पर पीछे से जब स्वर्ग थोड़ी दूर रह गया तो फिर आये और स्वर्ग कोई वस्तु नहीं है ऐसा कहने लगे। और शत्रु का सामना हो तो हम घोर युद्ध करेंगे कितनों को ऐसा घमण्ड करते सुना पर उन्हीं को फिर देखा कि भयजनक धोखामात्र देख कर विश्वास और यात्रियों का पथ आदि सर्वस्व त्याग कर भाग गये।

दसवां अध्याय।

गायस का आश्रम।

वे इस रीति की वार्त्ता करते हुए चले जाते थे कि इतने में एक मनुष्य दौड़ कर इन से भेंट करने आया और इन से कहने लगा, हे महाराजो! हे स्त्रियो! जो तुम अपने प्राण की रक्षा चाहो तो शीघ्र ही उपाय करो क्योंकि आगे तुम्हारे पथ में डाकू बैठे हैं। तब महात्मा ने कहा, जिन तीन डाकुओं ने अल्पविश्वासी को लूटा था ये वेही डाकू हैं। चिन्ता नहीं हम उन के लिये तैयार हैं। फिर वे आगे बढ़े और क्या जाने किस जगह इन बटमारों से भेंट हो जाय इस विचार से मार्ग में चारों ओर देखते हुए सावधानी से चले। परन्तु बटमारों ने महात्मा का नाम सुना वा किसी और चोरी में लग गये सो नहीं जान पड़ा पर वे इन लोगों के पास न आये।

फिर खीष्टियानी ने अपने सन्तानों के विश्राम के निमित्त टिकाश्रय की इच्छा की क्योंकि वे थक गये थे। तब सरल ने कहा, यहां से थोड़ी दूर पर गायस नाम एक बड़े प्रतिष्टित शिष्य

के घर में टिकाश्रय है। बाबा सरल से उस पुरुष की यह सुख्याति सुनकर उन सभों ने वहां जाने को मन में ठाना। उस स्थान पर पहुंच कर उन्हों ने बिना द्वार पर खटखटाये जैसे टिकाश्रय में यात्रियों की रीति है वैसे भीतर जा गृहपति को पुकारा।

गायस का आश्रम।

जब वह निकट आया तो उस से पूछा कि आज रात को हम यहां टिक सकते हैं तब गायस नाम घर के स्वामी ने कहा, हां, तुम सब सच्चे यात्री हो तो यहां ठहर सकते हो क्योंकि मेरा घर केवल यात्रियों के लिये है। गृहपति जो यात्रियों से ऐसा प्रेम रखता है यह देख खीष्टियानी और उस के सन्तान और करुणा बहुत प्रसन्न हुए। फिर जब इन्हों ने शयनस्थान चाहा तब उस ने स्त्रियों और लड़कों के लिये एक कोठरी दी और एक कोठरी महात्मा और सरल को दी। फिर महात्मा ने पूछा, हे भाई! गायस ये यात्री आज बहुत दूर से चले आते हैं इस कारण बहुत थक गये हैं सो तुम आज हमको खाने के लिये क्या क्या दोगे। गायस ने कहा, भाई बहुत अबेर हो गई है इस कारण मैं बाहर कुछ लेने के लिये जा नहीं सकता हूं पर जो कुछ घर में है उससे जो तुम प्रसन्न हो तो मैं ले आऊं महात्मा ने कहा, जो तुम्हारे घर में है उसी से अवश्य हमारा सन्तोष होगा क्योंकि तुम्हारे घर में सब आवश्यक वस्तु हर समय रहती हैं यह बात मैं ने बारम्बार देखा है और निश्चय जानता हूं।

गायस के भवन में प्रवेश।

तब गायस ने सुवस्तुस्वादी नाम रसोइये के पास जाकर कहा, इतने यात्री आये हैं इन के लिये ब्यालू बनाओ। यह बात कहकर फिर इन के पास आ कहने लगा कि हे मित्रो! तुम्हारे

आने से विशेष करके तुम्हारी पहुनई के निमित्त मेरा यह घर है इस से मैं बड़ा प्रसन्न हूं। अब जो तुम्हारी इच्छा हो तो जब तक भोजन तैयार न हो तब तक परस्पर उत्तम उत्तम वार्त्ता करें। इस बात को सभों ने स्वीकार किया। तब गायस ने पूछा, यह वृद्ध स्त्री किस की भार्य्या है और यह युवती किस की कन्या है। महात्मा ने कहा, खोष्टियान नाम जो मनुष्य आगे यात्री था यह उसी की स्त्री है और ये चारों उसी के सन्तान हैं और यह युवती इन की पड़ोसिन है। इस ने इस को समझा के अपनी साथिन बनाई है। ये बालक अपने पिता के अनुगामी हो सब बातों में उसी की चाल पर चलने की चेष्टा करते हैं। अधिक क्या कहूं पिता के गमन स्थान वा शयन स्थान का चिन्ह मात्र देख कर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और उसी स्थान में चलने वा रहने की इच्छा करते हैं। गायस ने आश्चर्य मान कर कहा, यह क्या खोष्टियान की स्त्री है और ये क्या उसी के सन्तान हैं। हे खोष्टियानी मैं तुम्हारे स्वामी के पिता और दादा को जानता था। इस वंश में बहुत से साधु उत्पन्न हुये हैं उन के पुरुखे अन्तैखिया नगर के वासी थे। (प्रेरित ११ : २६) तुम ने अवश्य अपने स्वामी के मुख से उन का वृत्तान्त सुना होगा। ये बड़े सज्जन और धर्मी थे। मैं ने जितने मनुष्य देखे हैं उन सभों से ये अधिक गुणवन्त थे। उन्हों ने प्रभु के पक्ष में और उस के भक्तों के और धर्म्म के पक्ष में बड़ा साहस प्रकाश किया है। तुम्हारे पति के कुटुम्बों में से बहुतों ने सत्य के निमित्त बड़ा कष्ट सहा है। देखो तुम्हारे स्वामी के कुल में पहिले तो स्तिफान पत्थरों से मारा गया। (प्रेरित ७ : ५९, ६०) फिर याकूब नाम उसी कुल का मनुष्य खड्ग से मारा गया। (प्रेरित १२ : २) तुम्हारे स्वामी के पुरुखे पावल और पितर की वार्त्ता कहना

कुछ आवश्यक नहीं। फिर इग्नेशियस नाम एक पुरुष सिंहों के सामने फेंका गया और रोमान के जीते जी उस का मांस उस के हाड़ों से टुकड़ा टुकड़ा कर के काटा गया और पेलिकार्प ने अग्नि में जलते हुये भी अपना पुरुषार्थ प्रकाश किया। फिर एक मनुष्य के शरीर में लोगों ने मधु लपेट कर उसे टोकरी में बैठा कर धूप में लटका रक्खा कि मधुमक्खी बिलनी आदि डङ्क मार मार के उसे मार डालें और एक को उन्हों ने थैली में बांध कर समुद्र में डुबा दिया। इस रीति से यात्रियों के धर्म्म के निमित्त इस वंश के कितने लोगों ने कष्ट और मृत्यु अङ्गीकार की है। उन की गिन्ती करना असम्भव है। इस हेतु तुम्हारा पति जो ये चार पुत्र छोड़ गया है इन को देखने से मुझे अति आनन्द होता है। और मेरी यही इच्छा है कि ये लड़के अपने पिता के नाम को जुगावें और जन्म भर उसी के मार्ग पर चलें और अन्त में उसी के समान फल भोग करें। महात्मा ने कहा, तुम ने यथार्थ कहा है और ये बालक ऐसे ही हैं और अपने पिता के समान कार्य करने में इन का चित्त सर्वदा लगा रहता है। गायस ने कहा, मेरा यही तात्पर्य्य है और खीष्टियान के वंश की इतनी वृद्धि होगी कि सारी पृथ्वी उस के वंश से पूर्ण हो जायगी मुझे ऐसा जान पड़ता है। उस के पुरुखों का कुल इस पृथ्वी पर से न उठ जाय परन्तु उन का नाम बना रहे इस के निमित्त खीष्टियानी को उचित है कि अपने पुत्रों के विवाह के लिये कन्या की खोज करे। सरल बोला, हां, उस का वंश जो लोप हो जाय तो बड़े शोक की बात होगी। यह सुन कर गायस बोला, यह वंश चाहे तो घट जाय पर लुप्त कभी न होगा। फिर खीष्टियानी को चाहिये कि वंश के निमित्त मेरी सम्मति को माने। फिर उस ने खीष्टियानी से कहा कि

तुम को और तुम्हारी सखी करुणा को यहां देख कर मैं बड़ा प्रसन्न हूं सो जो तुम मेरा कहना मानो तो करुणा के साथ और भी नाता लगाओ अर्थात् उस की इच्छा हो तो तुम्हारे जेठे पुत्र मत्ती से व्याही जाय। इस बात के होने से संसार में तुम्हारे कुल की रक्षा होगी। सो यह बात पक्की हो गई और कुछ दिन पीछे इन दोनों का विवाह हुआ इस का वर्णन आगे किया जायेगा।

मत्ती से करुणा का व्याह।

गायस फिर कहने लगा कि अब मैं स्त्री जाति की निन्दा निवारण के निमित्त उन के पक्ष में कुछ कहता हूं। जैसे स्त्री द्वारा मृत्यु और स्राप ने जगत में प्रवेश किया तैसे उसी के द्वारा कुशल और जीवन भी उदय हुआ है क्योंकि ईश्वर ने अपने पुत्र को स्त्री के द्वारा इस संसार में भेजा। (उत्पत्ति ३ पर्व गलाति ४ : ४) पूर्वकाल की धर्म्मिष्ठा स्त्रियों ने अपनी आदि माता के कर्म्म से जो घृणा की तो कहीं प्रतिज्ञा किया हुआ जगत्राता मेरा ही पुत्र हो इस आशा से सन्तान की बड़ी लालसा करती थीं। फिर जब त्राणकर्त्ता इस जगत में आया तब स्वर्गीय दूत के और पुरुष के पहिले ही स्त्रियों ने उस के कारण आनन्द किया। (लूक १ : ४२-४७) और जब तक वह इस संसार मे रहा तब तक किसी पुरुष ने उसे एक पैसा भी दिया हो ऐसा कहीं नही लिखा है पर स्त्रियों ने अपनी अपनी सम्पत्ति से उस की टहल की। (लूक ८ : २, ३) देखो स्त्री ही ने अपने नेत्रों के जल से उसके पैर धोये। (लूक ७ : ३७-५०) स्त्री ही ने क़बर में धरने के पहिले उस के शरीर में सुगन्धित तेल मर्दन किया। (योहन ११ : २ और १२ : ३) जब वह

स्त्रियों की सेवा का वर्णन।

दण्ड स्थान को जाता था तब स्त्रियां उस के पीछे पीछे रोती गई। (लूक २३ : २७) और जब उसे क्रूश से उतार कर ले चले उस समय स्त्रियां उस के पीछे पीछे हो लीं। (लूक २३ :

गायस यात्रियों की पहुनाई करता है।

५५) फिर जब उसे क़बर में गाड़ दिया तब स्त्रियां ही उस की क़बर के पास बैठी रही। (मत्ती २७ : ६१) फिर क़बर से उठने के दिवस सब से पहिले प्रात समय स्त्रियां उस के पास

पहुंचीं। (लूक २४ : १) और वह मृत्यु से फिर जी उठा है यह समाचार भी उस के शिष्यों को स्त्रियों ने पहुंचाया। (लूक २४ : २२, २३) सो स्त्रियां बड़ी कृपापात्र हैं और हमारे जीवन रूप अधिकार में सहभागिनी स्पष्ट जान पड़ती हैं।

इतने में रसोइये ने कहला भेजा कि भोजन के पदार्थ सब प्रस्तुत हो चले और मेज पर चद्दर बिछाने बर्तन रखने और नोन रोटी आदि जो भोजन की सामग्री थी उस पर सजने के लिये एक मनुष्य को पठाया। तब मत्ती ने कहा, चद्दर पर सब सामग्री देखने से मुझे पहिले से अधिक भूख लगी है। गायस ने कहा, इसी भांति इस काल में जितना तुम को धर्म्मोपदेश मिले उतनी ही स्वर्गवासी महाराज के भोजन के आसन पर बैठने की तुम्हारी वासना अधिक हो क्योंकि प्रभु के घर में जाने पर जो भोजन वह हमारे लिये तैयार करेगा उस के सामने इस जगत का धर्म्मोपदेश और रीति और ग्रन्थ आदि केवल खाने के मंच पर थाल लवण आदि रखने के समान बोध होता है। फिर भोजन का समय हुआ और खाने के पहिले ईश्वर का धन्यवाद और प्रार्थना करना उचित है इस बात के जताने वाली दो वस्तुयें पहिले इनके सामने रक्खी गईं अर्थात् उठाने का कंधा और हिलाने की छाती। उठाने के कन्धे के साथ दाऊद राजा का अन्तःकरण ईश्वर की ओर उठ जाता था और बीणा बजाने के समय वह अपनी छाती के बल जो हृदय का स्थान है बीणा पर उठंग के बजाता था। (लैव्य. ७ : ३२-३४ और १० : १४-१५। भजन २५ : १। इब्रि. १३ : १५) ये दो मांस के टुकड़े इनके आगे भोजन के लिये धरे गये इन्होंने उन स्वादित टुकड़ों को बड़ी प्रसन्नता से खाया। फिर एक शीशी रुधिर के समान लाल दाखरस मेज पर आई। (विवाद ३२ : १४। न्यायि०

६ : १३ । योहन १५ : ५) तब गायस ने कहा, निधड़क पान करो। यह वह दाख का निराला रस है जिसके द्वारा ईश्वर और मनुष्य दोनों का अन्तःकरण हर्षित होता है। सो इस रस को पान करके सब यात्री प्रसन्न हुए। तब एक बासन में उत्तम दूध रोटी आई। गायस बोला, बुद्धि के बढ़ने के लिये यह दूध रोटी लड़कों को खिला दो। (१ पितर २ : १, २) फिर रसोइया भोजन के लिये माखन और मधु ले आया। तब गायस ने कहा, तुम इसको निधड़क खाओ इससे तुम्हारी बुद्धि और ज्ञान शक्ति अधिक बढ़ेगी। यह हमारे प्रभु के बालकपन का आहार था जैसा लिखा है कि बुरी क्रिया को त्यागने और उत्तम क्रिया को ग्रहण करने का जब लों उसको ज्ञान न हो तब लों वह माखन और मधु आहार करेगा (यशायाह ७ : १५) फिर एक थाली में बहुत मीठा सुन्दर फल आया। तब मत्ती ने कहा, यह फल क्या हम खायें। फल ही से सर्प्प ने हमारी आदि माता को बहकाया। इसके उत्तर में गायस ने कहा।

दोहा।

आदिहि नर दूषित भये . फलहि निषेधित खाय।
आज्ञा लंघन हेतु है . फल को आशय पाय॥

बस्तु निषेधित खायके . नर तन ग्रसहि बिकार।
जौं बिधि अनुमति भखिहो . लवे सकल सुखसार॥

हे कपोत सी मंडली . तातें सुनहु सुजान।
द्राचारस को पान करु . जातें मिटे गलान॥

प्रेम परायण नर सबै . ताके तुम हो मीत।
तातें फल भक्षण करौ . रखौ न मन में भीत॥

मत्ती ने कहा, थोड़े दिवस हुए कि मैं फल खाकर पीड़ित हुआ था इसी कारण मैंने इतना सन्देह किया । गायस ने कहा, वर्जित फल खाने से अवश्य पीड़ा होती है पर हमारे प्रभु ने जिन फलों के खाने की आज्ञा दी है उन फलों से कभी पीड़ा न होगी । इस रीति की वार्त्ता करते करते एक वर्तन में पिस्ता बादाम उन के आगे रक्खा गया । (श्रेष्ठ गीत ६ : ११) तब किसी किसी ने कहा, इनके द्वारा दांत की विशेष कर लड़कों के दांत की पीड़ा होती है । यह सुनकर गायस फिर बोला ।

दोहा ।

आंठी माझें रहत जिमि . गूदा स्वादित सार ।
आच्छादित तिमि गूढ़ पद . ज्ञान सुखद आगार ।
ज्ञानी ताको तोड़ि के . करे सुरुचि आहार ।
जो पैं ऐसो ज्ञान सत . लहे एहि संसार ॥

इस रीति से वे सब अनेक प्रकार की आनन्दयुक्त वार्त्ता करते हुए बहुत देर तक भोजन पर बैठे रहे । इतने में बाबा सरल बोला, हे गृहपति ! जब लों हम ये पिस्ता बादाम तोड़ तोड़ खायें तब लों तुम इस पहेली का अर्थ करो :—

चौपाई ।

भयो एक जन एहि प्रकारा । उन्मत ताको कह संसारा ॥
निज धन सों कीनो व्यय जेते । बढ्यो अधिक धन तिहि गृह तेते ॥

गृहपति इसका कोन सा उत्तर देगा इस बात को अपने अपने मन में सोच सब कोई आशा करके बैठे थे । थोड़ी देर चुप हो कर गायस ने यह उत्तर दिया—

दोहा।

सम्पति यह जग पायके . दुखितन को जो देत।
मानो बचन प्रमाण यह . दस गुण सो करि लेत॥

यह सुन यूसफ ने कहा, महाराज! मेरी आशा नहीं थी कि आप इसका अर्थ कर सकेंगे। गायस ने कहा, हे पुत्र! बहुत दिवस से यही काम करते करते मैंने भली भांति सीखा है। अभ्यास ही से पक्की शिक्षा होती है। मैंने अपने प्रभु से दयाशील होना सीखा है। और परख देखा है कि इससे मुझे लाभ हुआ है। लिखा है कि कोई तो ख़र्च करके भी धन की वृद्धि पाता है और कोई उचित ख़र्च अंगीकार न करने से दरिद्री हो जाता है। कोई तो धनवान होकर भी अपने को दरिद्री के समान दिखाता है और कोई दरिद्री होने पर भी अपने को धनवान बनाता है। (नीति ११ : २४ और १३ : ७)

इस समय शमूएल अपनी माता ख्रीष्टियानी से कहने लगा माता यह बड़े भले मनुष्य का घर है यहां कुछ दिन ठहरें और यहां से जाने के पहिले करुणा के साथ मेरे भाई मत्ती का विवाह हो जाय तो बहुत अच्छा होगा। घर के स्वामी गायस ने यह बात सुनकर कहा, हे लड़के, मैं भी इस बात से अति प्रसन्न हूं। सो ये लोग उस घर में एक महीने से अधिक दिन रहे और मत्ती के साथ करुणा का विवाह भी हो गया। जब तक ये लोग यहां रहे तब तक करुणा अपनी रीति के अनुसार, कपड़े सी कर दरिद्रियों को बांटती रही इससे इन यात्रियों का बड़ा यश हुआ।

ग्यारहवां अध्याय ।

गायस के घर में रहना ।

पूर्वोक्त रीति से जब ब्यालू समाप्त हुआ तब मार्ग के थकाव के कारण लड़कों ने जो सोने की इच्छा की तो गायस ने अपने चाकर से कहा, इन को सोने का स्थान दिखा दो । तब करुणा बोली, चाकर का कुछ काम नहीं है मैं इनको जाकर सुला देती हूं । यह बात कहकर वह लड़कों को सुलाने गई और सब लड़के नींद भर सो गये परन्तु और सब यात्री रात भर गायस के साथ भांति भांति की चर्चा करते रहे और उसकी संगति से ऐसे प्रसन्न थे कि आपस में कोई किसी से अलग होने की इच्छा नहीं करता था । जब वे अपने प्रभु की और अपनी अपनी यात्रा की अनेक वार्त्ता कर चुके तो वृद्ध बाबा सरल जिस ने पहेली का अर्थ गायस से पूछा, था मारे नींद के झुकने लगा । यह देखकर महात्मा ने कहा, क्या जी तुम ऊंघते हो । आंख खोलो मैं तुम से एक पहेली पूछता हूं । तब सरल ने कहा, अच्छा कहो मैं सुनता हूं । महात्मा बोला—

महात्मा की पहेली ।

दोहा ।

शत्रु बधन को जो चहे . प्रथम हार सो जाय ।
मरे अपन गृह मांहि जो . बिदेश जीवन पाय ॥

यह सुन सरल ने कहा, यह पहेली बड़ी कठिन है इस का आशय बताना कठिन है फिर इस के समान करना सब से कठिन है । हे गृहपति जो तुम्हारी इच्छा हो तो इस का उत्तर देना मैं तुम पर छोड़ूं तुम ही इस का अर्थ करो हम सुनें । गायस

ने कहा ऐसा नहीं होता। तुम से प्रश्न किया गया है तुम हो इस का उत्तर दो। तब सरल ने इस पहेली का यह अर्थ किया।

चौपाई।

पाप बधन की बांच्छा जाकी। करै कृपाहि पराजय ताकी॥
स्वर्गवास उत जिहि मन भावे। आत्मदमन मुंह इत दुख पावै॥

यह सुन गायस ने कहा, तुम ने यथार्थ कहा है। यह धर्म्मोंपदेश और परीक्षा से प्रामाणिक होता है क्योंकि जब तक ईश्वर की कृपा प्रकाश होकर अपने प्रभाव से अन्तःकरण को दमन न करे तब तक पाप के दमन करने का साहस उत्पन्न नहीं होता। जो शैतान की पापरूपी रस्सी से अन्तःकरण बंधा रहे तो उस बन्धन के रहते मनुष्य किस भांति पाप के रोकने में समर्थ हो। फिर जो मनुष्य अपनी कुअभिलाषा के आधीन हो रहा है वह जो ईश्वर की कृपा से जीवन का अधिकारी हुआ हो यह असंगत बात है इस को जो लोग ईश्वर की कृपा को जानते हैं सो कभी ग्रहण नहीं करेंगे। फिर गायस बोला, इस विषय में मैं एक सुन्दर प्रश्न करता हूं सो सुनो। दो मनुष्य यात्री हुए एक युवा और दूसरा वृद्ध था। युवा की स्वाभाविक कुअभिलाषा प्रबल थी और वृद्ध के शरीर की दुर्बलता के कारण उस के मन की कुअभिलाषा भी दुर्बल हो गई थी। परन्तु वह युवा पुरुष सब बातों में वृद्ध के तुल्य यत्नवान हो धर्म्म का आचरण करता था। सो मैं पूछता हूं कि ये दोनों एक समान दृष्टि पड़ते थे पर इन दोनों में से पारमार्थिक गुण किस में अधिक था। सरल बोला कि युवा का गुण अधिक था इस में सन्देह नहीं क्योंकि बहुत बाधा को जय करके आगे बढ़ना बलवान का लक्षण है। विशेष करके जिस को थोड़ी बाधा हो उस के साथ साथ कोई बहुत बाधा का पराजय करके जो आगे बढ़े तो उसे अधिक बलवान

जानना उचित है। और निश्चय है कि इस यात्रा में वृद्धों को बाधा कम मिलती है। वृद्ध लोगों में मैं ने एक भ्रम देखा है कि वे देह की दुर्बलता को इन्द्रियों की कुअभिलाषा का दमन जानकर भूलते हैं और अपने को धोखा देकर एक असत्य भावना से सन्तुष्ट होते हैं। इस संसार के असारत्व को वृद्ध धार्म्मिक लोगों ने अधिक देखा है इस कारण वे युवा लोगों को सत्य परामर्श दे सकते हैं। परन्तु युवा और वृद्ध दोनों को जब साथ साथ यात्रा करनी पड़ती है तब वृद्ध की कुअभिलाषा स्वभाव ही से निर्बल होने के कारण उस की थोड़ी बाधा होती है। वृद्ध को यह लाभ है। परन्तु मन में पवित्र आत्मा के गुण का प्रमाण दिखाने का युवा ही को अधिक सामर्थ्य होता है। युवापन का यही लाभ है। इस भांति ये सब प्रातःकाल लों वार्त्तालाप करते रहे।

सरल का उत्तर।

फिर जब घर के लोग उठे तब खीष्टियानी ने अपने पुत्र याकूब को धर्म्मपुस्तक के एक अध्याय के पाठ करने को कहा। उस ने यशैयाह का ५३ अध्याय पाठ किया। तब सरल ने पूछा कि यह क्यों लिखा है कि जगत्राता सूखी भूमि से प्रगट हुआ और यह कि उस का रूप वा सुन्दरता कुछ नहीं थी। महात्मा ने उत्तर दिया कि पहिली बात का अर्थ यह है कि खीष्ट यहूदीय मंडली में उत्पन्न हुआ उस मंडली में उस समय धर्म्म का रस और गुण बहुत थोड़ा रह गया था। दूसरी बात अविश्वासी की कही हुई समझना। अविश्वासी लोग पारमार्थिक नेत्र से हीन होते हैं वे हमारे प्रभु का अन्तःकरण देख नहीं सकते इस कारण उस का बाहरी सामान्य रूप देखकर उसे तुच्छ समझते हैं जैसे कोई मूर्ख मट्टी से लिपटा हुआ हीरा पाय उसे सामान्य पत्थर जानकर फेंक दे।

फिर गायस ने कहा, तुम इतने मनुष्य यहां हो और महात्मा शस्त्र धारण करने में बड़ा निपुण है यह जानकर कहता हूं जो तुम्हारी सम्मति हो तो कुछ आहार करने के पीछे हम लोग बाहर जाकर देखें कि कोई हितकारक कर्म्म हम से हो सका वा नहीं। यहां से आध कोस पर साधुहिंसक नाम एक दानव रहता है। उस के रहने का स्थान मैं जानता हूं बहुत चोरों को साथ ले यहां के राजपथ में बड़ा उपद्रव करता है। जो हम उसे मार सकें तो यात्रियों को बड़ा लाभ होगा। यह बात सुन सब एक चित्त हो जाने को प्रस्तुत हुए। तब महात्मा ने टोप पहिर अपनी ढाल तलवार ली अरु और बरछी लाठी आदि सब ले उस के मारने को चले। जब वे उस दानव की कन्दरा के निकट पहुंचे तब उस के वश में क्षीणमन नाम एक मनुष्य को देखा जिसे वह राजपथ से पकड़कर ले आया था। वह दानव उस बेचारे का सर्वस्व छीन रहा था और वह मनुष्य का मांसाहारी था इस लिये उस मनुष्य को टुकड़े टुकड़े कर भक्षण किया चाहता था। अपनी कन्दरा के द्वार पर से शस्त्रधारी महात्मा और उस के संगियों को देखकर उस ने पूछा कि तुम किसको खोजते हो। महात्मा ने कहा, हम तुझ ही को खोजते हैं। तू ने जिन अनेक यात्रियों को राजपथ से पकड़ पकड़ ले आकर नष्ट किया है उनकी हत्या का पलटा तुझ से लेने के लिये आये हैं इस कारण तू अपनी कन्दरा से बाहर निकल आ। इस बात के सुनते ही वह शस्त्र धारण करके कन्दरा से बाहर निकला और तीन चार घड़ी तक इन दोनों में युद्ध होता रहा। फिर विश्राम के लिये जब दोनों ने कुछ थोड़े काल लों युद्ध छोड़ा तब साधु हिंसक कहने लगा तुम मेरी भूमि में क्यों आये हो। महात्मा ने कहा, इस बात का उत्तर तो मैं दे चुका हूं कि यात्रियों के मारने का

पलटा लेने को आये हैं। यह सुन वह दानव फिर युद्ध करने लगा और महात्मा को कुछ हटा दिया। परन्तु महात्मा ने फिर सन्मुख आ अपनी स्वाभाविक बीरता प्रकाश कर दानव के सिर और पंजर में ऐसी मार मारी कि उस के हाथ से तलवार गिर पड़ी। फिर महात्मा ने उसे मारकर उस का मस्तक काट डाला और उस का मस्तक हाथ में ले क्षीणमन नाम यात्री को और अपने संगियों को साथ ले गायस के घर चला आया। फिर घर के निवासियों को वह मस्तक दिखा कि अन्य दुरात्माओं को भय हो इस के निमित्त उस को एक ऊंचे खम्भे पर खड़ा किया।

फिर घर के लोगों ने क्षीणमन से पूछा, तुम किस रीति से उस दानव के हाथ में पड़े। इस ने कहा, तुम देखते हो कि मैं दुर्बल मनुष्य हूं। काल प्रतिदिन आकर मेरे द्वार को खटखटाता था इस से मैं ने अनुमान किया कि घर में रहने से कभी चैन न पाऊंगा। यह विचार मैं यात्री हुआ और अपनी जन्मभूमि अनिश्चय नाम नगर से यहां तक आ पहुंचा हूं। न तो मेरे शरीर में बल न मेरे मन में साहस है तौभी रेंगते रेंगते जाऊं तो जाऊं सही पर स्वर्ग की यात्रा में काल व्यतीत करना विचारा है। जब मैं इस पथ के सिरे पर के द्वार पर आया तो वहां के स्वामी ने बड़े आदर से मेरा आतिथ्य किया मेरा क्षीण शरीर वा दुर्बल मन देखकर किसी रीति से अपमान न किया वरन् मार्ग के लिये कुछ द्रव्य देकर कहा कि अन्त लों आशा रखियो। फिर जब मैं अर्थकारक के घर पर पहुंचा तो उस ने भी बड़ा स्नेह प्रकाश किया और दुर्गम नाम पर्वत पर चढ़ना कठिन जानकर उस ने एक सेवक को मेरे सङ्ग कर दिया वही मुझे पर्वत पर चढ़ा लाया। इस से अधिक मार्ग में यात्रियों से मैं ने

क्षीणमन का वृत्तान्त।

बहुत सहायता पाई है। मेरे साथ धीरे धीरे चलने को कोई प्रसन्न तो न था तथापि कितनों ने मेरे निकट से जाते समय मुझे समझा कर कहा तुम किसी बात से घबड़ाना मत हमारे प्रभु की इच्छा है कि क्षीणमनों को शान्ति दी जाय। (१ थिसलोनि. ५ : १४) यह बात कह वे मुझे पीछे छोड़ कर आगे बढ़े। फिर जब मैं हल्ला नाम गली के निकट पहुंचा तब उस दानव ने मुझे देख कर कहा कि युद्ध के निमित्त तैयार हो परन्तु मैं शक्तिहीन युद्ध कहां कर सकता था मुझे तो पुष्टई से प्रयोजन था। सो उस ने निकट आ मुझे घेर लिया परन्तु यह मुझे नहीं मार सकेगा ऐसा मैंने अनुमान किया फिर जब वह मुझे अपनी भयङ्कर गुफा में ले गया मैं जो उस के सङ्ग अपनी इच्छा से नहीं गया था इस कारण उस समय भी मुझे यह आशा थी कि फिर मैं जीता बाहर आऊंगा। इसका कारण यही था जो मैंने सुना था कि बल द्वारा जो यात्री किसी शत्रु से पकड़ा गया हो और उसका चित्त ईश्वर में लगा हो वह यात्री शत्रु के हाथ से मारा न जायगा यह परमेश्वर का नियम है। मैं यह जानता था कि मेरा सर्वस्व हरण होगा और सच है सर्वस्व तो गया पर तुम देखते हो कि मेरा प्राण तो बचा है इस प्राणरक्षा में आदि कारण तो प्रभु है और उपाय रूप तुम हो सो मैं दोनों का धन्य मानता हूं। मैं यह भी जानता हूं कि मेरी और भी बड़ी बड़ी दुर्दशा होनेहारी है पर मुझे इस बात की टेक है कि दौड़ सकूंगा तो दौड़ूंगा न दौड़ सकूंगा तो धीरे धीरे चलूंगा और जब धीरे धीरे भी न चल सकूंगा तो रेंगता रेंगता जाऊंगा पर जाऊंगा सही। धन्य प्रभु जिस ने मुझे प्यार किया है मुझे त्राण पाने का निश्चय हो चुका मेरे चलने का मार्ग सामने है और यद्यपि मेरा मन क्षीण है तथापि मेरा चित्त उस नदी के जिस का पुल नहीं है उस पार लगा है।

तब वृद्ध बाबा सरल ने क्षीणमन से पूछा, भययुक्त नाम यात्री से तुम्हारा परिचय था कि नहीं। क्षीणमन ने कहा, हां, क्यों नहीं था। नाशनगर की उत्तर ओर सवा सौ कोस पर और मेरे नगर से भी उतनी ही दूर जो जड़ बुद्धि नाम नगर है वहां का वह रहने वाला था तौ भी उस से मेरा परिचय बड़ा था क्योंकि वह मेरा चचा था मेरा और उस का स्वरूप और स्वभाव समान है इतना ही अन्तर है कि वह कुछ मुझ से नाटा था। सरल ने कहा, मुझे अब जान पड़ा कि तुम उसे जानते हो और तुम उस के कुटुम्बी हो यह प्रतीति के योग्य है क्योंकि उसी के समान तुम्हारे भी मुंह का रङ्ग फीका है और तुम्हारी आंखें भी कुछ तिर्छी है और तुम्हारा शब्द भी उसी के तुल्य है। क्षीणमन ने कहा, जिन का उस से और मुझ से दोनों से परिचय रहा है वे बहुधा ऐसा ही कहते हैं और उस का और मेरा स्वभाव समान है इस बात को मैं ने उस के चरित्र के देखने से जान लिया है। इतने में गायस बोल उठा, हे भाई! अब सुस्थिर हो मैं और मेरा घर तुम्हारे ही हैं

गायस की दया। तुम्हारी जो इच्छा हो सो आज्ञा करो और मेरे चाकरों को जो आज्ञा दोगे सो वे चित्त लगाकर करेंगे। क्षीणमन ने कहा, आहा! ऐसा अनुग्रह मुझ पर होगा इस की मुझे कभी आशा न थी। यह कैसा है जैसा बड़े घोर अन्धकार मेघ को फाड़ सूर्य्य चमक निकले। जिस समय साधुहिंसक दानव मुझे पकड़ ले गया था उस काल क्या मेरे ऐसे मङ्गल करने की उस की चेष्टा थी वा मेरा सर्वस्व हरण कर के मुझे गायस के घर में पाहुन करने का विचार किया था। नहीं तौ भी मेरा ऐसा मङ्गल हुआ।

इस रीति से क्षीणमन और गायस बात कर रहे थे कि इतने में एक मनुष्य दौड़ता हुआ द्वार पर आ पुकारने लगा कि इस स्थान से कोस एक दूर पर असाधु नाम एक यात्री अकस्मात् वज्र से मारा गया है। यह सुन क्षीणमन कहने लगा, हाय! हाय!! क्या वह मारा गया। इस स्थान पर पहुंचने को जब मुझे कई दिन का मार्ग रह गया था तब वह मेरा सङ्गी हुआ चाहता था। जिस समय साधुहिंसक मुझे पकड़ कर ले गया उस समय वह मेरे साथ था पर उसे शीघ्र दौड़ने की शक्ति थी सो वह भाग कर बच निकला। अब इस समय जान पड़ा है कि वह मरने के निमित्त बच गया और मैं बचने के लिये पकड़ा गया।

असाधु का मारा जाना।

चौपाई।

परमेश्वर के अचरज भावा। अन्त न ताके कोऊ पावा॥
सन्मुख देखो मृत्यु समाना। पाछें शुभदायक विध नाना॥
घोर दुःख तें मोचनहारा। देत वृद्धि जिमि बारिद कारा॥
नम्रन के पद ऊंचो दाता। गर्वित के घालक प्रभु पाता॥

दोहा।

छूट्यो मैं जु धरो गयो. धरो गयो पुन सोई।
जीवन इमि मोको मिले. मरन तेहि वरु होई॥

इन दिनों में मत्ती के साथ करुणा का विवाह हुआ और गायस ने अपनी फीबी नाम्नी कन्या मत्ती के भाई याकूब को ब्याह दी। फिर उन्हों ने गायस के घर में यात्रियों की रीति के, अनुसार दस पांच दिन और काटे। जब उनके चलने का समय हुआ तब गायस ने उन के लिये भोजन बनाया। ये भोजन कर के अत्यन्त प्रसन्न हुये। फिर चलने के समय महात्मा ने गायस से पूछा, हम लोगों ने जो खाया पीया और बास किया है इस

का क्या लगेगा। गायस ने कहा, मेरे घर में जो यात्री टिकते हैं उन्हें कुछ देना नहीं पड़ता है। मैं बरस भर भर यात्रियों को टिकाता और खिलाता हूं पर इस का दाम उत्तम शोमिरोनी से पाऊंगा। उस ने प्रतिज्ञा की है कि मैं जब फिर आऊंगा तब जो कुछ तुम्हारा लगा है सो भर दूंगा। (लूक १० : ३४, ३५) यह सुन महात्मा बोला, हे प्यारे ! तुम भाइयों से विशेष कर के विदेशी भाइयों से जो करते हो सो विश्वासी लोगों के योग्य कार्य्य होता है। उन्हों ने मण्डली के सन्मुख तुम्हारे प्रेम की साक्षी दी है। तुम जो ईश्वर के काम से आगे को भी यात्रियों की सेवा कर यात्रा में उन की सहायता करोगे तो बहुत ही उत्तम कर्म्म करोगे। (३ योहन १ : ५, ६) फिर गायस ने क्षीणमन को मार्ग में पीने के लिये कुछ पीने की वस्तु देकर विशेष प्रेम प्रकाश पूर्वक अपनी कन्या और दामाद से मिल इन सभों को बिदा किया।

बारहवां अध्याय ।

मनासोन के घर में ।

जिस समय यात्री बाहर निकले क्षीणमन विलम्ब करने का लक्षण दिखाने लगा। इस को देख महात्मा ने कहा, आओ क्षीणमन भाई तुम हमारे साथ ही चलो। मैं तुम्हारा भी पथ-दर्शक होऊंगा। जो इन का मङ्गल होगा सो तुम्हारा भी होगा। यह सुन क्षीणमन बोला, मेरे योग्य साथी न मिले तो मैं कैसे चल सकूंगा। तुम सब युवा और बलवान हो। मैं निर्बल हूं जैसा तुम देखते हो हो। मैं अपनी पीड़ा दुर्बलता आदि के द्वारा

यात्रियों का प्रस्थान ।

कहीं तुम पर भारस्वरूप न हो जाऊं इस कारण मैं पीछे पीछे चलने को इच्छा करता हूं। मेरा चित्त बहुत क्षीण है। अन्य लोगों को जो सामर्थ्यवान हैं जिन बातों से कुछ विघ्न नहीं होता उन बातों से मुझे ठोकर लगती है और मैं और भी क्षीण हो जाता हूं। देखो मुझे हंसना अच्छा नहीं लगता मैं अनेक रंग का भड़कीला वस्त्र देखना नहीं चाहता हूं और न मुझे निष्फल प्रश्नोत्तर सुनने की इच्छा है। विशेष क्या कहूं मैं ऐसा दुर्बल हूं कि जो कर्म्म वर्ज्जित नहीं है किसी को ऐसा काम भी करते देखता हूं तो कभी कभी मुझे बाधा हो जाती है। अभी तक मैं धर्म्म की सब बातें नहीं समझता हूं मैं अज्ञान खीष्टियान हूं। ईश्वर के नाम से जो आनन्द करता हो ऐसे भाई के आनन्द के शब्द को सुन कर भी कभी कभी मुझे दुःख होता है इस का कारण यह है कि मैं आप वैसा आनन्द नहीं कर सकता हूं। मैं बलवानों में दुर्बल निरोगियों में रोगी और तुच्छ दीपक सदृश मनुष्य हूं। मुझे क्या करना उचित है उसका निर्णय नहीं कर सकता हूं। जो मनुष्य फिसलनेवाला है वह सुखी मनुष्य के लेखे तुच्छ दीपक के समान है धर्म्मपुस्तक इसी के वाक्य की नाईं मेरी दशा है। (ऐयूब १२ : ५) इसकी यह बात सुनकर महात्मा ने कहा, हे भाई! कायरों को शांति देने और दुर्बल लोगों की सहायता करने की मुझे आज्ञा है सो तुम को हमारे साथ चलना पड़ेगा। हम तुम्हारे लिये धीरे धीरे चलेंगे और काम पड़े तो तुम्हारी सहायता करेंगे। हम किसी रीति का सूक्ष्म विवाद तुम्हारे सामने न करेंगे। जिस मत से अथवा कर्म्म से तुम दुःखी होगे उस से हम बराव करेंगे। तुम्हारी सब बातों को सह लेंगे पर किसी रीति से तुम को पीछे न छोड़ जायेंगे। (१ थिसलोनिकियों ५ : १४। रोमियों १४ पर्ब्ब। १ करिन्थियों ८ : ९-१३ और ९: २२)

ये लोग गायस के द्वार ही पर खड़े खड़े इस रीति की बातें करते थे कि इतने में पंगु नाम एक यात्री बैसाखी टेक टेक निकट आ पहुंचा। उसको देखकर क्षीणमन बोला, हे जी, तुम यहां कैसे आये। मैं अपने योग्य साथी के लिये घबड़ा रहा था पर अब जैसा साथी मुझे चाहिये वैसा मुझे मिल गया है। तुम्हारे आने से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। मुझे भरोसा

पंगु नाम साथी। होता है कि हम तुम आपस में सहायक होंगे।

यह सुन पंगु ने कहा, मैं भी तुम्हारी संगति पाने से बड़ा प्रसन्न हुआ हूं। हे भाई! परमेश्वर की कृपा से ऐसा संयोग होता है। हम तुम दोनों साथ में रहें इसके निमित्त तुम्हें अपनी एक बैसाखी कहो तो मैं दूं। क्षीणमन ने कहा, तुम्हारी मुझ पर बड़ी कृपा है पर मुझे तुम्हारी बैसाखी का प्रयोजन नहीं क्योंकि लंगड़ा नहीं हूं जो लंगड़ा के चलूं मुझे जब प्रयोजन होवे तो ले लूंगा। न जानिये किसी समय कुत्ता मारने के काम आवे। पंगु ने कहा, अच्छा तुम्हें, मेरी बैसाखी का वा मेरे शरीर ही का काम पड़े तो मुझ से कहना।

फिर ये सब मिलकर चले इन में महात्मा और सरल आगे आगे चले इनके पीछे ख्रीष्टियानी अपने परिवार के सहित चली और सब के पीछे क्षीणमन और बैसाखी टेकने वाला पंगु ये दोनों चले आये। चलते चलते सरल ने महात्मा से कहा, हे भाई! अब मार्ग में किसी प्राचीन यात्री का विषय कहो जो हितकारी होवे। महात्मा ने कहा, अच्छा। पूर्व काल में नम्रता की तराई में अपल्लु-ओन से और ख्रीष्टियान से जो युद्ध हुआ और मृत्युछाया की तराई में जो जो कष्ट उसने पाया सो सब तुम ने सुना होगा। फिर कामुकी नामी स्त्री और प्रथम आदिम और असन्तुष्ट और लज्जावान इन चार दुष्टों में मिलने से विश्वासी नाम यात्री को

जो जो कष्ट हुआ वह भी तुमने अवश्य सुना होगा। सरल ने कहा, हां, यह सब समाचार मैंने सुना है। उनमें लज्जावान सब से बड़ा दुःखदाई था इसका कारण यह है कि वह पीछा नहीं छोड़ता था। महात्मा ने कहा, हां सत्य है। उसका नाम विपरीत है यह बात जो विश्वासी ने कही सो यथार्थ कही। तब सरल ने पूछा, बकवादी के साथ विश्वासी और खीष्टियान की भेंट जहां हुई वह स्थान कहां है। वह भी बड़ा विवादी था। महात्मा ने कहा, वह बड़ा हठी और मूर्ख था पर अब भी बहुत से मनुष्य उसके समान हैं। सरल बोला, वह तो विश्वासी को भुला ही चुका था। महात्मा ने कहा, सत्य है पर उसकी चतुराई धरने के लिये खीष्टियान ने उत्तम उपाय बता दिया।

इस रीति की वार्त्ता करते करते ये सब उस स्थान पर पहुंचे जहां मंगलवादी ने खीष्टियान और विश्वासी के निकट आकर मायापुर के मेले में उनकी जो दशा होनेहारी थी सो सब कह सुनाई। तब पथदर्शक ने कहा, देखो इसी स्थान पर मंगलवादी ने खीष्टियान और विश्वासी को मायापुर के मेले का सब समाचार कह सुनाया। सरल बोला, वह स्थान क्या यही है जान पड़ता है कि उनके लेखे वह बड़ी कठिन वार्त्ता थी। महात्मा बोला, हां, बड़े कष्ट की बात तो थी पर उसने उनको ढाढ़स भी बंधा दिया। पर उनकी हम कौन सी कथा कहें। वे दोनों सिंह के समान वीर थे। उनका साहस पर्वत के समान अचल था। वे विचारकर्त्ता के सामने कैसे निर्भय खड़े रहे इस को तुमको सुरत आती है कि नहीं। सरल ने कहा, हां, जी विश्वासी ने बड़े धीरज से दण्ड भोगा। महात्मा ने कहा, उसके धीरज से अनेक आश्चर्यमय फल भी उत्पन्न हुए। लोग कहते हैं कि उसकी मृत्यु को देखकर आशावान आदि अनेक मनुष्यों

ने अपना अपना चित्त ईश्वर की ओर लगाया। सरल बोला, इन विषयों को तुम तो भली भांति जानते हो इस हेतु और भी कुछ कहो मुझे सुनने की बड़ी लालसा है। महात्मा बोला, अच्छा सुनो। मायापुर के मेले से पार होने के पीछे ख्रीष्टियान को जितने लोग मिले उन सभों में से प्रपंची नाम एक मनुष्य बड़ा चतुर था। सरल ने पूछा, यह प्रपंची कौन था। महात्मा ने उत्तर दिया, वह बड़ा चतुर और पूरा कपटी था। संसारी लोग जो चाहें सो करें वह तो धर्म्म का भेष धारण किये रहता था पर ऐसा चतुर था कि उससे उसकी कभी कुछ

प्रपंची का वर्णन।

हानि नहीं होती थी। जैसा जैसा प्रयोजन होता था तैसा तैसा उसका मत बदलता था और इस बात में जैसा वह निपुण था उसकी स्त्री भी वैसी ही थी। अधिक क्या कहूं। एक मत को त्याग दूसरे मत को धारण करना उसे कुछ कठिन नहीं था और ऐसा करना उत्तम है इस विषय में वह बड़ा बड़ा प्रमाण लाता था। पर मैं सुनता हूं कि अन्त में उसकी बुरी दशा हुई और ईश्वर के भक्तों में उस के किसी सन्तान की बड़ाई कभी सुनने में न आई।

इस रीति की बातें करते करते यात्री लोग मायापुर के निकट आ पहुंचे। तब अपने को उस स्थान के निकट देख वे परस्पर विचार करने लगे कि किस रीति से इस नगर में होकर जायें। इस विषय में प्रत्येक मनुष्य ने भिन्न भिन्न परामर्श दिया। सब के पीछे पथदर्शक ने कहा, सुनो तुम जानते हो कि

मनासोन के घर पर।

मैं बहुत बिरियां यात्रियों का पथदर्शक होकर इस नगर में होकर गया हूं इस हेतु कुप्रस टापू का मनासोन नामक एक प्राचीन शिष्य से मेरा परिचय है उस के घर जाने से सुख से रहेंगे। (प्रेरित

२१ : १६) तुम लोग कहो तो वहीं चलें। सरल बोला, हां, यही करना चाहिये। तब खीष्टियानी ज्ञीणमन आदि सभों ने यही बात अंगीकार की। फिर नगर के निकट पहुंचते पहुंचते संध्याकाल हो गया पर इनकी कुछ हानि न हुई क्योंकि महात्मा उस शिष्य के घर का मार्ग भली भांति से जानता था। फिर जब वे उस घर के निकट जा पहुंचे तब महात्मा ने उसके किवाड़ खटखटा कर पुकारा। उसका शब्द सुनते ही उस घर के वृद्ध स्वामी ने उसे चीन्ह के तुरन्त द्वार खोला और ये सब भीतर चले गये। फिर उस वृद्ध ने इनसे पूछा, आज तुम कितनी दूर से आये हो उन्होंने कहा, आज हम तुम्हारे मित्र गायस के घर से चले आते हैं। वृद्ध ने कहा, आहा ! इतनी दूर से आये हो तो तुम अवश्य थके होगे। सो तुम बैठकर विश्राम करो तब ये सब बैठ गये। तब पथदर्शक उनसे बोला, कहो मित्र अब कैसे हो। मैं निश्चय जानता हूं कि तुम्हारे आने से हमारा यह वृद्ध भाई बड़ा प्रसन्न हुआ है। यह सुन मनासोन ने कहा, सत्य है तुम्हारे आने से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। जिस बात की तुम्हें इच्छा हो उसकी आज्ञा करो मैं भरसक तुम्हें मंगवा दूंगा। यह सुन सरल बोला, हमें उत्तम आश्रय स्थान और सत्संग की बड़ी चिन्ता थी सो दोनों हम को प्राप्त हुए हैं। तब मनासोन ने कहा, स्थान कैसा है सो तुम देखते ही हो और सत्संग की बात परीक्षा द्वारा जानी जायगी। फिर महात्मा गृहपति से बोला, इन यात्रियों को कृपा करके शयन स्थान बताइये। उसने कहा, बताता हूं। इतना कह उनको अलग अलग कोठरियां सोने के लिये दिखा दीं और एक बड़ा स्थान भोजन करने का दिखाया जहां सब इकट्ठे बैठकर भोजन करें।

ये सब वहां जाकर बैठे फिर थोड़ी देर बैठे बैठे जब मार्ग की थकाहट उतरी तब सरल ने पूछा, हे गृहपति इस नगर में कोई धर्म्मिष्ठ लोग हैं वा नहीं। मनासोन ने कहा, हां, कई एक तो हैं पर अधर्म्मी इतने हैं कि उन के सामने धार्म्मिक लोग बहुत थोड़े दृष्टि पड़ते हैं। सरल बोला, किस भांति उन धार्म्मिकों से भेंट हो। जैसे समुद्रगामियों को चन्द्रमा और तारों का प्रकाश उपकारी होता है तैसे यात्रियों को धर्म्मिष्ट लोगों का सत्सङ्ग फलदाई है। इस पर घर के स्वामी ने एक लात पृथिवी पर मारी उसका शब्द सुनते ही कृपा नामी उसकी लड़की आई तब इसने उससे कहा, हे कृपा, तुम जाकर चूर्णमन पवित्रमति साधुप्रिय मिथ्यात्यागी और अनुतापी नाम मेरे मित्रों को कहो कि आज मेरे घर कितने एक पाहुने आये हैं वे तुमसे भेंट किया चाहते हैं। तब कृपा गई और यही बात कह कर उन सभों को बुला लाई। वे आकर आपस में नमस्कार प्रणाम कर इकट्ठे बैठे।

तब मनासोन बोला, हे मित्र लोगो तुम देखते हो कि आज मेरे घर कितने एक विदेशी आकर उतरे हैं। ये सब यात्री हैं। ये लोग बड़ी दूर से आये हैं और सियोन पर्वत को जाते हैं। फिर उसने खीष्टियानी की ओर सैन करके कहा तुम जानते हो यह कौन है। इसका नाम खीष्टियानी है। खीष्टियान नाम प्रसिद्ध यात्री जिसने अपने सङ्गी विश्वासी के साथ हमारे नगर में बड़ी आपदा भोगी थी उसी की यह भार्य्या है। इस बात के सुनते ही सब कोई अचम्भा करके कहने लगे कि जिस समय कृपा ने हम को बुलाया उस समय हमको यह आशा नहीं थी कि हम यहां खीष्टियानी को देखेंगे। इससे हमें बड़ा आनन्द हुआ है। फिर उन्होंने खीष्टियानी से कुशल क्षेम पूछ कर कहा, क्या ये युवा खीष्टियान के पुत्र हैं। खीष्टियानी ने

कहा, हां, ये उसी के लड़के हैं। यह सुन इन्होंने उन युवाओं से कहा, तुम जिस महाराजा की सेवा प्रेम के सहित करते हो वह तुमको तुम्हारे पिता के समान करके कुशल पूर्वक तुमको स्वर्गपुर में उसके पास ले जाय।

जब वे इस रीति से बात कर चुके तब सरल ने चूर्ण मन आदि से पूछा इन दिनों में तुम्हारे नगर की क्या व्यवस्था है। चूर्ण मन ने कहा, मेले के समय बड़ी हड़बड़ी होती है उस समय अपना अन्तःकरण ठिकाने रखना अति कठिन है। जो ऐसे स्थान में बास करते हैं और जिन को इस नगर के लोगों से व्यवहार करना पड़ता है उन को क्षण क्षण सावधान होने की चेतना पाना आवश्यक है। सरल ने कहा, भला इस समय तुम्हारे पड़ोसी लोग शान्त रहते हैं वा उपद्रव मचाते। चूर्णमन बोला, आगे से तो अब कुछ शान्त हैं। खीष्टियान और विश्वासी की जो दुर्दशा हुई उसे तुम जानते ही हो पर तब से इन दिनों में लोग कुछ मध्यम हुए हैं। बोध होता है कि विश्वासी की हत्या का अपराध अब तक बड़े बोझ की नाईं उन के मन पर लदा हुआ है क्योंकि जब से उस को जला दिया तब से लज्जा के मारे और किसी को नहीं जलाया है। उस समय नगर के मार्ग में चलने का भी किसी को साहस नहीं होता था पर इस समय सब निधड़क फिरा करते हैं। उस समय खीष्टाश्रित होना बड़ी निन्दा के योग्य कर्म्म गिना जाता था पर इस समय हमारे इस बड़े नगर के किसी किसी टोले में आदर का विषय जाना जाता है। फिर चूर्णमन ने यात्रियों से पूछा कि तुम लोग इस मार्ग में कैसे निबहे हो और देश के लोग तुम से कैसा व्यवहार करते हैं। सरल बोला, जैसे और और पथिकों की दशा तैसी हमारी भी होती है। कहीं मार्ग अच्छा है कहीं खड़बिड़ भी है। कभी

ऊपर चढ़ना पड़ता है कभी नीचे उतरना पड़ता है । हमारा पथ सम नहीं है । सर्वदा अनुकूल बयार बही हो वा मार्ग में सब कोई मित्र ही मिले हों ऐसा नहीं है । जब से हम इस यात्रा में चले तब से ठौर ठौर अनेक भारी भारी युद्ध हुए हैं । अब आगे क्या दशा होगी यह नहीं कह सकते । धार्म्मिक लोगों को अवश्य क्लेश होगा यह प्राचीन वाक्य मैं यथार्थ समझता हूं । चूर्णमन बोला, तुम ने जो युद्ध की बात कही तो कहो मार्ग में तुम्हें किस किस से युद्ध करना पड़ा । सरल ने उत्तर दिया, मुझ से क्या पूछते हो हमारे पथदर्शक महात्मा से पूछो वह सब वृत्तान्त तुम को भली भांति से सुना सकता है इस बात के सुनते ही महात्मा कहने लगा कि हम लोगों पर मार्ग में तीन चार बेर हल्ला हुआ प्रथम तो खोष्टियानी और उस के पुत्रों ने दो दुष्टों के हाथ में पड़ के बड़ा कष्ट पाया । वे डरते थे कि हमारा प्राण जायगा । फिर हत्यारा और गदाबीर नाम दो दानवों ने आकर हमें घेरा और साधु हिंसक दानव पर तो हम ही लोग चढ़ गये थे । उस का वर्णन करता हूं सो सुनो । हम सब कोई अपने और सारी मण्डली के आतिथ्यकारी गायस के घर कुछ दिवस रहे थे । एक दिन शस्त्र धारण कर बाहर इस बात के लिये निकले कि देखें कोई यात्रियों का शत्रु मिले वा नहीं क्योंकि उस स्थान के निकट एक भयङ्कर शत्रु रहता है यह बात हम ने सुनी थी । वह कहां रहता है इस बात को गायस जो वहां का रहने वाला था हम लोगों से अधिक जानता था इस कारण उसे आगे कर उस साधु हिंसक के स्थान के निकट जा इधर उधर देखने लगे । अन्त में उस की गुफा का ठिकाना लगा तब हमारा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ । जब हम उस के पास गये तो देखते क्या हैं कि वह बल-द्वारा इसी क्षीणमन की पकड़ लाया है और प्राण हरण किया

चाहता है । परन्तु हमें देख अधिक अहेर की आशा कर के इस अभागे को गुफा के भीतर छोड़ आप बाहर निकल आया । तब हम ने उस से बड़ा युद्ध किया और वह भी अपनी शक्ति भर लड़ा । निदान वह मारा गया तब हम उस का सिर काट लाये और अन्य अन्य दुरात्मा लोगों के भय दिखाने के निमित्त उसे सड़क के ऊपर लटका दिया । इस बात में तुम्हें कुछ सन्देह हो तो सिंह के मुख से छुड़ाये गये भेड़ के बच्चे के तुल्य जो यह क्षीणमन है इसी से पूछो । तब क्षीणमन बोला, इस बात की सत्यता में मेरा क्लेश और मेरी शान्ति दोनों प्रमाण हैं अर्थात् जिस समय वह दानव मेरे शरीर से मांस नोच नोच खाने को उपस्थित था उस काल का मेरा क्लेश फिर जब मेरे उद्धार के निमित्त महात्मा को अपने साथियों के सहित शस्त्र धारण किये आते देखा उस समय की मेरी शान्ति साक्षी देती है । तब पवित्रमति बोला, साहस और निष्कलङ्क चरित्र ये दो बातें यात्रियों को बहुत आवश्यक हैं क्योंकि साहस न हो तो वे इस मार्ग के अन्त लों कभी न पहुंचेंगे और जो उन का चलन बुरा हो तो यात्री के नाम ही से घृणा करेंगे । फिर साधुप्रिय बोला, तुम को ऐसा उपदेश देना अवश्य नहीं होगा परन्तु इस पथ में अनेक मनुष्य ऐसे हैं जो अपने को इस पृथ्वी पर विदेशी और यात्री नहीं किन्तु यात्रा के धर्म्म से अज्ञान दिखाते हैं । तब मिथ्यात्यागी ने भी कहा, यह बहुत ठीक है । न ऐसे लोगों का वस्त्र न उन का साहस यात्रियों के समान है वे पैरों से सीधे नहीं पर टेढ़े चलते हैं । इन के जूते टूटे और वस्त्र फटे हैं । ऐसे लोग अपने प्रभु का अपमान करते हैं । तब अनुतापी कहने लगा कि इन सब बातों के लिये ऐसे लोगों को पश्चात्ताप करना उचित है क्योंकि इस रीति के दोष और कलङ्क जब लों यात्रियों में से

दूर न हों तब लों उन की इच्छा के अनुसार उन का स्वभाव और यात्रा धर्म्म शोभित नहीं होगा। इस रीति से बातें करते करते जब भोजन प्रस्तुत हुआ तब सभों ने भोजन किया पीछे सब अपने अपने स्थान में जा सो रहे।

फिर ये लोग इस नगर के निवासी मनासोन के घर में बहुत दिन तक रहे और उस ने कृपा नामी अपनी कन्या खीष्टियानी के पुत्र शमुएल और मर्था नामी कन्या यूसफ को व्याह दी यात्रियों ने नगर के लोगों की पहिले की सी शत्रुता न देखी इस कारण इतने दिवस वहां रहे। फिर वहां के अनेक धर्म्मिष्ठ लोगों से परिचय कर के वे अपनी शक्ति भर उन का उपकार करने लगे। विशेष कर के करुणा अपने पूर्व व्यवहार के अनुसार बड़े श्रम से वस्त्र सी सी कर अन्न सहित दरिद्रियों को बांटा करती थी इस कारण वे लोग उस का परोपकार मान उस को धन्य धन्य कहते थे। इस रीति से करुणा इस स्थान में भी खीष्टधर्म्म की भूषण स्वरूप हुई। फिर कृपा और फीबी और मर्था की भी प्रशंसा करना उचित है क्योंकि ये भी शीलवती होकर यथा योग्य लोगों का उपकार करती थीं। फिर इन चारों के लड़के भी होते गये। इस से आशा हुई कि संसार में खीष्टियान का नाम बना रहेगा।

खीष्टियानी के दो लड़कों का विवाह।

फिर इन यात्रियों के वहां रहने के समय एक बड़ा भयङ्कर जन्तु बन में से आया और नगर के अनेक मनुष्यों को मारने और लड़कों को ले भाग उन्हें अपने बच्चों का दूध पिलाने लगा। वह ऐसा भयङ्कर था कि नगर का कोई मनुष्य उस का सामना न कर सकता था वरन् उस के आने का शब्द सुनते ही सब भाग जाते थे। पृथिवी के अन्य जन्तुओं से इस का आकार

बहुत भिन्न था। उस का शरीर सर्प्प के समान था उस के सात मस्तक और दस सींग थे। वह बालकों को मारता था पर आश्चर्य यही था कि वह एक स्त्री के बश में था। (प्रकाश १७ : ३) यह जन्तु मनुष्यों को व्यवस्था देता था और जो लोग परित्राण की चिन्ता न कर केवल अपने प्राण की रक्षा चाहते थे सो उस की व्यवस्था अंगीकार करके उसके अधीन रहते थे। यह चरित्र देख कर महात्मा आदि यात्री और जो इन से मिलने को मनासोन के घर आते थे इन सभों ने मिल कर नगर के लोगों को उस जन्तु के मुख से बचाने के लिये परामर्श करके उस से संग्राम करने का आपस में प्रण बांधा। ऐसा विचार महात्मा चूर्णमन पवित्रमति मिथ्यात्यागी और अनुतापी अपने अपने शस्त्र धारण करके उस से युद्ध करने को चले। वह जन्तु इन को आते देख इन्हें तुच्छ जान कूद फांद करने लगा परन्तु ये लोग शस्त्र विद्या में बड़े निपुण थे इस लिये उसे ऐसा पीटा कि वह हार मानकर अपने स्थान को भाग गया। तब ये लोग भी मनासोन के घर फिर आये। यह जन्तु किसी किसी विशेष समय में अपनी गुफा से निकल नगर में आ बालकों को नष्ट करता था उसी उसी समय में पूर्वोक्त बीर लोग उसे अगोरते थे और बारम्बार मारते थे यहां लों कि बारम्बार मारने से वह घायल और लंगड़ा हो गया और आगे की भांति नगर के लोगों को नहीं सता सकता था। कोई कोई यह अनुमान करते हैं कि इन की चोटों से अन्त में उस जन्तु का मरण होगा। इस काम के करने से महात्मा और उस के साथियों की बड़ी कीर्त्ति हुई यहां लों कि जिन लोगों को उनके धर्म्म की रुचि नहीं थी वे लोग भी उन का आदर और सन्मान करने लगे और जब लों वे यहां रहे तब लों नगर के लोगों ने उन को बहुत दुःख न

दिया । तथापि कितने एक लोग जो उल्लू की भांति दिनान्ध और पशु की नाईं स्थूल बुद्धि थे वे इन के वीरत्व पर ध्यान न देकर इनका अपमान करते थे ।

तेरहवां अध्याय ।

फिर यात्री लोगों का जब चलने का समय हुआ तब वे अपनी अपनी गठरी मोटरी बांधने लगे और मित्रों का बुलवा कर उन से बात चीत की । फिर सभों ने मिल कर प्रार्थना द्वारा एक दूसरे को अपने महाराजा के हाथ समर्पण किया । और उन के मित्रों में से कितनों ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार दुर्बल वा बलवान स्त्री वा पुरुष को जो जो वस्तु मार्ग में प्रयोजनीय थीं सो सो लाकर उन्हे दीं । (प्रेरित. २८ : १०) फिर जब वे चले तो मित्र लोग नगर में से कितनी दूर तक इन्हें पहुंचाने चले और बिदा होने के समय एक ने दूसरे को अपने प्रभु को सौंपा फिर मित्र लोग अपने अपने स्थान को फिर आये और यात्रियों ने अपना मार्ग लिया । सब के आगे महात्मा चला पर स्त्रियां और बालक दुर्बलता के कारण धीरे धीरे चले । इस हेतु क्षीणमन और पंगु उन्हें अपने संगी समझ प्रसन्न हुए । नगर निवासियों से और मित्रों से बिदा होने के थोड़ी देर पीछे जहां विश्वासी मारा गया था वे उस स्थान पर पहुंचे । वहां थोड़ी देर ठहर कर जिस ने विश्वासी को धीरज के सहित हत्यारूपी क्रूश के सहने की शक्ति दी थी उन्होंने उस का धन्यवाद किया । और मृत्यु की पीड़ा में विश्वासी ने जो धीरता दिखाई थी उस से इस नगर में हमारा मङ्गल हुआ

समझ कर फिर फिर के धन्य माना। जब वे वहां से बढ़े तब खीष्टियान और विश्वासी की वार्त्ता और विश्वासी के मरने के पीछे आशावान के खीष्टियान से मिलने की वार्त्ता करते हुए बहुत दूर निकल गये। फिर वे सम्पत्ति नामक पहाड़ के निकट आकर उपस्थित हुए। इस स्थान में दीमा ने रूपे की खानि देखकर यात्रा छोड़ दी थी और कोई कोई कहते हैं कि यहां प्रपंची खानि के मुंह पर से भीतर गिरकर मर गया था। इन बातों का विचार करके सभों ने अपने अपने चित्त को लोभ से सावधान किया। फिर कुछ आगे बढ़ सम्पत्ति पर्वत के सन्मुख जो एक प्राचीन स्तम्भ है अर्थात् सदोम नगर और उस की दुर्गन्धी झील से थोड़ी दूर पर जो नोन का खम्भा खड़ा है वे उसके निकट पहुंचे। तब पूर्वोक्त दो पुरुष ज्ञानी और बुद्धिमान होकर भी जो लोभ से मोहित हो यात्रा के पथ से फिर गये थे इस बात से जैसा खीष्टियान ने अचम्भा किया था तैसे ये भी आश्चर्य्य करने लगे। फिर विवेचना कर जान गये कि लोभी मनुष्यों के नेत्र धन से मोहित होते हैं इस कारण पूर्वकाल के लोभियों ने जो दण्ड भोगा है उस से उन की चितावनी नहीं होती है।

सम्पत्ति नाम पर्वत के निकट।

फिर मैं ने देखा कि ये यात्री रमणीय नाम पर्वत के इस पार जो नदी है वहां तक पहुंचे। इस नदी के दोनों तीर पर सुन्दर सुन्दर पेड़ लगे हैं। उन वृक्षों के पत्ते खाने से उदर की पीड़ा दूर हो जाती है वहां का मैदान बारहों मास हरा रहता है उस में यात्री निर्भय शयन कर सकते हैं। (भजन २३ : २) उस नदी के तीर के मैदान में बहुत सी भेड़शाला बनी थीं और यात्रिन स्त्रियों के बालक जो भेड़ों के बच्चे सदृश हैं तिनके पालन के निमित्त एक घर बना था उस में एक पुरुष रहता था

जो इन बच्चों पर कृपा करने और उनको गोद में लेने और गर्भ-
वतियों को धीरे धीरे चलाने में निपुण था और इन के प्रतिपाल
के लिये ठहराया हुआ था । (इब्रि. ५ : २ । यशायाह ४० : ११)
इस कारण ख्रीष्टियानी ने अपनी चारों बहुओं से कहा कि तुम
अपने अपने बालक इस रक्षक को सौंप दो तो बहुत अच्छा होगा ।
इस जल के समीप जो यह घर है इस में भली भांति से उनका
पालन और रक्षा होगी और अन्त में कोई खो भी न जायगा ।
कदापि कोई भटक जाय वा चला जाय तो यह पुरुष उस को
खोज कर फेर लावेगा किसी को चोट लगे तो पट्टी बांध देगा
कोई रोगी हो तो चंगा करेगा । (यरमियाह २३ : ४ । हिजकेल
३४ : ११-१६) इस स्थान में उन को अन्न वस्त्र की घटी कभी न
होगी । चोर और डाकुओं से भी इन की रक्षा होगी क्योंकि इन
का जो रक्षक है सो प्राण रहते कभी इन में से
छोटे बालकों को एक को भी नष्ट न होने देगा । और यहां वे
पीछे छोड़ना । उत्तम शिक्षा पाकर सुमार्ग में चलाये जायेंगे ।
इस को थोड़ा लाभ न जानो । फिर तुम देखती
हो कि इस स्थान का जल कैसा मीठा है और मैदान कैसा रम-
णीय है यहां कैसे सुन्दर सुन्दर सुगन्धित पुष्प खिल रहे हैं
और कितने प्रकार के वृक्ष उत्तम उत्तम फलों से लदे हुए हैं ।
बालजिबूल की फुलवारी के वृक्षों की शाखा जो मार्ग के ऊपर
झुक रही थीं और मत्ती उन का फल खाय पीड़ित हुआ था
उस फल के समान ये फल नहीं हैं ये फल रोगी को निरोगी
और निरोगी को बलवान करनेवाले हैं । इस बात को सुनकर
सभों ने यही निश्चय कर माना कि अपने अपने लड़के इस
पुरुष को सौंप देना उचित है । इस स्थान में दुर्बल और माता
पिताहीन बालकों के पालने के लिये ख़र्च राजभण्डार से दिया

जाता है इस बात को सुनकर वे और भी प्रसन्न हुईं और लड़के सौंपकर आगे बढ़ीं।

फिर चलते चलते वे उस स्थान पर पहुंचे जहां ख्रीष्टियान और आशावान एक छोटा फाटक लांघ के बिपथ नाम मैदान में चले गये और आशाभंग दानव ने उन्हें पकड़ कर दुबिधा दुर्ग में बन्द कर दिया था। जब वे उस फाटक के पास पहुंचे तब वहां बैठ कर विचारने लगे कि हम को अब क्या करना उचित है। वे आपस में कहने लगे कि हम इतने मनुष्य हैं और हमारा अग्र-गामी महात्मा ऐसा बलवान और बीर है कि हम लोग उस दुष्ट से लड़ उस का गढ़ तोड़ वहां जो यात्री बन्द किये हुए हों उन को छुड़ा सकते हैं। सो आओ हम लोग पहिले यही काम करें तब अपनी यात्रा में आगे बढ़ें। तब वे आपस में विचार करने लगे। एक ने कहा, क्या बर्जित भूमि में जाना उचित जानते हो। दूसरे ने कहा, हमारा अभिप्राय जो उत्तम हो तो कुछ दोष नहीं है। अन्त में महात्मा ने कहा, यह पिछला वाक्य सब जगह यथार्थ ठहरेगा सो नहीं परन्तु यहां उसे मानना उचित है क्योंकि पाप को दमन करना और दुष्टता को जीतना और विश्वास रूपी उत्तम युद्ध करना इन बातों की मुझे आज्ञा है। इस आशाभंग को छोड़ मैं उत्तम युद्ध और किस से करूं। सो मैं उस के प्राण और गढ़ दोनों के नाश करने की चेष्टा करूंगा। मेरे साथ कौन कौन चलेगा। तब वृद्ध बाबा सरल ने कहा, मैं चलूंगा फिर मत्ती शमुएल याकूब और यूसफ जो ख्रीष्टियानी के चार पुत्र थे उन्हों ने भी वहां जाना स्वीकार किया क्योंकि वे सब युवा और बलवान थे। (१ योहन २ : १३, १४) इस बात के पीछे यह ठहरा कि जब तक हम फिर कर न आवें तब तक स्त्रियों को राजपथ में छोड़ इन की रक्षा के निमित्त क्षीणमन को

और बैसाखी टेकनेहारे पंगु को छोड़ जायें। यद्यपि उस आशाभंग दुष्ट का गढ़ बहुत निकट था तथापि राजमार्ग होने से एक छोटा बालक भी इन की रक्षा कर सकता था। (यशायाह ११ : ६)

फिर महात्मा और वृद्ध बाबा सरल और चारों युवा आशाभंग के ढूंढ़ने के लिये दुबिधा दुर्ग की ओर चले। फिर उस गढ़ के द्वार पर जा गढ़ के भीतर जाने के लिये अत्यन्त ऊंचे शब्द से द्वार खटखटाने लगे। तब वह दानव अपनी शङ्का नामी स्त्री के सहित द्वार पर आ पूछने लगा कौन है। आशाभंग ऐसे दानव के छेड़ने का किस को साहस हुआ है। यह सुन महात्मा ने उत्तर दिया मेरा नाम महात्मा है मैं स्वर्गीय राजधानी जाने वाले यात्रियों का पथदर्शक और महाराजा का सेवक हूं। इस कारण हमारे प्रवेश करने के लिये तू तुरन्त द्वार खोल और लड़ाई के लिये भी तयार हो क्योंकि तुम्हारा सिर काटने और इस गढ़ को तोड़ डालने के लिये हम आये हैं। इस बात के सुनते ही आशाभंग विचारने लगा कि मैं दानव हूं मनुष्य की क्या शक्ति है जो मेरा सामना करेगा। मैंने स्वर्गदूतों को भी पराजय किया है अब क्या यह महात्मा मुझे डरावेगा। यह विचार वह मस्तक पर लोहे का टोप अंग में अग्निमय झिलम और पैरों में लोहे के जूते पहिन एक भारी लोहबन्दा हाथ में ले गढ़ से बाहर निकला। तब इन छःओं मनुष्यों ने उसे आगे पीछे घेर लिया और तलवार चलाने लगे। तब शङ्का नामी उसकी स्त्री अपने स्वामी की सहायता करने आई परन्तु वृद्ध बाबा सरल ने उसे एक ही वार में मार गिराया। फिर प्राण रक्षा के लिये दोनों पक्ष के लोग घोर युद्ध करने लगे निदान आशाभंग दानव भूमि पर गिरा पर अपना प्राण त्यागना न चाहकर युद्ध

आशाभंग दानव से लड़ना।

करता रहा यहां लों कि जान पड़ता था कि मारे भी न मरेगा तौभी महात्मा ने अन्त में उसका प्राण ले ही लिया क्योंकि जब तक उसका सिर न काटा तब तक न रुका। फिर सब कोई

महात्मा आदि आशाभंग दानव को मारकर दुविधा दुर्ग तोड़ देते हैं।

दुविधा दुर्ग के तोड़ने को चले। आशाभंग की मृत्यु होने से अब इस काम का रोकनेवाला कोई न रहा तौभी तोड़ने में सात दिन लग गये। गढ़ के भीतर उन्होंने आशाहीन नामो एक मनुष्य

को और अतिभीरु नामी उसकी कन्या को जो यात्री थे भोजन बिना भूख के मारे अत्यन्त तनक्षीण पाकर उनका उद्धार किया। गढ़ के आंगन में इतने मृतक और कारागार में इतने मनुष्यों की खोपडियां और हाड़ों के ढेर देख पड़े कि ये सब आश्चर्य्य-युक्त हो शोक करने लगे।

यह महा वीरत्व का कर्म्म करके महात्मा अपने संगियों के सहित आशाहीन और उसकी कन्या अतिभीरु को यद्यपि वे आशाभंग के कठिन कारागार में पड़े थे तौभी सच्चे यात्री जान कर उनसे बोले, तुम डरो मत हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। फिर वे उस दानव के शरीर पर पत्थरों का ढेर लगा उसका सिर हाथ मे ले राजपथ में अपने संगियों के निकट आये और जो कार्य्य कर आये थे उसका चिन्ह उन्हें दिखाया। आशाभंग का सिर देखकर क्षीणमन और पंगु अत्यन्त प्रसन्न हुये। इनको आनन्दित देख खीष्टियानी और उसकी पतोह करुणा आदि जो वीणादि बाजा बजाने में बड़ी प्रवीण थीं आनन्द प्रकट करने के निमित्त वीणा बजाने लगीं। तब पंगु आशाहीन की कन्या अतिभीरु का हाथ पकड़ राजमार्ग मे नाचने लगा। यद्यपि नाचने में भी उसे अपनी वैसाखी टेकना पड़ा तथापि वह ताल के साथ पैर ऐसे उठाता था और अतिभीरु भी मारे आनन्द के ऐसी नाचती थी कि लोग देखकर आश्चर्य्य करने लगे। इस नाचने और बजाने से आशाहीन की तृप्ति न हुई क्योंकि वह भूख के मारे मर रहा था इस हेतु उसको भोजन करने की बड़ी लालसा थी। यह जानकर खीष्टियानी ने उसकी प्राणरक्षा के निमित्त अपनी शीशी में से कुछ द्राक्षारस दिया। फिर रोटी करके उसे खिलाई तब उस वृद्ध क जी में जी आया और उस के शरीर को बल हुआ।

इन सब बातों के पीछे मैंने स्वप्न में देखा कि आगे को दूसरा कोई पथिक आशाभंग की भूमि में न जाय खीष्टियान ने इसके निमित्त जो खम्भा खड़ा किया था उस खम्भे के साम्हने और राजमार्ग के निकट महात्मा ने एक लम्बे बांस पर आशा-भंग का सिर खड़ा किया और उसके नीचे एक पत्थर पर ये दोहे खोद दिये—

दोहा।

मस्तक आशाभंग को . टांग दयो यहि ठाम।
यात्रिन को भय लगत है . केवल सुनि जिहि नाम॥
निज गढ़ दुविधा दुर्ग मंह . निर्भय कियो निवास।
ताहि महात्मा बीर हनि . गढ़ हू कीन्हो नास॥
पुनि दारा शंका कुमति . सदा करत कुविचार।
ताहि कियो एक बार तें . बृद्ध सस्त्र संहार॥
यात्री इक बंध्यौ तहां नामहि आशाहीन।
तासु सुता अतिभीरु भी . मन निरास तन छीन॥
रिपुहि जीति इन दुहुन को . त्राण महात्मा कीन।
वा में संशय कोउ करे . देखे उर्द्ध प्रवीन॥
मृत्यु कियो सिर देखिके . पंगु सहित अति भीरु।
यहि वार्त्ता यात्री सकल . सुनि राखें मन धीरु॥

इस रीति से आशाभंग को मार उसका गढ़ तोड़ साहस पाकर यात्री आगे बढ़े। फिर जिस स्थान में खीष्टियान और आशावान अनेक प्रकार के सुख से आनन्दित हुए थे उन्हीं रमणीय पर्वत के निकट ये भी पहुंचे और मेषपालकों से इन की भेंट हुई। उन्होंने जैसे खीष्टियान का शिष्टाचार किया था उसी भांति इन सभों का भी किया। महात्मा से मेषपालकों का आगे

मेषपालकों से भेंट।

से परिचय था जब उन्होंने उसके संग बहुत यात्रियों को देखा तब उससे पूछा कि भाई जी तुम्हारे संग बहुत से मनुष्य हैं ये तुमको कहां मिले तब महात्मा ने उत्तर दिया । यथा—

चौपाई ।

यहां खीष्टियानी सुनु भाई । लै परिजन रमणिय गिरि आई ॥
चारों पुत्र बधू पुनि चारों । सकलहि यात्रिन धीर विचारों ॥
लोहचुम्ब कहि जिमि अनुसरहीं । यात्रापथ पग अविचल धरहीं ॥
परिहरि पाप कृपा की आसा । आए यहं लगि तब गिरि पासा ॥
वृद्ध सरल भ्राता पुनि देखो । यात्रिक तेहि कपट बिनु लेखो ॥
पंगु सुजन टेकत बैसाखे । चलहि सियोन गमन मन राखे ॥
निबल चीणमन पहुँच्यो आई । यात्रा छोड़ कतहु नहिं जाई ॥
आशाहीन विमोचित आवा । सहित सुता अतिभीरु सुभावा ॥
कहो बन्धु आतिथ्य हमारो । करिबे को मन भयो तुम्हारो ॥
टिक जायें हम वा बढ़ जावें । आज्ञा यथा तुम्हारी पावें ॥

यह सुन मेषपालकों ने कहा, तुम्हारे सब साथी सज्जन देख पड़ते हैं सो इस स्थान को तुम अपना घर समझ के आनन्द से टिको । यहां बलवान और निर्बल दोनों के योग्य सामग्री प्रस्तुत है क्योंकि छोटे से छोटे मनुष्य पर भी हमारे राजा की कृपा-दृष्टि है। इस कारण दुर्बलों को भी ग्रहण करने में हमें कुछ बाधा नहीं है। (मत्ती २५ : ४०) फिर मेषपालक यात्रियों को अपने गृह के द्वार पर ले जाकर कहने लगे, हे चीणमन, हे पंगु, हे आशाहीन, हे बहिन अतिभीरु तुम सब भीतर आओ। तब उन्होंने पथदर्शक से कहा, हमने इन दुर्बलों को नाम ले लेकर पुकारा क्योंकि इस रीति के मनुष्य बहुधा आने में शङ्का करते हैं परन्तु तुमको वा बलवान यात्रियों को नाम लेकर पुकारने का कुछ प्रयोजन नहीं है जो करना उचित है सो तुम भली भांति

जानते हो। तब महात्मा ने कहा, मैं इसी से देखता हूं कि ईश्वर की कृपा की ज्योति तुम्हारे मुंह पर झलकती है और तुम हमारे प्रभु के सच्चे मेषपालक हो क्योंकि तुमने इन दुर्बलों को तुच्छ न जाना वरन् इनके लिये घर के द्वार लों मार्ग में मानो फूल बिछाये हैं। जब दुर्बल लोग भीतर गये तब महात्मा आदि और सब लोग भी घर में गये। जब सब इकट्ठे बैठे तब मेषपालकों ने दुर्बलों से पूछा तुम्हारी किस वस्तु के खाने की इच्छा है। जैसे हठीलों को चिताना तैसे दुर्बलों का पोषण करना हम लोगों को दोनों कर्म्म करना उचित है। यह बात कह उन्होंने इनके लिये पचने योग्य और स्वादिक और पुष्ट करने वाली वस्तुओं का भोजन बनाया। वे भोजन करके अपने स्थान में जाकर सोये।

अद्भुत पदार्थों को दिखाना।

जो यात्री आते थे उनको मेषपालक वहां की अद्भुत वस्तु दिखाया करते थे इस हेतु दूसरे दिवस निर्म्मल आकाश देख कर इन्हें भी कोई कोई वस्तु दिखाने की इच्छा की। पर्वत बहुत ऊंचे थे इस लिये यात्री भोजन कर जब सुस्ता चुके तब मेषपालकों ने उन को बाहर ले जा पहिले जो जो वस्तु ख्रीष्टियान को दिखाई थीं सो सो दिखाई पीछे किसी किसी नये स्थान में भी ले गये। पहिले वे उन्हें आश्चर्य्य नाम गिरि पर ले गये वहां जाकर उन्होंने दूर से देखा कि एक मनुष्य अपने वाक्य द्वारा पर्वत को नचाता है। यह देख यात्रियों ने पूछा, यह कौन है और इसका अभिप्राय क्या है। मेषपालकों ने कहा, इस यात्रा स्वप्नोदय के प्रथम भाग में महानुग्रह नाम एक पुरुष का वर्णन है यह उसी का पुत्र है। मार्ग में पर्वत के समान जो जो बाधा करने वाली वस्तु हैं उनको विश्वास द्वारा समान वा चलाय-

मान करने की रीति यात्रियों को सिखाने के निमित्त यह इस स्थान में स्थापित है। महात्मा बोला, मैं इसे जानता हूं लाखों में कहीं ऐसा सज्जन मिलता है।

फिर मेषपालक यात्रियों को शुद्धता नाम पर्वत पर ले गये वहां जाकर इन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहिरे एक पुरुष है उस पर अविचार और दुर्भाव नाम दो मनुष्य कीचड़ फेंक रहे हैं पर आश्चर्य यही था कि वह कीचड़ उस पर से तुरन्त झड़ पड़ती थी और उसके वस्त्र में कीचड़ का चिन्ह भी नहीं रहता था वह शुद्ध का शुद्ध दिखाई देता था। यह देख यात्रियों ने पूछा, इसका आशय क्या है। मेषपालकों ने कहा, उस पुरुष का नाम धर्म्मिष्ठ है और जैसा उसका वस्त्र तैसा उसका चरित्र निर्म्मल रहता है। ये दो मनुष्य जो उस पर कीचड़ फेंकते हैं उसका आचरण देख कर जलते हैं पर तुम देखते हो कि वह कीचड़ उसके वस्त्र पर लगती भी नहीं। इसका तात्पर्य्य यही है कि शुद्ध मनुष्य पर अपवाद वा दोष लगाने से भी वह कलंकी नहीं होता। जो लोग शुद्ध पुरुषों पर कलंक लगाने की चेष्टा करते हैं उनकी चेष्टा निष्फल होती है क्योंकि शीघ्र ही परमेश्वर ज्योति की नाईं उनकी शुद्धता और मध्यान्ह के समान उनका धर्म्म प्रकाश करेगा।

शुद्धता पर्वत।

फिर वे यात्रियों को दानधर्म्म नाम पर्वत पर ले गये वहां उन्होंने देखा कि एक मनुष्य थान में से कपड़ा फाड़ फाड़ जो दरिद्री लोग चारों ओर खड़े हैं उनके लिये कपड़े बनाता है पर उस थान का कपड़ा ज्यों का त्यों बना रहता है घटता नहीं। यह देख यात्रियों ने पूछा, इसका क्या अर्थ है। मेषपालकों ने कहा, सुनो

दानधर्म पर्वत।

इससे यह सीखो कि जो मनुष्य अपने परिश्रम से धन उपार्ज्जन करके वह धन दरिद्रियों के निमित्त देता है उस का धन कभी घटता नहीं है। जलदाता जल पाता है। देखो जिस विधवा ने एलियाह नाम भविष्यद्वक्ता को रोटी दी उसके देने से उस विधवा के मटके में का पिसान घटा नहीं। (१ राजावलि १७ : ८-१६)

हबशी को गोरा बनाने की कोशिश।

फिर मेषपालक इनको एक और स्थान में ले गये वहां यह देखा कि मूर्ख और बुद्धिहीन नाम दो मनुष्य एक हबशी को गोरा करने के लिये उसका शरीर रगड़ रगड़ धो रहे हैं पर जितना रगड़ते हैं उतना ही वह और भी काला होता जाता है। यह देखकर यात्रियों ने पूछा, इसका अभिप्राय क्या है। मेषपालकों ने उत्तर दिया कि अधम लोगों की यही गति जानो। उनके सुपथ के निमित्त जितना परिश्रम किया जाय उतने ही वे अन्त में दूषित होते हैं। फरीशियों की यही गति हुई और अन्य अन्य कपटी लोगों की भी यही गति है।

नरकगामियों की गुफा।

फिर मत्ती की स्त्री करुणा ने अपनी सास खीष्टियानी से कहा, हे मां जी आज्ञा हो तो इस पर्वत की जिस गुफा में होकर नरकगामी लोगों के जाने का मार्ग है उसे मैं देखा चाहती हूं। तब खीष्टियानी ने यह बात मेषपालकों से कही। उन्होंने करुणा को ले जाकर उस कन्दरा का द्वार खोल के कहा थोड़ी देर कान लगा कर सुनो। वह कान लगा कर सुनने लगी तो क्या सुनती है कि एक मनुष्य कह रहा है कि मेरे पिता को धिक्कार उसने परित्राण के शुभ पथ में जाने की बाधा डाली। दूसरा बोला, हाय! हाय!! मेरी देह टुकड़े टुकड़े हो जाती तो अच्छा

होता पर शरीर की रक्षा की आशा से मैंने आत्मा का कल्याण खोया यह अच्छा न हुआ। तीसरा बोला, कि फिर कहीं मैं संसार में जा सकता तो इस स्थान में आना न हो इस के निमित्त जितना दुःख सहना होता उतना मैं सहता पर भरसक यहां न आता। ये बातें सुनते सुनते करुणा के पैरों के नीचे भूमि मानो भय के मारे डगमगाने और कांपने लगी। तब उसका मुंह सूख गया और वहां से कांपती कांपती आकर कहने लगी नर नारी कोई हो जो ईश्वर की कृपा से इस भयंकर स्थान से बचे वही धन्य है।

ये सब विषय दिखा मेषपालक यात्रियों को फिर गृह पर लिवा लाये और अपनी रीति के अनुसार उन का आतिथ्य करने लगे। उस समय करुणा गर्भवती थी और उस स्थान की किसी वस्तु पर उस का मन चला पर लज्जा के मारे किसी से कहा नहीं। उस की सास ने उस की विकलता देख उस से पूछा, तुम को क्या हुआ है। तब उस ने कहा, भोजनशाला में एक आरसी टंगी है उस पर मेरा चित्त लगा है कदाचित वह मुझे न मिले तो मैं जानती हूं मेरा गर्भश्राव हो जायगा। तब खीष्टियानी ने कहा, अच्छा मैं यह बात मेषपालकों से कहूंगी निश्चय है कि वे तुम को वह वस्तु देंगे। बहू ने कहा मेरा चित्त जो इस वस्तु पर ललचाया यह बात वे पुरुष जानेंगे तो मुझे बड़ी लाज आवेगी। सास ने कहा, नहीं री ऐसी वस्तु की इच्छा करना कुछ लाज नहीं है किन्तु प्रशंसा योग्य है। तब करुणा बोली, तो पूछो मां मेषपालक इस को बेचगे। यह दर्पण सहस्रों दर्पणों से उत्तम था क्योंकि एक ओर देखने से तो देखनेहारे को अपना प्रतिबिम्ब दृष्टि पड़ता था और दूसरी ओर देखने से यात्रियो के राजा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता था। और एक

आश्चर्य की वार्त्ता मैंने इस विषय के जानने वालों के मुख से सुनी है कि इस दर्पण में महाराजा के सिर का कंटक मुकुट और उस के हाथ और पैर और कांख में घावों के चिन्ह भी दृष्टि आते हैं। अधिक कया कहूं। इस में ऐसा गुण है कि उसका देखने वाला चाहे मृत्यु की दशा में, चाहे जीवन की दशा में, चाहे पृथिवी पर, चाहे स्वर्ग में चाहे दरिद्रता में, चाहे ऐश्वर्य में चाहे दुःख भोग में, चाहे राज्य सुख में, जिस दशा में अपने महाराजा का दर्शन किया चाहे उसी दशा में कर सकता है। (याकूब १:२३ और १ करिन्थ. १३:१२ और २ करिन्थि ३: १८) तब खीष्टियानी ने ज्ञानी बहुदृष्ट सचेतन और सुधा इन चारों मेषपालकों को एकान्त में ले जाकर कहा, मेरी एक गर्भवती पतोह आप के घर की किसी वस्तु की चाहना करती है और कहती है जो वह वस्तु न मिलेगी तो मेरा गर्भश्राव होगा। यह सुन बहुदृष्ट ने कहा, अच्छा उस को बुलाओ। जो हम दे सकें तो अवश्य उसे देंगे। तब उन्हों ने उस को पुकारा और जब वह आई तब उस से पूछा, हे करुणा, तुम क्या चाहती हो। उस ने लज्जायुक्त हो कहा कि भोजनशाला में जो बड़ा दर्पण टंगा है उसे मांगती हूं। यह सुनते ही सूधा तुरन्त जाकर वह दर्पण ले आया और प्रसन्नता के सहित चारों ने उसे दिया। तब करुणा ने प्रणाम कर धन्य मान कहा कि इस से मैं जानती हूं कि मैं तुम्हारी अनुग्रहपात्र हुई।

मेषपालकों का करुणा को दर्पण देना।

फिर मेषपालकों ने और सब स्त्रियों को भी उन को मुंह मांगी वस्तुएं दीं। फिर उन के स्वामियों ने आशाभंग दानव और उस के गढ़ आदि के नाश करने में जो महात्मा की सहायता की थी इस के निमित्त उन की भी बहुत सी प्रशंसा की। फिर

मेषपालकों ने खीष्टियानी और उस की चारों बहुओं के गले में हार कान में कर्णफूल और माथे में मंगटीका पहिरा कर उन को शोभायमान किया।

जब यात्री लोग यात्रा करने को उपस्थित हुये तब मेषपालकों ने उन्हें बिदा किया पर खीष्टियान और उस के साथी को जो जो चेतना दी थी सो इन्हें न दी क्योंकि महात्मा जो इन का पथदर्शक था मार्ग के सब खटकों की जगह जानता था और खटके के समय ही पर इन को परामर्श दे सकता था। इस कारण खीष्टियान और उस के साथी से ये लोग अधिक भाग्यवान थे क्योंकि मेषपालकों ने जो बातें खीष्टियान और आशावान से कही थीं समय पर वे उन बातों को भूल गये थे। यहां से बिदा हो कर यात्री इस भांति गाते हुए चले। यथा—

दोहा।

कितेक अतिथिशाला बनी . शुभ यात्रिन के हेतु।
अति सुन्दर सुखदा सदा . पथ पथ कत सुख देतु॥
जहं अजानहू जाय के . सुख पावहिं सब हाल।
आदर भाव दिखाय के . ग्रहण करहिं तत्काल॥
तातें अति सुखसार को . भोग करहिं सब कोय।
स्वर्गहि आगे राखिके . गमन करें जन कोय॥
जिन वस्तुन तें होत है . यात्री की पहिचान।
तिन ही वस्तुन को सबै . करत कृपा करि दान॥

चौदहवां अध्याय।

मोह भूमि के पार होना।

पूर्वोक्त रीति से मेषपालकों से बिदा हो कर यात्री जहां धर्म्म त्याग नगर के निवासी मुंहफेरू नाम पुरुष से खीष्टियान की भेंट हुई थी वहां जा पहुंचे तब पथदर्शक उस की वार्त्ता इस रीति से कहने लगा कि देखो इसी स्थान में खीष्टियान ने मुंहफेरू को देखा जिस की पीठ पर राजद्रोह का दोषपत्र साटा हुआ था। मैं उस मनुष्य की और भी कुछ वार्त्ता कहता हूं सो सुनो। वह जब से सत्पथ से फिर कर कुपथ में चलने लगा तब से किसी का भी परामर्श सुन के न ठहरा। जब वह क्रूश के और क़बर के निकट पहुंचा तब किसी पुरुष ने उसे समझाया कि क्रूस को तो देख के चैतन्य हो। पर उस ने दांत पीस पीस पृथिवी पर लात मार मार कहा मैं तुम्हारी बात न मानूंगा मैं अपने देश को फिर जाऊंगा। फिर पथद्वार पर पहुंचने के पहिले मङ्गलवादी ने उसे देख उस का हाथ पकड़ कर उसे लौटाने की चेष्टा की पर यह मुंहफेरू उसे झिड़क अनेक निन्दा कर के अपना हाथ छुड़ा भीत लांघ कर भाग गया।

मुंहफेरू की कथा।

फिर यात्री लोग जाते जाते वहां पहुंचे जहां बटमारों ने अल्पविश्वासी नाम यात्री को आ घेरा था। उस स्थान में देखते क्या हैं कि एक पुरुष लहू लुहान हाथ में खड्ग लिये खड़ा है। उस से महात्मा ने पूछा, तुम कौन हो। उसने कहा, मेरा नाम सत्यवीर है। मैं यात्री हूं और स्वर्गपुर जाता हूं। थोड़ी बेर हुई कि यहां पथ में तीन मनुष्यों ने आकर मुझे घेरा और यही

तीन बात मुझ से कहीं कि या तो तू हमारे दल में मिल या तू जहां से आया है वहां लौट जा अथवा इसी स्थान में प्राण दे । (नीति. १ : ११-१४) उन की पहिली बात का मैं ने यह उत्तर दिया कि मैं बहुत दिन से सत्पथ गामी हूं अब इतने दिन पीछे चोरों का साथी होऊं यह असम्भव है । उन्हों ने कहा, अच्छा तो दूसरी बात का तू क्या उत्तर देता है । मैं ने कहा, सुनो जहां से मैं आया हूं वहां जो मुझे दुःख न होता तो मैं उस स्थान को किस लिये छोड़ आता । उस में जब मैं ने अपनी हानि देखी और निश्चय जाना कि वह मेरे रहने के योग्य नहीं तब तो मैं इस पथ में आया । तब वे फिर बोले कि हमारी तीसरी बात पर तू क्या कहता है । मैं ने कहा, अपने ऐसे प्यारे बहुमूल्य प्राण को मैं क्या सहज ही त्यागूंगा । और तुम जो मुझ से ऐसी बातें स्वीकार कराते हो ऐसा स्वीकार कराने का अधिकार तुम्हें कहां से मिला । इस कारण सावधान रहना मेरे शरीर पर हाथ न चलाना चलाओगे तो तुम्हारा भला न होगा । परन्तु ये तीन मनुष्य अर्थात् अवाध्य अविवेकी और लबार मेरी बात न मान खड्ग निकाल मुझ पर लपके । तब मैं ने भी अपना खड्ग खींच अकेले इन तीनों से पहर भर युद्ध किया । मेरे शरीर में उन के वीरत्व के चिन्ह देखो और मेरे हाथ के चिन्ह वे लोग भी लेते गये हैं । वे अभी भागे हैं । जान पड़ता है कि तुम्हारी आहट सुनकर सटके ।

यह वृत्तान्त सुन महात्मा ने कहा, एक मनुष्य तीन से युद्ध करे यह समानता नहीं । सत्यवीर ने कहा, तुम सत्य कहते हो पर जिसके पक्ष में सत्यता है उस को थोड़े शत्रु होयें वा बहुत होयें इस बात की क्या चिन्ता । लिखा है यदि सेना मेरे विपरीत छावनी करे तौभी मेरे मन को भय न व्यापेगा यद्यपि मेरे विरुद्ध

युद्ध हो तथापि मैं लड़ने में साहस करूंगा। (भजन २७ : ३) और एक प्राचीन इतिहास में मैं ने पढ़ा है कि एक मनुष्य ने अकेले एक सेना से युद्ध किया। और फिर शमशोन ने गधे के जबड़े के हाड़ से कितने सैकड़ों को मार डाला। पथदर्शक बोला, तुम ने उस समय सहायता के लिये किसी को पुकारा भी था। सत्यवीर ने कहा, हां, मैं ने अपने राजा से प्रार्थना की।

सत्यवीर की वीरता।

वह तो प्रार्थना सुन अवश्य गुप्त होकर मेरी रक्षा करेगा इसी विश्वास द्वारा मेरा उपकार हुआ तब तो मैं ने जय पाया। फिर महात्मा ने उस से कहा, तुम ने यथोचित वीरत्व दिखाया है। भला कृपा करके अपना खड्ग तो मुझे दिखाओ। जब उस ने दिखाया तब महात्मा ने उसे हाथ में ले कुछ बेर लों देख कहा, हां, यह तो निश्चय यरूशलीमी लोहे से बना है। सत्यवीर ने कहा, हां, उसी पानी का है। जिसके बाहु में बल है और युद्ध में निपुण है उसके पास ऐसा खड्ग रहे तो वह भूतादि को भी जीत सकता है। पैतरा केवल जानना चाहिये इस के टूटने का भय नहीं और न इस की धार कभी मुड़ने की। इस से मांस हड्डी आत्मा प्राण सब के सब कट सकते हैं। (इब्रि. ४ : १२) महात्मा ने पूछा, तुम इतनी बेर युद्ध करने से थक नहीं गये थे। सत्यवीर ने कहा, युद्ध करते करते खड्ग मेरे हाथ में चिपक गया। मेरा हाथ और खड्ग दोनों ऐसे मिल गये जानो हाथ ही में से खड्ग निकला हो। फिर जब अंगुलियों से लोहू बहने लगा तब मैं अधिक साहस से युद्ध करने लगा। महात्मा ने कहा, तुम ने अच्छा कियां है। तुम ने पाप से अपने लोहू बहाने तक युद्ध किया। अब आओ तुम हमारे साथी हो और हमारे साथ साथ चलो क्योंकि हम भी तुम्हारी नाईं यात्री हैं। इस भांति उन्होंने इस को भी अपने

संग ले उस के सब घाव धोये और आधार के निमित्त कुछ खाने को भी दिया तब सब मिल कर आगे बढ़े ।

यह सत्यवीर महात्मा के समान बलवान पुरुष था और दुर्बल रोगी मनुष्यों के उपकार करने में बड़ा निपुण था इस कारण महात्मा ऐसा योग्य संगी के पाने से बड़ा प्रसन्न हुआ और मार्ग में अनेक प्रकार की वार्त्ता उस से करता हुआ चला। पहिले उस से पूछा, तुम किस देश के रहनेवाले हो। सत्यवीर ने कहा, मैं तिमिर भूमि देश का हूं। वहां ही मैं जन्मा और मेरे माता पिता अब तक वहीं हैं। यह सुन महात्मा ने पूछा, यह तिमिर भूमि देश क्या नाशनगर के निकट नहीं है। सत्यवीर बोला, हां, है तो। और मैं किस रीति से यात्री हुआ सो कहता हूं। सत्यवादी नाम एक मनुष्य हमारे देश में आ ख्रीष्टियान नामक यात्री जो नाशनगर से यात्रा कर सिधारा था उस का सब समाचार कहने लगा कि किस रीति से उस ने अपनी स्त्री और पुत्रादि को त्याग के यात्रा की। फिर वह मार्ग में बाधा करने वाला जो एक नाग था तिस को मार कर जिस देश को जाया चाहता था उस देश को पहुंचा और मार्ग में अपने महाराजा के सब बासस्थानों में अतिथि होता हुआ स्वर्गपुर के द्वार पर बड़े आदर से ग्रहण किया गया वरन् तेजस्वी पुरुषों का एक दल आकर तुरही बजा बजा कर उसे स्वर्ग में ले गया और स्वर्गवासी लोगों ने उस के आने से प्रसन्न हो स्वर्ग के समस्त घण्टे बजवा दिये और फिर उसे सुनहरे वस्त्र पहिराये गये ऐसी ऐसी बहुत सी बातें सत्यवादी ने कहीं। विशेष क्या कहूं इस के मुख से ख्रीष्टियान की ऐसी मनभावनी वार्त्ता सुनने से मेरा चित्त यात्रा की ओर ऐसा आकर्षित हुआ कि मेरे माता पिता भी मुझे न रोक सकें। सो मैं सभों को छोड़ कर स्वर्गपथ में

यहां तक आ पहुंचा हूं। महात्मा ने कहा, तुम सकरे फाटक से हो करके आये हो न। सत्यवीर ने कहा, हां, उससे होकर आया हूं क्योंकि सत्यवादी ने हम से कह दिया था कि उस फाटक से प्रवेश किये बिना कोई यात्री हो नहीं सकता। उस समय महात्मा ने खीष्टियानी की ओर देखकर कहा, देखो तुम्हारे पति की यात्रा की और उस यात्रा के फल की कीर्त्ति सर्वत्र छा रही है। सत्यवीर ने इस बात के सुनते ही आश्चर्य्ययुक्त होकर कहा, क्या खीष्टियान इसी स्त्री का पति था। महात्मा ने कहा, हां, इसी स्त्री का था और ये चारों उस के पुत्र हैं। सत्यवीर ने कहा, ये भी क्या यात्री हुए हैं। पथदर्शक ने कहा, हां, ये भी अपने पिता की चाल पर चलते हैं। सत्यवीर ने कहा, यह बात सुनने से मुझे बड़ा आनन्द हुआ है। जो पहिले उसके जाने की इच्छा नहीं करते थे उन को जब वह धर्म्मी पुरुष स्वर्गद्वार में आते देखेगा तब उस को कैसा आनन्द होगा। महात्मा बोला, हां, इन को देख कर वह अवश्य प्रसन्न होगा। उसने अपने स्वर्ग प्राप्त होने के विषय में जैसा आनन्द पाया इन के स्वर्ग प्राप्त होनें से उस को वैसा ही आनन्द होगा। सत्यवीर ने कहा, तुम्हारी यह बात सुन कर मैं कुछ पूछा चाहता हूं। हम जब स्वर्गपुर पहुंचेंगे तब एक दूसरे को पहिचानेंगे वा नहीं तुम क्या समझते हो। कोई कोई सन्देह करते हैं कि नहीं पहिचानेंगे। महात्मा ने उत्तर दिया कि जो लोग इस विषय में सन्देह करते हैं वे अपने ही को स्वर्ग में पहिचानेंगे वा नहीं और अपने ही को परमसुख के अधिकारी देख कर आनन्दित होंगे वा नहीं। जो उन की ऐसी आशा है तो अन्य मनुष्यों को नहीं पहिचानेंगे और उनका सुख देख कर आनन्दित न होंगे ऐसा क्यों समझते हैं। और

सत्यवीर इस बात से प्रसन्न होता है।

भी मैं कहता हूं कि कुटुम्बी लोग हमारे मानो देह के अंग हैं। स्वर्ग में कुटुम्बी लोगों का यह नाता तो नहीं रहेगा यह सत्य है तौ भी इस लोक में जो हमारे निज लोग हैं स्वर्ग में उनकी भेंट न होने से भी यदि सुख भोग होगा तो उन से भेंट हो जाने से और भी अधिक सुख का होना क्या कुछ असम्भव है। यह सुन सत्यवीर ने कहा, भला इस विषय में मैंने तुम्हारा मत समझा। पर हां, मेरे यात्री होने के विषय में तुम और कुछ पूछा चाहते हो। महात्मा ने कहा, हां, यही पूछता हूं कि तुम्हारे यात्री होने से तुम्हारे माता पिता प्रसन्न थे। सत्यवीर ने कहा, नहीं उन्हों ने मुझे घर में रखने के लिये अपने जानते भर बहुत से उपाय किये। महात्मा ने पूछा, वे यात्रा करने में कौन सा दोष बताते थे। सत्यवीर बोला, वे कहते थे यात्रा करना आलसी का कर्म्म है। तुम तो केवल आलस्य के कारण यात्रा किया चाहते हो। महात्मा ने पूछा, उन्हों ने और क्या कहा। सत्यवीर ने उत्तर दिया, वे यह भी कहने लगे कि यात्रा का मार्ग बड़ा भयानक है। ऐसे संकट और खटके से भरा संसार भर में मार्ग नहीं है। महात्मा ने कहा, इस मार्ग में कौन कौन संकट हैं सो उन्होंने कुछ बतलाया। सत्यवीर ने कहा, उन्हों ने संकट की अनेक कथायें कहीं। महात्मा ने कहा, भला किसी किसी का वर्णन करो। तब सत्यवीर कहने लगा, उन्हों ने कहा उस पथ में एक तो निराश नाम महापङ्क है उस में खीष्टियान जो फंस गया तो मरते मरते बचा और जो लोग सकरे फाटक में जाने के निमित्त द्वार पर खटखटाते हैं उन को बाण मारने के लिये बालजिबूल के गढ़ पर धनुषधारी लोग बैठे रहते हैं। फिर देखो बन और अन्धकारमय पर्वत और दुर्गम नाम महा पर्वत और सिंह और हत्यारा गदावीर साधु हिंसक आदि अनेक भयङ्कर दानव इस पथ में दुःख के

देनेहारे हैं। फिर बोले कि नम्रता की तराई में एक दुष्ट भूत सर्वदा रहता है तिस ने खीष्टियान का प्राण ही प्राय: हरण किया था। और फिर तुम को मृत्युछाया की तराई हो कर जाना पड़ेगा उस में बड़े बड़े भूत हैं और वहां की ज्योति ही अन्धकार के तुल्य है और वहां खाई पाश जाल और गढ़े बहुत से हैं।

सत्यवीर की कथा।

और भी आशाभङ्ग दानव के दुबिधादुर्ग नाम गढ़ में जो यात्री मारे गये थे तिन का वृत्तान्त कहा! फिर बोले, तुम को संकट युक्त मोह भूमि में हो कर जाना पड़ेगा और सब के अन्त में वह नदी दृष्टि पड़ेगी जिस में कोई पुल नहीं है उस के पार जाने बिना स्वर्ग में पहुंच नहीं सकोगे। महात्मा ने फिर पूछा, इन बातों से अधिक उन्हों ने और भी कुछ कहा। सत्यवीर बोला, हां, उन्हों ने कहा कि उस मार्ग में बहकाने वाले बहुत है जो सज्जन पुरुषों को मार्ग से भुलाने के लिये घात में लगे रहते हैं। महात्मा ने कहा, उन्हों ने इन बातों का क्या क्या प्रमाण दिया! सत्यवीर ने कहा, वे कहते थे कि उस मार्ग में लोकबुद्धी नाम एक बड़ा ठग नित्य लोगों को छलता है और व्यवहारगामी और कपटी नाम दो छली वहां सर्वदा आते जाते हैं और प्रपञ्ची वा बकवादी वा दीमा अवश्य तुम को भुलावेगा और नहीं तो फुसलाऊ निश्चय कर के तुम को अपने जाल में फंसावेगा। इन सभों से कदाचित् बचे रहो तो क्या जाने तुम उस निर्बुद्धि अज्ञान की भांति स्वर्ग-द्वार लों जाकर भी वहां से निकाले जाओगे और पर्वत की अलङ्ग में की गुफा में होकर तुम को नरक जाना पड़ेगा। महात्मा ने कहा, इतनी आपदाओं की चर्चा सुन कर कोई कायर हो जाय तो अचम्भा नहीं। इस के पीछे फिर तो कुछ न कहा। सत्यवीर बोला, हां, कहा। उन्होंने यह भी कहा कि बहुत से लोग स्वर्गीय

ऐश्वर्य्य के मिलने की चर्चा अनेक बार अनेक लोगों से सुन कर उस ऐश्वर्य्य के लालच से उस पथ में दूर तक चले गये जब उन्हें कुछ न मिला तब वे अपने देश को फिर आये और अपनी अज्ञानता से लज्जित होकर स्वदेशियों के उपहास के योग्य हुए। इस के प्रमाण में उन्हों ने कई एक के नाम भी लिये जैसे हठी और दुचित्ता, संशयी और भयभीत, मुंहफेरू और वृद्ध नास्तिक आदि। फिर बोले, ये सब उस सुख की आशा से बहुत दूर तक गये पर एक तृणमात्र का भी उन्हें लाभ न हुआ। महात्मा ने फिर पूछा, तुम्हें डराने के लिये उन्हों ने और भी कुछ कहा। सत्यवीर ने कहा, हां वे यह भी बोले कि भययुक्त नाम एक यात्री उस पथ में ऐसा उदास रहता था कि पलमात्र भी उसका चित्त कभी आनन्दित न हुआ और आशाहीन नाम यात्री इस यात्रा में भूख के मारे मरते मरते बचा। उन्हों ने यह बात भी कही थी सो मुझे अभी सुरत पड़ी है कि खीष्टियान भी जिस का समाचार सर्वत्र फैल गया है स्वर्गीय मुकुट के निमित्त अपने प्राणान्त लों चेष्टा कर के भी अन्त में काल नदी में डूब के मर गया नदी के उस पार डग भर भी आगे न बढ़ा परन्तु यह बात उस के भाइयों ने छिपा रक्खी थी। इतनी बात सुन महात्मा ने पूछा, इन सब बातों से तुम्हारा चित्त डिग नहीं गया। सत्यवीर ने कहा, नहीं मैंने उन सब बातों को तुच्छ समझा। महात्मा ने कहा, सो कैसा। सत्यवीर बोला, उस सत्यवादी की कथा पर मेरा अटल विश्वास हो गया था इसी से मैं ने सब बाधाओं को तुच्छ समझा। महात्मा ने कहा, तो तुम अपने बिश्वास ही के द्वारा जयवन्त हुये। सत्यवीर ने कहा, तुम सत्य कहते हो। विश्वास ही से मैं घर छोड़ इस पथ का पथिक हो सब विरोधियों से लड़ विश्वास के द्वारा जीत कर यहां तक आ पहुंचा हूं।

सत्यवीर के वीरत्व का बखान ।

दोहा ।

देखन चह जो वीरता . आवे सो यह ठाम ।
सूर एक यहि ठाम है . अभय अटल अनुपाम ॥
भटकावन तें ना भटकि . धीरज धर मतिधीर ।
चित नित ठान्यो होन को . यात्री अति गम्भीर ॥
यात्री को भय देत जो . कहि कहि मिथ्या बात ।
आपु भयातुर सो भयो . यात्रिकबल बढ़ि जात ॥
सिंह वीर कुत्सित नरिन . नाहीं देखि डेरात ।
करि करि युद्ध उत्साह सो . यात्रापथ चलि जात ॥
भूत कष्ट अरु असुर से . भय नहिं कम्पित गात ।
प्रभु पर करि निश्चय सदा . दुःख न पावहि तात ॥
चिन्ता सब उड़ि जात है . सुनहि न कछु दुरबात ।
प्रेमकष्ट निशि दिन सहहि . यात्री यह सुख्यात ॥

इतनी बेर में वे मोहभूमि लों आ पहुंचे । वहां के वायु में यह गुण था कि उसके लगने से मनुष्य को निद्रा आ जाती थी । उस भूमि में सर्वत्र कांटे के वृक्ष थे केवल जहां तहां मनमोहन कुञ्ज लगाये गये थे उन में बैठने से वा सो जाने से मनुष्य का फिर उठना वा जागना कठिन था । इसी बन के बीच में होकर इनको जाना पड़ा । महात्मा पथदर्शक था इस लिये वह आगे आगे चला और पीछे से कोई भूत वा नाग वा बटमार यात्रियों को आकर न सतावे इस हेतु सब के पीछे सत्यवीर रक्षा करता चला आता था । और उस स्थान को शंकायुक्त जान सब कोई अपना अपना खड्ग खींचकर चले और गमन करते करते एक दूसरे को ढाढ़स बंधाते थे । विशेष कर के महात्मा के आज्ञानुसार क्षीण

मोहभूमि ।

मन उसके पास पास चलता था और आशाहीन पर सत्यवीर की विशेष दृष्टि थी। वे इस रीति से थोड़ी सी दूर चले कि एकाएकी कुहिरा और अन्धकार उन पर ऐसा छा गया कि कुछ देर तक एक दूसरे को न देख सका। तब वे चलते चलते एक दूसरे का नाम ले ले पुकारते गये क्योंकि यहां बिन देखे चलना होता था। यह स्थान बलवानों के लिये भी कठिन था फिर जिन स्त्रियों और बालकों के चरण और अन्तःकरण दोनों निर्बल थे उनकी कौन कहे। तौभी आगे पीछे चलनेहारे दोनों रक्षकों के ढाढ़स देने से सब ज्यों त्यों करके चले जाते थे पर कीचड़ से मार्ग बहुत फिसलहा हो गया था इस कारण चलते चलते यात्री बहुत थक गये। फिर दुर्बलों को कुछ खाने पीने की वस्तु मिले ऐसी अतिथिशाला इस स्थान में नहीं थी। सो चलते चलते कोई कराहता था कोई हांपता था कोई ठण्ढी सांस भरता था कोई कांटों के वृक्षों से ठोकर खाय गिरता था कोई कीचड़ में फंस जाता था और बालकों में से किसी का जूता पंक में रह जाता था फिर कोई चिल्ला कर कहता था कि मैं गिरा कोई पुकारता था कि तुम कहां हो कोई कहता था कि मैं झाड़ी में फंस गया हूं छूट नहीं सकता हूं।

ऐसी ऐसी दुर्दशा भोगते हुए जब वे कुछ दूर गये तब एक कुञ्ज देखा जिस में यात्री लोग बड़े सुख से विश्राम पा सकते थे क्योंकि वह बहुत सुन्दर बना था और लताओं से छाया हुआ था और थके हुए मनुष्यों के लिये खाटें और कोमल सेजें बिछी थीं। कठिन मार्ग से थके हुए यात्रियों का मन ऐसे सुख की सामग्री देख के क्यों न ललचावे परन्तु इन में से किसी ने वहां विश्राम करने को इच्छा न की क्योंकि पथदर्शक उन्हें चेत दिलाने के लिये जो जो उपदेश करता था उस पर वे बड़े यत्न

से चित्त लगाते थे। जहां अधिक कष्ट का स्थान देख पड़ता था वहां पथदर्शक उन्हें ऐसी अच्छी रीति से विस्तार के सहित समझाता था कि संकट के समय विशेष साहस करके एक दूसरे को इन्द्रियदमन करने में ढाढ़स देता था। उस कुञ्ज का नाम आलसियों का मित्र था। थके यात्री लोग यहां विश्राम कर नाश होवें इसी हेतु से बैरी ने यह कुञ्ज लगाया था।

निर्जन भूमि।

फिर मैंने स्वप्न में देखा कि ये लोग इस निर्जन भूमि में गमन करते करते ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां मनुष्य बहुत चौकस न रहे तो मार्ग भूल जाय। दिन में पथदर्शक पथ को सहज ही पहिचान लेता पर उस समय अन्धकार होने से उसे भी सन्देह हुआ। पर उसके पास चकमक सदा रहती थी उस से आग झाड़ कर उसने दीया बार और अपने पास स्वर्गपुर जाने की सब सड़कों का जो चित्र था उसे निकाल के देखा तो उसे ठीक मार्ग जान पड़ा कि उस स्थान में उन्हें दहिने मुड़ना अवश्य था। जो यह अपना चित्र न देखता तो जान पड़ता है कि वे सब के सब पङ्क में नष्ट हो जाते क्योंकि वहां से थोड़े ही आगे बढ़कर जहां बांयां पथ अति स्वच्छ देख पड़ता था वहां एक अथाह दलदल थी जो शत्रुओं ने इसी लिये खोदी थी कि यात्री उस में फंस कर नाश हो जायें। मैंने ये बातें देख अपने मन में सोचा कि जो मनुष्य यात्री होकर गमन किया चाहे उस को अपने पास पथ का चित्र रखना बहुत अवश्य है कि जहां स्वर्गीय मार्ग में सन्देह हो वहां उसे देख के सन्देह मिटा ले।

फिर वे इस मोहभूमि में जाते जाते जहां दूसरा एक कुञ्ज राजपथ के निकट ही लगाया गया था वहां पहुंचे। वहां अचिन्त और दुःसाहसी नाम दो मनुष्य सोते थे। ये लोग यात्रा करते करते

यहां तक आये थे पर इस कुञ्ज में विश्राम के निमित्त बैठकर सो गये थे। यात्री इन को देखते ही खड़े हुए और उन की दुर्दशा विचार शोक से हाय हाय करने लगे। फिर इनको छोड़ कर चला जाना अथवा इन्हें जगाने का यत्न करना उचित क्या है परस्पर इस का बिचार करके यह बात ठहराई कि इन के पास जाकर जो हम इन्हें जगा सकें तो जगावें पर सावधान रहें ऐसा न हो कि यहां के सुख की सामग्री देख कोई हम में से भी मोहित हो वहां बैठ जाय। तब पथदर्शक कुञ्ज के भीतर जा उन दोनों को चीन्ह कर उनका नाम पुकारने लगा पर उत्तर में कोई शब्द नहीं सुनाई दिया। जब पथदर्शक ने उन के जगाने के लिये उन को धक्का दिया तब उन में से एक ने कहा, वेतन पाऊं तो तुम्हारा ऋण भर दूंगा। यह सुन महात्मा ने शोक करके अपना सिर हिलाया। दूसरा बोला, जब तक खड्ग धरने का बल है तब तक युद्ध करूंगा। यह सुन एक बालक हंसने लगा। तब खीष्टियानी ने पूछा, इसका क्या कारण है। महात्मा बोला, ये निद्रा में बकते हैं। तुम उन्हें मारो वा धक्का दो जो चाहो सो करो ये इसी रीति का उत्तर देंगे। इन्हीं की भांति एक प्राचीन मनुष्य ने जो जहाज़ के मस्तूल पर शयन करता था आंधी के समय कहा, मैं कब जागूंगा मैं फिर उसे ढूंढूंगा। (नीति २३ : ३४, ३५) मनुष्य निद्रावस्था में जो बात कहता है सो क्या कुछ विचार वा विश्वास करके कहता है। जो उस के मुख में आया सो बक दिया। जैसे यात्रा करना और इस ठौर में विश्राम करना ये दोनों परस्पर असंगत हैं तैसे इन की वार्त्ता भी असंगत है। जो असावधान मनुष्य यात्रा करते हैं उन में सौ में दो एक मनुष्य कहीं इस विपत्ति से बचते हैं। यह मोहभूमि यात्रियों के विनाश के निमित्त महाशत्रु का* पिछला उपाय है। यह मार्ग के अन्त-

भाग में स्थापित है इसी कारण इस से हम को अधिक खटका होता है। हमारा शत्रु ऐसा विचार करता है कि निर्बुद्धि यात्री पथ के अन्त भाग लों पहुंचते पहुंचते अवश्य थक जायेंगे और थकित होने से अवश्य बैठने की इच्छा करेंगे। इसी कारण मोहभूमि मार्ग के अन्तभाग में बियूला देश की सीमा के निकट स्थापित हुई है। इस कारण हम भी इन मनुष्यों की नाईं ऐसी निद्रा में न सो जायें कि फिर किसी के जगाये न जागें इस भय से सर्वदा सावधान रहना उचित है। यात्रियों ने भयातुर हो जब आगे बढ़ने की इच्छा की तब पथदर्शक से विनती की कि महाराज दीया बार कर हमें आगे ले चलिये। तब उस ने चकमक झाड़ दीया बारा उस की सहायता से उन्होंने अन्धकार के शेष पर्यन्त गमन किया। (२ पितर १ : १६) पर बालक बहुत थक गये थे इस कारण यात्रियों के हितकारक से रो रोकर सुगम पथ की प्रार्थना करने लगे। थोड़ी ही देर में बयार जो बहने लगी तो कुहासा दूर हुआ और आकाश कुछ निर्म्मल हो गया सो यात्री यद्यपि मोहभूमि के पार नहीं हुए थे तथापि एक दूसरे को और अपने पथ को तो देखने लगे।

जब वे मोहभूमि के अन्त के निकट पहुंचे तब थोड़ी दूर आगे अति चिन्तायमान मनुष्य का सा गंभीर शब्द सुनाई दिया। आगे बढ़े तो देखा कि एक पुरुष घुटने टेके ऊर्द्धमुख हो ऊपर दृष्टि किये है मानो किसी पुरुष से जो ऊंचे पर बैठा है एकाग्र चित्त होकर अपने मन की बात कह रहा है। यद्यपि वे उस के निकट पहुंचे थे तौ भी उस की बातें उन्हें स्पष्ट सुनाई न दीं फिर जब लों उसने कथा समाप्त न की तब लों वे हौले हौले चले। जब उस ने अपनी बात पूरी की तब उठकर बड़ी शीघ्रता से स्वर्ग-

अटल चरण।

पुर की ओर दौड़ने लगा। तब महात्मा ने पुकार कर कहा, अहो मित्र ! मुझे जान पड़ता है कि तुम स्वर्गपुर के यात्री हो। जो ऐसा हो तो हमारे साथी न हो जाओ। यह सुन वह खड़ा हो गया और ये सब उस से जा मिले। सरल ने उस का मुंह देखते ही कहा, मैं इस को पहिचानता हूं। सत्यवीर बोला, कौन हैं। उस ने उत्तर दिया यह मेरी जन्मभूमि के निकट का रहनेवाला है। इस का नाम अटल चरण है यह सच्चा यात्री है। जब ये सब इकट्ठे हुए तो अटल चरण ने वृद्ध सरल से कहा, अजी बाबा क्या तुम भी हो। इस ने उत्तर दिया हां. मुझे देखते ही हो। तब अटल चरण ने कहा, तुम को इस पथ पर देखने से मुझे बड़ा आनन्द हुआ है। सरल ने कहा, तुमको घुटने टेके हुए देख कर मैं भी बड़ा प्रसन्न हुआ। यह सुन उस ने कुछ लजाय कर कहा, तुन ने क्या मुझे घुटने टेके हुए देखा था। सरल बोला, हां, मैंने देखा और देखने से मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। अटल चरण ने पूछा, यह देख कर तुम ने क्या अनुमान किया। सरल बोला, यही जाना कि कोई सज्जन यात्री है वह थोड़ी देर में हमारा संगी होगा। और कौनसा अनुमान करूं। अटल चरण ने कहा, तुम्हारा अनुमान यथार्थ हो तो मेरा बड़ा भाग्य और जो न हो तो मेरी ही हानि होगी। सरल ने कहा, तुम सत्य कहते हो और तुम्हारे इस भय से मैंने जाना कि यात्रियों के राजा से तुम्हारा यथा योग्य सम्बन्ध है क्योंकि उस ने कहा है कि जो सर्वदा भय करता है वही धन्य है।

तब सत्यवीर ने अटल चरण से कहा, हे भाई ! मैं पूछता हूं कि तुम किस लिये घुटने टेक रहे थे। कोई विशेष अनुग्रह पाकर धन्यवाद करते थे अथवा कोई और ही कारण था। अटल चरण ने कहा, देखो यह मोहभूमि है यहां चलते चलते मैं

मन में सोचने लगा कि यह स्थान बड़े खटके का है । अनेक मनुष्य यहां तक आकर भी इस ठांव में बाधा पाकर नष्ट हो गये हैं । यह बात भी मेरे चित्त में आई कि जो लोग यहां मरते हैं सो किसी विशेष रोग से नहीं मरते और उन की मृत्यु में क्लेश भी नहीं होता क्योंकि जो सोते सोते मर जाता है वह सुख से बिना कष्ट परलोक गमन करता है । वह अपने रोग से आप प्रसन्न होता है । इतने में सरल बोल उठा कि तुम ने कुञ्ज में दो मनुष्य को सोते देखा । अटल चरण बोला, हां, मैंने अचिन्त और दुःसाहसी दोनों को वहां देखा । जान पड़ता है कि वे वहां पड़े पड़े मर के सड़ जायेंगे । (नीति० १० : ७) पर मेरी बात पूरी होने दो । मैं पूर्वोक्त रीति से सोचता चला आता था इतने में एक वृद्ध स्त्री ने सुन्दर वस्त्र पहिने मुझे दर्शन दिया और अपना शरीर और धन और सेज तीनों वस्तु मुझे देने की इच्छा की । मैं तो कंगाल हूं मेरे पास धन कुछ भी नहीं है और उस समय थका और निद्रालु था । मुझे बूझ पड़ता था कि वह डायन मेरी यह अवस्था जान करके मेरी परीक्षा करने आई । मैंने कई बिरियां उसे हटाया पर वह हंसती हुई मेरे पास ही चली आती थी मानती नहीं थी । तब मैं ने क्रोध किया पर

बुलबुला ठकुरानी । क्रोध का कुछ फल न हुआ वरन् वह और भी चिपट के मुझ से कहने लगी जो तू मेरा कहना माने तो मैं तुझे अत्यन्त ऐश्वर्य्य और सुख दूंगी क्योंकि मैं जगत की अधिकारिणी हूं मुझी से लोगों को सुख प्राप्त होता है । फिर मैं ने उस का नाम पूछा । उस ने कहा, मेरा नाम बुलबुला ठकुरानी है । इस बात को सुनते ही मैं ने उस को और भी घृणायोग्य समझा पर वह मुझे फुसलाती ही रही । ऐसी आपदा के समय मैं ने घुटने को टेक हाथ जोड़ यात्रियों के महा

सहायक से चिल्ला चिल्लाकर प्रार्थना की तुम ने जो मुझे प्रार्थना करते देखा इस का कारण यही था। तुम्हारे पहुंचते पहुंचते वह ठकुरानी चली गई। इस आपदा से मुक्ति पाकर मैं उठा नहीं परन्तु ईश्वर का धन्यवाद करता रहा क्योंकि वह स्त्री मेरा कल्याण नहीं चाहती थी पर मेरी यात्रा में बाधा डालने का उपाय करती थी यह निश्चय जाना। सरल ने कहा, इस में सन्देह क्या। उस का अवश्य बुरा अभिप्राय था। तुम्हारी कथा से मुझे सुरत पड़ती है कि मैं ने उस स्त्री को कहीं देखा है वा उस का कुछ वृत्तान्त पढ़ा है। अटल चरण ने कहा, तुम ने देखा भी और पढ़ा भी होगा। सरल ने पूछा, यह बुलबुला ठकुरानी कुछ कुछ रूपवती, श्यामवर्ण, लंबी स्त्री थी न। अटल चरण बोला, हां, वह ऐसी ही थी तुम ने ठीक ठीक वर्णन किया है। सरल ने फिर पूछा, वह बड़ी मीठी बोलती है और वाक्य के समाप्त करते बहुधा मुसकुराया करती है वा नहीं। अटल चरण ने कहा, यह बात भी तुम्हारी ठीक है वह ऐसा ही करती है। सरल फिर बोला, उस की कमर में रुपयों की थैली लटकती है कि नहीं और रुपयों के मोह से वह थैली में हाथ डाल कर रुपये झनझनाया करती है कि नहीं। अटल चरण ने कहा, हां, तुम ने यथार्थ कहा। जो वह इस समय यहां खड़ी होती तो तुम उस के स्वरूप और आचार का इस से ठीक वर्णन न कर सकते। सरल ने कहा, तब तो सच है कि जिस ने उस का चित्र खींचा वह बड़ा उत्तम चित्रकार था और जिस ने उस के स्वरूप का वर्णन किया वह भी सत्यवादी है। इन दोनों की कथा सुन महात्मा कहने लगा, यह बुलबुला ठकुरानी डायन है इस में सन्देह नहीं। उसी के मन्त्र के गुण से यह भूमि मोहमय हो गई है। उस की गोद में सिर रखना बलिदान के काष्ठ में सिर देने

के समान है और जो उस की सुन्दरता से मोहित होता है वह ईश्वर का शत्रु गिना जाता है। वह दुष्ट स्त्री यात्रियों के शत्रुओं को ऐश्वर्य्य देकर उन की वृद्धि करती है और कितनों को उसने लोभ दिखाकर यात्रिधर्म से भ्रष्ट किया है। (याकूब ४ : ४) वह लोगों के घर जाकर गप छांटा करती है। वह और उस की कन्यायें नित्य किसी न किसी यात्री के पीछे लग कर स्वर्गीय सुख की निन्दा और सांसारिक सुख की प्रशंसा करती रहती हैं। वह बड़ी निर्लज्ज वेश्या है कोई पुरुष क्यों न हो वह उस के साथ वार्त्ता करने लगती है। वह दरिद्री यात्रियों का निरादर और धनवानों की प्रतिष्ठा करती है। जो धन को प्राप्त करने में लगा रहता है वह घर घर उस की बड़ाई करती फिरती है। वह भोजन और उत्सव की बड़ी अभिलाषा रखती है। जहां जहां भोजन होता है वहां वह अवश्य जा पहुंचती है। उस ने कितने ठौर यह भी कहा है कि मैं देवी हूं इस हेतु कोई कोई उस की पूजा भी करते हैं। लोगों को ठगने के लिये उस ने विशेष समय और स्थान ठहराये हैं। वह निश्चय कर कहती है मैं जैसा सुख देती हूं तैसा और कोई नहीं दे सकता है। जो उस से प्रेम कर उस को उत्तम जानते हैं वह उन मनुष्यों के साथ वरन् उन के पुत्र पौत्र के साथ भी रहने की प्रतिज्ञा करती है। किसी किसी जगह वह किसी किसी मनुष्य को अपनी थैली में से धूल के समान सुवर्ण बरसा देती है। जो उस का पीछा करते और उस को भली कहते और गोद में लेते हैं वह उन से बड़ी प्रसन्न रहती है। वह अपनी सम्पत्ति की बड़ाई करने से कभी थकती नहीं। जो जितनी उस की अधिक प्रतिष्ठा करता है उस से वह अधिक प्रेम करती है। कितनों को तो वह यह प्रतिज्ञा देती है कि जो तुम मेरा परामर्श मानो तो मैं तुम्हें राज्य और मुकुट दूंगी

परन्तु उस के छल के द्वारा अनेक मनुष्य फांसी पड़े और लाखों नरक को गये हैं। यह सुन अटल चरण ने कहा, भाई मैं ने जो उस का सामना किया इस से जानता हूं कि ईश्वर का मुझ पर बड़ा अनुग्रह हुआ। हाय! जो मैं उसकी बात मानता तो न जाने वह मुझे कहां ले जाती। महात्मा बोला, कहां ले जाती इस का भेद तो ईश्वर जाने पर यह तो निश्चय है कि वह तुम को मूढ़ और हानिजनक अभिलाषरूपी पङ्क में गिराती जहां लोगों का नाश होना है और जहां से नरक जाते हैं। (१ तिमोथिय ६ : ९) देखो उसी दुष्ट स्त्री ने अबशालोम को अपने पिता का द्रोही किया और यरबुआम को अपने राजा का शत्रु बनाया। उसी ने यहूदा को ऐसी शिक्षा दी कि उस ने अपने प्रभु को बेचा और दीमास को यात्रिधर्म्म से बहकाया। वह जिन जिन लोगों की हानि कर चुकी सभों का वर्णन नहीं हो सकता। वह राजा और प्रजा में पिता और पुत्र में माता और कन्या में पड़ोसी पड़ोसी में स्त्री और पुरुष में देह और आत्मा में हां, मनुष्य के चित्त ही में विरोध करवाती है। सो हे भाई! अटल चरण जैसा तुम्हारा नाम है तैसा ही तुम्हारा कर्म्म भी हो अर्थात् तुम सब शत्रुओं को जीतकर अटल बने रहो।

बुलबुला का यह बृत्तान्त सुन यात्री कम्पायमान हो आनन्द करने लगे और यह गान किया।

दोहा।

यात्रिन को आपद किते . किते शत्रु यहि भौन।
किते बाट बरु पाप के . जानि सकै वह कौन॥
गिरहिं किते जग खात में . कीचहि कत फंसि जांय।
खौं पड़ि से बाचन चहें . चूल्हिहि प्राण गमांय॥

पन्द्रहवां अध्याय।

बियूला देश में यात्रियों का प्रवेश।

फिर मैं ने स्वप्न में देखा कि यात्री बियूला देश में जहां सूर्य आठों पहर उदय रहता है पहुंचे और बहुत थके हुए थे इस कारण विश्राम के निमित्त कुछ काल ठहरे। वह देश समस्त यात्रियों के सुख के निमित्त था और वहां की द्राक्षादि फलों की सब बाटिका स्वर्गपुर के महाराजा के अधिकार में थीं इस लिये यात्री वहां के फलादि भोजन करने लगे। थोड़े ही समय में उन का श्रम दूर हो गया। यद्यपि घण्टा तुरही आदि के मधुर शब्द के कारण उन्हें निद्रा न आई तथापि जैसे कोई घोर निद्रा से तृप्त हो तैसे ये प्रसन्न और श्रमरहित हो गये। फिर वहां के रहनेवाले मार्ग में आते जाते आपस में बड़ी प्रीति से यात्रियों की चर्चा करते थे। एक कहता कि बहुत से नवीन यात्री नगर में आज पहुंचे हैं। दूसरा यह उत्तर देता कि आज कितने एक यात्री नदी पर हो स्वर्णमय द्वार के भीतर पैठे हैं। फिर कई एक मिलकर हर्षयुक्त शब्द से कहते कि बहुत से यात्री अवश्य आ पहुंचे हैं क्योंकि उन की शान्ति के निमित्त तेजस्वी पुरुषों का एक दल आकर उन की बाट जोह रहा है। फिर यात्री उठकर जो इधर फिरने लगे तो नाना प्रकार के स्वर्गीय ध्वनि से उन के श्रवण तृप्त हुए और स्वर्गीय विषय के देखने से उन की आंखें अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उस भूमि में उन्होंने जो जो वस्तु देखीं वा सुनीं वा स्पर्श कीं सूंघीं वा खाईं उन में से किसी वस्तु के द्वारा उन के चित्त वा शरीर को किसी प्रकार का दुःख न पहुंचा केवल जिस नदी पार होकर उन्हें स्वर्गपुर जाना था

उसी का जल कुछ उन्हें कड़ुवा जान पड़ा पर पीने के पीछे फिर मीठा लगा। उस नगर में एक पुस्तक रक्खी थी जिस में जो जो यात्री पूर्वकाल में आये थे उन के नाम और उन के बड़े बड़े कार्य्य लिखे थे। यहां यात्रियों ने यह चर्चा भी सुनी कि किसी के पार होने के समय पूर्वोक्त नदी बहुत बढ़ गई और किसी के समय में अत्यन्त घट गई किसी किसी के पार होते प्रायः सूख गई थी और किसी किसी के पार होते प्रायः उस का जल ऐसा उमड़ा कि दोनों तट भी डूब गये थे। इस नगर के बालक भी महाराजा की फुलवारियों में जा जा फूलों के गुच्छे बना बना बड़े प्रेम से यात्रियों को आकर दिया करते थे। उस फुलवारी में चन्दन कपूर जटामांसी केसर कुसुम्भ दारचीनी कुन्द अगर धूपादि मुख्य सुगन्ध द्रब्यों के वृक्ष थे। यात्री लोग जब तक वहां रहे तब तक उन की कोठरियां पूर्वोक्त सुगन्ध से भरी रहीं और नदी पार होने का समय जब पहुंचा तब उन्हें तैयार करने के लिये इन सुगन्ध द्रब्यों का उपटन उन के शरीर में मला गया।

ये सब इस रीति से शुभकाल की आशा से वहां रहते थे इतने में एक दिवस नगर में यह चर्चा होने लगी कि कोई आवश्यक समाचार पहुंचाने के लिये स्वर्गपुर से एक दूत खीष्टियान नाम यात्री की स्त्री खीष्टियानी को ढूंढ़ता है। फिर दूत ने पता लगाते हुए खीष्टियानी के पास पहुंच उसे एक पत्र दिया। उस में यह लिखा था कि हे उत्तम स्त्री प्रभु तुम को बुलाते हैं। तुम दस दिन न बीते अमरवस्त्र पहिने प्रभु के सन्मुख जा खड़ी हो उस की यह आज्ञा है। आगे शुभ। इस पत्र के सुनाने के पीछे मैं विश्वासयोग्य दूत हूं और तुम को शीघ्र बिदा करने के लिये प्रभु ने मुझे भेजा है इस बात के स्थिर करने को दूत ने

स्वर्गदूत का आगमन।

उस को एक चिन्ह अर्थात् प्रेमरूपी सिल्ली पर चोखा किया हुआ बाण दिया। उस बाण ने धीरे धीरे उस के अन्तःकरण को छेदा। इस से यह प्राप्त हुआ कि ठहराये हुए समय पर उसे अवश्य विदा होना पड़ा।

जब खीष्टियानी ने जाना कि मेरा समय अब निकट आया और अपने साथियों से पहिले मुझ को नदी पार उतरना पड़ेगा तब उस ने महात्मा को बुलाकर सब समाचार सुनाया। उस ने कहा इस बात के सुनने से मुझे बड़ा आनन्द हुआ। वह दूत जो मुझे बुलाता तो मैं और भी आनन्दित होता। तब खीष्टियानी बोली, मुझे किस रीति से प्रस्तुत होकर जाना पड़ेगा इस की मुझे शिक्षा दीजिये यह बात सुन कर उस ने इस को उपयुक्त शिक्षा दे फिर कहा, जिस समय तुम जाओगी उस समय हम सब भी नदी के तीर लों तुम्हारे साथ साथ चलेंगे।

फिर खीष्टियानी ने अपनी बहू और लड़कों को बुला आशीर्वाद दे कहा, तुम्हारे माथे का चिन्ह अब तक स्पष्ट दिखाई देता है और तुम मेरे साथ यहां लों आये हो और अपने अपने वस्त्र स्वच्छ रक्खे हैं इन तीनों बातों से मैं बड़ी प्रसन्न हूं। फिर बोली, मेरी जो जो वस्तुयें हैं सब कुछ दरिद्रियों को बांट देना और अपने पुत्र और बहुओं से कहा, तुम्हारे बुलाने के लिये भी दूत आवेगा उस की आशा करके प्रस्तुत रहना।

खीष्टियानी ने पथदर्शक और अपने सन्तानों से ये बातें कह सत्यवीर को भी बुलाकर कहा, हे भाई! तुम ने अब लों सब बातों में अपने तईं विश्वासयोग्य दिखाया है तुम मरण पर्यन्त विश्वासयोग्य रहना तो मेरा राजा तुम को जीवन का मुकुट देगा। (प्रकाश. २ : १०) और मैं प्रार्थना करती हूं कि मेरे सन्तानों पर दृष्टि रखना जो किसी समय उन को घबड़ाते देखो

तो शान्ति देना । मेरी पतोहें उत्तम आचरण करती हुई आई हैं इस से मुझे भरोसा है कि अन्त में उन को भी प्रतिज्ञा के अनुसार फल प्राप्त होगा । फिर अटलचरण को बुला उस ने कुछ न कहा पर एक अंगूठी उस को दी ।

फिर उस ने वृद्ध सरल को बुलाया और उसे आते देख कहने लगी, देखो यह निष्कपट सच्चा इस्रायेली मनुष्य है । फिर सरल बोला, जिस दिवस तुम सियोन पर्वत को जाओ वह दिन निर्म्मल रहे यही मेरी प्रार्थना है और तुम को सूखे पांव नदी पार उतरते देखूं तो मुझे बड़ा ही आनन्द होगा । यह सुन ख्रीष्टियानी ने उत्तर दिया, मलिन हो वा निर्म्मल हो चाहे जैसा दिवस रहे मुझे जाने की बड़ी लालसा है । जाने के समय मैं भींग जाऊं वा थक जाऊं तो कुछ हानि नहीं क्योंकि वहां पहुंचकर विश्राम करने और अंग का जल सुखाने का बहुत अवकाश होगा ।

फिर पंगु नाम यात्री जब उस से कुशल क्षेम पूछने आया तब उस ने उस से कहा, यहां तक तो तुम्हारी यात्रा क्लेश के सहित हुई पर इस क्लेश के कारण तुम्हारा विश्राम अधिक सुखदाई होगा । तुम सावधान होकर प्रस्तुत रहो क्या जाने किस समय दूत तुम को बुलाने आवे ।

फिर आशाहीन और अतिभीरु नाम उस की कन्या ये दोनों ले आये तब उन दोनों से ख्रीष्टियानी ने कहा, तुम ने उस दुष्ट आशाभंग के हाथ से और दुबिधादुर्ग से उद्धार पाया इस को सर्व्वदा कृतज्ञता से स्मरण रखना उचित है । उस अनुग्रह का फल यही हुआ कि तुम यहां लों कुशल से पहुंचे । इस कारण अब सन्देह छोड़कर सचेत और सावधान रहना और अन्त लों आशा रखना ।

फिर उस ने क्षीणमन से कहा, अमर पुरुषों के प्रकाश में सर्वदा जीवते रहने के निमित्त और अपने महाराजा के दर्शन से तृप्त होने के लिये तुमने साधुहिंसक के हाथ से उद्धार पाया है। सो मैं तुम को परामर्श देती हूं कि प्रभु की दया के विषय में सन्देह और भय करने का जो तुम्हारा स्वभाव है समय रहते रहते पश्चात्ताप करके उस स्वभाव को त्याग करो नहीं तो क्या जाने जिस समय वह तुम्हें बुलवा पठावेगा उस समय उस के सन्मुख खड़े हो तुम इसी दोष से लज्जित होगे।

जब खीष्टियानी के स्वर्गपुर जाने का दिवस आया तब उस को जाते देखने के लिये मार्ग में लोगों की भीड़ लग गई और उसे राजधानी के द्वार लों पहुंचाने के लिये अनेक घोड़ों के रथ स्वर्ग पुर से आकर नदी के उस पार खड़े हुए। तब उस ने घर से बाहर निकल कर पीछे आनेवाले लोगों से सैनद्वारा बिदा हो नदी में प्रवेश किया। बिदा होते होते हे प्रभू तुम्हारे संग बास करने और तुम्हारा धन्यवाद करने आती हूं अन्त में यही बात उसके मुख से सुनाई दी। वह शीघ्र उस पार के रथ पर चढ़ लोगों से अदृश्य हो गई तब उस के पुत्र मित्रादि सब अपने अपने स्थान को लौट आये। खीष्टियानी ने स्वर्गद्वार पर जा ज्यों पुकार कर प्रवेश करने की विनती की त्यों वह अपने पति की भांति आनन्द और आह्लाद के सहित द्वार के भीतर बुलाई गई। उस के जाने से उस के सब सन्तान रोने लगे पर महात्मा और सत्यवीर आनन्दित हो उत्तम स्वर से बाजा बजाने लगे। इसी भांति सब लोग अपने अपने स्थान को चले आये।

खीष्टियानी का काल नदी पार होना।

फिर थोड़े दिन पीछे एक राजदूत उस नगर में पंगु को ढूंढ़ता हुआ आया और उस से भेंट कर कहने लगा कि तुम पंगु

होकर भी प्रेम के सहित प्रभु के पीछे हो लिये इस हेतु मैं प्रभु का भेजा हुआ तुम्हारे पास इस बात के जताने के लिये आया हूं कि तुम्हारे राजा ने अपने साथ निस्तार पर्ब्ब के एक दिन पीछे

ख्रीष्टियानी काल नदी पार उतरती है।

भोजन पान करने के निमित्त तुम को नेवता दिया है तुम उस दिन गमन करने के लिये तैयार रहना। यह बात कहकर उस दूत ने अपनी सत्यता के प्रमाण के निमित्त यही वाक्य कहा, मैं

ने तुम्हारा सुवर्ण का कटोरा तोड़ तुम्हारे रूपे का तार खोला है। (सभोपदेश १२ : ६) इस के पीछे पंगु ने

पंगु का बुलाया जाना ।

अपने साथियों को बुलाकर कहा, ईश्वर ने मुझे बुलाया है और वह अवश्य तुम पर भी कृपा करेगा । यह कहकर उसने सत्यवीर से प्रार्थना की कि मेरे नाम से एक दानपत्र लिखो । उसके पास दो बैसाखी और आशीर्वाद से अधिक कुछ नहीं था इस कारण उस ने यही आज्ञा दी कि मेरा जो पुत्र मेरे पीछे आवे सो मुझ से सौ गुणा उत्तम यात्री हो इसी आशीर्वाद के सहित उसे मेरी दोनों वैसाखी दी जांय । फिर महात्मा ने जो मार्ग में अनुग्रह करके उस की सहायता की थी उस अनुग्रह के स्वीकार करने के पीछे वह नदी पार जाने के लिये उपस्थित हुआ नदी के तीर पर पहुंच कर पंगु कहने लगा अब मुझे इन बैसाखियों से प्रयोजन नहीं देखो उस पार मेरे लिये घोड़े जुते रथ खड़े हैं। फिर नदी में बैठते बोला, जय जय प्रभु अब अनन्त जीवन मेरा है। इतना कहते ही नदी पार चला गया ।

कितने दिवस पीछे क्षीणमन को भी सन्देश मिला कि तुम्हारे घर के द्वार पर राजदूत ने नरसिंगा बजाया है। फिर वह दूत भीतर जाकर इससे कहने लगा प्रभु को

क्षीणमन की स्वर्ग-पुर में बुलाहट ।

तुम से कुछ काम है इस कारण बहुत थोड़े काल में तुम को उसके तेजोमय मुख का दर्शन होगा यही बात जताने को मैं आया हूं । मेरे बचन की सत्यता का प्रमाण यह है कि खिड़की में से देखने वालियां अन्धी होंगी । (सभोपदेश १२ : ३) तब क्षीणमन ने निज साथियों से पूर्वोक्त संवाद और उस का प्रमाण कहकर फिर कहा, देने को मेरे पास कुछ नहीं है सो दानपत्र लिखाने का

कौन प्रयोजन। मेरे मन की जो क्षीणता है उसे मैं छोड़ जाऊंगा। जहां मैं अब जाता हूं वहां इस का कुछ प्रयोजन नहीं है और वह किसी दरिद्र यात्री को देने योग्य भी नहीं है। सो हे सत्यवीर! आप उस को कूड़े के ढेर में गाड़ दीजिये। फिर जब उस के जाने का समय आया तब औरों की नाईं नदी में प्रवेश किया और मेरा विश्वास और मेरा धीरज अन्त लों निबह जांय यह कह नदी पार उतर गया।

आशा हीन की बुलाहट।

फिर अनेक दिन पीछे उसी दूत ने आकर आशाहीन को यह संदेश कहा कि हे कम्पायमान मनुष्य आनेवाले प्रभु के दिन तुम को प्रभु के सन्मुख उपस्थित हो सम्पूर्ण संशय से उद्धार पाकर आनन्दध्वनि करना पड़ेगा उस दिवस के लिये तैयार रहियो। उसकी सत्यता का यह चिन्ह लो। यह कह उसने एक फनगा उसे दिया जो उसे बोझ सा जान पड़ा (सभोपदेश १२ : ५) आशाहीन की कन्या अतिभीरु ने ये बातें सुनकर कहा, मैं भी पिता के साथ ही जाऊंगी। तब उस के बाप ने अपने मित्रों से कहा, मैं और मेरी कन्या कैसी दुर्बल हैं और सब यात्रियों को कैसा क्लेश देते थे यह बात तुम सब भली भांति जानते हो। अब हमारी यही इच्छा है कि हमारे जाने के पीछे हमारी निराशता और भय किसी से न ग्रहण किये जांय। मैं जानता हूं कि हमारे मरने के पीछे वे और और लोगों से आतिथ्य चाहेंगे परन्तु मैं स्पष्ट कहता हूं कि वे भूत हैं। अपनी यात्रा के आरम्भ के समय में जो उन्हें हम ने स्थान दिया तो फिर उनको न निकाल सके। वे अपने पालन के निमित्त और और यात्रियों से जगह मांगते फिरेंगे पर मैं प्रार्थना करता हूं कि हमारे दुःख का स्मरण कर उन को अपने पास कोई न आने देवे। प्रस्थान का

जब समय आया तब वे दोनों नदी के तीर पर गये। उस समय आशाहीन ने यह कहा, हे रात्रि ! तू बिदा हो हे दिवस ! तू आ। यह बात कहकर वह नदी में बैठ पार हो गया। उस की कन्या भी गाती गाती चली गई पर क्या गाया इस को कोई समझ न न सका।

वृद्ध सरल का स्वर्ग पुर में निमन्त्रण।

फिर कितने एक दिन बीते राजदूत ने नगर में आकर सरल का डेरा खोज उस के पास जा उसे पत्र दिया। उस में लिखा था कि आठ दिन पीछे तुम को अपने प्रभु के पिता के घर जाना पड़ेगा इसलिये तैयार रहने की आज्ञा तुम को हुई है। यह पत्र जो सत्य है इसका प्रमाण यही है कि समस्त बाजा बजानेवाली कन्याएं क्षीण होंगी। (सभोपदेश १२ : ४) इस समाचार के पाते ही सरल ने सब मित्रों को बुला कर कहा, देखो मैं अब मरूंगा पर दानपत्र न लिखाऊंगा क्योंकि मेरी सरलता मेरे साथ जायगी। यह बात मेरे पीछे आनेवालों से कहना। जब पार उतरने का दिन पहुंचा तब सरल शीघ्र नदी के तीर जा खड़ा हुआ। उस समय नदी उमंड़ी थी यहां लों कि कछाड़ भी कहीं कहीं जल से डूब गया था तौभी उस की कुछ बाधा न हुई क्यों कि उस ने अपने जीते शुद्धमन नाम पुरुष से नियम बांधा था कि पार होने के समय वह उसकी सहायता करे। सो उस ने उस काल आकर सहायता कर उस को पार पहुंचा दिया। प्रभु के अनुग्रह की जय हो यह बात कहते कहते वृद्ध सरल लोकान्तर को चला गया।

फिर सुनने में आया कि सरल के लिये जो दूत आया था उस ने वैसा ही समाचार का पत्र सत्यवीर को भी दिया है उस की सत्यता का यही वाक्य प्रमाण है यथा कुएं पर घड़ा टूट

गया है। (सभोपदेश १२ : ६) सत्यवीर को इस समाचार के मिलने से उस ने अपने साथियों को बुला कर कहा, मैं पिता के घर जाता हूं। मैं बड़े कष्ट से यहां तक आ पहुंचा हूं पर इतने क्लेश के उठाने के विषय में इस समय मुझे कुछ शोक नहीं है। जो यात्रा में मेरा अनुगामी हो उसे मेरा खड्ग देना और मेरा साहस और निपुणता जो कोई प्राप्त कर सके उस को मिले। मेरे शरीर में जो चोट और घाव के चिन्ह हैं उन को मैं साथ ही ले जाता हूं क्योंकि जो अब मुझे प्रतिफल देगा उस के लिये मैं ने जो जो युद्ध किया है उस के साक्षी ये चिन्ह होंगे। फिर उस के जाने के दिवस अनेक लोग नदी तक उस के साथ गये। नदी में पैठने के समय उस ने कहा, अरे! मृत्यु तेरा डंक कहां। जब गम्भीर जल में पहुंचा तब बोला, अरे! क़बर तेरी जय कहां। यह बात कहते हो नदी पार हो गया तब उस पार अनेक तुरही बजने लगीं।

फिर अटलचरण के लिये जिसको यात्रियों ने मोहभूमि में प्रार्थना करते देखा था बुलाने का पत्र आया। राजदूत ने आकर वह पत्र खुला हुआ उसके हाथ में दिया। उसमें यह समाचार लिखा था कि तुम्हारा प्रभु अब नहीं चाहता है कि तुम उससे परे रहो इसलिये तुम लोकान्तर जाने को तैयार रहो। इस बात से जब अटलचरण को आश्चर्य्य हुआ तब दूत ने कहा, मेरी बात की सत्यता का सन्देह करना नहीं चाहिये इसका प्रमाण यह है कि कूपं पर तुम्हारी घरारी टूट गई है। (सभोपदेश १२ : ६) तब अटलचरण ने महात्मा को बुलाकर कहा, हे महाराज यात्रा में थोड़े ही दिवस से मैंने तुम्हारी संगति पाई पर जब से भेंट हुई तब से तुमने मेरा उपकार ही

अटलचरण का नदी पार होना।

किया है। देखो मैं अपनी स्त्री और पांच लड़के घर में छोड़ आया हूं। तुम और यात्रियों के पथदर्शक होने के निमित्त अपने प्रभु के घर फिर जाओगे यह जान मैं विनती करता हूं कि जब तुम वहां जाओ तब किसी मनुष्य को मेरे घर पर भेज कर जो जो मेरी गति हुई है और जो होगी सो सब मेरे स्त्री पुत्रादि को कहला देना कि यहां लों मैं कुशलक्षेम से आ पहुंचा और परमानन्द पाने की आशा से मेरा चित्त अत्यन्त प्रसन्न है। फिर खीष्टियान और खीष्टियानी का समाचार जता देना विशेष करके खीष्टियानी अपने चारों पुत्र और पतोह सहित कैसे खीष्टियान के पीछे यात्रिन हुई और कैसी जगह पहुंची है और उसे कैसा सुख प्राप्त हुआ यह बात कहला भेजना। अपने कुटुम्ब को देने के लिये प्रार्थना और अपने आंसुओं से अधिक कुछ मेरे पास नहीं है। यह समाचार भेजने से मुझ पर तुम्हारी बड़ी कृपा होगी कदाचित् वे ईश्वर के अनुग्रह से यात्री हो जांय। इस रीति की वार्त्ता कर अटलचरण जाने का समय उपस्थित जान शीघ्र ही नदी के तीर पर गया। उस काल नदी का जल स्थिर था इस कारण जब वह नदी के बीचों बीच पहुंचा तब वहां खड़ा हो तीर के लोगों की ओर देख कहने लगा देखो इस नदी के कारण बहुत मनुष्यों को भय होता है और मुझे भी इसकी चिन्ता से अनेक बार भय व्यापा परन्तु इस समय मेरा चित्त सुस्थिर है क्योंकि इस्रायेली लोगों के यर्दन नदी पार उतरने के समय जिस पर नियम के संदूक के ढोनेहारे याजकों के चरण स्थिर थे उसी पर इस काल मेरे चरण भी स्थिर हैं। (यहोशुआ ३ : १७) यह जल स्वाद में खारा और उदर में शीतजनक तो है परन्तु जिस स्थान को मैं जाता हूं उस स्थान की अभिलाषा से और जो तेजस्वी पुरुष नदी के उस पार मुझे

लेने को आवेंगे उनके देखने की कांक्षा से मेरा मन पुलकित हो रहा है। इस समय मैं यात्रा की सीमा पर पहुंचा हूं और मेरे संकट और क्लेश के दिन बीत गये। जिस महापुरुष के मुंह पर लोगों ने थूका और मस्तक पर कंटक मुकुट पहिराया और जिसकी ऐसी दुर्दशा से मेरा कल्याण हुआ है मैं उसी महापुरुष के दर्शन को जाता हूं यहां लों तो श्रवण और विश्वास से मेरा निर्वाह हुआ है परन्तु जहां मैं अब जाता हूं वहां अपने प्रभु का साक्षात् दर्शन करूंगा और उसकी सम्मति से मुझे परमानन्द होगा अपने प्रभु की बड़ाई सुनने से मुझे सर्वदा आनन्द होता था और जिस जिस स्थान में उसके पदचिन्ह देख पड़ते थे वहां मैं भी जाने की इच्छा करता था। मैं उसके नाम को कस्तूरी के समान सर्वोत्तम सुगन्ध द्रव्य सा समझता था। उसका शब्द अत्यन्त मधुर स्वर की नाईं मेरे कानों को सुख देता था। सूर्योदय के देखने के जो लोग निपट अभिलाषी हों उनसे अधिक मैं उस का मुख देखने की लालसा रखता था उसके वचन स्वादित भोजन और महा औषधी के समान जान मैं उन का संग्रह करता था। वही जो मेरा आश्रम स्थान था इसी हेतु मैंने अपने स्वाभाविक दोषों से रक्षा पाई है। उसके मार्ग में चलने के लिये उसी ने मेरे चरणों में बल दिया है। यह बातें कहते कहते अटलचरण के मुख का स्वरूप बदल गया और मैं आप के निकट आता हूँ मुझे ग्रहण कीजिये इतना कहते ही वह तीर के लोगों की दृष्टि से अन्तर्द्धान हो नदी पार उतर गया।

यात्री लोग एक एक करके जिस समय ऊर्द्धगमन करते थे उस काल जो घोड़े और रथ और तुरही, वंशी बीणा इत्यादि अनेक प्रकार के मधुर बाजा बजाने वाले उनकी अगवानी करने आते थे और आकाशमार्ग को तेज और शुभध्वनि से परिपूर्ण

कर उन्हें सुन्दर द्वार से होकर स्वर्गपुर में लिवा ले जाते थे उन के देखने से महा सुख और आनन्द होता था ।

इसके पीछे मैं और भी कुछ दिन वहां रहा परन्तु मेरे वहां रहते ख्रीष्टियानी के चार पुत्र और उनकी स्त्री सन्तानादि नदी पार नहीं हुए थे । वरन् थोड़े दिन हुए मैंने एक मनुष्य से यह सुना कि वे अबतक जीते हैं और उनके वासस्थान में मण्डली की वृद्धि हो इस हेतु उन्हें कुछ दिन और भी वहां रहना पड़ेगा । जो मुझे फिर उस देश को जाना पड़ेगा तो जो लोग उनका वृत्तान्त सुना चाहें उनकी इच्छा के अनुसार मैं उसका वर्णन करूंगा । अब मैं पाठक लोगों को नमस्कार करके विदा होता हूं ।

दोहा ।

जाय सकें जो ख्रीष्ट के . राज्य मध्य सुनु मीत ।
प्राण बचे अरु सुख लहे . यहीं काल की भीत ॥
चलहु सकल सियोन को . प्यारो मीति सुरीत ।
जहां मृत्यु को भय नहीं . जीवन लहत पुनीत ॥
नाशनगर से प्रेम को . छाड़ो सकल सुजान ।
बेग करो प्रस्थान तुम . जो तुम चाहो त्रान ॥
है जीवन अधिकार तहं . होत न मृत्यु प्रवेश ।
रहत तहां सुख सों सदा . धारि अमरयुत वेश ॥
भागि चलो यहि ठाम तें . प्राण बचे जस तात ।
यीशु की आज्ञा पालिके . कोऊ न खटका खात ॥
जौं सदोम को त्यागिके . भग्यो लूत परिवार ।
आज्ञा लंघन में भयो , एकक पुनि संहार ॥
मोहित ह्वैके लोभ तें . घुरि देख्यो तसु दार ।
तातें सोई ह्वै गई . लवण खंभ इक बार ॥

सोई सुख के। धाम है . मोद होत जहं जाय।
राजा लिखहि सुनामतब . खाता बही मंगाय॥
जौप विनाशक विघ्न बहु . मगु सियोन तुम देखु।
ख्रीष्ट नाम सुप्रताप तें . सुगम सुखदसब लेखु॥
सकल कष्ट स्वीकार करि . चलौ शीघ्र तुम मीत।
नृपति तिहारो मोद हित . राच्यो मुकुट पुनीत॥
कृपा करो प्रभुजानिजन . जान कहे कर जोर।
भक्तिलहेजिमितोर प्रभु . नाशनगर के। छोर॥

इति

यात्रास्वप्नोदयोत्तरार्द्धस्समाप्तः।

THE NORTH INDIA CHRISTIAN TRACT AND BOOK SOCIETY, ALLAHABAD.

3rd Edition.] 1934 [2,000 *Copies.*

Printed by C.W. Boyle, at the Mission Press, Allahabad.